केन्द्रीय होम्योपैथिक अनुसंधान परिषद्

वार्षिक प्रतिवेदन 2000–2001
परीक्षित लेखा

7855
16/6/05

2212
29/8/06

(भारतीय चिकित्सा पद्धतियाँ एवं होम्योपैथी विभाग
स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय
भारत सरकार)

615.532

मुद्रक: युगान्तर प्रकाशन प्रा. लि., मायापुरी, नई दिल्ली - 110 064 दूरभाष: 28115949, 28116018

विषय सूची

विषय	पृष्ठ संख्या
प्रमुख आकर्षण	1
बैठकें	7
कार्यशिविर / सेमिनार प्रदर्शनिया	7
प्रशासनिक	11
– संगठन	11
– शासी निकाय	11
– स्थायी वित्तिय समिति	12
– वैज्ञानिक सलाहकार समिति	13
– के.हो.अ.प. पुर्नगठन उपसमिति	14
– साहित्यिक अनुसंधान उपसमिति	14
– के.हो.अ.प. का संगठनात्मक ढांचा	15
– परिषद में अनुसूचित जाति / जनजाति का प्रतिनिधित्व	16
– के.हो.अ.प. के बाह्य / अंतरंग रोग विभागों द्वारा चिकित्सा सहायता	17
तकनीकी प्रतिवेदन	
नैदानिक अनुसंधान कार्यक्रम	18
1. अमीबा रूग्णता	19
सामान्य क्षेत्र में	
जनजातीय क्षेत्र में	
2. संधि शोथ	21
जनजातीय क्षेत्र में	
3. आचरण दोष	21
सामान्य क्षेत्र में	
4. मंदबुद्धि बच्चों में आचरण दोष	22
सामान्य क्षेत्र में	
5. श्वसनिका दमा	23
सामान्य क्षेत्र में	
जनजातीय क्षेत्र में	
6. श्वसनी शोथ	25
जनजातीय क्षेत्र में	

7. ग्रैव अपकशेरूता
   सामान्य क्षेत्र में — 25
8. गर्भाशय ग्रीवा अपरदन एवं शोथ
   सामान्य क्षेत्र में — 26
   जनजातीय क्षेत्र में
9. मधुमेह
   सामान्य क्षेत्र में — 27
   जनजातीय क्षेत्र में
10. शिशुदस्त रोग
   सामान्य क्षेत्र में — 29
11. पेचिश
   सामान्य क्षेत्र में — 30
   जनजातीय क्षेत्र में
12. अपस्मार (मिरगी रोग)
   सामान्य क्षेत्र में — 31
13. फाइलेरिया
   सामान्य क्षेत्र में — 32
   जनजातीय क्षेत्र में
14. पित्तीय पथरी
   सामान्य क्षेत्र में — 35
15. जठरशोथ
   सामान्य क्षेत्र में — 35
16. जठरांत्रशोथ
   जनजातीय क्षेत्र में — 35
17. जियार्डिया रूग्णता
   सामान्य क्षेत्र में — 36
18. कृमिरूग्णता
   सामान्य क्षेत्र में — 36
   जनजातीय क्षेत्र में
19. यकृतशोथ (बी.)
   सामान्य क्षेत्र में — 37
20. एच.आई.वी. संक्रमण
   सामान्य क्षेत्र में — 37
21. अतिनिम्न घनत्व लाइपोप्रोटीनिमिया
   सामान्य क्षेत्र में — 41
22. उच्च रक्तचाप
   सामान्य क्षेत्र में — 42
23. विरामी ज्वर
   सामान्य क्षेत्र में — 43

24. लौह अल्पताजन्य अरक्तता
   सामान्य क्षेत्र में — 44
25. क्षुब्ध वृहदान्तर संलक्षण
   सामान्य क्षेत्र में — 45
26. जापानी मस्तिष्कशोथ
   सामान्य क्षेत्र में — 45
27. मलेरिया
   सामान्य क्षेत्र में — 46
   जनजातीय क्षेत्र में
28. मानव भ्रूण की कुस्थिति
   सामान्य क्षेत्र में — 47
29. अतिरज
   सामान्य क्षेत्र में — 47
30. अस्थिसन्धिशोथ
   सामान्य क्षेत्र में — 49
   जनजातीय क्षेत्र में
31. पैप्टिक व्रण
   जनजातीय क्षेत्र में — 51
32. पुरस्थ विवर्धन / प्रोस्टेट ग्रन्थि में वृद्धि
   सामान्य क्षेत्र में — 51
33. गुर्दा पथरी
   सामान्य क्षेत्र में — 51
34. रूमेटाइड संधिशोथ
   सामान्य क्षेत्र में — 52
35. नासाशोथ
   जनजातीय क्षेत्र में — 52
36. दात्रलोहितकोशिका अरक्तता
   सामान्य क्षेत्र में — 53
37. वायुविवरशोथ
   सामान्य क्षेत्र में — 54
   जनजातीय क्षेत्र में
38. त्वचा रोग
   सामान्य क्षेत्र में — 55
   जनजातीय क्षेत्र में
39 तुण्डिकाशोथ
   सामान्य क्षेत्र में — 56
   जनजातीय क्षेत्र में
40. ऊपरी श्वासनली संक्रमण
   सामान्य क्षेत्र में — 57

41. प्राथमिक श्वित्र/विटिलिगो
सामान्य क्षेत्र में 58
जनजातीय क्षेत्र में
- महामारियों के दौरान नैदानिक अनुसंधान
- नैदानिक सत्यापन अनुसंधान कार्यक्रम 60
- औषध परीक्षण अनुसंधान कार्यक्रम 61
- औषध अनुसंधान कार्यक्रम 81
औषधीय पादपों का सर्वेक्षण तथा सग्रंहण
- औषध मानकीकरण 84
- प्रलेखन तथा पुस्तकालय 84
- प्रकाशन 88
- भावी योजनाँए 91
- के.हो.अ.प. के अधीन संस्थान/इकाईया 93
लेखा प्रतिवेदन एवं लेखा प्रमाण पत्र 95
लेखा परीक्षित वार्षिक लेखा 96
100–101
102–117

प्रमुख आकर्षण

केन्द्रीय होम्योपैथिक अनुसंधान परिषद की स्थापना भारत सरकार के स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के भारतीय चिकित्सा पद्धति एवं होम्योपैथी विभाग के अधीन एक स्वायत संस्थान के रूप में 30 मार्च 1978 को हुई, जिसका उद्देश्य होम्योपैथी में अनुसंधान को सूत्रीबद्ध, समन्वित, विकसित तथा प्रोत्साहित करना है। इसका पूरा व्यय भारत सरकार वहन करती है। आज यह परिषद होम्योपैथी में संगठित अनुसंधान में कार्यरत देश की एक शीर्ष संस्थान है।

यह परिषद अपने लक्ष्यों तथा कार्यों को देश के विभिन्न भागों में स्थित 51 संस्थानों तथा इकाईयों के माध्यम से कार्यान्वित करती है। यह संस्थान तथा इकाईयां होम्योपैथी के विभिन्न पहलुओं पर अनुसंधान कर रहे हैं। सामान्य तौर पर जिसका वर्गीकरण इस प्रकार किया गया है।

(क) नैदानिक अनुसंधान

(ख) औषध परीक्षण अनुसंधान

(ग) नैदानिक सत्यापन अनुसंधान

(घ) औषध मानकीकरण तथा औषध अनुसंधान

(ड.) औषधीय पौधों का सर्वेक्षण, संग्रहण एवं कृषि

(च) साहित्यिक अनुसंधान

विभिन्न अनुसंधान कार्यक्रमों के अन्तर्गत इस वर्ष किए गए कार्यों का संक्षिप्त विवरण आगे दिया गया है।

परिषद अपने संस्थानों तथा इकाईयों के बहिरंग व अन्तरंग रोगी विभागों के माध्यम से लोगों को चिकित्सा सुविधांए प्रदान कर रही है। इस वित्तीय वर्ष के दौरान 7,04,629 रोगियों का उपचार किया गया। इसमें नये तथा पुराने (सामान्य एवं अनुसंधान वाले) दोनों ही प्रकार के रोगी शामिल हैं।

यद्यपि स्थायी वित्तीय समिति की बैठक रखी गई, परन्तु वैज्ञानिक सलाहकार समिति की कोई बैठक नहीं हुई क्योंकि इस समिति का कार्यकाल मई,2000 में समाप्त हो गया।

नैदानिक अनुसंधान

देश भर में फैले 6 अनुसंधान संस्थानों तथा 13 इकाईयों में 28 रोग संबंधी परियोजनाओं तथा 13 औषध संबंधी परियोजनाओं पर नैदानिक अनुसंधान अध्ययन प्रगति पर है। यहां भारतीय जनसाधारण में आम तौर पर होने वाले रोगों तथा राष्ट्रीय स्वास्थ्य की दृष्टि से महत्वपूर्ण रोगों जैसे फाइलेरिया, मलेरिया एवं एच.आई.वी./एडस पर अध्ययन किया जा रहा है।

केन्द्रीय अनुसंधान संस्थान कोट्टायम में जुलाई 1991 से मार्च 2000 तक मंदबुद्धि बच्चों में आचरण दोष की परियोजना पर कार्य हुआ जिसका उद्देश्य मंदबुद्धि बच्चों में आचरण दोषों पर होम्योपैथिक चिकित्सा की प्रभावोत्पादकता का पता लगाना था। इस अवधि के दौरान 865 बच्चों पर अध्ययन किया गया। यह मंदबुद्धि बच्चे विशेष विद्यालयों से चुने गये जो इन बच्चों को शिक्षा–संबंधी विशेष सुविधायें प्रदान करते थे। वे मंदबुद्धि बच्चों को विशिष्ट कार्यक्रमों के द्वारा देशी कलाओं एवं व्यावसायिक प्रशिक्षण के लिए तैयार करते हैं। इन 865 बच्चों में से 18 गम्भीर मंदबुद्धि 323 मध्यम तथा 494 कम मंदबुद्धि के थे अधिकतर रोगी आनुवांशिक

कारक (प्रवर्तनपूर्व कारक), जटिल प्रसव के साथ–साथ निम्न आय वर्ग से सम्बन्धित थे। 482 रोगियों में सोरा सबसे प्रबल मियासम पाया गया। नियमित अनुवर्तन से पाया गया कि बैलाडोना, सल्फर, नक्स वोमिका, कैमोमिला, स्ट्रैमोनियम, वैरायटा कार्बोनिका, कैल्केरिया कार्बोनिका, हायोसायमस, पल्साटिला, ट्यूबरक्यूलाइनम, कैल्केरिया फासफोरिका तथा टैरन्टुला हिस्पैनिका होम्योपैथिक दवाओं की मदद से हम इन मंदबुद्धि बच्चों के आचरण को बदल सकते हैं। और उन्हें कुछ हद तक प्रशिक्षणीय एवं आत्मनिर्भर बना सकते हैं।

केन्द्रीय अनुसंधान संस्थान, कोट्टायम में 1997 से 2001 तक 98 मिरगी के रोगियों का अनुवर्तन किया गया तथा 72 रोगियों में परिवर्ती स्तर पर सुधार आया। इनमें से 54 रोगियों में अच्छा खासा सुधार आया, जिनमें से 31 रोगी ग्रैंड माल, 15 रोगी पेटिट माल, 5 रोगी लाक्षणिक एवं 2 उन्मत आक्षेप के थे। 16 रोगियों में मध्यम स्तर पर सुधार आया जिनमें से 8 रोगी ग्रैंड माल, 8 रोगी पेटिट माल के थे। 2 रोगियों मे निम्न स्तर पर सुधार आया जिनमें से 1 रोगी पेटिट माल तथा 1 रोगी जी.टी.सी.ई. का था। इन रोगियों में हायोसायमस 200, कैल्केरिया कार्बोनिका 200, 1 एम, बैलाडोना 200, नक्स वोमिका 30,200,1एम, नक्स मोस्केटा 1एम, कास्टिकम 30, लैकेसिस 30, आर्सेनिकम एल्बम 200 एवं स्ट्रैमोनियम 30 दवायें प्रभावकारी पाई गई।

15 दिसम्बर 1997 से पूर्वी उत्तरप्रदेश के जिला गोरखपुर (जहां जापानी मस्तिष्क ज्वर स्थानिक महामारी है) में जापानी मस्तिष्क ज्वर पर एक प्रारंभिक नियंत्रित अध्ययन प्रारम्भ किया गया। जिसका उददेश्य के.हो.अ.प. द्वारा 1991 में संचालित किए गए अध्ध्ययन को ध्यान में रखते हुए बैलाडोना 200 का जापानी मस्तिष्क ज्वर में रोग निरोधक के रूप में प्रभाव देखना है। इस अध्ययन के लिए एक अनुसंधान पूर्वलेख सूत्रबद्ध किया गया है। प्रारम्भ में इस अध्ययन में दो गांव शामिल किए गये (जहां पिछली महामारियों में जापानी मस्तिष्क ज्वर का प्रकोप बहुत अधिक था)। सभी स्कूली बच्चों को (जो अन्तर्वेशन तथा अपवर्जन मापदण्ड के भीतर आते थे) रोग की चरम सीमा वाले मौसम के एक महीने पहले रोगनिरोधक दवा, बैलाडोना 200 की एक खुराक/साप्ताहिक/मासिक दी गई। एक साथ दो पड़ौसी गावों (नियंत्रण के रूप में) का सर्वेक्षण किया गया।

इन दोनों वर्गों (रोगनिरोधक एवं नियंत्रण) का तीन महीने तक नियन्त्रित साप्ताहिक अनुवर्तन किया गया। इस अवधि के दौरान 1439 बच्चे नियंत्रण के रूप में रखे गये एवं 2043 बच्चों को रोगनिरोधक दवा दी गई। जिन रोगियों का अनुवर्तन किया गया उनमें से किसी में भी संक्रमण के लक्षण नहीं पाये गये। आम जनता को रोग की जानकारी देने के लिए हिन्दी में एक लघु पत्रिका छापी गई जिसमें रोग के कारणों, संवाहक, प्रसारण, मच्छर के विकसित होने के स्थान, मच्छर के काटने के कितने दिन बाद रोग के लक्षण उभरते है,एवं होम्योपैथिक रोगनिरोधक द्वारा कैसे ली जाए, के बारे में बताया गया।

नैदानिक अनुसंधान इकाई, संबलपुर (उड़ीसा) एक जनजातीय आंतरनिवास में चल रही दात्रलोहित कोशिका अरक्तता की परियोजना में यह देखा गया कि ब्रायोनिया 30,200,1 एम, रस टाक्स 200, 1एम, मैगनीशिया फास 6 एक्स, लाइकोपोडियम 30,200, कैल्केरिया कार्बोनिका 30,200,1एम, नैट्रम म्यूरैटिकम 30,200 वैनेडियम 30,200, चैलिडोनियम 30, ट्यूबरक्यूलाइनम 200 इत्यादि होम्योपैथिक दवाऐं रोग के लक्षणों को नियंत्रित करने में इस कदर समर्थ रही कि रोगी सालो तक लक्षणरहित बने रहे हैं।

दात्रलोहित कोशिका अरक्तता के 205 पुराने रोगियों में से 37 रोगी जिन्हे होम्योपैथिक उपचार से पूर्व रक्ताधान दिया गया था, उनमें से केवल 5 रोगियों को और आगे रक्ताधान की आवश्यकता पड़ी एवं 30 रोगियों को और अधिक रक्ताधान नहीं करवाना पड़ा। यह देखा गया कि जिन रोगियों में होम्योपैथिक औषधियों से सुधार आया, उन्हें अपने कष्टों के लिए कम तीव्र औषध जैसे कालमेघ मदर टिंचर की आवश्यकता पड़ी। 81 रोगियों में पिछले 1 से 3 सालों तक 9 रोगियों मे पिछले 3 से 5 सालों तक और 5 रोगियों में पिछले 5 से 9 सालों तक किसी भी कष्ट की पुनरावृति नहीं हुई।

गुजरात में भूकम्प पीड़ितों के लिए चिकित्सा सहायता

परिषद ने गुजरात में अहमदाबाद, भरूच और सूरत में भूकम्प से प्रभावित इलाकों में भूकम्प पीड़ितों को चिकित्सा सहायता प्रदान की। क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, मुम्बई से एक चिकित्सकों के दल को अहमदाबाद में प्रतिनियुक्त किया गया। 29.1.2001 एवं 30.1.2001 को लगभग 100 अस्थिअंग के रोगियों (जिनका आप्रेशन नहीं हुआ था/हुआ था) की परिचर्या की गई और उन्हे हड्डियों

के जल्दी जुडने और जख्म भरने के लिए होम्योपैथिक चिकित्सा प्रदान की गई। इनमें से कुछ रोगियों में अंतराकशेरूक सम्पीड़न, वातवक्ष, अधरांग आशिंकघात एवं अधरांगघात जैसी जटिलताऐं भी मौजूद थी। आरनिका, सिमफाइटम, हाइपैरिकम, ब्रायोनिया, लेकेसिस स्टैफीसैग्रिया होम्योपैथिक औषधियां रोगियों के कष्टों में राहत पहुंचाने में सहायक रही। यह रोगी सिविल अस्पताल, अहमदाबाद के संचालक द्वारा भेजे गए थे। इस दल ने दवाओं एवं सहायक कर्मचारियों के लिए स्थानीय होम्योपैथिक कालेज की प्रबंध समिति की सहायता ली। नैदानिक अनुसंधान इकाई, भरूच (के.हो.अ.प. के आधीन) से आये एक दल ने भरूच एवं सूरत के प्रभावित इलाकों में भूकम्प पीड़ितों को चिकित्सा सहायता प्रदान की। इस दल ने जिला पंचायत के चिकित्सकों से संपर्क किया एवं सब से बुरी तरह से प्रभावित जम्बूसर तालुका गांव की पहचान की गई जहां 9 लोगों की मौत हो गई थी और लगभग 100 लोग घरों और इमारतों के ढह जाने से घायल हो गये थे। इस गांव में 31 जनवरी से 1 फरवरी 2001 तक खरोंचों, आघात, छोटी–मोटी चोटों, भय मनोविकृति जैसे अनेक कष्टों के लिए 110 रोगियों को होम्योपैथिक चिकित्सा प्रदान की गई और भरूच में 29 एवं 30 जनवरी 2001 को 118 रोगियों का उपचार किया गया।

जनजातीय क्षेत्रों में नैदानिक अनुसंधान

सर्वेक्षण के दौरान देश के विभिन्न जनजातीय आंतरनिवासों में सर्वाधिक व्यापक जिन 18 सामान्य रोगों की पहचान की गई थी, उन पर नैदानिक अनुसंधान इस वर्ष भी जारी रहा। कुछ रोगों जैसे अमीबा–रूग्णता, पेचिश, कृमिरोग, अस्थिसंधिशोथ, नासाशोथ इत्यादि में निर्धारित की गई दवाओं के समूह में से सबसे प्रभावकारी दवाओं की पहचान की गई है। इन दवाओं के विश्वसनीय लक्षणों की भी पहचान की गई है परन्तु इनका और अधिक नैदानिक प्रमाणीकरण किया जा रहा है।

औषध परीक्षण

औषध परीक्षण अथवा होम्योपैथिक रोगोत्पादक परीक्षण (एच.पी.टी.) इस परिषद की सबसे महत्वपूर्ण गतिविधि है। परिषद ने होम्योपैथिक रोगोत्पादक परीक्षण के लिए डबल ब्लाईंड तकनीक की योजना तथा पूर्वलेख विकसित किया है जिसे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी स्वीकार किया गया है तथा एच.पी.टी. से लक्षण प्राप्त करने की प्रक्रिया को भी मानकित किया गया है। इस प्रणाली विज्ञान की सफलता का मूल्यांकन रोगजनन परीक्षण के नैदानिक सत्यापन अध्ययन से किया जा सकता है जिसमें कई लक्षण, जिन पर नुस्खा आधारित होता है, बार–बार सत्यापित हो रहे हैं। परिषद ने अपनी योजना के अन्तर्गत केवल स्वदेशी दवाओं तथा आंशिक रूप से प्रमाणित दवाओं के परीक्षण पर जोर दिया है। अभी तक ऐसी 58 दवाओं का परीक्षण हो चुका है। इस वर्ष में चार दवाओं का परीक्षण (दो लम्बी अवधि के परीक्षण कोड नम्बर 65, 67 एवं दो कम अवधि के परीक्षण कोड नं0 66, 71) पूर्ण किया जा चुका है। कोरनुअस सरसिनेटा ट्रीबुलस टैरेसट्रिस तथा ओसिमम सैकटम के परीक्षण आंकड़ों का संकलन कर लिया गया है तथा इसे केन्द्रीय होम्योपैथिक अनुसंधान परिषद की वैज्ञानिक सलाहकार समिति के समक्ष आने वाली बैठक में अनुमोदन के लिए रखा जाएगा। बाकि दवाओं के परीक्षण आंकड़ों का संकलन अभी चल रहा है।

नैदानिक सत्यापन

65 औषधियों की लाक्षणिकी का नैदानिक सत्यापन किया जा रहा है ताकि उनके सबसे विश्वसनीय लक्षणों, जिन के आधार पर नुस्खा लिखा जाता है, तथा सबसे प्रभावकारी पौटेंसियों को स्पष्ट किया जा सके। उन्हीं औषधियों का अध्ययन किया जा रहा है जिनका या तो के.हो.अ.प. द्वारा अपने औषध परीक्षण केन्द्रों पर परीक्षण हो चुका है अथवा जो आंशिक रूप से प्रमाणित है। इनमें से ज्यादातर स्वदेशी मूल की है। इस वर्ष में इस कार्यक्रम में कार्यरत इकाईयों एवं संस्थानों में कुल 12,685 रोगी पंजीकृत किये गये हैं। इन औषधियों के नैदानिक सत्यापन आंकडों का प्रचार समय–समय पर के.हो.अ.प. की त्रैमासिक पत्रिका/के.हो.अ.प. समाचार में प्रकाशित करके अथवा सम्मेलनों, सेमिनारों तथा कार्यशिविरों के माध्यम से किया जाता है ताकि इन्हें व्यवसाय में इस्तेमाल किया जा सके। कुछ विशेष नैदानिक अवस्थाओं के ऐसे आंकड़ों को त्रैमासिक पत्रिका के खंड 21 (1 तथा 2) एवं खंड 21 (3 तथा 4) 1999 अंक में प्रकाशित किया गया है।

औषध अनुसंधान

1. औषध मानकीकरण

औषधियों के विभिन्न गुणात्मक लक्षणों के अध्ययन के लिए एक बहुआयामी अभिगम, जिसमें भेषज अभिज्ञान, भौतिक रासायनिक तथा भेषज गुणविज्ञान के पैरामीटर सम्मिलित है, को शामिल किया गया है। इस वर्ष में इस कार्यक्रम में कार्यरत इकाईयों एवं संस्थानो में 8 औषधियों के भेषज अभिज्ञान तथा भौतिक रासायनिक मानदण्ड निर्धारित किए गए है।

2. औषधीय पादपों का संग्रहण, सर्वेक्षण तथा कृषि

उद्यागमंडलम (ऊटी), तमिलनाडू में स्थित इकाई सर्वेक्षण के पश्चात औषधीय पादपों की पहचान तथा संग्रहण करके उनके अपरिष्कृत नमूने मानकीकरण अध्ययन करने वाले संस्थानों/इकाईयों को भेजती है। इस वर्ष इस इकाई ने ऊटी के साथ लगने वाले क्षेत्रों तथा नीलगिरि पहाड़ियों में पाए जाने वाले 428 पादपों के नमूनों का संग्रहण किया, उद्भिज संग्रह के लिए 257 क्षेत्र संख्या का संग्रहण किया जिससे चालू क्षेत्र संख्या बढ़ कर 7,344 हो गई और 330 क्षेत्र संख्याओं की पहचान एवं प्रमाणीकरण किया तथा 18 अपरिष्कृत औषधीय पादप सामग्रियां मानकीकरण अध्ययन के लिए भेजी। इसके अतिरिक्त प्रयोग के लिए तथा होम्योपैथी में प्रयोग होने वाले औषधीय पादपों (विशेषतया विदेशी) की लघु स्तर पर कृषि के लिए तमिलनाडु सरकार से पट्टे पर ली गई 12 7 एकड़ भूमी पर एक औषधीय पादप उद्यान विकसित किया जा रहा है। सिनरेरिया मैरिटिमा, डिजीटैलिस परप्यूरिया, एकिलिया मिलिफोलियम सैनटोलिना कैनेसाईपैरिसस, वायला आडोरेटा, रोसामैरिनस ओफिसिनैलिस तथा सिल्विया ओफिसिनैलिस का नियमित रोपण, छटाई, नर्सरी, उगाना, अनुरक्षण तथा रखरखाव किया जा रहा है। प्रदर्शन–भूंखडों पर उपजाए गये 5 पौधों के जननद्रव्य के संग्रह की भी देखभाल की जा रही है तथा बृहत् स्तर पर उनकी कृषि के लिए उनके निष्पादन का अध्ययन किया जा रहा है।

साहित्यिक अनुसंधान

साहित्यिक अनुसंधान कार्यक्रम में परिषद् ने "कैन्ट (कुन्जली) की रैपर्टरी का पुनरवलोकन एवं संशोधन–अन्य कार्यों के संबंध में बोरिक रैपरट्री से कैन्ट रैपटरी में अभिवर्द्धन" परियोजना के अन्तर्गत कैन्ट की रैपरट्री को संशोधित करने का उत्तरदायित्व लिया है। अभी तक 15 अध्यायों का संशोधन तथा प्रकाशन किया गया है। इस अवधि के दौरान नर रैपेरट्री से "टिशूस" अध्याय तथा बोगर – बोनिंगहासन रैपेरट्री से "चन्द्र अवस्थाऐं" कैंट रैपरट्री में शामिल करने के लिए पूर्ण किए जा चुके हैं। वैज्ञानिक सलाहकार समिति के विचाराधीन होने की वजह से इस परियोजना पर और अधिक कार्य नहीं किया जा रहा है।

के.हो.अ.प. की त्रैमासिक पत्रिका के विशेष अंक का विमोचन

26 मार्च 2001 को "सांख्यिकी एवं अनुसंधान प्रणाली" की कार्यशाला के उद्घाटन के अवसर पर डा0 जुगल किशोर द्वारा औषध मानकीकरण पर के.हो.अ.प. की त्रैमासिक पत्रिका के विशेष अंक का विमोचन किया गया। यह पत्रिका भारतीय चिकित्सा पद्धतियों एवं होम्योपैथी में उपयोग में लाये जाने वाले देशी औषधीय पौधों के डैटाबेस बैक बनाये जाने की श्रृंखला में अपने आप में पहली पत्रिका है। इसमें 6 औषधीय पौधों का विवरण दिया गया है अर्थात एकालिफा इंडिका, एन्ड्रोग्राफिस पैनीक्यूलेटा, अर्केसिया नाइलोटिका, सिसलपीनिया बोन्डुसेला, सिंट्रूलस केलोसिन्थिस तथा मोमोरंडिका चैरेन्सिया के वानस्पतिक व देशी नाम, भारत में वितरण, वानस्पतिक विशेषताओं, महत्वपूण प्रभावों, भारतीय चिकित्सा पद्धतियों एवं होम्योपैथी में इनके उपयोगों, भेषज अभिज्ञान संबधित लक्षणों, रासायनिक अवयवों, रासायनिक क्रियाओं, विष–विज्ञान, चिकित्सीय मूल्यांकन, वाणिज्य एवं व्यापार, अनुकल्पों एवं मिलावटों तथा कृषि तकनीकों से संबंधित सभी पहलुओ का विवरण किया गया है। यह पत्रिका परिषद् के वेब साईट डबल्यू.डबल्यू. सी.सी.आर.एच. इंडिया ओ.आर.जी. पर भी उपलब्ध है।

के.हो.अ.प. की त्रैमासिक पत्रिकाओं (खण्ड 1 से खण्ड 21 तक) में प्रकाशित किए गये विभिन्न अनुसंधान लेखों का विवरण भी वेबसाईट पर उपलब्ध है।

प्रकाशन

परिषद के सबसे प्रसिद्ध प्रकाशन – "ए हैंडबुक आफ होम रैमेडीस इन होम्योपैथी" तथा "सामान्य होम्योपैथी उपचार पुस्तिका" का पुनः प्रकाशन किया गया और चौपन्नों अर्थात "मलेरिया से बचाव एवं उपचार", होम्योपैथी तथ्य एवं भ्रांतियां, "होम्योपैथी का समष्टि उपगम", "होम्योपैथी द्वारा मोतियाबिंद से बचाव" तथा "मातृ एवं शिशु देखभाल" का भी पुनः प्रकाशन किया गया।

इस वर्ष के दौरान हिन्दी में एक 16 पृष्ठों की पत्रिका, जिसमें होम्योपैथी में उपयोग में लाए जाने वाले 14 भारतीय चिकेत्सीय पौधों एवं उनके नैदानिक लक्षणों का विवरण है, का प्रकाशन किया गया।

नौकरी के दौरान प्रशिक्षण कार्यक्रम

परिषद द्वारा इसके मुख्यालय जनकपुरी, नई दिल्ली में 26–27 मार्च 2001 को "अनुसंधान प्रणाली विज्ञान एवं सांख्यिकी" पर दो दिन की कार्यशाला का आयोजन किया गया। यह कार्यशाला श्रृंखला में द्वितीय थी तथा इसमें परिषद के विभिन्न संस्थानों एवं इकाईयों में कार्यरत चालीस सहायक अनुसंधान अधिकारियों ने भाग लिया। यह कार्यशाला अपनी शंकाओं के स्पष्टीकरण तथा निर्दिष्ट अनुसंधान परियोजनाओं के लिए अनुसंधान मापदण्ड तैयार करने हेतु आयोजित एक तरह का सम्पर्क कार्यक्रम था। सभी व्याख्यान सूचनात्मक एवं ज्ञानप्रद थे। हर सत्र के अन्त में अर्थपूर्ण परिचर्चा हुई।

आयोजित किए गए/हिस्सा लिए गए सेमिनार/कार्यशिविर/प्रदर्शनियां

परिषद के अनुसंधान अधिकारियों ने विभिन्न होम्योपैथिक संगठनों द्वारा आयोजित अनेक राष्ट्रीय एवं अन्तरराष्ट्रीय सम्मेलनों/सेमिनारो/कार्यशालाओं में हिस्सा लिया तथा परिषद की गतिविधियों एवं उपलब्धियों पर वैज्ञानिक दस्तावेज प्रस्तुत किए गए।

स्वास्थ्य मेले

स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय ने स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग एवं भारतीय चिकित्सा पद्धतियों एवं होम्योपैथी विभाग के साथ संयुक्त भागीदारी में भारत के विभिन्न राज्यों में स्वास्थ्य मेले आयोजित करने की योजना बनाई जिसका उद्देश्य राष्ट्रीय जनसंख्या पालिसी के प्रचार एवं समर्थन को सुधारने के साथ साथ राष्ट्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण कार्यक्रमों अर्थात प्रजनन एवं शिशु स्वास्थ्य, एच.आई.वी./एडस, तथा मलेरिया, उन्मूलन, नेत्रहीनता नियंत्रण, कुष्ठरोग तथा तपेदिक एवं इन सबके आगे पीछे के संबंधों के अर्न्तगत बढ़ती जानकारी को प्रोत्साहन देना था। के.हो.अ.प. ने जिन स्वास्थ्य मेलों में हिस्सा लिया उनका विवरण इस प्रकार है: 17 से 20 सितम्बर 2000 तक मथुरा (उत्तर प्रदेश) में , 16 से 25 अक्तूबर 2000 तक हार्ट केयर फाऊंडेशन आफ इंडिया एवं भारत सरकार द्वारा लाल किला मैदान में आयोजित परफैक्ट हैल्थ मेला, 17 से 23 अक्तूबर 2000 तक स्वदेशी मेला, नई दिल्ली, 19 नवम्बर 2000 को राष्ट्रीय स्वास्थ्य मेला 2000, पटना (बिहार), 31 जनवरी से 4 फरवरी 2001 तक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मेला, लखनऊ, 16 फरवरी 2001 को स्वदेशी इंडस्ट्रियल फेयर 2001, कोयाम्बटूर तथा 4 मार्च 2001 को पेराम्बालूर (तमिलनाडू)। मेलों में बहुत बड़ी संख्या में लोग आये तथा उन्होंने के.हो.अ.प.द्वारा दी जा रही चिकित्सा सुविधाओं का लाभ उठाया। परिषद द्वारा होम्योपैथी के विभिन्न पहलूओं पर प्रकाशित साहित्य भी आम जनता में मुफ्त वितरित किया गया।

प्रदर्शनियां

परिषद ने 14 से 27 नवम्बर 2000 तक आयोजित भारतीय अंतराष्ट्रीय व्यापार मेले, नई दिल्ली में अपनी गतिविधियों एवं उपलब्धियों को दर्शाती एक प्रदर्शनी का आयोजन किया तथा आम जनता को मुफ्त परामर्श सुविधा भी प्रदान की। परिषद ने "हर्बो 2000" नई दिल्ली में 14 से 27 नवम्बर 2000 तक होम्योपैथी में उपयोग में लाए जाने वाले चिकित्सीय पादपों की प्रदर्शनी का भी आयोजन किया जिसमें इन पौधों को छायाचित्रों, उद्भिज–संग्रह पत्रों तथा अपरिष्कृत औषधीय नमूनों के रूप में दर्शाया गया था। इन प्रदर्शनी में बहुत बड़ी संख्या में लोग आये तथा चिकित्सीय पौधों की कृषि, उपयोग, इस्तेमाल में लाये जाने वाले अंश एवं उनके चिकित्सीय महत्व से संबंधित शकाओं का भी स्पष्टीकरण किया गया।

19 मई 2001 को कानपुर में भारतीय चिकित्सा पद्धति समरक्षण परिषद द्वारा आयोजित भारतीय चिकित्सा पद्धतियों एवं होम्योपैथी पर प्रदर्शनी एवं सेमिनार के अवसर पर भी एक प्रदर्शनी लगाई गई।

इलाहाबाद में 7 जनवरी 2001 से 23 फरवरी 2001 तक लगाये गये महा कुंभ मेले के अवसर पर के.हो.अ.प. ने डी.ए.वी.पी. के सहयोग से आयोजित एक प्रदर्शनी में भाग लिया। दर्शकों को विभिन्न स्वास्थ्य विषयों के बारे में शिक्षा देने के लिए बारी–बारी से परिषद के अधिकारियों को प्रतिनियुक्त किया गया।। प्रदर्शनी का मुख्य हिस्सा मातृ एवं शिशु देखभाल का था जिसमें प्रसव से पूर्व, प्रसव के बाद की तथा नवजात शिशुओं की समस्याओं को दर्शाते पैनलों का प्रदर्शन किया गया। प्रतिनियुक्त किए गए चिकित्सकों द्वारा आने वाले लोगों को मुफ्त परामर्श दिया गया।

बजट

[illegible] 2001 में परिषद का वास्तविक [illegible] योजनागत एवं योजनातेर के अन्तर्गत [illegible] लाख रुपये था।

बैठकें

स्थायी वित्तीय समिति

स्थायी वित्तीय समिति की 36वीं बैठक होम्योपैथिक नई दिल्ली में भारतीय चिकित्सा पद्धति एवं होम्योपैथी विभाग के संयुक्त सचिव श्री एल. प्रसाद की अध्यक्षता में 11 जून 2000 को हुई। इस समिति ने वर्ष 2000–2001 के बज़ट (योजना एवं योजनातेर दोनो) के अनुमानित खर्च, के.हो.अ.प. के वर्ष 1998–99 के वार्षिक लेखा, प्रूवर शुल्क को 10 रूपये प्रति निरीक्षण से बढ़ा कर 20 रूपये प्रति निरीक्षण करना बशर्ते कि यह 300 रूपये प्रति माह से अधिक न हो, औषधीय पादप सर्वेक्षण एवं संग्रहण इकाई, ऊटी के वाहन को बदलना, केन्द्रीय अनुसंधान संस्थान, कोट्टायम की इमारत की मुरम्मत के लिए अपेक्षित अतिरिक्त राशि एवं के.हो.अ.प. के पुस्तकालय में पुस्तकालय परिचारक के पद का सर्जन, के प्रस्तावों पर विचार किया तथा इन्हें अनुमोदित किया।

सेमिनार / सम्मेलन / कांग्रेसे

मलेरिया में "एक्यूपंक्चर, ओरिएंटल एवं आलटरनेटिव मेडिसिन" पर द्वितीय एशिया पैसिफिक सम्मेलन

केन्द्रीय होम्योपैथिक अनुसंधान परिषद के निदेशक, डा.आर.शॉ ने 3 से 5 सितम्बर 2000 तक कोटा बारू, मलेशिया में एक्यूपंक्चर, ओरिएंटल एवं आलटरनेटिव मेडिसिन" पर आयोजित द्वितीय एशिया पैसिफिक सम्मेलन में हिस्सा लिया। इस सम्मेलन [illegible] विश्व भर से आये वैकल्पिक चिकित्सा प्रणालियों के विशेषज्ञों ने हिस्सा लिया। डा. आर शॉ ने "मनोविकृति" स्किजोफ्रेनिया में [illegible]म्योपैथी की भूमिका" पर एक लेख प्रस्तुत किया जो कि केन्द्रीय अनुसंधान संस्थान, कोट्टायम, केरल में उपचारित 50 अच्छी तरह निदान किए हुए स्किजोफ्रेनियां के रोगियों के प्रतिवेदन पर आधारित था। इस लेख का उद्देश्य 1988 से 1990 तक इस संस्थान [illegible] अन्तरंग रोगी विभाग में होम्योपैथिक चिकित्सा से उपचारित रोगियों का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत करना था। यह लेख के.हो.अ.प. [illegible] त्रैमासिक पत्रिका के आने वाले अंक में प्रकाशित किया जाएगा।

[illegible]डियन इंस्टिटयूशन आफ होम्योपैथिक फिज़िशियन नैशनल कांग्रेस, नई दिल्ली

श्री ए.राजा, स्वास्थ्य एवं कल्याण राज्य मंत्री ने 17 अक्तूबर को चिनमाया मिशन आडिटोरियम, लोधी रोड, नई दिल्ली में तीन [illegible] की आठवी नेशनल कांग्रेस आफ इंडियन इंस्टीटयूट आफ होम्योपैथिक फिज़िशियन का उदघाटन किया। इस कांग्रेस के सत्र [illegible]े 19 नवम्बर 2000 तक थे तथा इसका मूल विषय "होम्योपैथी इन न्यू मिलिनियम" था। इसमें डा. वी.पी.सिंह ने मुम्बई चेन्नई, [illegible]देल्ली में किए जा रहे एच.आई.वी. / एडस पर होम्योपैथिक दवाओं के नैदानिक परीक्षणों पर एक लेख प्रस्तुत किया।

[illegible]न होम्योपैथिक आर्गेनाइजे़शन सेमिनार, इलाहाबाद

[illegible]डियन होम्योपैथिक आर्गेनाइजे़शन, जिसके अध्यक्ष डा. आर. के. कपूर है और के.हो.अ.प. की वैज्ञानिक सलाहकार समिति के [illegible]अध्यक्ष रह चुके है, ने आई.एच.ओ. की मुख्य इकाई, इलाहाबाद, उ.प्र. राज्य शाखा के संरक्षण में 24 से 26 दिसम्बर 2000 [illegible] तीन दिन की आल इंडिया होम्योपैथिक मैडिकल कांग्रेस का आयोजन किया। इस कांग्रेस में सारे देश से 500 होम्योपैथिक [illegible]चकित्सक उपरिथत थे। के.हो.अ.प. के मुख्यालय से अधिकारियों ने भी इस कांग्रेस में भाग लिया। वैज्ञानिक सत्रों में, इंसेन्शियल हाइपरटैंशन, संधिशोथ में होम्योपैथी की भूमिका, केवल रोगियों के कथन पर मानसिक लक्षणों पर आधारित नुस्खा लिखे जाने की बाजीगरी तथा मियासमैटिक एप्रौच एवं इसका होम्योपैथिक इंडैक्स, पर प्रस्तुतीकरण सम्मिलित किये गये। डा. प्रमोद जी सिंह, सहायक अनुसंधान अधिकारी ने "क्लीनिकल एक्सपीरिएसिस आन द ट्रीटमेंट आफ आर्थराइटिस" पर एक लेख प्रस्तुत किया जिसमे के.हो.अ.प. के नैदानिक सत्यापन इकाई, वृन्दावन में किए गये कार्य का विवरण दिया गया।

संकामक रोगों पर राष्ट्रीय कार्यशाला, हैदराबाद

भारतीय चिकित्सा पद्धतियां एवं होम्योपैथी विभाग, आंध्रप्रदेश सरकार ने 23 एवं 24 जनवरी 2001 को ओसमानिया विश्वविद्यालय के मैदान, हैदराबाद (आंध्रप्रदेश) में "संक्रामक रोगों पर राष्ट्रीय कार्यशाला –होम्योपैथी द्वारा रोकथाम का आयोजन किया। इस कार्यशाला का आयोजन भारतीय चिकित्सा पद्धतियां एवं होम्योपैथी विभाग, भारत सरकार द्वारा दी गई वित्तीय सहायता

से किया गया तथा इसमें भाग लेने आये 300 सदस्य राज्य सरकार होम्योपैथिक औषधालयों, होम्योपैथिक मैडिकल कालेजों, परिषत्सदस्यों में से थे।" के.हो.अ.प. से आया एक शिष्टमंडल भी इस कार्यशाला में शामिल हुआ तथा उन्होंने वार्ता में हिस्सा लिया। इस कार्यशाला का उद्देश्य आंध्रप्रदेश में "होम्योपैथी द्वारा जापानी मस्तिष्क ज्वर की रोकथाम" कार्यक्रम को मिली जबरदस्त प्रतिक्रिया को ध्यान में रखते हुये एक ऐसी योजना बनाना था जिससे होम्योपैथिक के विशाल ढांचे को महामारियों की रोकथाम एवं प्रभावशाली नियंत्रण के लिए इस्तेमाल किया जा सके। इस कार्यशाला में पांच संक्रामक रोगों अर्थात जापानी मस्तिष्क ज्वर, जठरांत्रशोथ, मलेरिया, खसरा एवं संक्रामक जिगरशोथ पर विचारविमर्श किया गया तथा इन रोगों पर वार्ता के लिए कार्यदलों का गठन किया गया। स्थानीय महामारी वाले क्षेत्रों में उपर्युक्त रोगों के रोगनिरोधन के वितरण हेतु भारतीय चिकित्सा पद्धतियां एवं होम्योपैथी विभाग, आंध्रपदेश सरकार को कई सुझाव भी पेश किय गये।

जराचिकित्सा में होम्योपैथी पर राष्ट्रीय सेमिनार, भुवनेश्वर

के.हो.अ.प. मुख्यालय से डा. वी.पी. सिंह, सहायक निदेशक तथा फाइलेरिया के लिये होम्योपैथिक अनुसंधान संस्थान, (उड़ीसा) से डा0 (श्रीमती) एन. मिश्रा, प्रभारी अनुसंधान अधिकारी ने 15 से 17 फरवरी 2001 तक भुवनेश्वर में आयोजित "जराचिकित्सा में होम्योपैथी" पर राष्ट्रीय सेमिनार में भाग लिया इस सेमिनार का आयोजन डा. ए.सी. होम्योपैथिक मैडिकल कालेज एवं अस्पताल, भुवनेश्वर, उड़ीसा द्वारा भारतीय चिकित्सा पद्धतियां एवं होम्योपैथी विभाग, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार के स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग, उड़ीसा सरकार द्वारा दी गई वित्तीय सहायता से किया गया। डा. वी. पी. सिंह ने अपने वैज्ञानिक सत्र में परिषद द्वारा किये जा रहे "एच.आई.वी./एडस पर होम्योपैथिक दवाओं के नैदानिक परीक्षण" पर एक प्रस्तुतीकरण किया और विदाई के सत्र में परिषद की गतिविधियों एवं उपलब्धियों का संक्षिप्त विवरण भी दिया। उन्होंने डा. ए.सी.सरकार होम्योपैथिक मैडिकल कालेज के प्रध्यापक वर्ग एवं अंतिम वर्ष के विद्यार्थियों के साथ एच.आई.वी./एडस की नैदानिक देखरेख होम्योपैथिक दवाओं एवं अन्य प्रतिरक्षा को बढ़ाने वाले साधनों की भूमिका, के बारे में अपने अनुभवों को बांटा।

कुष्ठरोग पर कार्यशाला, दुर्गापुर

17 फरवरी 2001 को दुर्गापुर में आयोजित "कुष्ठरोग पर कार्यशाला" में औषध प्रमाणन अनुसंधान इकाई मिदनापुर के प्रभारी अनुसंधान अधिकारी डा. पी. सी. माल में भाग लिया। यह कार्यशाला विज्ञान एवं प्रोद्योगिकी विभाग द्वारा प्रवर्तित थी एवं इसका आयोजन सोसायटी फॉर वैल्फयर आफ हैडीकैपड पर्सनस, दुर्गापुर स्टील सिटी, पश्चिमी बंगाल द्वारा किया गया। इस समिति दुर्गापुर एवं उसके आसपास के गांवों की जनजातीय आबादी के लिए (जो कुष्ठ रोग से विकलांग हुए है) होम्योपैथिक दवाओं द्वारा उपचार एवं रोकथाम कार्यक्रम चलाने का उत्तरदायित्व लिया है। इस तरह से इस समिति द्वारा यह जानने का प्रयास किया गया कि क्या होम्योपैथी द्वारा प्रभावशाली परिणाम मिल सकते है या नहीं। विशेषतया वैज्ञानिक समाज एवं आम जनता के समक्ष विषय पर किये गये पांच वर्ष के अध्ययन के परिणामों को प्रस्तुत करने के लिये इस कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में कुष्ठ विज्ञानिओं, उत्तक रोग विज्ञानिओं, समाज सेवकों, पंचायत प्रधानों, रोगियों (प्रभावित एवं उपचारित दोनों) इत्यादि ने हिस्सा लिया। इस कार्यशाला के प्रथम सत्र में कुष्ठ व्रण के जिन रोगियों को उपचार से लाभ पहुंचा, उनका दृश्य–श्रव्य प्रस्तुतीकरण किया गया। होम्योपैथिक दवाओं के नाम नहीं बताये गये परन्तु यह कहा गया कि नुस्खा होम्योपैथिक सिद्धांतों पर आधारित तथा दी गई दवाऐं एंटी–मियासमैटिक, एन्टीसिफिलिटिक एवं एंटीसाइकोटिक थी। कार्यशाला के दूसरे सत्र में जिन रोगियों सफलता मिली, उनका व्यक्तिरूप से प्रस्तुतीकरण किया गया तथा तीसरे सत्र में भाग लेने वालों ने प्रभावित क्षेत्रों का दौरा किया हर सत्र के अंत में विचार विमर्श किया गया। कार्यशाला समिति की गतिविधियों पर केन्द्रित रही और इसमें अन्य कोई भी वैज्ञानिक प्रस्तुतीकरण नहीं किया गया। जो भी ऑकड़े प्रस्तुत किये गये वे प्रामाणिक एवं महत्वपूर्ण थे। इस कार्य के बारे में और आगे परीक्षण करके इसे विकसित किया जा सकता है।

दिल्ली विश्वविद्यालय

श्रीमती जे. राज, अनुसंधान अधिकारी (भेषज अभिज्ञान) औषध मानकीकरण इकाई, गाजियाबाद, ने दिल्ली यूनिवर्सिटी बोटैनिकल सोसाइटी वानस्पतिक विज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा एन.आई.एस.ए. नई दिल्ली में आयोजित "सिम्पोजियम आन बायोटैक्नोलाजिकल इन्नोवेशनस इन कन्सरवेशन एन्ड एनैलिसिस आफ पलांट ड्राइवर्सिटी" में 7 से 9 फरवरी 2001 तक हिस्सा

लिया। इसमें स्वतःपोषित साथ में विकसित होने वाली विभिन्न जातियों की आबादी के संरक्षण के लिए आदिम आवासों के बचाव की आवश्यकता तथा संकट में पड़ी जातियों के जननद्रव्य को सुरक्षित रखने वाले जीव प्रोद्योगिकी साधनों की आवश्यकता के बारे में जानकारी प्राप्त की गई। वातावरण के अनुकूल ऐसी व्यवस्थाओं एवं उत्पाद का अविष्कार करने की आवश्यकता है जिससे प्राकृतिक वनस्पति आबादी पर बिना किसी अनावश्यक दबाव के मनुष्य की आवश्यकताओं को पूरा किया जा सके।

लखनऊ

16 से 18 सितम्बर 2000 तक औषधीय एवं सुगंधित पौधों के केन्द्रीय संस्थान, सी.एच.आई.आर., लखनऊ में "फरन्टीयर्स आफ रिसर्च एन्ड डिवेल्पमेंट इन मेडिसिनल पलांटस" पर एक राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया गया। अनेकों श्रेष्ठ अनुसंधान विज्ञानियों, इंजीनियरों एवं उद्योग से संबंधित कार्यकर्ताओं ने भारतीय औषधीय पादप उत्पादों को सुधारने के विभिन्न अभिगमों पर विचारविमर्श किया। एच.डी.आर.आई. लखनऊ से डा0 पी0 सुब्राम्णयम, अनुसंधान अधिकारी (रासायन विज्ञान) ने "स्टैंडर्डाइजेशन एन्ड क्वालिटी कंट्रोल इन होम्योपैथिक मेडिसिनल प्लांटस" पर एक लेख प्रस्तुत किया तथा डा. एच.सी. गुप्ता, सहायक अनुसंधान अधिकारी (भेषज अभिज्ञान), एच.डी.आर.आई. लखनऊ ने "प्रासपैक्टिवस आफ मेडिसिनल प्लांटस इम्पलायड इन होम्योपैथी" पर प्रज्ञापक लेख प्रस्तुत किया। औषध मानकीकरण इकाई (हो.), गाजियाबाद से श्रीमती जे.राज, अनुसंधान अधिकारी (भेषज अभिज्ञान) ने भी इस सेमिनार में हिस्सा लिया।

स्वास्थ्य मेले

स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण संघीय मंत्री डा. सी. पी. ठाकुर ने यह घोषणा की थी राष्ट्रीय जनसंख्या पालिसी के प्रचार एवं समर्थन को सुधारने के साथ साथ राष्ट्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण कार्यक्रमों अर्थात प्रजनन एवं शिशु स्वास्थ्य, एच.आई.वी./एडस, तथा मलेरिया, उन्मूलन, नेत्रहीनता नियंत्रण, कुष्ठरोग तथा तपेदिक एवं इन सबके आगे पीछे के संबंधों के अर्न्तगत बढ़ती जानकारी को प्रोत्साहन देना था तथा स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय ने स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग एवं भारतीय चिकित्सा पद्धतियों एवं होम्योपैथी विभाग के संयुक्त भागीदारी में भारत के विभिन्न राज्यों में स्वास्थ्य मेले आयोजित करने की योजना बनाई।

के.हो.अ.प. ने जिन स्वास्थ्य मेलों में हिस्सा लिया उनका विवरण इस प्रकार है: 17 से 20 सितम्बर 2000 तक मथुरा (उत्तर प्रदेश) में, 16 से 25 अक्तूबर 2000 तक हार्ट केयर फाऊंडेशन आफ इंडिया एवं भारत सरकार द्वारा लाल किला मैदान में आयोजित परफैक्ट हैल्थ मेला, 17 से 23 अक्तूबर 2000 तक स्वदेशी मेला, नई दिल्ली, 19 नवम्बर 2000 को राष्ट्रीय स्वास्थ्य मेला 2000, पटना (बिहार), 31 जनवरी से 4 फरवरी 2001 तक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मेला, लखनऊ, 16 फरवरी 2001 को स्वदेशी इंडस्ट्रियल फेयर 2001, कोयाम्बटूर तथा 4 मार्च 2001 को पेराम्बालूर (तमिलनाडू)। मेलों में बहुत बड़ी संख्या में लोग आये तथा उन्होंने के.हो.अ.प.द्वारा दी जा रही चिकित्सा सुविधाओं का लाभ उठाया। परिषद द्वारा होम्योपैथी के विभिन्न पहलूओं पर प्रकाशित साहित्य भी आम जनता में मुफ़्त वितरित किया गया।

प्रदर्शनियां

आई.आई.टी.एफ. 2000

भारतीय चिकित्सा पद्धतियां एवं होम्योपैथी विभाग, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार ने भारतीय अंतरराष्ट्रीय व्यापार मेला 2000 में हिस्सा लिया जिसका आयोजन 14 से 27 नवम्बर 2000 तक, प्रगति मैदान, नई दिल्ली में किया गया। के.हो.अ.प. ने विभिन्न रोगों जैसे कि फाइलेरिया, मलेरिया, एच.आई.वी./एडस में परिषद की उपलब्धियों तथा होम्योपैथिक सिद्धांतों, सामान्य रोगों में होम्योपैथी की उपयोगिता इत्यादि को दर्शाते विज्ञापनों एवं तालिकाओं का प्रदर्शन किया। प्रदर्शनी के दौरान मुफ्त होम्योपैथिक परामर्श का इंतजाम भी किया गया और चर्मरोगों, एलर्जी, श्वास विकारों, उदर रोगों इत्यादि से पीड़ित रोगियों को होम्योपैथिक दवाऐं भी दी गई। लगभग 1000 लोगों ने इस मौके से फायदा उठाया।

एक दूसरे को प्रभावित करने तथा वेहतर स्वास्थ्य देखभाल के लिए व्यावसायिक अवसरों एव राभावनाओं की छानबीन [illegible] के लिए प्रगति मैदान, नई दिल्ली में आयोजित भारतीय अंतरराष्ट्रीय व्यवसाय मेले में 14 से 27 नवम्वर 2000 तक "हर्बो [illegible] इंटरनेशनल कांग्रेस एन्ड वर्कशाप" का आयोजन किया गया। इसका आयोजन संयुक्त रूप से हर्बल [illegible] फाउंडनेशन, वि[illegible] एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय (डी.एस.आई.आर. तथा इंडियन ट्रेड प्रमोशन आर्गनाइजेशन द्वारा किया गया।

के.हो.अ.प. की ओर से औषधीय पादप सर्वेक्षण एवं संग्रहण इकाई, ऊटी (तमिलनाड़) ने "हर्बो 2000" में होम्योपैथिक औ[illegible] पौधों की प्रदर्शनी लगाई। स्टाल में औषधीय पोधों के छायाचित्रों, तथा 16 अपरिष्कृत औषधीय पादप सामग्रियों की प्रदर्शनी ल[illegible] गई। प्रदर्शनी में बड़ी संख्या में लोग आये तथा औषधीय पौधों की कृषि के ब्यौरे, उनके इस्तेमाल, चिकित्सा में प्रयोग में लाये [illegible] वाले उनके अंश एवं औषधीय मूल्यों से संबंधित उनकी शंकाओं का समाधान किया गया। परिषद के प्रकाशनों – "ए चैकलिस्ट [illegible] होम्योपैथिक मेडिसिनल प्लांटस आफ इंडिया" तथा "ए हैड बुक आफ होम रैमेडीस इन होम्योपैथी" की वहुत मांग थी। जनता [illegible] सामान्य जानकारी देने के लिये होम्योपैथी के विभिन्न पहलूओं से संवंधित साहित्य मुफ्त वांटा गया।

कानपुर

डा. सी. पी. ठाकुर, माननीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण यूनियन मंत्री, भारत सरकार ने 19 मई 2001 को कानपुर में भार[illegible] चिकित्सा पद्धति संरक्षण परिषद द्वारा आयोजित भारतीय चिकित्सा पद्धतियां एवं होम्योपैथी के सेमिनार एवं प्रदर्शनी का उद्घा[illegible] किया। के. हो.अ.प. मुख्यालय ने एक प्रदर्शनी में अपने प्रकाशनों का प्रदर्शन किया। परिषद द्वारा होम्योपैथी के विभिन्न पहलूओं [illegible] छापे गये इश्तहार/चौपन्ने जनता में सामान्य जानकारी के लिये मुफ्त बांटे गये।

इलाहाबाद में महाकुंभ मेला

इलाहाबाद में 7 जनवरी 2001 से 23 फरवरी 2001 तक महाकुंभ मेले के अवसर पर के.हो.अ.प. ने डी.ए.वी.पी. के सहयोग द्वा[illegible] आयोजित प्रदर्शनी में हिस्सा लिया। प्रदर्शनी में आने वाले लोगों के विभिन्न स्वास्थ्य संबंधी विषयों के बारे में जानकारी देने के लि[illegible] परिषद के अधिकारियों को बारी–बारी से प्रतिनियुक्त किया गया। प्रदर्शनी का मुख्य हिस्सा मातृ एवं शिशु देखभाल का था जि[illegible] प्रसव से पूर्व एवं पश्चात की समस्याओं एवं नवजात शिशु की समस्याओं तथा उनके होम्योपैथिक उपचार को पैनलों पर चित्रित कि[illegible] गया। प्रतिनियुक्त चिकित्सकों द्वारा आने वाले लोगों को मुफ्त परामर्श भी दिया गया।

प्रशासनिक प्रतिवेदन

संगठन

केन्द्रीय होम्योपैथिक अनुसंधान परिषद् की स्थापना 30 मार्च, 1978 को सोसाइटीज राजिस्ट्रेशन अधिनियम 1860 का इक्कीसवां के अंतर्गत की गई थी, जिसके मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं :

1. होम्योपैथी में वैज्ञानिक पद्धति पर अनुसंधान के उद्देश्य और प्रणाली तैयार करना।
2. होम्योपैथी में कोई अनुसंधान या अन्य कार्यक्रम शुरू करना।
3. अनुसंधान का परिचालन तथा सहायता करना, रोगों के कारणों, फैलने के तरीकों और उनके निवारण के संबंध में सामान्य ज्ञान और प्रयोगात्मक उपायों का प्रचार करना।
4. होम्योपैथी के विभिन्न पहलुओं मूलभूत एवं अनुप्रयुक्त दोनों में, वैज्ञानिक अनुसंधान प्रारंभ करना, उसकी सहायता, विकास और समन्वय करना तथा रोगों के अध्ययन, उनके निवारण, कारणों और उपचार आदि के लिए अनुसंधान संस्थानों को बढ़ावा एवं सहायता करना।

31 मार्च, 2001 को समाप्त हुई समीक्षाधीन अवधि के दौरान परिषद् की सोसाइटी और शासी निकाय की सदस्यता इस प्रकार है :

शासी निकाय

पुर्नगठित शासी निकाय के सदस्य निम्नलिखित हैं :

1.	राजकीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण यूनियन मंत्री भारत सरकार।	–	अध्यक्ष
2.	डा. दीवान हरीश चन्द 1, हनुमान लेन, नई दिल्ली।	–	उपाध्यक्ष
3.	सचिव (भारतीय चिकित्सा एवं होम्यो. पद्धति), अथवा उनके द्वारा मनोनीत जिसकी पदवी सयुक्त सचिव भारतीय चिकित्सा एवं होम्योपैथिक पद्धति विभाग, से नीचे न हो।	–	सदस्य
4.	संयुक्त सचिव (वित्तीय सलाहकार), स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, नई दिल्ली।	–	सदस्य
5.	डा. वी.एन. चक्रवर्ती, 5 सुबोल कोले लेन, हावडा (प.बं.)	–	सदस्य
6.	डा. जुगल किशोर 86, गोल्फ लिंक्स, नई दिल्ली।	–	सदस्य

7. डा. वी.टी. आगस्टीन
401, मंदाकिनी एन्कलेव, अलखनंदा,
नई दिल्ली। – सदस्य

8. डा. एम.पी.आर्या,
ओबेराय हाऊस, फर्स्ट फलोर,
67/2, नान स्टाप, कार्वे रोड, पुने–411004 (महाराष्ट्र) – सदस्य

9. डा. रवि एम. नायर,
आरामाम, कैलेडी, कारामाना,
पी.ओ. – तिरूवनंतपुरम – केरल

10. डा. उर्मिला घाटे
167/एफ, डा. अम्बेदकर रोड, दादर
मुम्बई – 400014 (महाराष्ट्र) – सदस्य

11. प्रो. ए.के. भटनागर
वानस्पति विज्ञान विभाग,
दिल्ली विश्व विद्यालय, दिल्ली – सदस्य

12. डा. सी. अरूमुगम
नं0 70, पोर्टूगीस चर्च स्ट्रीट,
चेन्नई – 600001 (तमिलनाडू) – सदस्य

13. निदेशक
नेशनल इंस्टिटयूट आफ होम्योपैथी
ब्लाक – जी.ई., सैक्शन।।
साल्ट लेक, कोलकाता – 700016 (पश्चिमी बंगाल) – सदस्य

14. डा. आर. शॉ,
निदेशक, केन्द्रीय होम्योपैथिक अनुसंधान परिषद्,
नई दिल्ली। – सदस्य सचिव

शासी निकाय, परिषद् के कार्यों की प्रगति का अवलोकन तथा वैज्ञानिक सलाहकार समिति तथा स्थायी वित्त समिति द्वारा अनुमोदित नयी योजनाओं की स्वीकृति, वार्षिक बजट प्रावधान इत्यादि का पुनरीक्षण करती है।

स्थाई वित्तीय समिति

1. संयुक्त सचिव/भारतीय चिकित्सा पद्धतियां
एवं होम्योपैथी विभाग स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय,
रैड क्रास रोड, नई दिल्ली। – अध्यक्ष

2. संयुक्त सचिव (वित्तीय सलाहकार),
भारतीय चिकित्सा पद्धतियां एवं होम्योपैथी विभाग
स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय,
निर्माण भवन, नई दिल्ली। – सदस्य

3. डा. वी.टी. आगस्टीन
401, मंदाकिनी एन्कलेव, अलखनंदा,
नई दिल्ली। – सदस्य

4. डा. आर. शॉ,
कार्यभारी निदेशक,
केन्द्रीय होम्योपैथिक अनुसंधान परिषद्,
नई दिल्ली। – सदस्य सचिव

परिषद् द्वारा प्रस्तुत किए गए विभिन्न प्रस्तावों पर विचार विमर्श करने के लिए स्थायी वित्तीय समिति की 36 वीं बैठक 11 जुलाई 2000 को श्री एल. प्रसाद, सयुक्त सचिव, भारतीय चिकित्सा पद्धतियां एवं होम्योपैथी विभाग की अध्यक्षता में रखी गई।

I. वैज्ञानिक सलाहकार समिति

1. डा. आर.के. कपूर,
इलाहाबाद (उ.प्र.)। – अध्यक्ष

2. डा. गिरेन्द्र पाल,
जयपुर (राजस्थान)। – सदस्य

3. डा. वी.टी आगस्टीन,
नई दिल्ली। – सदस्य

4. डा. एस.के. दुबे,
कलकत्ता (प. बंगाल)। – सदस्य

5. डा. आर.पी. पटेल,
हैनीमन हाउस, कालेज रोड़,
कोट्टायम (केरल)। – सदस्य

6. डा. एम.पी. आर्या,
पुणे (महाराष्ट्र)। – सदस्य

7. डा. मनोज यादव,
लखनऊ (उ.प्र.)। – सदस्य

8. डा. के.पी. मजूमदार,
मुंबई (महाराष्ट्र)। – सदस्य

9. डा. एस.पी. कोपीकर,
चैन्नई (तमिलनाडू)। – सदस्य

10. डा. जी.एल.एन. शास्त्री,
हैदराबाद (आन्ध्र प्रदेश)। – सदस्य

11. डा. एस.पी. सिंह,
उप सलाहकार (होम्यो.),
भारतीय चिकित्सा एवं होम्यो. पद्धति विभाग,
स्वा. एवं परि. कल्याण मंत्रालय, नई दिल्ली। – सदस्य

12. डा. आर. शॉ,
कार्यभारी निदेशक,
केन्द्रीय होम्योपैथिक अनुसंधान परिषद्,
नई दिल्ली। — सदस्य सचिव

वर्ष 2000–2001 में वैज्ञानिक सलाहकार समिति की कोई भी बैठक नहीं रखी गई क्योंकि इस समिति का कार्यकाल मई 2000 में समाप्त हो गया था तथा नई वैज्ञानिक सलाहकार समिति को पुनः संगठित नहीं किया गया था।

केन्द्रीय होम्योपैथिक अनुसंधान परिषद् के पुर्नगठन के लिये उपसमिति

केन्द्रीय होम्योपैथिक अनुसंधान परिषद् के चालू अनुसंधान कार्यक्रमों एवं संगठनात्मक संरचना का पुर्नविलोकन करने के लिये जुलाई, 1997 में परिषद् के पुर्नसंगठन के लिये एक उपसमिति का गठन किया गया जिसके सदस्य निम्नलिखित हैं :

1. सचिव (भारतीय चिकित्सा एवं होम्यो. पद्धति विभाग),
स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, नई दिल्ली। — अध्यक्ष
2. संयुक्त सचिव (वित्तीय सलाहकार),
स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, नई दिल्ली। — सदस्य
3. डा. के.पी. मजूमदार,
मुंबई। — सदस्य
4. डा. वी.के. गुप्ता,
नई दिल्ली। — सदस्य
5. डा. आर. शॉ,
कार्यभारी निदेशक,
केन्द्रीय होम्योपैथिक अनुसंधान परिषद्,
नई दिल्ली। — सदस्य सचिव

साहित्यिक अनुसंधान उपसमिति

1. डा. एस.के. दुबे,
एफ.डी. 393, सैक्टर 111,
साल्ट लेक सिटी,
कलकत्ता (प. बंगाल)। — अध्यक्ष
2. डा. के.एन. कासद,
ए.एच. वाडिया बाग, 3/10 परेल टैंक,
मुंबई। — सदस्य
3. डा. आर.के. कपूर,
फ्लैट नं. 33, ब्लाक नं. 5,
नवाब यूसूफ रोड (सिविल लाईन्स),
इलाहाबाद (उ.प्र.)। — सदस्य

4. डा. आर. शॉ,
कार्यभारी निदेशक,
केन्द्रीय होम्योपैथिक अनुसंधान परिषद्,
नई दिल्ली। — सदस्य सचिव

वर्ष 2000–2001 में साहित्यिक अनुसंधान उपसमिति की कोई बैठक नहीं हुई क्योंकि इस समिति का कार्यकाल मई,2000 में समाप्त हो गया था तथा इस परियोजना पर और आगे कार्य, के.हो.अ.प. की वैज्ञानिक सलाहकार समिति के विचाराधीन होने की वजह से प्रारम्भ नहीं किया गया।

संगठनात्मक नेटवर्क

परिषद् के अधीन देश भर में 51 संस्थान/इकाईयां है जिसमें से 21 इकाईयां जनजातीय आंतरनिवासों में स्थित है।

–	केन्द्रीय होम्योपैथिक अनुसंधान संस्थान	1	कोट्टायम (केरल)।
–	होम्योपैथिक औषध अनुसंधान संस्थान	1	लखनऊ (उ.प्र.)।
–	क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान	3	नई दिल्ली, मुंबई (महाराष्ट्र), गुड़िवाड़ा (आन्ध्र प्रदेश)।
–	होम्योपैथिक अनुसंधान संस्थान	2	पुरी (उड़ीसा), जयपुर (राजस्थान)।
–	नैदानिक अनुसंधान इकाई	13	भोपाल (म.प्र.), वाराणसी (उ.प्र.), गुड़गांव (हरियाणा), पटियाला (पंजाब), शिमला (हि.प्र.), उड्डुपी (कर्नाटक), पोर्टब्लेयर (अंडमान एवं निकोबार), तिरूपति (आ.प्र.), गोरखपुर (उ.प्र.), गोहाटी (आसाम), चैन्नई (तमिलनाडु), इम्फाल (मणिपुर), जम्मू (जम्मू व कश्मीर)।
–	नैदानिक अनुसंधान इकाई (जनजातीय क्षेत्र)	21	अगरतला (त्रिपुरा), एजावल (मिजोरम), भरमौर (हि.प्र.), भारूच (गुजरात), खोंगजोम (मणिपुर), दण्डेली (कर्नाटक), दीमापुर (नागालैण्ड), डिफू (आसाम), गंगटोक (सिक्किम), इद्दूकी (केरल), ईटानगर (अरूणाचल प्रदेश), जगदलपुर (छत्तीसगढ़), जैपोर (उड़ीसा), लेह (जम्मू व कश्मीर), पोंडिचेरी (तमिलनाडु), रांची (झारखंड), सेलम (तमिलनाडु), संबलपुर (उड़ीसा), शिलांग (मेघालय), सिलिगुड़ी (प.ब.) एवं विजयवाढ़ा (आंध्र प्रदेश)।
–	होम्योपैथिक उपचार केन्द्र	1	सफदरजंग अस्पताल, नई दिल्ली।

– औषध परीक्षण इकाई	3	कलकत्ता (प. बंगाल), मिदनापुर (प. बंगाल), गाजियाबाद (उ.प्र.)।
– औषध मानकीकरण इकाई	2	गाजियाबाद (उ.प्र.), हैदराबाद (आ.प्र.)।
– चिकित्सा सत्यापन इकाई	3	गाजियाबाद (उ.प्र.), पटना (बिहार), वृंदावन (उ.प्र.)।
– औषधीय पादप का सर्वेक्षण एवं संग्रहण इकाई.	1	ऊटी (तमिलनाडु)।

बजट प्रावधान

निम्नलिखित सारणी में परिषद के बजट प्रावधान की एक झलक दिखाई गई है :

	वास्तविक व्यय 1999–2000 (लाखों में)	बजट अनुमान 2000–2001 (लाखों में)	संशोधित व्यय 2000–2001 (लाखों में)	वास्तविक व्यय' 2000–2001 (लाखों में)
योजना	367.84	399.00	363.10	342.20
आयोजना–भिन्न	375.33	355.00	381.90	377.50
योग	743.17	754.00	745.00	719.70

' प्राप्तिकाओं का उपयोग तथा अग्रिम धन का समायोजन शामिल है।

परिषद् की सेवाओं में अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजातियों का प्रतिनिधित्व एवं उनके लिए कल्याणकारी कार्य:

परिषद् की सेवाओं में अनुसूचित जातियों/जनजातियों के आरक्षण तथा प्रतिनिधित्व के संबंध में भारत सरकार द्वारा समय–समय पर जारी आदेशों एवं निर्देशों का पालन किया जा रहा है। भर्ती/पदोन्नति रोस्टर सूत्रों के अनुसार की जाती है. परिषद् में 31.3.2000 तक कार्यरत अनुसूचित जाति/जनजातीय तथा अन्य पिछड़े वर्ग के कर्मचारियों की संख्या इस प्रकार है:

अनुसूचित जाति	–	91
अनुसूचित जनजाति	–	22
अन्य पिछड़े वर्ग	–	49

वर्ष 2000–2001 में चिकित्सा अनुसंधान द्वारा चिकित्सा सहायता उपलब्ध कराना

परिषद् ने अपने विभिन्न इकाईयों एवं संस्थानों में बहिरंग रोगी विभाग एवं अंतरंग रोगी विभागों में अनुसंधान के ज़रिये से चिकित्सा सहायता प्रदान करना जारी रखा है। इय वर्ष के दौरान बहिरंग रोगी विभाग एवं अंतरंग रोगी विभागों की उपस्थिति का विवरण इस प्रकार है।

(क) सामान्य क्षेत्रों में :

1.	सामान्य बहिरंग रोगियों की संख्या :	
	– नये पंजीकृत रोगियों की संख्या	91,270
	– पुराने रोगियों की उपस्थिति	1,95,128
	योग	**2,86,398**
2.	अनुसंधान के अंतर्गत रोगियों की संख्या' बहिरंग रोगी विभाग :	
	– नये पंजीकृत रोगी	2,626
	– उपस्थित हुए पुराने रोगी	6,934
	अंतरंग रोगी विभाग :	
	– नये रोगी	890
	– उपस्थित हुए पुराने रोगी	207
	योग	**10657'**

(ख) आदिवासी क्षेत्रों में :

1.	सामान्य बहिरंग रोगियों की संख्या	**2,73,581**
2.	अनुसंधान के अंतर्गत रोगियों की संख्या	3,265''

(ग) रोगी जो नैदानिक सत्यापन इकाईयों में उपचारित किये गये :

1.	बहिरंग रोगियों की संख्या	**1,44,650**
2.	अनुसंधान के अंतर्गत रोगियों की संख्या	12,685''
	कुल रोगियों की संख्या जिनका उपचार किया गया	**7,04,629**

' (क) 1 के अंतर्गत शामिल रोगी।

'' (ख) 1 एवं (ग) के अंतर्गत शामिल रोगी।

नैदानिक अनुसंधान कार्यक्रम

नैदानिक अनुसंधान कार्य परिषद् द्वारा सामान्य एवं आदिवासी क्षेत्रों में स्थापित इकाईयों/संस्थानों में जारी है एवं सामान्य एवं चिरकारी रोगों में चिकित्सीय मूल्यांकन किया जा रहा है जिसमें राष्ट्रीय स्वास्थ्य समस्याएँ जैसे कि फाईलेरिया/मलेरिया, एच.आई.वी./एड्स, मधुमेह शामिल है।

(क) सामान्य क्षेत्रों में नैदानिक अनुसंधान कार्यक्रम

दो प्रकार के अध्ययन, औषधोन्मुखी एवं रोगोन्मुखी नैदानिक अनुसंधान के अंतर्गत जारी हैं। छः अनुसंधान संस्थानों, 12 नैदानिक अनुसंधान इकाईयों तथा एवं नैदानिक अनुसंधान इकाई (आदिवासी) में 36 विषयों पर अनुसंधान कार्य जारी हैं। औषध मानकीकरण इकाई, हैदराबाद की विस्तार इकाई में भी यह कार्य जारी है।

रोगोन्मुखी नैदानिक अनुसंधान

इस अनुसंधान का उद्देश्य है कि एक रोग विशेष अवस्था में होम्योपैथिक औषधियों की प्रभावकारिता का अध्ययन तथा उनके विश्वसनीय लक्षणों, पोटेन्सी तथा औषध सेवन की खुराक मात्रा एवं अन्य औषधियों से संबंध ज्ञात करना। निम्नलिखित रोग अवस्थाओं में यह अनुसंधान कार्य जारी है।

अमीबाएसिस, आचरण दोष, मंदबुद्धि बच्चों में आचरण दोष, श्वसनिका दमा, गर्भाशय ग्रीवा शोथ एवं अपरदन, शिशु दस्त रोग, पेचिश, अपस्मार, फाईलेरिया, आमाशय शोथ, जियार्डिएसिस, जिगर शोथ बी., एच.आई.वी. संक्रमण, अति निम्न घनत्व लाइप्रोटीनिमिया, उच्च रक्तचाप, विरामी ज्वर, लौह अल्पतताजन्य, अरक्तता, क्षुब्ध वृहदान्त्र संलक्षण, मलेरिया, अस्थि संधि शोथ, प्रोस्टेट ग्रन्थि में वृद्धि, गुर्दा पथरी, रूमेटाइड संधि शोथ, सिक्कल सैल अनीमिया, साईनुसाइटिस, त्वचा रोग (एलर्जिक त्वचा शोथ, अर्टिकेरिया), तुण्डिका शोथ एवं ऊपरी श्वासनली संक्रमण।

औषधोन्मुखी नैदानिक अनुसंधान

रोगोन्मुखी अध्ययन के अंतर्गत प्रभावकारी औषधियों की पहचान के बाद उनके निर्दिष्ट लक्षणों की पहचान भी की जाती है। इन आंकड़ों की संपूष्टि हेतु औषधोन्मुखी अनुसंधान कार्य किया जा रहा है। कई अन्य औषधियाँ भी ज्ञात है जो अंग विशेष में प्रभावकारी होती हैं या जो पारंपरिक रूप से विशेष रोग अवस्था में प्रभावकारी पाई गई हैं। यह औषधियाँ भी इस अध्ययन में शामिल हैं। औषधोन्मुखी अध्ययन निम्नलिखित रोग अवस्थाओं में जारी है।

अमीबाएसिस, व्यवहार जन्य विकृतियाँ, ग्रैव अपकशेरूता, गर्भाशय ग्रीवा अपरदन एवं शोथ, मधुमेह, फाईलेरिया, जापानी एन्सैफलाईटिस, पित्तीय पथरी, कृमिरूग्णता, मानव भ्रूण की कुस्थिति, अतिरज, अस्थि संधि शोथ एवं विटिलिगो।

(ख) आदिवासी क्षेत्रों में नैदानिक अनुसंधान

सर्वेक्षण से ज्ञात 18 सामान्य रोग अवस्थाओं में, 21 आदिवासी चिकित्सा इकाईयों में औषधोन्मुखी चिकित्सा अनुसंधान कार्य जारी है। होम्योपैथिक मेटीरिया मेडिका में कई औषधियों का दुःष्प्रभाव एवं रोगसाध्यक क्षमता का उद्धरण है। इनमें कुछ औषधियों का प्रयोग काफी कम है परन्तु पारंपरिक रूप से प्रभावकारी ज्ञान होने के कारण इनकी चिकित्सीय संपुष्टि आवश्यक है। इसी हेतु 18 विभिन्न रोग अवस्थाओं में इन औषधियों पर अध्ययन जारी है। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य निर्दिष्ट औषधियों के विश्वसनीय लक्षणों को ज्ञात करना है।

निम्नलिखित रोग अवस्थाओं में चिकित्सीय अध्ययन 21 आदिवासी इकाईयों में जारी हैं।

अमीबाएसिस, अस्थि संधि शोथ, श्वसनिका दमा, श्वसनी शोथ, गर्भाशय ग्रीवा शोथ एवं अपरदन, मधुमेह, पेचिश, फाईलेरिया, जठरांत्र शोथ, कृमिरूग्णता, मलेरिया, अस्थि संधि शोथ, पेप्टिक अल्सर, नासा शोथ, त्वचा रोग, साईनुसाईटिस, तुण्डिका शोथ एवं विटिलिगो।

1. अमीबाएसिस/अमीबा–रूग्णता

(क) सामान्य क्षेत्रों में :

1) औषध रोगोन्मुखी नैदानिक अनुसंधान

परिषद् द्वारा अमीबाएसिस रोग पर अनुसंधान का कार्य, नैदानिक अनुसंधान इकाइ, तिरूपति (1982–83) में किया जा रहा है।

वर्ष 2000–2001 के दौरान उपलब्धियाँ

	नये
रोगियों की संख्या	47
सुधार अनुक्रमणिका	
आरोग्यता/अभिसाधित	07
सुधार :	
– अति	09
– मध्यम	12
– अल्प	08
सुधार नहीं हुआ	05
उपचाराधीन	06

अवलोकन

लगभग सभी रोगी अमीबा पेचिश (आंत्र एमीबिएसिस)से पीड़ित थे। औषधियाँ नक्स वोमिका 30, 200, 1 एम., चाईना आफिसिनेलिस 30, 200, 1 एम., एलोज सोकोटरिना 30, 200, एवं लाइकोपोडियम 30,200,1एम लक्षणों एवं चिन्हों में सुधार लाने में सहायक सिद्ध हुई हैं। एवं इन्होंने इस रोग के लक्षणों से मुक्त करवाने में बहुत सहायता की है। इन रोगियों में लाइकोपोडियम, सल्फर एवं पल्सैटिला मध्यवर्ती दवाओं के रूप में प्रभावकारी पाई गई। यह परियोजना जारी रहेगी।

2) औषधोन्मुखी नैदानिक अनुसंधान

निम्नलिखित औषधियों की प्रभावकारिता का अमीबाएसिस में चिकित्सीय मुल्यांकन :

एकैरिन्थिस एस्पैरा, ईगल फोलिया, ईगल मार्मिलोस, आर्सेनिक एल्बम, एटिस्टा इंडिका, सिन्कोना आफिसिनेलिस, कोलचिकम, कोलोसिन्थिस, साएनोडोन डैक्टाईलोन, होलेर्हिना एन्टीडायसैन्टेरिका, इपिकाकुन्हा, मक्रयुरियस कोरोसिवस, मक्रयुरियस सोल्युब्लिस, नक्स वोमिका एवं सल्फर।

नैदानिक अनुसंधान इकाई, पोर्टब्लेयर (1989 से), नैदानिक अनुसंधान इकाई, गुवाहाटी (1985 से) में इस परियोजना पर कार्य चल रहा है।

वर्ष 2000–2001 के दौरान उपलब्धियाँ

	नये	पुराने
रोगियों की संख्या	78	09
सुधार अनुक्रमणिका		
सुधार :		
– अति	69	09
– मध्यम	07	—
असूचित	02	—

अवलोकन

अध्ययन के अंतर्गत पंजीकृत रोगी अमीबा–पेचिश के हैं। नियत की हई दवाऐं एमीबिएसिस के व्यक्तिनिष्ठ एवं वस्तुनिष्ठ लक्षणों को कम करने में बहुत प्रभावकारी पाई गई हैं। यह देखा गया है कि देशी दवाऐं एटिस्टा इंडिका तथा होलेर्हिना एन्टीडायसेन्ट्रिका नियत की गई दवाओं में से सबसे प्रभावकारी रही। 33 रोगियों में 2–3 महीनों तक एवं 17 रोगियों में 3–6 महीनों तक रोग की कोई भी पुनरावृति नहीं हुई तथा 33 रोगियों में बहुत कम तीव्रता में रोग की पुनरावृति पाई गई। 61 रोगियों में से, जिनमें उपचार पूर्व एंटअमीबा हिस्टोलिटिका सिस्ट पाये गये थे, 50 रोगियों में उपचार के पश्चात वह लुप्त हो गये। यह परियोजना जारी रहेगी।

(ख) आदिवासी क्षेत्रों में :

एमीबिएसिस में निम्नलिखित औषधियों का चिकित्सीय मुल्यांकन :

एल्स्टोनिया कन्सट्रिक्टा, एम्ब्रोसिया, एस्क्लेपियास टयुब्रोसा, एटिस्टा इंडिका, साएनोडोन डैक्टाईलोन, एमेटिन, फाईकस इंडिका, हेलीबोरस, होलेरहिना एण्टीडाइसैन्टेरिका (कुर्ची), सिल्फियम, लैप्टेण्डरा, रेफनस, ट्रोम्बीडियम, जैन्थोजाईलम, जिंकम सल्फ्युरिकम।

नैदानिक अनुसंधान इकाई (आदि.) डन्डेली, दीमापुर, ईटानगर, जैपोर, खोंगजोम, गंगटोक तथा अगरतला में इस परियोजना पर कार्य हो रहा है।

वर्ष 2000–2001 के दौरान उपलब्धियाँ

इस समय के दौरान 552 नये रोगियों का पंजीकरन किया गया। और नियत की गई दवाऐं 378 रोगियों में प्रभावकारी पाई गई। इन रोगियों में परिवर्ती मात्रा में सुधार पाया गया।

अवलोकन

नियत की गई दवाओं में से साइनोडोन डैक्टाइलान, एटिस्टा इंडिका, फाइकस इंडिका, ट्राम्बिडियम, एमेटिन, एवं लैपेटन्ड्रा अत्याधिक प्रभावकारी पाई गई है। लाभांवित रोगियों में से 51 प्रतिशत को इन दवाओं से लाभ पहुंचा। इन दवाओं के विश्वसनीय लक्षणों की और अधिक जांच की जा रही है।

2. संधि शोथ

(ख) आदिवासी क्षेत्रों में

संधिशोथ पर निम्नलिखित औषधियों के प्रभाव का नैदानिक रूप से मूल्यांकन करना :

एक्टिया स्पाईकेटा, एन्गयुस्चूरा वेरा, कालोफाइलम, फार्मिका रूफा, फार्मिक एसिड, लिथियम कार्बोनिकम, मैग्नोलिया ग्रेन्डीफ्लोरा, रेडियम ब्रोमेटम तथा स्टेलेरिया मीडिया। कैल्केरिया फ्लोरिकम, गालथेरिया, गुएकम, मलेरिया आफिसिनेलिस, मेडोराइनम, ओस्टियो आर्थराइटिस नोसोड, रैमनस कैलिफोर्निका, स्टेलेरिया मीडिया, एक्स–रे।

नैदानिक अनुसंधान इकाईयों (आदिवासी) भरमौर, भरौच, डान्डेली, सिलीगुड़ी तथा जगदलपुर में इस परियोजना पर कार्य हो रहा है।

वर्ष 2000–2001 के दौरान उपलब्धियाँ

रोगियों की संख्या	—	329
लाभान्वित रोगियों की संख्या	—	215

अवलोकन

इस वर्ष के दौरान एक्टिया स्पाईकेटा, कोलोफाईलम, फार्मिका रूफा, फार्मिक एसिड, रेडियम ब्रोमेटम, मैगनोलिया ग्रैंडीफलोरा एवं लिथियम कार्बोनिकम प्रभावकारी पाई गई। सुधरे हुए रोगियों में मैडोराइनम 07 रोगियों में एवं कैलकेरिया फलोरिकम 07 रोगियों में मध्यवर्ती दवाओं के रूप में कारगर रही।

3. व्यवहार जन्य विकृतियाँ/आचरण दोष

(क) सामान्य क्षेत्रों में

(अ) रोगोन्मुखी नैदानिक अनुसंधान

केन्द्रीय अनुसंधान संस्थान, कोट्टायम (केरल) में व्यवहारजन्य विकृतियों में होम्योपैथिक औषधियों की प्रभावकारिता के मूल्यांकन का अध्ययन किया जा रहा है।

वर्ष 2000–2001 के दौरान उपलब्धियाँ

इस वर्ष के दौरान संस्थान में विभिन्न मानसिक–विकृतियों के 319 रोगी पंजीकृत किए गए। इनमें से 21 रोगी अभिसाधित हुए, तथा 198 रोगियों में परिवर्ती स्तर पर सुधार पाया गया।

629 पुराने रोगी अनुवर्तन के लिए उपस्थित हुए। इनमें से 47 रोगी अभिसाधित हुए, तथा 311 रोगियों में परिवर्ती स्तर पर सुधार पाया गया।

अवलोकन

यह परियोजना हनीमैन द्वारा किये गये मानसिक विकारों के वर्गीकरण के आधार पर प्रारंभ की गई है तथा पंजीकृत रोगियों का वर्गीकरण भी तदनुसार किया जा रहा है। ऐसा देखा गया है कि भावनात्मक मनोविकृतियों (अफेक्टिव साइकोसिस) के रोगियों में सुधार की दर दूसरी मानसिक बीमारियों की तुलना में ज्यादा है। इसकी तुलना में खंडित मनस्कता (शिज़ोफेनिया) के रोगियों में सुधार की दर कम है। इन स्थितियों में बैलाडोना, इगनेशिया, सीपिया, नैट्रम म्यूर, टयूबरक्यूलाइनम पल्सेटिला, सल्फर, फासफोरस, स्ट्रैमोनियम एवं आरनिका सबसे प्रभावकारी रही हैं। यह परियोजना जारी रहेगी।

(अ) औषधोन्मुखी नैदानिक अनुसंधान

व्यवहार जन्य विकृतियों में निम्नलिखित औषधियों की प्रभावकारिता का मूल्यांकन करना।

बैलाडोना, हायोसाएमस नाईगर, इग्नीशिया अमारा, लैकिसिस, नैट्रम म्यूरियाटिकम, नक्स वोमिका, फारफोरस, पल्सैटिला, स्ट्रेमोनियम तथा सल्फर।

यह परियोजना केन्द्रीय अनुसंधान संस्थान (होम्यो.), कोट्टायम में अप्रैल 1990 से प्रारंभ की गई तथा मार्च 2000 तक जारी रही। इस अवधि के दौरान 1115 रोगियों का अध्ययन किया गया। अनुसंधान के अंतर्गत रोगियों का चुनाव, उनके कष्टों की प्रबलता तथा सुधार का निर्धारण, संस्थान द्वारा अपनाये गये विभिन्न मापदण्डों के अनुसार किया गया। अध्ययन किये जा रहे इन रोगियों का रोगनिदान सम्पूर्ण रूप से नैदानिक लक्षणों के आधार पर किया गया। रोग की अवधि एक महीने से 42 साल तक की थी। जिन आचरण दोषों की विभिन्न नैदानिक किस्मों का अध्ययन किया गया, वे इस प्रकार हैं।

आंशिक मनोविकार, कार्यात्मक मनोविकार, खंडित मनस्कता, व्यामोहाभ विकार, भावात्मक विकार, दुश्चिंता विकार, मनःकायिक विकार। तथा जो दवाऐं सबसे प्रभावकारी पाई गई वे इस प्रकार है। बैलाडोना 30,200,1एम, हायोसायमस 30,200,1एम, इगनेशिया 30,200,1एम, लैकेसिस 30,200,1एम, नैट्रम म्यूरैटिकम 30,200,1एम, 10एम, नक्स वोमिका 30,200,1एम, 10एम, 50एम, फासफोरस 30,200,1एम, स्ट्रैमोनियम 30,200,1एम, एवं सल्फर 30,200,1एम, 50 एम।

4. मंदबुद्धि बच्चों में आचरण दोष

(क) सामान्य क्षेत्रों में

(अ) रोगोन्मुखी नैदानिक अनुसंधान

केन्द्रीय अनुसंधान संस्थान, कोट्टायम (केरल) में जुलाई 1991 से मार्च 2001 तक इस परियोजना पर कार्य किया गया इसका उद्देश्य मंदबुद्धि बच्चों के आचरण दोषों में होम्योपैथिक दवाओं की प्रभावोत्पादकता का अध्ययन करना था। इस अवधि में 865 बच्चों पर अध्ययन किया गया। ये मंदबुद्धि बच्चे उन विशेष विद्यालयों से चुने गये थे जो इन बच्चों को विशेष शिक्षा सुविधायें प्रदान करते थे। वे मंदबुद्धि बच्चों को व्यष्टिसापेक्ष शिक्षा कार्यक्रम द्वारा घरेलू कलाओं एवं व्यवसायिक प्रशिक्षण के लिये तैयार करते हैं। इन 865 बच्चों में से 18 अति मंदबुद्धि, 323 मध्यम मंदबुद्धि तथा 494 निम्न मंदबुद्धि के थे। अधिकतर रोगी निम्न आय वर्ग के थे जिनमें आनुवांशिक कारक के पूर्वयोगी कारण होने के साथ जटिल प्रसव भी एक कारक था। 482 रोगियों में सोरा सबसे प्रभावी मियासम पाया गया। जो आचरण दोष आम तौर पर देखे गये, उनका विवरण इस प्रकार है :

आचरण दोष	रोगियों की संख्या	लाभान्वित	असंशोधित
दूसरो पर आक्रमण	123	94	29
विनाशकारी आचरण	132	107	25
विघटनकारी आचरण	137	89	48
आत्मक्षति	157	117	40
दोहराना – स्टीरियोटाइपड	71	21	50
– विचित्र	62	19	43
समाज विरोधी	33	24	09
विनिवर्तन	32	17	15
विद्रोही	47	29	18
अतिसक्रिय	79	31	48

नैदानिक अवस्थायें

	रोगियों की संख्या	लाभान्वित	असंशोधित
स्वपरायणता	79	46	33
विकासात्मक विलंब	172	115	57
अवसाद	29	12	17
हकलाना	15	07	08
लैंगिक उत्तेजना	142	86	56
लारस्त्राव	112	92	20
चोर्योन्माद	15	05	10

नियमित अनुवर्तन से यह ज्ञात हुआ है कि होम्योपैथिक दवाओं जैसे बैलाडोना, सल्फर, नक्सवोमिका, कैमोमिला, स्ट्रैमोनियम, बैरायटा काबोनिकम, कैल्केरिया कार्बोनिका, हायोसायमस, पल्सटिला, ट्यूबरक्यूलाइनम, कैल्केरिया फासफोरिकम एवं टैरन्टुला हिस्पैनिका की सहायता से हम इन मंदबुद्धि बच्चों के व्यवहार में परिवर्तन ला सकते है और इन्हें कुछ हद तक प्रशिक्षणीय एवं आत्मनिर्भर बना सकते है।

5. श्वसनिका दमा

(क) सामान्य क्षेत्रों में

(अ) रोगोन्मुखी नैदानिक अनुसंधान

परिषद् ने 1979 में यह परियोजना श्वसनिका दमा में होम्योपैथिक दवाओं की क्षमता का मूल्यांकन एवं जांच करने के लिए आरम्भ की। सबसे प्रभावकारी दवाओं (उनके विश्वसनीय लक्षणों के साथ) की पहचान की गई। परन्तु 1996–97 से के.हो.अ.प. की वैज्ञानिक सलाहकार समिति की बैठक में दिये गये सुझावो के अनुसार इस परियोजना में किंचित परिवर्तन कर दिया गया है तथा अब हनीमैन की धारणा पर आधारित निम्नलिखित विषयों पर अध्ययन किया जा रहा है।

- मियाज्मैटिक पृष्ठभूमि का पता लगाना
  नैदानिक अनुसंधान इकाई, शिमला तथा क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, गुड़िवाडा।
- सतत् अवस्था वाले दमा में उपयोगी होम्योपैथिक औषधियों का पता लगाना
  क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, गुडिवाडा, क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली तथा होम्योपैथिक अनुसंधान संस्थान, जयपुर।
- मौसम–परिवर्तन के दौरान और अधिक बीमार हो जाने वाले रोगियों के लिए होम्योपैथिक औषधियों का पता लगाना क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली, होम्योपैथिक अनुसंधान संस्थान, जयपुर, नैदानिक अनुसंधान इकाई, उडूपी तथा नैदानिक अनुसंधान इकाई, पटियाला।
- एलोपैथिक दवाओं पर निर्भरता कम करने के लिए होम्योपैथिक औषधियों की खोज करना
  नैदानिक अनुसंधान इकाई, शिमला, नैदानिक अनुसंधान इकाई, उडूपी, क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली तथा नैदानिक अनुसंधान इकाई, पटियाला।

वर्ष 2000–2001 के दौरान उपलब्धियाँ

	नये	पुराने
अध्ययन किए गए रोगियों की संख्या	126	112
सुधार अनुक्रमणिका		
सुधार :		
– अति	21	43
– मध्यम	29	50
– अल्प	52	16
असूचित	07	—
छोड़ दिए गए	06	03

अवलोकन

यह अवलोकित हुआ है कि 11 नए रोगियों एवं 35 पुराने रोगियों में किसी भी कष्ट की पुनरावृति नहीं हुई तथा 02 नये 05 पुराने रोगियों में बहुत कम तीव्रता में पुनरावृति हुई।

मौसम परिवर्तन के दौरान प्रभावकारी पाई गई औषधियाँ – आर्सेनिकम एल्बम, काली कार्बोनिकम, नैट्रम सल्फ्यूरिकम, हि... सल्फ्यूरिस कैल्केरियम, टयूबरक्यूलाइनम, कार्बो वेजीटेबिलिस, लैकेसिस, नक्स वोमिका, फासफोरस, पल्सेटिला एवं सीपिया।

एलोपैथिक एवं अन्य औषधियों पर निर्भरता कम करने में प्रभावकारी पाई गई औषधियाँ – अमोनियम कार्बोनिकम, आर्सेनि... एल्बम, एंटीमोनियम टार्टेरिकम, काली कार्बोनिकम, काली म्यूरियाटिकम, सैंबुकस नाइगरा, सल्फर, फासफोरस, पल्सैटि... लैकिसिस, सीपिया, हिपर सल्फ्यूरिस कैल्केरियम तथा नैट्रम सल्फ्यूरिकम।

निम्नलिखित रोगियों में एलोपैथिक दवाऐं कम कर दी गई है अथवा बंद कर गई है :–

एलोपैथिक दवाओं की मात्रा	उपचार पूर्व	रोगियों की संख्या: उपचार के पश्चात् कमी हुई	समाप्त
1. पफ	16	08	08
2. मुख से (श्वसनी विस्फारक)	27	11	14
3. प्रतिएलर्जी	12	—	12
4. कास रोधी	07	—	07
5. प्रति जैविकी	17	—	17
6. स्टीरोएड	02	—	02
7. जिन्हें चिकित्सा से पूर्व आक्सीज़न एवं दवाओं के लिये अतः चिकित्सालय की आवश्यकता पड़ती थी।	20	01	14

' नए एवं पुराने (अनुवर्तन में चल रहे) रोगियों के आंकड़े शामिल है।

(ख) आदिवासी क्षेत्रों में

श्वसनिका दमा में निम्नलिखित औषधियों के प्रभाव का चिकित्सीय रूप से मूल्यांकन करना :

एम्ब्रा ग्रीसिया, कैलेडियम, कैसिया सोफेरा, कोका, ग्रिंडेलिया रोबस्टा, हाइड्रोसायनिक एसिड, काली क्लोरिकम, मोस्कस, नाजा ट्रिपुडियंस, पोथोस फिटिडस।

यह परियोजना डंडेली एवं लेह स्थित नैदानिक अनुसंधान इकाइयों (आदिवासी) में जारी है।

वर्ष 2000–2001 के दौरान उपलब्धियाँ

अध्ययन किए गए रोगियों की संख्या	:	46
लाभान्वित रोगियों की संख्या	:	20

अवलोकन

लाभान्वित रोगियों में से 13 रोगियों को इन 2 दवाओं से सुधार आया।

6. श्वसनी शोथ

(क) आदिवासी क्षेत्रों में

(अ) औषधोन्मुखी नैदानिक अनुसंधान

श्वसनी शोथ में निम्नलिखित औषधियों की चिकित्सीय प्रभावकारिता का मूल्यांकन :

अमोनिएकम डिरोनिया, एण्टीमोनियम आयोडेटम, युकैलिप्टस, जस्टीशिया एधाटोडा, काली आयोडेटम, लोबेलिया इन्फलेटा लुफ्फा आपेर्कुलेटा, सेनेगा, सोलेनम एसिटिकम।

यह अध्ययन नैदानिक अनुसंधान इकाई (आदिवासी), गंगटोक तथा जैपोर में जारी है।

वर्ष 2000–2001 के दौरान उपलब्धियाँ

अध्ययन किये गये रोगियों की संख्या	:	113
लाभान्वित रोगियों की संख्या	:	66

अवलोकन

श्वसनी शोथ के लिए नियत दवाओं में से सेनेगा, लोबेलिया इन्फलाटा, काली आयोडेटम, जस्टीशिया एधाटोडा एवं एन्टीमोनियम आयोडेटम सबसे अधिक प्रभावकारी पाई गई। इन दवाओं के अधिकतर सूचन लक्षणों की पहचान कर ली गई है तथा उनकी जांच की जा रही है। परन्तु इसकी और अधिक नैदानिक पुष्टीकरण की आवश्यकता है।

7. ग्रैव अपकशेरुता

(क) सामान्य क्षेत्रों में

(अ) रोगोन्मुखी नैदानिक अनुसंधान

निम्नलिखित औषधियों की प्रभावकारिता का ग्रैव अपकशेरुता में नैदानिक मूल्यांकन

7855 16/6/05 नई दिल्ली

कैल्केरिया फ्लोरिकम, सिमिसिफ्यूगा, ग्वैकम, काली कार्बोनिकम, फाइटोलैक्का, रस टाक्सीकोडेड्रान, स्टिकटा।

नैदानिक अनुसंधान इकाईयों, पटियाला तथा उडुपी में अगस्त 1997 से इस परियोजना पर कार्य हो रहा है।

वर्ष 2000–2001 के दौरान उपलब्धियाँ

इस वर्ष में 18नये रोगी पंजीकृत किये गये। इनमें से 12 रोगियों में परिवर्ती स्तर पर सुधार देखा गया (01 रोगियों में खासा, 02 रोगी में मध्यम तथा 09 रोगियों में अल्प) तथा 05 रोगी अनुवर्तन के लिए नहीं आये। 15 पुराने रोगी जो अनुवर्तन के लिए आये, उनमें से 11 में परिवर्ती स्तर पर सुधार पाया गया।

अवलोकन

यह देखा गया है कि ग्रैव संधियों की दर्द, सूजन एवं अकडन तथा चक्करों को नैदानिक रूप से बहुत कम समय में सफलतापूर्वक नियंत्रित कर लिया गया (कुछ रोगियों में यह लुप्त भी हो गये)। परन्तु विकृति के साथ इसके परस्पर संबंध की जानकारी अभी आवश्यक है क्योंकि अध्ययन की अवधि तथा अध्ययन किए जा रहे रोगियों की संख्या अभी बहुत कम है। रोगियों में सिमिसिफ्यूगा, काली कार्बोनिकम तथा रस टॉक्स प्रभावकारी पाई गई। यह परियोजना अभी जारी है।

8. गर्भाशय ग्रीवा अपरदन एवं शोथ

(क) सामान्य क्षेत्रों में

(अ) रोगोन्मुखी नैदानिक अनुसंधान

परिषद् ने यह परियोजना नैदानिक अनुसंधान इकाई, शिमला में अप्रैल 1989 से, नैदानिक अनुसंधान इकाई, इम्फाल में 1989 से तथा नैदानिक अनुसंधान इकाई, तिरूपति में नवंबर 1988 से शुरू की है।

वर्ष 2000–2001 के दौरान उपलब्धियाँ

	नये	पुराने
अध्ययन किए गए रोगियों की संख्या	106	280
सुधार अनुक्रमणिका :		
– अभिसाधित	—	30
– अति सुधार	12	111
– मध्यम सुधार	42	70
– अल्प सुधार	36	53
असंशोधित	11	16
असूचित	05	—

अवलोकन

अध्ययन की प्रक्रिया के दौरान यह देखा गया कि निर्दिष्ट होम्योपैथिक दवाओं जैसे आर्सेनिक एल्बम, बोरैक्स, बोरिक, क्रियोसोट, लैकिसिस, सिपिया तथा पल्सैटिला आदि ने न केवल गर्भाशय ग्रीवा शोथ एवं अपरदन से सम्बन्धित व्यक्ति निष्ठ वस्तुनिष्ठ लक्षणों जैसे श्लेष्मपूयाभस्त्राव, संभोग के पश्चात दाग लगना, पीठ दर्द, सकष्टसंगम, बार–बार मूत्रण तथा गर्भाशय रक्ताधिक्य में न केवल राहत पहुंचाने में बल्कि उन्हें समाप्त करने में भी बहुत सहायता की है। रोगियों के सामान्य स्वास्थ्य में

पाया गया ;32 रोगियों में होमोग्लोबिन में, 35 रोगियों में इ.एस.आर. (लोहित कोशिका अवसादन दर) में एवं 60 रोगियों में विभेदक रक्त गणन (डिफ़ैन्शियल काउंट में) 37 रोगियों में साधारण चपटा अपरदन, 23 रोगियों में अकुरकवत अपरदन, 16 रोगियों में पुटीय अपरदन में सुधार हुआ तथा अन्य बीमारियों जैसे 02 रोगियों में तान्तव (फाइब्रायड), 15 रोगियों में अतिरक्तस्त्राव एवं कष्टार्तव, 10 रोगियों में अनियमित मासिक धर्म भी अभिसाधित हुए। नये तथा पुराने 68 रोगियों में किसी भी कष्ट की पुनरावृति नहीं पाई गई। यह परियोजना अभी जारी है।

(ब) औषधोन्मुखी नैदानिक अनुसंधान

गर्भाशय ग्रीवा अपरदन एवं शोथ में निम्नलिखित औषधियों की प्रभावकारिता का नैदानिक मूल्यांकन :

एल्यूमिना, आर्सेनिकम एल्बम, बोरैक्स, कैल्केरिया कार्बोनिकम, काली कार्बोनिकम, क्रिआंजोट, लैकिसिस, मर्क्युरियस सोलुबिलिस, नैट्रम म्युरियाटिकम, पल्सैटिला तथा सेपिया।

नैदानिक अनुसंधान इकाई (होम्यो.), तिरूपति 1995 से तथा नैदानिक अनुसंधान इकाई (होम्यो.), वाराणसी 1990 से इस परियोजना पर कार्य कर रही हैं।

वर्ष 2000–2001 के दौरान उपलब्धियाँ

	नये	पुराने
अध्ययन किए गए रोगियों की संख्या	82	176
सुधार अनुक्रमणिका' :		
– अति	03	60
– मध्यम	19	41
– अल्प	11	25
असंशोधित	06	05

' उल्लिखित सुधार तालिका केवल नैदानिक अनुसंधान इकाई, तिरूपति से संबंधित है।

अवलोकन

इस वर्ष के दौरान बोरैक्स, एल्यूमिना तथा सिपिया व्यक्तिनिष्ठ तथा वस्तुनिष्ठ लक्षणों से राहत पहुंचाने में सबसे प्रभावकारी औषधियां रही तथा 89 प्रतिशत रोगियों में इनकी चिकित्सीय प्रभावकारिता देखी गई। निर्दिष्ठ दवाओं के कुछ विश्वसनीय लक्षणों की भी पुष्टि की गई परन्तु पुनःपुष्टिकरण के लिए उनके प्रमाणीकरण की आवश्यकता है। नये तथा पुराने रोगियों को मिला कर 47 रोगियों में किसी भी कष्ट की पुनरावृति नहीं पाई गई तथा 86 रोगियों में कम मात्रा में पुनरावृति हुई। यह परियोजना जारी रहेगी।

9. मधुमेह

(क) सामान्य क्षेत्रों में

(अ) औषधोन्मुखी नैदानिक अनुसंधान

मधुमेह में निम्नलिखित औषधियों की प्रभावकारिता का नैदानिक मूल्यांकन :

सिफेलैण्डरा इंडिका, रहस ऐरोमेटिका तथा चियोनैन्थस।

परिषद् ने यह परियोजना क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली में अप्रैल 1987 से, नैदानिक अनुसंधान इकाई, चेन्नई में 1989 से तथा औषध मानकीकरण इकाई, हैदराबाद विस्तार इकाई में जुलाई 1992 से शुरू की है।

वर्ष 2000–2001 के दौरान उपलब्धियाँ

	नये	पुराने
अध्ययन किए गए रोगियों की संख्या	112	56
(क) सिफेलेन्डरा इंडिका	56	18
(ख) रस एरोमैटिका	27	33
(ग) शियोनेन्थस	06	05
केवल उपस्थित हुए रोगी		
(1) सुधार अनुक्रमणिका :		
(अ) मात्र होम्योपैथिक औषधि से उपचारित (सिफेलेन्डरा इंडिका)	35	11
– सुधार	27	11
– उपचाराधीन	08	—
(ब) होम्योपैथिक के साथ–साथ एलोपैथिक दवा	20	07
– सुधार	16	07
– उपचाराधीन	04	—
(सिफेलेन्डरा से 1 रोगी में इंसुलिन की मात्रा रोजाना 35 यूनिट से कम हो कर 30 यूनिट हो गई)		
(2) सुधार अनुक्रमणिका :		
(अ) मात्र होम्योपैथिक औषधि से उपचारित (रस एरोमैटिक्स मदर टिंक्चर)	03	04
– सुधार	02	04
– उपचाराधीन	01	—
(ब) होम्योपैथिक के साथ–साथ एलोपैथिक दवा	24	29
– सुधार	02	21
– उपचाराधीन	22	08

(3) सुधार अनुक्रमणिका :

(अ) मात्र होम्योपैथिक औषधि से उपचारित (शियोनेन्थस मदर टिंक्चर)	04	03
– सुधार	02	03
– उपचाराधीन	02	—
(ब) होम्योपैथिक के साथ–साथ एलोपैथिक दवा	02	02
– सुधार	01	01
– उपचाराधीन	01	01

अवलोकन

पंजीकृत किए गए अधिकांश रोगी इंसुलिन पर निर्भर नहीं करने वाले मधुमेह से पीड़ित है। औषध मानकीकरण इकाई, हैदराबाद में बाह्य स्नायु रोग के 18 पुराने रोगियों में से 10 रोगियों में सुधार हुआ, 12 पुराने रोगियों में संवहनी रोग (आवर्तक क्लाडीकेशन) पाया गया तथा अनुवर्तन के दौरान 04 रोगियों में सुधार हुआ, 21 पुराने रोगियों में एल्ब्युमिन अल्पमात्रा में पाया गया तथा 10 रोगियों में उपचार के पश्चात वह लुप्त हो गया, 08 पुराने रोगियों में पीप कोशिकाऐं पाई गई एवं 05 रोगियों में रस एरोमैटिकस मदर टिंक्चर से आराम पहुंचा। क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान नई दिल्ली में 06 पुराने रोगियों में सिफेलेन्डरा इंडिका मदर टिंक्चर से क्रमशः कम करते जाने की विधि द्वारा एलोपैथी दवाऐं हटा ली गई। यह परियोजना अभी जारी है।

(ख) आदिवासी क्षेत्रों में

मधुमेह में निम्नलिखित औषधियों के प्रभाव का नैदानिक मूल्यांकन :

एब्रोमा आगस्टा, सिफैलेण्डरा इंडिका, चिमाफिला अम्बेलेटा, चियोनैन्थस, ग्लिसराईनम, इन्सुलिन, इनूला, लैक डिफ्लोरेटम, लैक्टिक एसिड, साइजिजियम जैम्बोलेनम, थायरोएडिनम एवं यूरेनियम नाइट्रिकम।

यह परियोजना नैदानिक अनुसंधान इकाई (आदिवासी), पांडिचेरी, सेलम एवं विजयवाड़ा में चल रही है।

वर्ष 2000–2001 के दौरान उपलब्धियाँ

अध्ययन किए गए रोगियों की संख्या	–	216
लाभान्वित रोगियों की संख्या	–	46

अवलोकन

इस परियोजना में निर्दिष्ट औषधियों में से सिफैलेण्डरा इंडिका, इनसुलिनम तथा लैक्टिक एसिड प्रभावकारी पायी गई।

10. शिशु दस्त रोग

(क) सामान्य क्षेत्रों में

(अ) रोगोन्मुखी नैदानिक अनुसंधान

परिषद् ने अगस्त 1997 से, होम्योपैथिक अनुसंधान संस्थान, जयपुर में, बच्चों में दस्त की बीमारी में होम्योपैथिक औषधियों की प्रभावकारिता पर एक अध्ययन योजना शुरू की है।

वर्ष 2000–2001 के दौरान उपलब्धियाँ

	नये	पुराने
अध्ययन किए गए रोगियों की संख्या	51	50
सुधार अनुक्रमणिका :		
अभिसाधित		
सुधरे हुए	23	27
– अति		
– मध्यम	07	05
– अल्प	03	08
	18	—

अवलोकन

47 रोगियों में उपचार की अवधि के दौरान किसी भी कष्ट की पुनरावृति नहीं देखी गई। कैमोमिला 30, चाइना 30, मरक्यूरि सोलुबिलिस तथा पोडोफाईलम 30 व्यक्तिनिष्ठ तथा वस्तु निष्ठ लक्षणों में राहत पहुंचाने में सबसे प्रभावकारी रही। नये तथा पु रोगियों के मिला कर उपचार के दौरान 50 रोगी अभिसाधित हुए। यह परियोजना अभी जारी है।

11. पेचिश

(क) सामान्य क्षेत्रों में

(अ) रोगोन्मुखी नैदानिक अनुसंधान

अप्रैल 1988 से, क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान (होम्यो.) गुडिवाड़ा में पेचिश में होम्योपैथिक औषधियों की प्रभावकारिता चिकित्सीय मूल्यांकन करने के लिए परिषद द्वारा एक अध्ययन शुरू किया गया है।

वर्ष 2000–2001 के दौरान उपलब्धियाँ

	नये	पुराने
अध्ययन किए गए रोगियों की संख्या	52	83
सुधार अनुक्रमणिका :		
– अति सुधार	10	29
– मध्यम सुधार	10	27
– अल्प सुधार	18	22
उपचाराधीन	13	05
असूचित	01	—

अवलोकन

अध्ययन किए गये सभी रोगी अमीबा पेचिश के थे। निर्दिष्ट होम्योपैथिक दवाऐं व्यक्तिनिष्ठ/वस्तुनिष्ठ लक्षणों में राहत पहुंचाने में तथा अतिपाती दौरे को नियंत्रित करने में बहुत सहायक रही हैं। रोगात्मक जांच दोहराने पर देखा गया कि 15 नये एवं 48 पुराने रोगियों में हीमोग्लोबिन बढ़ गया, 05 नये एवं 10 पुराने रोगियों में ई.एस.आर. सामान्य स्तर पर आ गया तथा 2

नये एवं 48 पुराने रोगियों में एन्ट अमीबा हिस्टोलिटिका कृमिकोष लुप्त हो गया। नक्स वोमिका, कार्बो वेजिटेबिलिस, लाईकोपोडियम तथा सल्फर चिरकालिक रोगियों में प्रभावकारी रही तथा अतिपाती रोगियों में मरक्यूरियस सोलुबिलिस ने सर्वोतम परिणाम दिखाए। यह परियोजना जारी रहेगी।

(ख) आदिवासी क्षेत्रों में

पेचिश रोगियो में निम्नलिखित औषधियों के प्रभाव का नैदानिक मूल्यांकनः

एल्सटोनिया कंस्ट्रीक्टा, एम्ब्रोसिया, एस्कलेपियास ट्यूब्रोसा, एटिस्टा इंडिका, साइनोडोन डैक्टाइलोन, एमेटिन, फाइकस इंडिका, हेलेबोरस, होलेर्हेना एंटिडाइसेंटेरिका, लेप्टेण्डरा, सिल्फियम, रेफेनस, ट्रोम्बिडियम, जैन्थोसाइलम तथा जिंकम सल्फ्यूरिकम।

नैदानिक अनुसंधान इकाइयाँ (आदिवासी), ऐजवाल, भारूच, लेह, शिलोंग, विजयवाड़ा तथा सिलिगुड़ि में इस परियोजना पर कार्य चल रहा है।

वर्ष 2000–2001 के दौरान उपलब्धियाँ

अध्ययन किए गए रोगियों की संख्या	–	295
लाभान्वित रोगियों की संख्या	–	131

अवलोकन

भारतीय औषधियों यानि साइनोडोन डैक्टाइलोन (दूब घास), एटिस्टा इंडिका (बानिंबु), तथा फाइकस इंडिका ने सुधरे हुए रोगियों में से 45 प्रतिशत में लाभ पहुंचाया एवं सबसे अधिक प्रभावकारी रहीं। इनके अलावा ट्रोम्बिडियम, एल्सटोनिया कंस्ट्रिक्टा, तथा एमेटिन से भी सुधरे हुए रोगियों में से 49 प्रतिशत को लाभ पहुंचा। यह परियोजना जारी रहेगी।

12. मिरगी रोग/अपस्मार

(क) सामान्य क्षेत्रों में

(अ) रोगोन्मुखी नैदानिक अनुसंधान

परिषद् ने केन्द्रीय होम्योपैथिक अनुसंधान संस्थान, कोट्टायम में 1980 से तथा क्षेत्रीय होम्योपैथी अनुसंधान संस्थान, गुड़िवाड़ा (आंध्र प्रदेश) में अप्रैल, 1988 से यह परियोजना शुरू की है।

वर्ष 2000–2001 के दौरान उपलब्धियाँ

	नये	पुराने
अध्ययन किए गए रोगियों की संख्या	47	36
सुधार अनुक्रमणिका :		
– अति सुधार	08	04
– मध्यम सुधार	07	05
– अल्प सुधार	17	24
असूचित	04	01
उपचाराधीन	09	—
असंशोधित	02	02

अवलोकन

होम्योपैथिक दवाओं ने न केवल मिरगी रोग से संबधित व्यक्तिनिष्ठ तथा वस्तुनिष्ठ लक्षणों मे राहत पहुंचाने में बल्कि उन्हें ल करने तथा उनके दौरों की अवधि, प्रबलता व प्रायिकता को कम करने में भी बहत सहयोग दिया है। मिरगी रोग में क्यूपरम मेटे नैट्रम म्यूरिएटिकम, नैट्रम सल्फयूरिकम तथा पल्साटिला की चिकित्सीय प्रभावकारिता देखी गई। उपचार के दौरान 41 रोगि से किसी में भी मिरगी के दौरों की पुनरावृति नहीं हई। परन्तु उन्हे और अनुवर्तन की आवश्यकता है। केन्द्रीय अनुसंधान सं कोट्टायम में 1997 से 2001 तक 98 रोगियों का अनुवर्तन किया गया तथा 72 रोगियों में परिवर्ती स्तर पर सुधार आया। इ 54 रोगियों में अच्छा खासा सुधार आया जिसमें से 31 रोगी ग्रैंडमाल, 15 रोगी पेटिट माल, 05 रोगी लक्षणात्मक तथा 02 रोगी आक्षेप के थे। 16 रोगियों में मध्यम स्तर का सुधार आया जिनमें से 8 ग्रैंडमाल, 8 पेटिट माल के थे। 2 रोगियों में निम्न स्त सुधार आया जिनमें से 1 पेटिट माल तथा 1 रोगी जी.टी.सी.ई. का था। जो दवाऐं इन रोगियों में प्रभावकारी रही वे इस प्र : हायोसायमस 200, कैल्केरिया कावोनिकम 200, 1एम, बैलाडोना 200, नक्स वोमिका 30,200,1एम, नक्स मोस्केटा 1एम, जैल्सी 30,200,, इगनेशिया 200, 1एम, अर्जेन्टम नाइट्रिकम 1एम, कास्टिकम 30, लैकेसिस 30, आर्सेनिकम एल्बम 200 तथा स्ट्रैमोनियम यह परियोजना अभी जारी है।

13. फाइलेरिया

(क) सामान्य क्षेत्रों में

(अ) रोगोन्मुखी नैदानिक अनुसंधान

नैदानिक अनुसंधान इकाई तिरूपति में 1980 से फाइलेरिया पर रोगोन्मुखी अनुसंधान शुरू किया गया है।

वर्ष 2000–2001 के दौरान उपलब्धियाँ

	नये	पुराने
अध्ययन किए गए रोगियों की संख्या	54	54
सुधार अनुक्रमणिका :		
अभिसाधित	..	09
– अति सुधार	11	11
– मध्यम सुधार	14	10
– अल्प सुधार	15	18
कोई सुधार नहीं	05	06
उपचाराधीन	09	—

अवलोकन

अधिकतर निर्दिष्ट औषधियों के विश्वसनीय संकेतों की जाँच कर ली गई है। रहस टॉक्सीकोडेंड्रोन तथा ब्रायोनिया एल्बा कई रोगियों में न केवल फाइलेरिया से संबंधित कष्टों से राहत पहुचाने में बल्कि उन्हें लुप्त करने में तथा आवेगी दौरों की तीव्र को कम करने में भी बहत सहयोग दिया है। लसीका शोफ की प्रांरभिक अवस्था में विशेषतया दाबगर्तक किस्म चिकित्सा से वशव है परन्तु अदाबगर्तक किस्म एवं हाथी पांव में लंसीका शोथ केवल कुछ हद तक ही कम हुआ, यह नीचे दी गई सारणी से विदि है। यह परियोजना अभी जारी है।

वस्तुनिष्ठ लक्षणों का मूल्यांकनः

	उपचार से पूर्व	उपचार के पश्चात् (लुप्त हो गए)	कम हो गए
लसीका शोफ ग्रेड – I	21	15	06
लसीका शोफ ग्रेड – II	55	16	39
लसीका शोफ ग्रेड – III	12	—	12
लसीकापर्व विकृति	79	31	48
लसीका वाहिनी शोथ	77	31	46

(ब) औषधोन्मुखी नैदानिक अनुसंधान

फाइलेरिया में निम्नलिखित औषधियों की प्रभावोत्पादकता का नैदानिक तौर पर मूल्यांकन :

एपिस मेलिफिका, बैलाडोना, ब्रायोनिया एल्बा, लाइकोपोडियम, मर्क्यूरियस सोल्युब्लिस, नैट्रम म्युरियाटिकम, पल्सैटिला, रोहडोडेण्डरान, रहस टॉक्सीकोडेण्ड्रोन तथा सल्फर।

यह परियोजना होम्योपैथिक अनुसंधान संस्थान, पुरी में 1981 से तथा क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, गुडिवाड़ा में 1985–86 से जारी है।

वर्ष 2000–2001 के दौरान उपलब्धियाँ

	नये	पुराने
रोगियों की संख्या	564	381
सुधार अनुक्रमणिका :		
अभिसाधित	—	10
– अति सुधार	04	58
– मध्यम सुधार	—	107
– अल्प सुधार	30	138
कोई सुधार नहीं	—	54
उपचाराधीन	520	03
असूचित	10	11

अवलोकन

फाईलेरिया एक चिरकालिक आवर्ती रोग है जिसमें अतिपाती तीव्रताऐं आती रहती है, इसे लम्बे उपचार एवं अनुवर्तन की आवश्यकता होती है। वर्ष 2000–2001 के दौरान अनुवर्तन के लिए आए 283 रोगियों के मूल्यांकन से यह पता चलता है कि रोग के व्यक्तिनिष्ठ तथा वस्तुनिष्ठ लक्षणों विशेषतया अतिपाती रोगियों में, बहुत सुधार आया है। 1 माह से से 5 वर्ष तक चले उपचार के दौरान परिवर्ती स्तर पर सुधार पाया गया। बिना किसी विध्नकारी परिवर्तन वाले अतिपाती रोगियों में होम्योपैथिक उपचार का अच्छा प्रभाव पडा। सबसे विलक्षण प्रतिक्रिया लसीका शोफ ग्रेड। में देखी गई जो 47 रोगियों में पूर्ण रूप से लुप्त हो गया तथा

लसीका शोफ ग्रेड।। में 8 रागिया में पूर्ण रूप से लुप्त हो गया तथा 72 रोगियों में परिवर्ती स्तर पर सुधार आया। हाथी पांव
चिरकालिक रोगियों में अपरिवर्तनीय बदलावों की वजह से उपचार का प्रभाव सीमित रहा परन्तु अतिपाती दौरों के कई मामलों
उल्लेखनीय कमी पाई गई। फाईलेरिया की दर्दों के साथ–साथ हाथीपांव वाली टांग के चमडीरोग एवं भारीपन के एहसास से
राहत मिली तथा रोगी अपनी रोजमर्रा की गतिविधियों को पहले से बेहतर तरीके से करने के काबिल हो गया। सुधरे हुए रोगि
को (अतिपाती एवं चिरकालिक दोनों) रस टाक्स, ब्रायोनिया एल्बा, एपिस मेलिफिका तथा सल्फर से लाभ पहुंचा। यह देखा
है कि समय–समय पर पुनरावृत होने वाले दौरों को रोकने के लिए चिकित्सा. के दौरान मध्यवर्ती एंटीमियासमेटिक औषधियों
सल्फर, सोरिनम, थूजा, मेडोराइनम तथा सिफिलाइनम की आवश्यकता रहती है। क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, गुडिवाडा
व्यक्तिनिष्ठ एवं वस्तुनिष्ठ लक्षणों में राहत मिलने के साथ साथ निम्नलिखित विकृतिजन्य रिपोर्ट भी सामान्य हो गई

	रोगियों की कुल संख्या असामान्य वर्ग उपचार से पूर्व	 सामान्य वर्ग उपचार के पश्चात
1. इयोसिन रागी कोशिका बहुलता	43	16
2. उदासीन रागी कोशिका बहुलता	08	08
3. उदासीन रागी कोशिकाल्पता	69	14
4. लसीका कोशिका बहुलता	75	14
5. लसीका कोशिकाल्पता	03	02
6. श्वेतकोशिका बहुलता	52	25
7. श्वेतकोशिकाल्पता	02	02
8. अतिशर्करारक्तता	02	
9. अतिह्रीमोग्लोबिन रक्तता	15	05
10. ई.एस.आर.	41	18

(ख) आदिवासी क्षेत्रों में

फाइलेरिया में निम्नलिखित औषधियों के प्रभाव का नैदानिक तौर पर मूल्यांकन करना :

एपिस मेलिफिका, बैलाडोना, ब्रायोनिया एल्बा, लाइकोपोडियम मक्रयूरियस सोलुबिलिस, माइक्रोफाइलेरिया, नैट्रम म्युरियाटिकम, रोडोडेंड्रोन, कोडिड औषधि।

यह परियोजना चिकित्सा अनुसंधान इकाई (आदिवासी), राँची में जारी है।

वर्ष 2000–2001 के दौरान उपलब्धियाँ

इस वर्ष में फाईलेरिया के 109 नये रोगी पंजीकृत किए गए तथा 26 रोगियों में परिवर्ती स्तर पर सुधार देखा गया।

अवलोकन

निर्दिष्ट औषधियों में से 30 और 200 पोटैंसी में ब्रायोनिया एल्बा सबसे अधिक उपयोगी औषधि रही। 26 लाभान्वित रोगियों में से 24 रोगियों में केवल ब्रायोनिया से सुधार हुआ।

14. पित्तीय पथरी/पित्ताश्मरी

(क) सामान्य क्षेत्रों में

(अ) औषधोन्मुखी नैदानिक अनुसंधान

पित्तीय पथरी के उपचार में विशेषतया पथरी को लुप्त करने अथवा उसके आकार में कमी लाने में एक दुर्लभ औषध फेल टौरी के लाभदायक परिणामों के बारे में उल्लेख है। इसकी प्रभावकारिता का नैदानिक तौर पर मूल्यांकन करने हेतु, परिषद् ने जनवरी 1990 से जून 2000 तक क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली में इस परियोजना पर कार्य किया है। इस परियोजना के अंतर्गत 382 रोगी पंजीकृत किये गये जिनका रोग निदान वैकृत प्राप्तियों के आधार पर किया गया था। 29 रोगियों का 2 वर्ष से अधिक समय तक अनुवर्तन किया गया तथा अधिकतम अनुवर्तन 7 वर्ष तक चला। 33 रोगियों मे अल्ट्रासाऊंड दुबारा करवाने पर 4 रोगियों में कोई पथरी नहीं पाई गई तथा 29 रोगियों में या तो पथरी के आकार में कमी आई या कई पथरियों के स्थान पर एक अथवा कुछ पथरियां रह गई। 229 रोगियों में व्यक्तिनिष्ठ एवं वस्तुनिष्ठ लक्षणों में सुधार के साथ–साथ अतिपाती दौरों की बारम्बारता, तीव्रता एवं अवधि में भी कमी आई।

15. जठर शोथ

(क) सामान्य क्षेत्रों में

(अ) रोगोन्मुखी नैदानिक अनुसंधान

यह अध्ययन नैदानिक अनुसंधान इकाई, इम्फाल में अक्तूबर 1987 से चल रहा है।

वर्ष 2000–2001 के दौरान उपलब्धियाँ

इस वर्ष के दौरान जठरशोथ के 21 रोगी पंजीकृत किये गये तथा 21 रोगियों में परिवर्ती स्तर पर सुधार आया।

अवलोकन

इस परियोजना के अंतर्गत पंजीकृत किए गए रोगी दीर्घकालिक जठर शोथ से पीड़ित हैं। इसमें एनाकार्डियम, नक्स वोमिका, तथा आर्सेनिक एल्बम प्रभावकारी रही। इनमें व्यक्तिनिष्ठ तथा वस्तुनिष्ठ लक्षणों में बहुत राहत मिली तथा 07 रोगियों में कष्टों की पुनरावृति कम तीव्रता में हुई। यह परियोजना जारी रहेगी।

16. जठरांत्र शोथ

(ख) आदिवासी क्षेत्रों में

जठरांत्र शोथ में निम्नलिखित औषधियों की प्रभावकारिता का नैदानिक तौर पर मूल्यांकन :

साइनोडोन डैक्टाइलोन, गैम्बोजिया, जलापा, जैट्रोफा, पोडोफाइलम।

यह परियोजना नैदानिक अनुसंधान इकाई (आदिवासी), इद्दूकी में जारी है।

वर्ष 2000–2001 के दौरान उपलब्धियाँ

इस वर्ष के दौरान जठरांत्रशोथ के 09 रोगी पंजीकृत किए गए। इनमें से 05 रोगियों में साइनोडान डैक्टाइलान, जलापा एवं पोडोफाइलम दवाओं द्वारा सुधार आया।

17. जियार्डिया रूग्णता

(क) सामान्य क्षेत्रों में

(अ) रोगोन्मुखी नैदानिक अनुसंधान

परिषद् ने जियार्डिया रूग्णता में होम्योपैथिक औषधियों की भूमिका का पता लगाने के लिए नैदानिक अनुसंधान इकाई तिरूपति, नैदानिक अनुसंधान इकाई, गुवाहाटी तथा नैदानिक अनुसंधान इकाई, पोर्ट ब्लेयर में अगस्त 1997 से एक अध्ययन शुरू किया है।

वर्ष 2000–2001 के दौरान उपलब्धियाँ

रोगियों की संख्या	नये	पुराने
सुधार अनुक्रमणिका :	24	04
– अति सुधार	24	04

अवलोकन

इस रोग के व्यक्तिनिष्ट तथा वस्तुनिष्ट लक्षणों को कम करने में होम्योपैथिक दवाऐं यानि एटिस्टा इंडिका, चाइना, पोडोफाइलम तथा सल्फर उपयोगी रहीं। 24 रोगियों में उपचार के उपरांत जियार्डिया लैम्बलिया लुप्त हो गया। परन्तु यह रोगी अभी अनुवर्तन में है। 04 पुराने रोगी भी अनुवर्तन के लिए आए, उनमें अच्छा खासा सुधार पाया गया। एक चिरकालिक रोग होने की वजह से जियार्डिया–रूग्णता को लम्बे समय तक अनुवर्तन की आवश्यकता है इसलिए यह रोगी उपचाराधीन है। यह परियोजना जारी रहेगी।

(क) सामान्य क्षेत्रों में

18. कृमिरूग्णता

(ब) औषधोन्मुखी नैदानिक अनुसंधान

कृमिरूग्णता में निम्नलिखित औषधियों के प्रभावोत्पादकता का नैदानिक तौर पर मूल्यांकन :

चिलोन ग्लैब्रा, सिना, क्युप्रम ऑक्सीडेटम नाइग्रम, एम्बैलिया राइब्स, टयुक्रियम मेरम वेरम तथा थाइमोल।

नैदानिक अनुसंधान इकाई, गुड़गांव में 1980 से यह परियोजना प्रारम्भ की गई है।

वर्ष 2000–2001 के दौरान उपलब्धियाँ

रोगियों की संख्या	नये	पुराने
सुधार तालिका		
– अति	55	02
– मध्यम	47	
उपचाराधीन	07	02
	01	—
		—

अवलोकन

निर्धारित की गई दवाओं में से सिना, क्यूपरम आक्सीडेटम नाइग्रम, एम्बेलिया राईब्स तथा टयूक्रियम सबसे प्रभावकारी होम्योपैथिक औषधियां पाई गई। निर्दिष्ट दवाओं ने कुछ रोगियों में कीड़ों के निष्कासन में भी मदद की। यह परियोजना जारी रहेगी।

(ख) आदिवासी क्षेत्रों में

(ब) औषधोन्मुखी नैदानिक अनुसंधान

कृमिरूग्णता में निम्नलिखित औषधियों के प्रभाव का नैदानिक तौर पर मूल्यांकन :

चिलोन, एम्बैलिया राइब्स, फिलिक्स मास, ग्रेनेटम, कोसो, सेण्टोनिनम, स्किरहिनम, साइनैपिस एल्बा, थायमोल, वेरनोनिया एंथेलमिंटिका।

यह परियोजना सेलम, भरमौर, डिफू, दीमापुर, ईटानगर, जैपोर, खोंगजोम (मणिपुर) तथा गंगटोक स्थित नैदानिक अनुसंधान इकाइयों (आदिवासी) में चल रहीं है।

वर्ष 2000–2001 के दौरान उपलब्धियाँ

रोगियों की संख्या	669
लाभान्वित रोगियों की संख्या	427

अवलोकन

इस वर्ष सबसे ज्यादा प्रभावकारी पायी जाने वाली औषधियाँ निम्नलिखित थीं – सेण्टोनिनम, फिलिक्स मास, सिनापिस एल्बा, ग्रेनाटम, चिलोन तथा वेरनोनिया एंथेल्मिण्टिका। लाभान्वित रोगियों में से 91 प्रतिशत रोगियों को इन्हीं औषधियों से लाभ पहुँचा।

19. यकृतशोथ (बी0)

(क) सामान्य क्षेत्रों में

(अ) रोगोन्मुखी नैदानिक अनुसंधान

क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, मुंबई में अगस्त, 1997 से यह परियोजना शुरू की गई। इसका पूर्वलेख भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद की निर्देशक रेखानुसार तैयार किया गया है। इस वर्ष के दौरान कोई भी रोगी पंजीकृत नहीं किया गया।

20. एच.आई.वी. संक्रमण में होम्योपैथिक उपचार का मूल्यांकन

एच.आई.वी एक रिट्रोवायरस है जो मनुष्यों में प्रतिरक्षा उत्पन्न करता है जिससे उपर्जित प्रतिरक्षाहीनता संलक्षण उत्पन्न होता है जिसकी विशेषता बहुत सी अवसरवादी संक्रमणों और/अथवा दुर्दमताओं जैसे कि कैपोसी सार्कोमा और/अथवा नान–हाजकिंस लिम्फोमा का बनना। यह संक्रमण प्रकृति से नष्टकारी है एवं प्राप्त जानकारी के अनुसार इस रोग में मृत्यु दर 90 प्रतिशत है।

1981 में संयुक्त राज्य अमेरिका में एच.आई.वी. के पहले मामले के प्रकाश में आने के बाद से अब तक विश्व भर में लगभग 4 करोड़ लोग एच.आई.वी. से संक्रमित हो चुके हैं। एच.आई.वी./एड्स महामारी से बहुत से देशों, विशेषकर अफ्रीका एवं अफ्रीका के उप सहारा क्षेत्रों में से लैंगिक एवं आर्थिक रूप से उत्पादक लगभग सारी पुरूष आबादी नष्ट हो चुकी है तथा बहुत बड़ी संख्या में अनाथ बच्चे एवं विधवाएँ ही बची हैं। अफ्रीका के उप–सहारा क्षेत्राों में व्यस्कों की मृत्यु का मुख्य कारण एडस है। दक्षिण एवं

मध्य अफ्रीका तथा दक्षिण एवं दक्षिण पूर्व एशिया में एच.आई.वी. संक्रमण की निरन्तर वृद्धि ने विकासशील ससार पर गहरा प्रभाव डाला है। एच.आई.वी. संक्रमण के प्रतिवेदित मामलों में से लगभग 90 प्रतिशत मामले विकासशील देशों मे होने का अनुमान है। बहुत से देशों को अपनी आर्थिक एवं स्वास्थ्य संबंधी प्राथमिकताओं को संशोधित करना पडा है।

यद्यपि एच.आई.वी. भारत में 1986 में प्रगट हुआ, जो कि विश्व के अन्य हिस्सों की तुलना में एक विलंबित प्रवेश था, परन्तु देश के विभिन्न हिस्सों में इसका फैलाव बहुत तेजी से हुआ। नेशनल एडस कन्ट्रोल आर्गेनाइजेशन (एन.सी.ओ.) के अनुमान अनुसार वर्ष 1999 के अंत तक देश में लगभग 3.7 मिलियन लोग एच.आई.वी. से संक्रमित हो चुके है।

संक्रमित रोगियों में से अधिकांश आजकल अलाक्षणिक अवस्था में से गुजर रहे हैं और आने वाले वर्षों में उनमें नैदानिक तौर से सक्रिय एच.आई.वी. रोग विकसित हो जाएगा। विश्वभर में एच.आई.वी./एडस विश्वमारी के नियन्त्रण को दिये जा रहे महत्व को ध्यान में रखते हुए चिकित्सा क्षेत्र के सभी साधनों को इकट्ठा करके इस्तेमाल में लाया जा रहा है। केन्द्रीय होम्योपैथिक अनुसंधान परिषद् ने स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के निर्णय की पालना करते हुए 1989 में एक प्रायोगिक अनुसंधान अध्ययन प्रारम्भ किया जिसका उद्देश्य यह जानना है कि जो होम्योपैथिक औषधियां रोगाणुओं के संक्रमण को रोकने में प्रभावकारी रही है, क्या एच. आई.वी. के सक्रंमण के उपचार एवं नियन्त्रण में उनकी कोई भूमिका है।

यह अध्ययन होम्योपैथिक क्षेत्रीय अनुसंधान मुम्बई में मई,1989 से तथा होम्योपैथिक नैदानिक अनुसंधान इकाई, चेन्नई में अक्टूबर 1991 से "एच.आई.वी. संक्रमण में होम्योपैथिक चिकित्सा का मूल्यांकन" के उद्देश्य के साथ प्रारम्भ किया गया। वर्ष 1993–94 में परिषद् के मुख्यालय, नई दिल्ली में एच.आई.वी./एडस के अनुसंधान में भाग ले रहे अन्य संगठनों द्वारा भेजे गए एच.आई.वी. से संक्रमित रोगियों का उपचार भी प्रारम्भ किया गया। प्रायोगिक अध्ययन के दौरान प्राप्त परिणामों ने मुम्बई 1995–97 में एक रैन्डमाइजड प्लैसिबो कन्ट्रोल अध्ययन करने को प्रोत्साहित किया। कुल मिला कर दोनों साथ–साथ चल रहे अध्ययनों में 100 रोगियों का अध्ययन किया गया। इसके परिणामों की सूचना एवं प्रकाशन पहले से ही ब्रिटिश होम्योपैथिक जर्नल (1999) में किया जा चुका है।

इस संक्रमण की असंक्रामक प्रकृति को तथा अधिकतर रोगियों में नैदानिक लक्षणों की अनुपस्थिति को ध्यान में रखते हुए इन रोगियों का बहिरंग रोगी विभाग में उपचार किया जा रहा है। इन रोगियों की परिचर्या करते समय आवश्यक सुरक्षा सावधानियों (जिनकों सर्वत्र प्रयोग में लाया जाता है) का प्रयोग किया गया। अध्ययन किए जाने वाले पंजीकृत रोगियों को, उनकी प्रतिरक्षा स्थिति, संक्रमण के विभिन्न पहलुओं के बारे में तथा सामाजिक, निजी एवं शारीरिक गतिविधियों में ली जाने वाली सावधानियों के बारे में परामर्श दिया गया।

2000–2001 वर्ष से पूर्व किये गये कार्य का संक्षिप्त विवरण

31 मार्च, 2000 तक एच. आई.वी. से संक्रमित 979 रोगियों को अध्ययन के अन्तर्गत पंजीकृत किया गया। इनमें से 405 को होम्योपैथिक क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान मुम्बई, 491 को नैदानिक अनुसंधान इकाई, चेन्नई तथा 83 को नई दिल्ली में (1993 से लेकर मार्च 2000 के दौरान) पंजीकृत किया गया। पंजीकृत किए गए सभी रोगी दोहराए गए एलीसा के लिए प्रतिक्रिय थे। 342 रोगियों की पुष्टि वैस्ट्रन ब्लाट/इनोलिया परीक्षण द्वारा भी की गई।

वर्ष 2000–2001 की उपलब्धियाँ

वर्ष 2000–2001 के दौरान 153 रोगी पंजीकृत किये गये जिनमें से 66 रोगी क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, मुंबई में, 43 रोगी नैदानिक अनुसंधान इकाई, चैन्नई में तथा 44 रोगी नई दिल्ली में पंजीकृत किये गये। रोगियों तथा उनके परिवार के सदस्यों से पूछताछ द्वारा पता लगाए गए संक्रमण ग्रहण करने के संदिग्ध तरीके इस प्रकार है (सारणी–1)

सारणी–1 एच.आई.वी. सकंमण ग्रहण करने के मार्ग तथा तरीके – 2000–2001

संचारण के ढंग	रोगियों की संख्या
यौन संबंध	
– असामान्य लैंगिक संबंधों से (इतरलिंगी)	138
– समलैंगिकं संबंधों से	02
रक्त/रक्त उत्पाद आधान	02
संक्रमित सुइयों एवं सिरिंज से	—
मातृ भ्रूण	07
अन्य (अनिश्चेय)	04
योग	153

सारणी – 2 नैदानिक स्थिति दर्शाता हुआ – 2000–2001

सी.डी.सी. वर्गीकरण/नैदानिक स्थिति स्तर		पंजीकरण के समय
अवस्था – 1	सीरो कनवर्जन	—
अवस्था – 2	अलाक्षणिक	105
अवस्था – 3	स्थायी व्यापक लसीका पूर्व विकृति	09
अवस्था – 4	(क) एड्स संबंधित का।म्पलैक्स (आक्र)	39
अवस्था – 4	(ख) आक्र या एड्स के साथ स्नायुविक लक्षण	–
अवस्था – 4	(ग) अवसरवादी संक्रमण	–
अवस्था – 4	(घ) दुर्दमता	–
अवस्था – 4	(ड.) अन्य रोग स्थितियाँ	–
	योग	153

सैंटर्स फार डीसीज कन्ट्रोल, अटलांटा, यू.एस.ए.

इनमें से 105 रोगियों, जो अलाक्षणिक थे, का उपचार उन होम्योपैथिक औषधियों से किया गया जिनका रोगजनन रोगियों के अन्तर्निष्ठ स्वाभाविक गुणों (मानसिक/भावात्मक तथा शारीरिक) से मेल खाता था। 48 रोगी लाक्षणिक अवस्था यानि पी.जी.एल. –9 तथा ए.आर.सी.–39 के विशेषतासूचक नैदानिक लक्षणों के साथ उपस्थित हुए। उनका उपचार विद्यमान लक्षणों के आधार पर किया गया।

परिणाम

मई 1989 से मार्च 2001 के दौरान एच.आई.वी./एड्स के अध्ययन के अन्तर्गत पंजीकृत 1132 रोगियों मे से 695 को अध्ययन से अलग कर दिया गया। यहां अध्ययन में चल रहे 437 रोगियों पर विचार किया गया है।

437 रोगियों में से मुम्बई तथा नई दिल्ली में पंजीकृत और नियमित अनुवर्तन में चल रहे 232 रोगियों का विवरण यहां दिया गया है। इन 232 रोगियों में से 135 प्रविष्टि के समय अलाक्षणिक थे। इनमें से 44 में संक्रमण के विकसित होने के लक्षण पाए गए है। 40 रोगी लम्बे समय तक अनुवर्तन के लिए नहीं आए जिससे उनकी अवस्था का पता लगाना मुश्किल हो गया। ए.आर.सी. के एक रोगी में एडस विकसित हो गया। पिछले वर्ष में ए.आर.सी. में पंजीकृत 67 रोगियों में से 10 मे अध्ययन के दौरान सुधार आया।

सारणी – 3 232 रोगियों की प्रविष्टि तथा सूचना देते समय नैदानिक स्थिति

सी.डी.सी. वर्गीकरण/नैदानिक स्थिति		पंजीकरण के समय	अध्ययन के दौरान
अवस्था – 1	सीरो कनवर्जन	–	–
अवस्था – 2	अलाक्षणिक 136	91	
अवस्था – 3	स्थायी व्यापक लसीका पर्व विकृति (पी.जी.एल.)	29	44
अवस्था – 4	(क) एड्स संबंधित काम्पलैक्स (आक्र)	67	56
अवस्था – 4	(ख) आक्र या एड्स के साथ स्नायुविक लक्षण	–	–
अवस्था – 4	(ग) अवसरवादी संक्रमण (एड्स के साथ)	–	01
	(ध) दुर्दमता	–	–
	(ड.) अन्य अवस्थाऐं (ब्यौरा नहीं दिया गया)	–	–
	असूचित (अनियमित अनुवर्तन)	–	40
	योग	232	232

ये आंकडे मुंबई तथा नई दिल्ली में हुए अध्ययन से संबधित है। चैन्नई के आंकडे उपलब्ध नहीं हैं।

होम्योपैथिक औषधियाँ जो प्रभावकारी पाई गई

निम्नलिखित होम्योपैथिक औषधियाँ अध्ययन के दौरान इस्तेमाल की गई :

एलोज़, एंटीमोनियम क्रूडम एंटीमोनियम आर्स, अर्जेन्टम नाइट्रिकम, आरम मैट, ब्रायोनिया, कार्बो वेज, कार्सिनोसिन, कोक्यूलस, क्यूपरम मटैलिकम, फैरम मैट, जैलसिमियम, ग्रेफाइटस, ख्वैकम, इपिकाक, लीडम पाल, नैट्रम फास, रयूमैक्स, सीपिया, सैन्न्यूलेरिया कैन, वेरैट्रम एल्बम, आर्सेनिकम एल्बम, बैलाडोना, कैल्केरिया कार्बोनिका, कैल्केरिया फॉस्फोरिकम, कैल्केरिया सल्फयुरिकम, कैन्थरिस, कास्टिकम, चाईना आफिसिनेलिस, हिपर सल्फ्यूरिकम, काली बाइक्रोमिकम, काली कार्बोनिकम, लैकेसिस, लाईकोपोडियम क्लेवेटम, मैडोरिनम, मक्रयुरियस सोल्युविलिस, नैट्रम म्युरियाटिकम, नैट्रम सल्फयुरिकम, नाईट्रिक एसिडम, नक्स वोमिका, फॉस्फोरस, पल्सैटिला, रहस टॉक्सीकोडेन्डरान, साईलिशिया, सल्फर, सिफिलिनम, थुजा आक्सीडेन्टिलिस एवं टयुर्बकुलाइनम।

औषधियों को 30 से लेकर 10 एम. पौटेन्सी तक दिया गया तथा मात्रा निर्धारण पौटेन्सी के आधार पर और रोगी की उम्र तथा रोग अवस्था के आधार पर किया गया।

चर्चा एवं अवलोकन

इस क्रम में यह दृष्टिगत् हुआ है कि जो रोगी अन्य संक्रमणों जैसे मुखी कैंडिडा, खांसी, कमजोरी, वजन का कम होना, दस्त इत्यादि से पीड़ित थे, उनमें होम्योपैथिक चिकित्सा से सुधार हुआ है। जो रोगी लक्षणरहित एच.आई.वी. संक्रमण के अंतर्गत पंजीकृत हुए. वे तीन से आठ साल की अवधि से लक्षणरहित चल रहे हैं।

एक और कारण जो विशेषतया नई दिल्ली में पंजीकृत रोगियों की भावनात्मक तथा शारीरिक तंदरूस्ती को प्रभावित करता देखा गया, वह था उनके चिकित्सक द्वारा दिया जा रहा सतत मनोवैज्ञानिक बल। जो लोग अपने रोग की स्थिति के बारे में लम्बी वार्ता में सम्मिलित हुए और उन्होंने यह मालूम किया कि उनके लिए क्या लाभदायक है, क्या नहीं, वो लोग शारीरिक व मानसिक रूप से स्थिर तथा एच. आई.वी. के रोगियों को होने वाले किसी भी संक्रमण से मुक्त बने रहे हैं। अभी तक होम्योपैथिक दवाओं का कोई भी प्रतिकूल प्रभाव नहीं देखा गया है। अभी तक के प्राप्त परिणामों से यह संकेत मिलता है कि लक्षणरहित एच.आई.वी. संक्रमण में तथा एच.आई.वी. से संबधित नैदानिक परिस्थितियों का संचालन करने में होम्योपैथिक दवाऐं एक निश्चित भूमिका अदा करती है। यह सब जांच परिणाम एच.आई.वी. से संक्रमित रोगियों के जीवन स्वरूप को सुधारने, इस संक्रमण को रोकने तथा इसकी प्रगति में बाधा डालने में होम्योपैथिक दवाओं की भूमिका को रेखांकित करते हैं। आज इन्हीं तर्कों को एच.आई.वी. रोग के विरूद्ध प्रभावशाली चिकित्सा साधन विकसित करने में महत्व दिया जा रहा है।

भावी योजना

एक समान पूर्वलेखन तथा प्रयोगशाला जांच पड़ताल के साथ एक बहुकेन्द्रीय अध्ययन की योजना बनाई जा रही है।

21. अति निम्न घनत्व लाईपोप्रोटीनिमिया

(क) सामान्य क्षेत्रों में

(अ) रोगोन्मुखी नैदानिक अनुसंधान

अति निम्न घनत्व लाईपोप्रोटीनिमिया में होम्योपैथिक औषधियों की प्रभावकारिता का मूल्यांकन करने के लिए क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली में अप्रैल, 1992 से एक अध्ययन शुरू किया गया है।

वर्ष 2000–2001 के दौरान उपलब्धियाँ

	नये	पुराने
रोगियों की संख्या	30	32
सुधार अनुक्रमणिका :		08
– अति सुधार	02	15
– मध्यम सुधार	08	09
– अल्प सुधार	15	–
असूचित	03	–
उपचाराधीन	02	

अवलोकन

जैसा कि निम्नलिखित सारणी से स्पष्ट है, अध्ययन से प्राप्त परिणाम उत्साहवर्द्धक हैं तथा अति निम्न घनत्व लाईपोप्रोटीनिमिया के उपचार में होम्योपैथिक औषधियों की प्रभावकारिता को पुष्टि करते हैं। नैदानिक रोगात्मक प्राप्तियो में सुधार के साथ–साथ अन्य सम्बद्ध कष्टों से भी राहत मिली जिससे सामान्य स्वास्थ्य लाभ हुआ। एग्रोमा अगस्टा, ब्रायोनिया, कैल्केरिया कार्बोनिकम, लाइकोपोडियम, नक्स वोमिका, पल्सैटिला तथा सल्फर प्रभावकारी औषधियाँ रहीं। यह परियोजना जारी है।

	रोगियों की संख्या	
	उपचार पूर्व	उपचार पश्चात्
कुल ट्राईग्लिसराइडस 170 मि.ग्रा./100 मि.ली. से अधिक	48	32
कुल कोलेस्ट्राल 200 मि.ग्रा./डे.लि. से अधिक	53	29
एल.डी.एल. 150 मि.ग्रा./100 मि.ली. से अधिक	12	07
वी.एल.डी.एल. 50 मि.ग्रा./100 मि.ली. से अधिक	08	06
एच.डी.एल. 35 मि.ग्रा./100 मि.ली से कम	02	02

22. उच्च रक्तचाप

(क) सामान्य क्षेत्रों में

(अ) रोगोन्मुखी नैदानिक अनुसंधान

यह परियोजना अप्रैल 1990 से औषधि मानकीकरण इकाई, हैदराबाद की विस्तार इकाई में चल रही है।

वर्ष 2000–2001 के दौरान उपलब्धियाँ

रोगियों की संख्या	नये	पुराने
सुधार अनुक्रमणिका :	21	68
– अति सुधार		
– मध्यम सुधार	—	
– अल्प सुधार	—	13
यथापूर्व स्थिति	04	21
उपचाराधीन	—	18
	17	08
		08

अनुवर्तन में चल रहे रोगियों की सुधार तालिका

		नये
(अ)	केवल होम्योपैथिक औषधियां	12
	सुधार :	
	अति	06
	मध्यम	04
	निम्न	01
	असंशोधित	01
(ब)	होम्योपैथी के साथ–साथ एलोपैथी/अन्य औषधियां भी जारी रखने का परामर्श	56
	सुधार :	
	अति	07
	मध्यम	17
	निम्न	17
	असंशोधित	07
	काफी सुधार के बाद स्थायी	08

अवलोकन

पिछले 1 साल से लेकर 8 साल 7 माह से अनुवर्तन में चल रहे 68 रोगियों, जिनका पूर्व रक्तचाप प्रकुंचन 130 से 170 मि.मी. मरकरी तथा अनुशिथिलन 90 से 110 मि.मी. मरकरी था, में से 13 रोगियों का रक्तचाप अब सामान्य श्रेणी में पाया गया है अर्थात प्रकुंचन 130 से 160 मि.मी. मरकरी तथा अनुशिथिलन 80 से 100 मि.मी. मरकरी। 10 रोगियों में से जो होम्योपैथिक औषधियों के साथ एलोपैथिक औषधियाँ भी ले रहे थे, एलोपैथिक औषधियां हटा ली गई है और 16 रोगियों में एलोपैथी दवाओं की मात्रा कम हो गई।। एलियम सेटाईवम, बेरिटा म्युरियाटिकम, ब्रायोनिया, लाइकोपोडियम, एल्सैटिला, रावोल्फिया सर्पेन्टीना तथा स्पार्टियम आदि होम्योपैथिक औषधियाँ प्रभावकारी पाई गई। यह परियोजना जारी है।

23. विरामी ज्वर

(क) सामान्य क्षेत्रों में

(अ) रोगोन्मुखी नैदानिक अनुसंधान

रोगोन्मुखी चिकित्सा अनुसंधान कार्यक्रम के अंतर्गत नैदानिक अनुसंधान इकाई, पोर्ट ब्लेयर में 1989 से तथा होम्योपैथिक अनुसंधान इकाई, जयपुर में 1993 से परिषद् ने यह परियोजना शुरू की। विरामी ज्वर में अत्यंत प्रभावकारी पायी जानी वाली औषधियों की विश्वस्त संकेतों के साथ पहचान की गई। बाद में यह अध्ययन औषधोन्मुखी परियोजना के रूप में चलाया गया किन्तु 1997–98 से, के.हो.अ.प. की वैज्ञानिक सलाहकार समिति की 29वीं बैठक में दिए गए सुझावानुसार इस परियोजना का रूपान्तरण कर दिया गया है और अब यह अध्ययन हैनिमन संकल्पना अनुसार निम्नलिखित तरीकों से किया गया जा रहा है :

(1) छुटपुट या महामारी

(2) दलदल रहित क्षेत्रों में महामारी

(3) घातक विरामी ज्वर (दलदल रहित क्षेत्र)

(4) दलदल वाले क्षेत्रों में स्थानिक मारी

वर्श 2000–2001 के दौरान उपलब्धियाँ

	नये	पुराने
रोगियों की संख्या	103	52
सुधार अनुक्रमणिका :		
अभिसाधित		
– अति सुधार	11	15
– मध्यम सुधार	43	19
– अल्प सुधार	30	15
	19	03

अवलोकन

अध्ययन के दौरान यह देखा गया कि 90 प्रतिशत पंजीकृत रोगी छुट–पुट प्रकार के विरामी ज्वर से पीड़ित थे। आर्सेनिकम एल्बम, चाइना आफिसिनेलिस, नेट्रम म्यूरिएटिकम इत्यादि बहुविध उपयोगी औषधियों के साथ–साथ स्वदेशी औषधियां जैसे अमूरा रोहितिका, जेनसियाना, निक्टेन्थेस एरबोर्ट्रिस्टिस तथा सिसलपेनिया बोंड्यूसेला ने भी सकारात्मक परिणाम दिखाएं है किन्तु इसको और अधिक सत्यापन की आवश्यकता है। यह परियोजना जारी है।

24. लौह अल्पताजन्य अरक्तता

(क) सामान्य क्षेत्रों में

(अ) रोगोन्मुखी नैदानिक अनुसंधान

लौह अल्पताजन्य अरक्तता में सबसे प्रभावकारी औषधियों को विकसित करने के लिए परिषद ने क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली में अप्रैल 1992 से जून 2000 तक अध्ययन किया। कुल 223 रोगी पंजीकृत किये गये जिनमें से 185 स्त्रियां थी और उनमें से 160 प्रजनक उम्र की थी। 121 रोगियों में अपर्याप्त आहार, 82 रोगियों में मासिक रक्त हानि तथा 20 रोगियों में पारजैविक जन्तु बाधा की वजह से यह अरक्तता थी। रोग निदान नैदानिक लक्षणों एवं वैकृत प्राप्तियों के आधार पर किया गया, आने वाले 172 रोगियों में से 60 में अच्छा खासा, 42 में मध्यम एवं 31 में निम्न स्तर पर सुधार आया तथा 39 रोगियों में कोई सुधार नहीं आया। 18 रोगियों में हीमोग्लोबिन 4 ग्राम प्रतिशत, 6 रोगियों में 3 ग्राम प्रतिशत, 48 रोगियों में 2 ग्राम प्रतिशत एवं 27 रोगियों में 1 ग्राम प्रतिशत तक बढ़ गया। नैट्रम म्यूरैटिकम , पल्सटीला, फासफोरस, चाईना, फैरम मटैलिकम, कैल्केरिया कार्बोनिका, फैरम फासफोरिकम तथा एम्बेलिया राईब्स प्रभावकारी औषधियां रही। प्रतिक्रिया दिखाने वाले रोगियों में उपचार की अवधि 1 से 5 महीने थी।

25. क्षुब्ध वृहदान्तर संलक्षण

(क) सामान्य क्षेत्रों में

(अ) रोगोन्मुखी नैदानिक अनुसंधान

क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली में अप्रैल1992 से तथा नैदानिक अनुसंधान ईकाई पोर्ट ब्लेयर में 1998 –99 से इस परियोजना पर अध्ययन चल रहा है।

वर्ष 2000–2001 के दौरान उपलब्धियाँ

	नये
रोगियों की संख्या	25
सुधार अनुक्रमणिका	
– अति सुधार	10
– मध्यम सुधार	08
– अल्प सुधार	07

अवलोकन

वर्ष 2000–2001 के दौरान 25 नये रोगी अध्ययन के लिए पंजीकृत किए गए। रोग के व्यक्तिनिष्ठ तथा वस्तुनिष्ठ लक्षणों का नियंत्रण करने में होम्योपैथिक चिकित्सा प्रभावकारी साबित हुई है हालांकि इसका रोगात्मक सत्यापन करना अभी बाकी है होम्योपैथिक औषधियां जैसे अर्जेन्टम नाइट्रिकम, नक्स वोमिका तथा फासफ़ोरस प्रभावकारी पाई गई है। यह परियोजना जारी है।

26. जापानी इन्सेफलाइटिस/मस्तिष्क ज्वर

(क) सामान्य क्षेत्रों में

(ब) औषधोन्मुखी नैदानिक अनुसंधान

पूर्वी उत्तरप्रदेश के गोरखपुर जिले (जहां जापानी मस्तिष्क ज्वर स्थानिक मारी है) में दिसंबर 1997 से प्रारंभिक एवं नियंत्रित अध्ययन शुरू किया गया है। इसका उद्देश्य के.हो.अ.प. द्वारा 1991 में किए गए अध्ययन को ध्यान में रखते हुए, जापानी इंसेफलाइटिस में रोगरोधक के रूप में बैलाडोना 200 के प्रभाव को देखना है। इस अध्ययन के लिए एक अनुसंधान पूर्वलेख सूत्रबद्ध किया गया है।

यह अध्ययन शुरूआत में दो गाँवों तक ही सीमित था। (जहाँ पिछली महामारियों में जापानी इंसेफलाइटिस का घनत्व बहुत ज्यादा था)। सभी स्कूली बच्चों को (जो अन्तर्वेशन तथा अपवर्जन मापदण्ड के भीतर आते थे) रोग की चरणसीमा वाले मौसम के एक महीने पहले रोगनिरोधक दवा बैलाडोना 200 की एक खुराक/साप्ताहिक/मासिक दी गई। एक साथ दो पड़ौसी गांवों का (नियंत्रण के रूप में) सर्वेक्षण किया गया। दोनो वर्षों में 3 महीने तक नियमित रूप से साप्ताहिक अनुवर्तन किया गया। इस अवधि में 1439 बच्चे नियंत्रण के रूप में थे तथा 2043 को रोगनिरोधक दिया गया। किसी में भी अनुवर्तन के दौरान संक्रमंण नहीं पाया गया। इस अवधि में महामारी फैलने के दौरान गौंडा जिले में खसरा एवं छोटी माता के उपचार के लिए एक दल पहुंचा। बाह्य रोगी विभाग में विभिन्न बीमारियों के 1484 रोगी अंकित किए गए तथा उन्हें लक्षणानुसार उपचार दिया गया। आम जनता की जानकारी के लिए एक हिन्दी की लघु पुस्तिका का प्रकाशन भी इकाई द्वारा किया गया जिसमें रोग के कारणों, वाहक, रोग फैलने के तरीकों, मच्छर के विकसित होने के स्थान, मच्छर के काटने के कितने दिन बाद रोग के लक्षण दिखाई देते हैं, बचाव के साधनों, होम्योपैथिक रोग निरोधक दवा लेने के तरीको इत्यादि का विवरण था।

किसी निष्कर्ष पर पहुँचने के लिए यह आँकड़े पर्याप्त नहीं है। हो सकता है कि और महामारी रिपोर्टों से बैलाडोना की प्रतिरोधक उपयोगिता का सत्यापन हो जाए। यह परियोजना जारी रहेगी।

27. मलेरिया

(क) सामान्य क्षेत्रों में

(अ) रोगोन्मुखी नैदानिक अनुसंधान

राष्ट्रीय स्वास्थ्य की दृष्टि से इसके महत्व को ध्यान में रखते हुए परिषद् ने 1979 से होम्योपैथिक अनुसंधान संस्थान, ज... में यह अनुसंधान कार्यक्रम शुरू किया है।

वर्ष 2000–2001 के दौरान उपलब्धियाँ

	नये	पुराने
अध्ययन किए गए रोगियों की संख्या	101	87
सुधार अनुक्रमणिका :		
अभिसाधित	17	14
सुधार		
– अति सुधार	41	33
– मध्यम सुधार	24	25
– अल्प सुधार	14	15

अवलोकन

संस्थान में पंजीकृत किए रोगियों में से मलेरिया के अधिकांश रोगी प्लाज्मोडियम वाइवैक्स से ग्रसित थे। एल्सटोनि... कंस्ट्रिक्टा, आर्सेनिक एल्बम, सिसलपेनिया बोंड्यूसेला, चाइना आर्सेनिकोसम, नेट्रम म्यूरिएटिकम तथा निक्टेन्थेस एब्रोटि... सबसे अधिक प्रभावकारी पाई गई। यह देखा गया कि मलेरिया के नूतन आक्रान्तों में उपचार से शीघ्र प्रतिक्रिया मिली और ... रोगियों में पहले क्लोरोक्विन दवा दी गई थी, उनमें देर से प्रतिक्रिया मिली। यह परियोजना जारी है।

(ख) जनजातीय क्षेत्रों में

मलेरिया में निम्नलिखित औषधियों का नैदानिक तौर पर मूल्यांकन:

एल्सटोनिया कंस्ट्रिक्टा, एमूरा रोहिताका, अरेनिया डायडेमा, चिनिनम सल्फ्युरिकम, चिरैता, ल्यूफा बिंडल, मलेरिया आफिसिनेलि... ओस्ट्रिया वर्जीनिका, ट्राइकोसैन्थेस डियोका, वाइटेक्स नेगुंडो। नैदानिक अनुसंधान इकाईयों (जनजातीय) आइजाल तथा जी... इस परियोजना पर कार्य चल रहा है।

वर्ष 2000–2001 के दौरान उपलब्धियाँ

रोगियों की संख्या	76
लाभान्वित रोगियों की संख्या	44

अवलोकन

निर्धारित औषधियों के समूह में से चिनिनम सल्फ्युरिकम, चिरैता, एल्सटोनिया कंस्ट्रिक्टा, एरेनिया डायडेमा तथा मलेरिया आफिसिनालिस आदि होम्योपैथिक औषधियाँ अधिकतम प्रभावकारी पाई गई तथा लाभान्वित रोगियों में से 88 प्रतिशत रोगियों को इन औषधियों से लाभ पहुँचा।

28. मानव भ्रूण की कुस्थिति

(क) सामान्य क्षेत्रों में

(व) औषधोन्मुखी नैदानिक अनुसंधान

मानव भ्रूण की कुस्थिति को सही करने में पल्सटीला नाइग्रा 200 की प्रभावोत्पादकता का नैदानिक तौर पर मूल्यांकन करना।

प्रसूति–विज्ञान के क्षेत्र में होम्योपैथिक दवाओं के बहुत उपयोगी होने के बारे में कहा गया है विशेषतया पल्सेटीला नाइग्रा, जो कि मुख्य तौर पर एक स्त्री औषध है, के मानव भ्रूण की कुस्थिति को सही करने की सामर्थ्य रखने के बारे में सूचना मिली है। परिषद् ने इस बारे में वैज्ञानिक अध्ययन करने के लिए नैदानिक अनुसंधान इकाई, वाराणसी में यह परियोजना प्रारम्भ की है जहां सभी अनुसंधान संबधी रोगी आधुनिक चिकित्सा के परामर्शदाताओं द्वारा भेजे जाते है।

वर्ष 2000–2001 के दौरान उपलब्धियाँ

अध्ययन किए गए रोगियों की संख्या	30
औषधि	पल्सैटिला निग्रा 200
खुराक	गर्भावस्था के 28वें सप्ताह के बाद
	सप्ताह में दो खुराक
सुधार अनुक्रमणिका :	
– प्रतिक्रिया दिखाई दी	06
– कोई प्रतिक्रिया नहीं	12
– असूचित	05
– उपचाराधीन	07

अवलोकन

अध्ययन के दौरान पाया गया कि 30 में से 06 रोगियों में मानवभ्रूण की कुस्थिति को सही करने में पल्सैटिला 200 प्रभावकारी रही है। पाए गए यह परिणाम उपयोगी हैं तथा इसके प्रयोग के लिए उपलब्ध संकेतों को पुष्ट करते हैं। और निर्देश देते है कि शल्यक्रिया करने से पहले भ्रूण की कुस्थिति को सही करने के लिए परीक्षण किया जा सकता है। किंतु इन परीक्षणों के पहले इसके बार–बार सत्यापन की आवश्यकता है। यह परियोजना जारी है।

29. अतिरज

(क) सामान्य क्षेत्रों में

(ब) औषधोन्मुखी नैदानिक अनुसंधान

अतिरज में निम्नलिखित औषधियों की प्रभावोत्पादकता का अध्ययन करना :

फाईकस रेलिजियोसा, ईरिजरोन, जेरेनियम मेक्यूलेटम, लेडम पाल, थलैस्पी बर्सा पैस्टोरिस तथा ट्रिलियम पेंडुलम। यह अध्ययन वर्ष 1987 से नैदानिक अनुसंधान इकाई, वाराणसी में प्रारम्भ किया गया है।

वर्ष 2000–2001 के दौरान उपलब्धियाँ

अध्ययन किए गए रोगियों की संख्या	38
खुराक	15 दिनों तक रोज 5 से 8 बूंद दिन में तीन बार तथा अगले तीन माह तक हर महीने में 15 दिनों के लिए इसी प्रकार सेवन करना।
सुधार अनुक्रमणिका :	
फाइकस रिलिजियोसा	
– सुधार	
– अति	
– मध्यम	07
– निम्न	09
– असंशोधित	03
– असूचित	03
– उपचाराधीन	05
जैरेनियम मैक्यूलेटम	02
– सुधार	
– अति	
– मध्यम	06
– निम्न	04
– असंशोधित	05
– असूचित	04
– उपचाराधीन	04
थलैस्पी बरसा पैस्टोरिस	01
– सुधार	
– अति	
– मध्यम	08
– निम्न	05
– असंशोधित	04
– असूचित	04
– उपचाराधीन	04
ट्रिलियम पैन्डुलां	01
– सुधार	
– अति	
– मध्यम	
– निम्न	02
	01
	02

अवलोकन

यह देखा गया कि निर्दिष्ट औषधियां ट्रिलियम, पेन्डुलम, फाईकस रेलिजियोसा, थलैस्पी बरसा पैस्टोरिस तथा जेरेनियम मेक्यूलेटम व्यक्तिनिष्ठ तथा वस्तुनिष्ठ लक्षणों को सुधारने में प्रभावकारी रही हैं। 09 रोगियों में उपचार के दौरान हीमोग्लोबिन के स्तर में 1 ग्राम से 3 ग्राम प्रतिशत की वृद्धि भी हुई। यह परियोजना जारी रहेगी।

30. अस्थि संधिशोथ

क) सामान्य क्षेत्रों में

(ब) रोगोन्मुखी नैदानिक अनुसंधान

अस्थि संधिशोथ के उपचार एवं रोकथाम में होम्योपैथिक औषधियों की प्रभावकारिता का मूल्यांकन करने के लिए क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, गुडिवाडा (आंध्र प्रदेश) में 1984 से तथा नैदानिक अनुसंधान इकाई, पटियाला (पंजाब) में 1979 तथा केन्द्रीय अनुसंधान संस्थान, कोट्टायम में जुलाई 2000 से एक अध्ययन जारी है।

वर्ष 1999–2000 के दौरान उपलब्धियाँ

	नये	पुराने
अध्ययन किए गए रोगियों की संख्या	128	105
सुधार अनुक्रमणिका :		
– अति सुधार	06	05
– मध्यम सुधार	38	61
– अल्प सुधार	46	27
असूचित	14	—
कोई सुधार नहीं	01	12
उपचाराधीन	23	—

अवलोकन

जो रोगी जोड़ों के दुखन के साथ आए थे उन्हें कास्टिकम, रस टाक्स, ब्रायोनिया से जोड़ों के दर्द एवं अकडन में बहुत राहत मिली तथा कुछ रोगियों को अपने कष्टों से पूर्णतः छुटकारा मिल गया जिससे उनकी जिंदगी आरामदायक हो गई। 25 रोगियों में हीमोग्लोबिन के स्तर में उल्लेखनीय बढ़ोतरी हुई (.5 ग्राम प्रतिशत से 7 ग्राम प्रतिशत तक) जो कि उनके सामान्य स्वास्थ्य में सुधार की सूचक थी। यह परियोजना जारी रहेगी।

(ग) औषधोन्मुखी नैदानिक अनुसंधान

अस्थि संधिशोथ में निम्नलिखित औषधियों की प्रभावोत्पादकता का नैदानिक तौर पर मूल्यांकन :

ब्रायोनिया, थूजा, कैल्केरिया कार्बोनिकम, फॉर्मिका रूफा, रहस टॉक्सिकोडेन्ड्रोन, विस्कम एल्बम, लाईकोपोडियम, ग्वैकम, कॉस्टिकम, वायोला ओडोरेटा, कैल्केरिया फ्लोरिकम तथा कैसिया सोफेरा।

क्षेत्रीय अनुसंधान इकाई, गुडिवाढा तथा नैदानिक अनुसंधान इकाई, पटियाला में 1996–97 से यह अध्ययन शुरू किया गया।

वर्ष 2000–2001 के दौरान उपलब्धियाँ

	नये	पुराने
अध्ययन किए गए रोगियों की संख्या	94	95
सुधार अनुक्रमणिका :		
सुधार		
– अति सुधार	—	08
– मध्यम सुधार	12	51
– अल्प सुधार	49	36
उपचाराधीन	18	—
असूचित	15	—

अवलोकन

अस्थि संधिशोथ के 50 से 90 प्रतिशत रोगियों में दर्द तथा अकड़न में और संयुक्त जठरीय अव्यवस्था में अच्छा खासा सुधार हुआ है परन्तु इसे लम्बे अनुवर्तन की आवश्यकता है। रस टाक्सिकोडेन्ड्रान तथा ब्रायोनिया एल्बा औषधियों सबसे प्रभावकारी रहीं तथा ये एक दूसरे का अच्छा अनुसरण करती है इनके साथ–साथ फार्मिक रूफा, कास्टिकम एवं कैल्केरिया कार्बोनिका भी प्रभावकारी ओषधियां रही। इन औषधियों के विश्वसनीय संकेतों का सत्यापन हो चुका है परन्तु इसके पुष्टीकरण की आवश्यकता है। यह परियोजना जारी रहेगी।

(ख) जनजातीय क्षेत्रों में

अस्थि संधिशोथ में निम्नलिखित औषधियों का नैदानिक तौर पर मूल्यांकन :

एक्टिया स्पाइकैटा, एंग्युस्चुरा वेरा, केलोफाइलम, फॉर्मिक रूफा, फॉर्मिक एसिड, गॉल्थेरिया, ग्वैकम, लिथियम कार्बोनिकम, मैग्नोलिया ग्रैंडिफ्लोरा, मलेरिया ऑफिसिनालिस, रेडियम ब्रोमेटम, रैमनस, स्टेलैरिया मीडिया, एक्स–रे, कैल्केरिया फ्लोरिका, मैडोराइनम, ओस्टिओ अर्थराइटिस नोसोड।

पांडिचेरी एवं विजयवाड़ा स्थित नैदानिक अनुसंधान इकाइयों (आदिवासी) में यह परियोजना चल रही है।

वर्ष 2000–2001 के दौरान उपलब्धियाँ

अध्ययन किए गए रोगियों की संख्या	182
लाभान्वित रोगियों की संख्या	117

अवलोकन

अस्थि संधिशोथ के लिए निर्धारित औषधियों के समूह में से रेडियम ब्रोमेटम, लीथीयम कार्बोनिकम, एंगस्तुरा वेरा,, फारमिका रूफा तथा एक्टिया स्पाइकेटा सबसे अधिक प्रभावकारी पाई गई।

31. पैप्टिक व्रण

(ख) जनजातीय क्षेत्रों में

पैप्टिक व्रण में निम्नलिखित औषधियों के प्रभाव का नैदानिक तौर पर मूल्यांकन :

एसिटिक एसिड, एट्रोपिन, कंडयुरेंगो, कोर्टिकोट्रोपिन, युफोर्वियम, हाइड्रोसाएनिक एसिड, सिम्फाईटम, यूरेनियम नाइट्रिकम।

यह परियोजना नैदानिक अनुसंधान इकाई (आदिवासी), पांडिचेरी में चल रही है।

अवलोकन

वर्ष 2000–2001 में अध्ययन के लिए 75 रोगी पंजीकृत किए गए तथा निर्दिष्ट औषधियों से 27 रोगियों में परिवर्ती स्तर पर सुधार आया। एसिटिक एसिड, कन्डुरेंगो, एट्रोपिन एवं हाइड्रोसायनिक एसिड औषधियां सबसे प्रभावकारी पाई गई।

32. प्रोस्टेट ग्रंथि में वृद्धि/प्रोस्टेट विवर्धन

(क) सामान्य क्षेत्रों में

(अ) रोगोन्मुखी नैदानिक अनुसंधान

प्रोस्टेट ग्रंथिवृद्धि/विवर्धन में सबसे प्रभावकारी औषधियों का पता चलाने हेतु परिषद् द्वारा होम्योपैथिक अनुसंधान संस्थान, जयपुर में 1996–97 से वैज्ञानिक पद्धति पर आधारित एक अध्ययन शुरू किया गया है।

वर्ष 2000–2001 के दौरान उपलब्धियाँ

	नये	पुराने
अध्ययन किए गए रोगियों की संख्या	17	22
सुधार अनुक्रमणिका :		
– अति सुधार	04	03
– मध्यम सुधार	06	09
– अल्प सुधार	04	07
असंशोधित	03	03

अवलोकन

होम्योपैथिक औषधियों ने व्यक्तिनिष्ठ तथा वस्तुनिष्ठ लक्षणों में राहत पहुंचाई है। निर्दिष्ट होम्योपैथिक औषधियों जैसे थूजा, कोनियम, ने परिवर्ती पोटेसिंयों में लक्षणों में बहुत राहत पहुंचाई है। इसके अतिरिक्त इन्द्रिय औषध सेबल सेरूलेटा मूलार्थ रूप में दिन में दो अथवा तीन बार दी गई तथा प्रभावकारी पाई गई। रोगियों ने लघुशंका की बारम्बारता तथा मूत्र रोके रखने पर होने वाली असुविधा में भी सुधार अनुभव किया। यह परिणाम उत्साहवर्धक है और यह अध्ययन जारी है।

33. गुर्दा पथरी

(क) सामान्य क्षेत्रों में

(अ) रोगोन्मुखी नैदानिक अनुसंधान

नैदानिक अनुसंधान इकाई, इम्फाल में 1987 से इस परियोजना पर अध्ययन किया जा रहा है।

अवलोकन

वर्ष 2000–2001 में 15 नये रोगी पंजीकृत किये गए। इनमें से 2 रोगियों में अच्छा खासा, 5 रोगियों में मध्यम, 6 रोगियों में निम्न स्तर पर सुधार आया। इनमें रोगियों में रक्तमेह, मूत्रण में जलन तथा दर्द के दौरों में सुधार हुआ। बताई गई औषधियां इन लक्षणों को नियंत्रित करने में बहुत प्रभावकारी रही और वही वर्ग पिछले वर्षों में भी प्रभावकारी पाया गया परन्तु इनका और आगे सत्यापन करने की आवश्यकता है। यह परियोजना जारी रहेगी।

34. रूमेटॉइड संधिशोथ

(क) सामान्य क्षेत्रों में

(अ) रोगोन्मुखी नैदानिक अनुसंधान

नैदानिक अनुसंधान इकाई, उडूपि में 1988–89 से इस परियोजना पर अध्ययन किया जा रहा है।

वर्ष 2000–2001 के दौरान उपलब्धियाँ

	नये	पुराने
अध्ययन किए गए रोगियों की संख्या	06	41
सुधार अनुक्रमणिका :		
– अति सुधार	04	25
– मध्यम सुधार	02	12
– अल्प सुधार	—	04

अवलोकन

नैदानिक अध्ययनों में देखा गया है कि 41, 41, 04, 41 एवं 09 रोगियों में व्यक्तिनिष्ठ लक्षण जैसे दर्द, जोडों की सूजन, भूख न लगना, चलने से दर्द का बढ़ना एवं कमज़ोरी क्रमशः लुप्त हो गए तथा 41, 19, 05 एवं 02 रोगियों में वस्तुनिष्ठ लक्षण जैसे दुखन, सुबह की अकड़न, भार कम होना तथा ज्वर क्रमशः लुप्त हो गए। 43 रोगियों के बढ़े हुए ई.एस.आर. एवं 31 रोगियों की अरक्तता में भी वैकृत जांच से सुधार पाया गया। इन रोगियों की संख्या में नये एवं पुराने रोगी, दोनों शामिल है। यह परियोजना जारी है।

(ख) जनजातीय क्षेत्रों में

35. नासाशोथ

(अ) रोगोन्मुखी नैदानिक अनुसंधान

नासाशोथ में निम्नलिखित औषधियों का नैदानिक तौर पर मूल्यांकन :

एनिमोप्सिस कैलिफोर्निका, एंथिमिस नोबिलिस, आरम म्युरियाटिकम, जरस्टीशिया एधाटोडा, लेम्ना माईनर, मेन्थेल, क्विलिया सेपोनेरिया, सेंग्वीनेरिया नाइट्रिका, साइनेपिस नाईग्रा, थेरिडियोन।

यह परियोजना शिलांग, जगदलपुर तथा भारूच स्थित नैदानिक अनुसंधान इकाइयों (जनजातीय) में जारी है।

वर्ष 2000–2001 के दौरान उपलब्धियाँ

अध्ययन किए गए रोगियों की संख्या	147
लाभान्वित रोगियों की संख्या	84

अवलोकन

लाभान्वित रोगियों में से 86 प्रतिशत में लेम्ना माइनर, जस्टीशिया एधाटोडा, तथा सेंग्वीनेरिया नाईट्रिका सबसे ज्यादा प्रभावकारी रही।

36. सिक्कल सैल अनीमिया/दात्रलोहितकोशिका अरक्तता

(क) जनजातीय क्षेत्रों में

(अ) रोगोन्मुखी नैदानिक अनुसंधान

सिक्कल सैल अनीमिया में होम्योपैथिक औषधियों के प्रभाव का पता चलाने के लिए परिषद् ने 1987–88 में उडीसा के संबलपुर जनजातीय क्षेत्र में स्थित नैदानिक अनुसंधान इकाई में वैज्ञानिक पद्धति पर आधारित एक योजनाबद्ध अध्ययन शुरू किया। जहां आदिवासियों में दांत्रकोशिका विशेषकर पाया जाता है। यह अध्ययन निम्नलिखित पद्धति के अनुसार किया जा रहा है :

1. सर्वेक्षण : संबलपुर क्षेत्र के आसपास के सभी ग्रामों का सर्वेक्षण कर रोग से पीडित परिवारों के यहाँ से रक्त का संग्रह करना तथा विवरण तैयार करना।
2. आरोगम्यकर : जिन रोगियों में दांत्रलोहित कोशिका अरक्तता पाई जाती है उन्हें एक अनुमोदित अनुसंधान पूर्वलेख के अंतर्गत उनके शरीर गठन, स्वभाव और लक्षणों के आधार पर चिकित्सा प्रदान की जाए।

वर्ष 2000–2001 के दौरान उपलब्धियाँ

	नये	पुराने
अध्ययन किए गए रोगियों की संख्या	54	205
सुधार अनुक्रमणिका :		
– अति सुधार	—	31
– मध्यम सुधार	—	64
– अल्प सुधार	38	73
कोई सुधार नहीं	03	33
अनुपस्थित	13	04

अवलोकन

यह देखा गया है कि ब्रायोनिया 30, 200, 1 एम., रहस टॉक्स, 200, 1 एम., मैग्नेसिया फॉस्फोरस 6 एक्स, 30, 200, लाईकोपोडियम 30, 200, कैल्केरिया कार्बोनिकम 30, 200, 1 एम., नैट्रम म्युरियाटिकम 30, 200, वैनेडियम 30, 200, चेल्डोनियम 30, ट्यूबरकुलिनम 200 आदि हमारी औषधियाँ इस रोग को नियंत्रित करने में इस हद तक सक्षम हैं कि रोगी कई वर्षों तक लक्षणरहित रहते हैं।

205 रोगियों में से 37 रोगी, जिन्हें होम्योपैथिक उपचार से पूर्व रक्ताधान दिया गया, उनमें से केवल 05 रोगियों को और आगे रक्ताधान की आवश्यकता पड़ी। 30 रोगियों को और अधिक रक्ताधान की आवश्यकता नहीं पड़ी। यह देखा गया है कि जिन रोगियों में सुधार हुआ उन्हें अपने कष्टों के लिए कम तीव्र औषध जैसे कालमेघ मदर टिंक्चर की आवश्यकता पड़ी। 81 रोगियों में पिछले 1 से 3 सालों में, 09 रोगियों को पिछले 3 से 5 सालों में तथा 5 रोगियों में पिछले 5 से 9 सालों में किसी भी कष्ट की पुनरावृति नहीं हुई। यह परियोजना जारी रहेगी।

37. साइनुसाइटिस/वायुविवरशोथ

(क) सामान्य क्षेत्रों में

(अ) रोगोन्मुखी नैदानिक अनुसंधान

साइनुसाइटिस में होम्योपैथिक औषधियों की प्रभावकारिता का मूल्यांकन करने के लिए परिषद ने नैदानिक अनुसंधान इकाई, शिमला में 1985 से तथा नैदानिक अनुसंधान इकाई, चेन्नई में 1987 से यह परियोजना शुरू की है।

वर्ष 2000–2001 के दौरान उपलब्धियाँ

	नये	पुराने
अध्ययन किए गए रोगियों की संख्या	34	16
सुधार अनुक्रमणिका :		
सुधार		
– मध्यम सुधार	––	09
– अल्प सुधार	––	07
उपचाराधीन	34	––

अवलोकन

बैलाडोना, हिपर सल्फ़्यूरिकम, नैट्रम म्युरियाटिकम, लाईकोपोडियम तथा काली बाईक्रोमिकम औषधियॉ परिवर्ती पौटेन्सियों में प्रभावकारी रही। ये औषधियां व्यक्तिनिष्ठ तथा वस्तुनिष्ठ लक्षणों को सुधारने तथा कुछ रोगियों में इन्हें समाप्त करने में सहायक सिद्ध हुई है। अमोनियम कार्बोनिकम 30, ब्रायोनिया 30, सैम्बुकस 30, तथा स्फाइजीलिया 30 से दौरों की तीव्रता पर नियंत्रण पा लिया गया। परवर्ती दौरों की बारम्बारता तथा तीव्रता भी कम हो गई। यह परियोजना जारी है।

(ख) जनजातीय क्षेत्रों में

साइनुसाइटिस में निम्नलिखित औषधियों के प्रभाव का नैदानिक तौर पर मूल्यांकन करना :

एनिमोप्सिस कैलिफोर्निका, एन्थेमिस नोबिलिस, आरम म्यूरिएटिकम, जस्टिशिया एधाटोडा, लेम्ना माइनर, मैन्थोल, क्विलाया, सैंग्विनेरिया नाइट्रिका, सेपोनेरिया, सिनेपिस नाइग्रा, थेरिडियोन।

नैदानिक अनुसंधान इकाईयों में (जनजातीय) गैंगटाक तथा विजयवाड़ा में इस परियोजना पर कार्य चल रहा है।

वर्ष 2000–2001 के दौरान उपलब्धियां

अध्ययन किए गए रोगियों की संख्या	104
लाभान्वित रोगियों की संख्या	83

इस वर्ष के दौरान निर्दिष्ट औषधियों में से जस्टिशिया एधाटोडा, लेमना माइनर तथा सिनेपिस नाइग्रा, सबसे प्रभावकारी औषधियां रही। सुधरे हुए रोगियों में से लगभग 92 प्रतिशत को इन औषधियों से लाभ पहुंचा।

38. त्वचा विकार

(क) सामान्य क्षेत्रों में

(अ) रोगोन्मुखी नैदानिक अनुसंधान

एलर्जिक त्वक्‌रोग सोरिएसिस, पित्ती आदि विभिन्न त्वचा विकारों में अत्याधिक प्रभावी औषधियों के एक समूह का पता लगाने के लिए परिषद ने नैदानिक अनुसंधान इकाई, गुड़गांव में 1982 से तथा नैदानिक अनुसंधान इकाई, पटियाला में 1985 से तथा नैदानिक अनुसंधान इकाई गोरखपुर में अप्रैल 2000 से अनुसंधान अध्ययन शुरू किया।

वर्ष 2000–2001 के दौरान उपलब्धियाँ

	नये	पुराने
अध्ययन किए गए रोगियों की संख्या	154	33
सुधार अनुक्रमणिका :		
सुधार		
– अति सुधार	47	15
– मध्यम सुधार	32	05
– अल्प सुधार	38	02
कोई सुधार नहीं	04	––
असूचित	04	––
छोड़ दिए गए	29	––

अवलोकन

विभिन्न प्रकार के त्वचाशोथ में जो औषधियां प्रभावकारी पाई गई, वे इस प्रकार है, पित्ती में सीपिया तथा सल्फर, संस्पर्श त्वकशोथ में पैट्रोलियम, एलर्जिक त्वचाशोथ में हाइड्रोक्रोटाइल, प्रकाश–त्वचाशोथ में सल्फर, सीपिया, मरक्यूरियस सोलुबिलिस, हाइड्रोकोटाइल तथा पाम्फोलिक्स में हाइड्रोकोटाइल, सीपिया तथा पैट्रोलियम। 46 रोगियों में रोग की कोई पुनरावृति नहीं हुई। यह परियोजना जारी है।

(ख) आदिवासी क्षेत्रों में

त्वचा रोगों में निम्नलिखित औषधियों का नैदानिक तौर पर मूल्यांकन :

एल्नस, एंथ्राकोकली, अरब्युटस एंड्राक्ने, आर्सेनिकम आयोडेटम, बर्बेरिस एक्विफोलियम, यूफोर्बियम, हाइग्रोफिला स्पाईनोसा, आयडोथाइरीन, काली आर्सेनिकम, मर्क्युरियस डयूल्सिस, ओलिएंडर, स्कूकम चुक तथा स्ट्रिचनिनम आर्सेनिकम।

यह परियोजना ऐजवाल, जगदलपुर, भरमौर, ईटानगर, राँची, सेलम, सिलिगुड़ी तथा डिफू में स्थित नैदानिक अनुसंधान इकाइयों (जनजातीय) में जारी है।

वर्ष 2000–2001 के दौरान उपलब्धियाँ

अध्ययन किए गए रोगियों की संख्या	459
लाभान्वित रोगियों की संख्या	386

अवलोकन

इस वर्ष के दौरान निर्दिष्ट दवाओं द्वारा उपचार से 59 प्रतिशत रोगियों को लाभ पहुचा। इनमें सबसे अधिक प्रभावकारी औषधियों में आर्सेनिक आयोडेटम, एंथ्राकोकली, बर्बेरिस एक्विफोलियम, काली आर्सेनिकम, हाइग्रोफिला स्पिनोसा, ओलिएन्डर तथा स्कूकम चुक थी।

38. तुण्डिका शोथ

(क) सामान्य क्षेत्रों में

(अ) रोगोन्मुखी नैदानिक अनुसंधान

तुण्डिकाशोथ में होम्योपैथिक औषधियों की प्रभावकारिता का अध्ययन करने हेतु परिषद ने नैदानिक अनुसंधान इकाई, गुड़गाव में 1982 से, नैदानिक अनुसंधान इकाई, चेन्नई में तथा नैदानिक अनुसंधान व महामारी सैल, भोपाल में 1987 से एक अनुसंधान कार्यक्रम शुरू किया है।

वर्ष 2000–2001 के दौरान उपलब्धियाँ

	नये	पुराने
अध्ययन किए गए रोगियों की संख्या	68	17
सुधार अनुक्रमणिका :		
अभिसाधित	—	02
सुधार		
– अति सुधार	15	—
– मध्यम सुधार	12	05
– अल्प सुधार	06	10
उपचाराधीन	35	—

अवलोकन

तुण्डिकाशोथ के 17 पुराने रोगियों को रोगमुक्त करार दिया गया है। उपचार के पश्चात यह देखा गया कि अतिपाती दौरे 7 से 15 दिन में समाप्त हो गए तथा 1 से 6 महीने में चिरकालिक तुण्डिका शोथ में राहत मिली। उपचार के पश्चात तीव्र दौरों की बारम्बारता, अवधि तथा तथा तीव्रता में अच्छी खासी कमी पाई गई। बैलाडोना, ब्रायोनिया, लाइकोपोडियम तथा मरक्यूरियस सोलुबिलिस ने तीव्र दौरों को प्रभावशाली ढंग से नियंत्रित किया। यह परियोजना जारी है।

(ख) जनजातीय क्षेत्रों में

तुण्डिका शोथ में निम्नलिखित औषधियों के प्रभाव का नैदानिक तौर पर मूल्यांकन :

एलैंथस, एमिग्डेलस एमारा, एपिस मेलिफिका, कैंथरिस, एकाईनेसिया, ग्वैकम, जिम्नोक्लेडस, स्ट्रेप्टोकोसीन, ट्यूबरक्यूलिनम।

यह परियोजना ऐजवाल, इदूक्की तथा शिलांग स्थित नैदानिक अनुसंधान इकाइयों (आदिवासी) में चल रही है।

वर्ष 2000–2001 के दौरान उपलब्धियाँ

रोगियों की संख्या	154
लाभान्वित रोगियों की संख्या	84

अवलोकन

इस वर्ष निर्धारित औषधियों में ट्यूबरक्युलिनम, एलान्थस, एकाईनेसिया, ग्वैकम, कैन्थरिस तथा एपिस मेलिफिका अत्याधिक प्रभावकारी पाई गई।

39. ऊपरी श्वासनली संक्रमण

(क) सामान्य क्षेत्रों में

(अ) रोगोन्मुखी नैदानिक अनुसंधान

परिषद ने ऊपरी श्वास नली संक्रमण, जो उष्णकटिबन्धी एवं विकासशील देशों में होने वाले मुख्य रोगों में से एक है, में होम्योपैथिक औषधियों की प्रभावोत्पादकता के बारे में अध्ययन करने के लिए एक अनुसंधान कार्यक्रम प्रारम्भ किया है। इसमें कान, नाक और गले के रोग शामिल है तथा नैदानिक अनुसंधान के साथ महामारी सैल, भोपाल में अप्रैल 2000 से इस परियोजना पर कार्य प्रारम्भ किया गया है।

औषध मानकीकरण इकाई, हैदराबाद की विस्तार इकाई में एक अन्य परियोजना "ऊपरी श्वास नली संक्रमण की देखभाल में होम्योपैथिक दवाओं के प्रभाव का नैदानिक परीक्षण – आधुनिक चिकित्सा के साथ तुलनात्मक अध्ययन" पर कार्य प्रारम्भ किया गया है।

वर्ष 2000–2001 के दौरान उपलब्धियाँ

	नये
अतिपाती नासाशोथ	
अध्ययन किए गए रोगियों की संख्या	52
सुधार अनुक्रमणिका :	
अभिसाधित	03
सुधार	
– अति सुधार	39
– मध्यम सुधार	01
– अल्प सुधार	03
असंशोधित	01
असूचित	05
स्वरयंत्र शोथ / जुकाम एवं खांसी	
अध्ययन किए गए रोगियों की संख्या	44

सुधार अनुक्रमणिका :

सुधार	
– अति सुधार	01
– मध्यम सुधार	27
– अल्प सुधार	10
असंशोधित	02
असूचित	01
उपचाराधीन	03

यह रिपोर्ट सी. आर.ई.सी. भोपाल में किए गए अध्ययन पर आधारित है।

अवलोकन

अतिपाती नासाशोथ में 43 रोगियों में निम्न स्तर पर सुधार आया तथा 3 रोगी अभिसाधित हुए। उपचार की अवधि 15 से 20 दिन रही तथा जस्टीशिया एधाटोडा, लेमना माइनर एवं काली आयोडेटम प्रभावकारी होम्योपैथिक औषधियां रही। स्वरयंत्र शोथ/जुकाम एवं खांसी में 38 रोगियों में मध्यम से निम्न स्तर पर सुधार आया तथा 3 रोगी अभिसाधित हुए। जस्टीशिया एधाटोडा, ब्रायोनिया, बैलाडोना एवं आर्सेनिकम आयोडेटम प्रभावकारी होम्योपैथिक औषधियां रही। यह परियोजना जारी रहेगी।

इस वर्ष, अप्रैल 2000 से मार्च 2001 तक, आधुनिक चिकित्सा के साथ तुलनात्मक अध्ययन की परियोजना के अंतर्गत ऊपरी श्वासनली संक्रमण के 44 रोगी होम्योपैथी चिकित्सा के नैदानिक परीक्षण के लिए तथा 45 रोगी एलोपैथिक चिकित्सा के लिए चुने गए, जिन्हें अस्पताल के कर्णनासाकण्ठ बाह्य विभाग द्वारा भेजा गया था, इन 44 रोगियों में से 9 रोगी स्वरयंत्रशोथ के, 10 रोगी ग्रसनी शोथ के, 11 रोगी नासाशोथ के, 3 रोगी तुण्डिका शोथ के एवं 11 रोगी वायुविवरशोथ के थे। कई रोगियों में काली बाइक्रोमिकम, हिपर सल्फ़यूरिस, एल्यिम सीपा, नैट्रम म्यूरिएटिकम, आर्सेनिकम आयोडेटम, कास्टिकम, टयूक्रियम एवं बैलाडोना प्रभावकारी औषधिंया रही। यह परियोजना जारी है।

40. विटिलिगो / प्राथमिक–श्वित्र

(क) सामान्य क्षेत्रों में

(अ) औषधोन्मुखी नैदानिक अनुसंधान

विटिलिगो में आर्सेनिक सल्फ्यूरिकम फ्लेवम की प्रभावकारिता का नैदानिक तौर पर मूल्यांकन :

यह परियोजना नैदानिक अनुसंधान इकाई, तिरूपति में अप्रैल 1987 से चल रही है।

वर्ष 2000–2001 के दौरान उपलब्धियाँ

	नये	पुराने
रोगियों की संख्या	79	62
पौटेंसी 30, 200, 1 एम., 10 एम., 50 एम., सी.एम.		
सुधार अनुक्रमणिका :		
अभिसाधित	06	12
– अति सुधार	11	15
– मध्यम सुधार	17	11
– अल्प सुधार	19	15
कोई सुधार नहीं	07	—
उपचाराधीन	19	—

अवलोकन

विटिलिगो को एक चिरकालिक रोग होने की वजह से लम्बे उपचार तथा अनुवर्तन की आवश्यकता है। 62 पुराने रोगियों में से जो पिछले एक से आठ वर्ष से अनुवर्तन में चल रहे थे, 12 रोगी अभिसाधित हुए तथा 41 रोगियों में आर्सेनिक सल्फ फलेवम से परिवर्ती स्तर पर सुधार आया। 6 रोगी, जिन्हें इस वर्ष पंजीकृत किया गया था उनके प्राथमिक–श्वित्र धब्बे उपचार के बाद लुप्त हो गए, इसलिए उन्हें अभिसाधित करार दिया गया परन्तु वे अभी भी अनुवर्तन में चल रहे हैं। यह परियोजना जारी है।

(ख) जनजातीय क्षेत्रों में

विटिलिगों में निम्नलिखित औषधियों की प्रभावकारिता का नैदानिक तौर पर मूल्यांकन :

आर्सेनिक सल्फ फ्लेवम एवं सिफिलाइनम।

यह परियोजना नैदानिक अनुसंधान इकाई, सेलम में शुरू की गई है।

वर्ष 2000–2001 के दौरान उपलब्धियाँ

रोगियों की संख्या	31
लाभान्वित रोगियों की संख्या	17

अवलोकन

इस वर्ष में 29 रोगियों, जिन्हे निर्दिष्ट औषध आर्सेनिक सल्फ फलेवम 30 दी गई, में से 17 रोगियों में यह प्रभावकारी पाई गई।

महामारियों के दौरान नैदानिक अनुसंधान

गुजरात में भूकम्प से प्रभावित लोगों को चिकित्सा

सहायता – परिषद ने गुजरात में अहमदाबाद, भरूच तथा सूरत में भूकम्प से प्रभावित क्षेत्रों मे भूकम्प पीडितों को चिकित्सा सहायता प्रदान की। क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, मुम्बई से डा. विक्रम सिंह सहायक निदेशक एवं डा0 मुरलीधरन सहायक अनुसंधान अधिकारी को अहमदाबाद में प्रतिनियुक्त किया गया। 29.1.2001 एवं 30.1.2001 को अस्थिभंग के 100 रोगियों, जिन पर शल्यक्रिया नहीं की गई थी अथवा की गई थी, की परिचर्या की गई तथा उन्हें जल्दी हड्डी जुड़ने के लिए एवं जख्म भरने के लिए होम्योपैथिक चिकित्सा दी गई। इसमें से कुछ रोगी अन्तराकशेरूक सम्पीड़न, वातवक्ष, आंशिक निम्नांगघात, एवं अधरांगघात जैसी जटिलताओं से भी पीड़ित थे। आर्निका, सिम्फाइटम, हाइपैरिका, ब्रायोनिया, लैकेसिस, स्टैफीसैग्रिया जैसी होम्योपैथिक औषधियां रोगियों के कष्टों में राहत पहुंचाने में सहायक रही। यह रोगी अहमदाबाद सिविल अस्पताल के संचालक द्वारा भेजे गए थे। इस दल ने दवाओं एवं सहायक कर्मचारियों के लिए स्थानीय होम्योपैथिक मेडिकल कालेज प्रबंध समिति की सहायता ली।

नैदानिक अनुसंधान इकाई, भरूच (के.हो.अ.प. के अधीन) से एक दल ने, जिसमें डा. वी. ए. सिददीकी, डा. ए. के. त्यागी एवं श्रीमती के. वी. देसाई शामिल थे, भरूच और सूरत के प्रभावित इलाकों में भूकम्प पीड़ितों का उपचार किया। इस दल ने जिला पंचायत के चिकित्सा विशेषज्ञों से सम्पर्क किया, एवं सबसे बुरी तरह से प्रभावित गांव जाम्बुसर तालुका की पहचान की गई जहां 9 लोगों की मौत हो चुकी थी तथा लगभग 100 लोग घर एवं इमारतें ढहने से घायल हो गए थे इस गांव में 31 जनवरी से 1 फरवरी 2001 तक 110 लोगों को तथा 29, 30 जनवरी को भरूच में 118 लोगों को होम्योपैथिक चिकित्सा दी गई जो खरोंचों, सदमे, छोटी–छोटी चोटों, भयमनोविक्षप्ति से पीड़ित थे।

4. नैदानिक सत्यापन अनुसंधान

पिछले कुछ वर्षों से नैदानिक सत्यापन अनुसंधान कार्यक्रम जारी है तथा इस कार्य में लगे संस्थानों/इकाईयों को नैदानिक परीक्षण के लिए 65 औषधियां नियत की गई है। इन 65 औषधियों में वें औषधियां शामिल की गई हैं जो मुख्यतः स्वदेशी मूल की है अथवा जिनका केन्द्रीय होम्योपैथिक अनुसंधान परिषद द्वारा परीक्षण किया गया है। इसमें कुछ कम जानकारी वाली औषधियों को भी शामिल किया गया है। सत्यापन के लिए साहित्य स्त्रोत भी नियत किया गया है तथा प्रत्येक लक्षण के साथ इसका उल्लेख है।

नैदानिक सत्यापन अनुसंधान से जुड़े संस्थान एवं इकाईयाँ

1. नैदानिक सत्यापन इकाई, गाज़ियाबाद।
2. नैदानिक सत्यापन इकाई, पटना।
3. नैदानिक सत्यापन इकाई, वृंदावन।
4. नैदानिक अनुसंधान इकाई, जम्मू।
5. होम्योपैथिक औषध अनुसंधान संस्थान, लखनऊ।
6. क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली।
7. मलेरिया के लिए होम्योपैथिक अनुसंधान संस्थान, जयपुर।

औषधियों के साहित्य स्त्रोत

1. कलार्क मैटिरिया मैडिका
2. हैरिंग गाईडिंग सिम्पटम्स
3. एलैन्स एन्साईक्लोपेडिया
4. बोरिक मैटिरिया मैडिका
5. डा0 जुगल किशोर द्वारा किए गए परीक्षण
6. डा0 डी.एन.रे. द्वारा किए गए परीक्षण
7. ड्रग्स ऑफ हिन्दुस्तान, डा0 एस.सी. घोष
8. केन्द्रीय होम्योपैथिक अनुसंधान परिषद् द्वारा किए गए परीक्षण
9. त्रैमासिक बुलेटिन क्रमांक 9(1 एवं 2), 1987

अनुसंधान के लिए निर्दिष्ट औषधियाँ

1. एकालिफा इंडिका'
2. ऐकिरैन्थिस एस्पेरा
3. ईगल फोलिया'
4. ईगल मारमिलोस' एन्डरसोनिया
5. एल्स्टोनिया कन्सट्रिक्टा
6. एमूरा रोहिताका अथवा
7. एमिग्डैलस पर्सिका
8. एन्थरा कोकाली
9. आर्सनिक सल्फ फ्लेवम
10. अरेनिया डायडिमा'
11. अरेनिया स्कीनैंसिया'
12. एजादिरेक्ता इंडिका'
13. बैसिलाईनम
14. बैरायटा म्यूरियाटिकम
15. बैन्जोएकम एसिडम
16. बैन्जीनम नाईट्रिकम
17. ब्लाटा ओरियन्टेलिस
18. बौरहेविया डिफयूजा'
19. कैसिया फिस्चुला'
20. सिसलपीनिया बान्डयुसैला
21. साईनोडोन डैक्टाईलोन'

22. कैलोट्रोपिस जाईगेन्टिया
23. कैनाविस इंडिका
24 कैनाविस सैटाईवा
25. केरिका पपाया
26. सिफलैन्डरा इंडिका
27 क्यूप्रम एसिटिकम
28. डैमियाना
29. एम्बैलिया राईब्स
30. ईफैडरा वल्गैरिस
31. फैगोपाईरम एस्कूलैन्टम
32. फैरमपिकरिकम
33 गैलिकम एसिडम
34. जिम्नैमा सिल्वैस्टरिस
35. ग्लाईसिर्हिजा ग्लैबरा'
36. हैक्ला लावा
37. होलेर्हिना एण्टीडायसैण्टेरिका
38. हाईड्रोकोटाईल एसियाटिका'
39. हाईग्रोफिला स्पाईनोसा
40. आईरिस टेनैक्स
41. जैबोरेन्डी
42. जकारान्दा कैरोबा
43. जलापा
44. जुग्लैंस रेजिया
45. काली म्यूराटिकम
46. लैक कैनिनम
47. लैपिस एल्बा
48. मैग्निशिया सल्फ
49. मैंगिफेरा इंडिका
50. मैन्था पिपराटा
51. माईगेल
52. निक्टैन्थिस आरबोरट्रिस्टिस
53. फिलैन्थिस न्यूरीरि
54. साराका इंडिका
55. सारसापरिला
56. साईजिजियम जैम्बोलेनम
57. टैरन्टुला क्यूबैन्सिस
58. टैरन्टुला हिस्पैनिका'
59. टिला अरेनिया'
60. टर्मिनेलिया अर्जुना'
61. टर्मिनेलिया चैबुला'
62. थिया चाईनैंसिस'
63. थैरिडियोन'
64. टायलोफोरा इंडिका'
65. विस्कम एल्बम

'परिषद् द्वारा प्रमाणित

वर्ष 2000–2001 के दौरान उपलब्धियाँ

इस कार्यक्रम से जुड़े संस्थानों तथा इकाईयों में इस वर्ष अनुसंधान के लिए 18,892 रोगी पंजीकृत किए गए। इस वर्ष सत्यापित किए गए प्रत्येक औषध के लक्षणों का उल्लेख सारणीबद्ध तरीके से किए गया है। केवल इसी वर्ष में सत्यापित हुए लक्षणों की तुलना कि पिछले वर्षों में सत्यापित लक्षणों की चर्चा की गई है।

औषध का नाम : एकालिफा इंडिका **पौटेन्सी : मदर टिंचर, 6, 30, 200, 1 एम**

अंग	लक्षण	स्त्रोत	लक्षण की अवधि	रोगियों की संख्या निर्धारित	चिकित्सा लाभान्वित	चिकित्सा अवधि
1	2	3	4	5	6	7
आमाशय	अत्याधिक प्यास	8	7 दिन–1 माह	05	05	7 दिन–1 माह
उदर	उदर में कसावदार दर्द	4	10–20 दिन	13	12	6–12 दिन
मलाशय	खूनी बवासीर	4	15 दिन	09	08	7–15 दिन
श्वसन तंत्र	खून व बलगम वाली खांसी एवं सांस फूलना	4,1	2 माह–1 वर्ष	56	53	7–15 दिन
गर्दन	ग्रीवा ग्रन्थि विर्वधन	8	1 माह	01	01	15 दिन

औषध का नाम : एकिरेन्थस एस्पेरा **पौटेन्सी : मदर टिंचर, 3एक्स, 6, 30**

1	2	3	4	5	6	7
नाक	जुकाम पतला पानी की तरह	2	7–15 दिन	15	13	15–21 दिन
मलाशय	ढीला मल, बार–बार	4,7	1 माह	13	10	7–15 दिन
ज्वर	ठंड के साथ ज्वर, वमन, जलन	8	10–15 दिन	61	55	5–7 दिन
त्वचा	दर्द वाले लाल रंग के फोडे पुनरावर्ती, पूयन	7	1 माह – 1 वर्ष	18	17	15 दिन
सार्वदेहिक	सारे शरीर में गर्मी एवं जलन महसूस करना	9	3–6 माह	38	35	1–2 माह

औषध का नाम : ईगल फोलिया **पौटेन्सी : मदर टिंचर, 6, 30**

1	2	3	4	5	6	7
नाक	पानी जैसा जुकाम	8	10 दिन	31	25	7–10 दिन
गला	गले में दर्द तथा खांसी के साथ पीली बलगम	8	2–3 माह	30	22	15 दिन
आमाशय	खट्टी डकारें	9	2–5 वर्ष	132118	15 दिन–3 सप्ताह	
	हृद्दाह	8	3 माह–2 वर्ष	05	05	15 दिन
	भूख न लगना	3	1 माह	71	53	7–15 दिन
उदर	पेट में दर्द– अधिजठरीय, नाभि में	8	2 माह–6 वर्ष	51	38	7 दिन–2 माह
मलाशय	खूनी बवासीर	–	2 माह–6 वर्ष	24	11	1 माह
	बिना खून के बवासीर	9	45–60 दिन	18	13	45–50 दिन
	कम, ढीले मल के साथ खून आना	7	1–2 वर्ष	51	47	1 माह
पीठ	बारी–बारी से कब्ज एवं दस्त	5	21 दिन	179	160	8–30 दिन
	कटित्रिकी भाग में दर्द	8	15 दिन	02	02	15 दिन
	शारीरिक परिश्रम एवं सांयकाल वृद्धि			02	02	15 दिन
ज्वर	शरीर में दर्द, घूमने एवं शारीरिक परिश्रम से वृद्धि	9	7 माह			
	शीतावस्था के बिना बुखार खांसी एवं जुकाम के साथ	8	1–6 दिन	20	16	3–12 दिन

औषध का नाम : ईगल मार्मिलोस पौटेन्सी : मदर टिंचर,3 एक्स, 6, 30, 200

1	2	3	4	5	6	7
सिर	भारीपन के साथ सिरदर्द	8	2 माह–डेढ वर्ष	07	06	1 माह
आमाशय	भूख न लगना	1	6 माह–2 वर्ष	107	100	3–20 दिन
	अर्जीण, खट्टी डकारें	1	2 दिन–1 माह	32	30	2–20 दिन
मलाशय	असंतोषजनक मल	8	1 वर्ष	09	08	15 दिन
	कब्ज	8	1 वर्ष	79	68	3–35 दिन

औषध का नाम : एल्सटोनिया कंस्ट्रिक्टा पौटेन्सी : 6, 30,200

1	2	3	4	5	6	7
मुख	कडवा स्वाद	6	4–30 दिन	08	08	7–15 दिन
मलाशय	उदर में दर्द के साथ ढीला मल	8	2–6 दिन	29	25	3–7 दिन
	दस्त के साथ ज्वर	4	4–8 दिन	14	14	7–15 दिन
स्त्री जननांग	खूनी दस्त	2	8 दिन	14	14	7–15 दिन
	सफेद स्त्राव	4	4 माह–1 वर्ष	05	04	10–45 दिन
	पतला, साफ्रेद, अधिक मात्रा मे					

औषधि का नाम : अमूरा रोहिताका पौटेन्सी : 3 एक्स, 6, 30, 200

1	2	3	4	5	6	7
मन	स्मरण शक्ति कमजोर	7	1–4 माह	27	22	1–3 माह
सिर	सिरदर्द के साथ हथेली एवं तलवों में कमजोरी की अनूभूति	7	3 वर्ष	08	04	1 माह
	सिर का चकराना	8	1–3 माह	18	17	15 दिन
मलाशय	कब्ज	7	1–3 वर्ष	35	18	8 दिन–1 माह
स्त्री जननांग	सफेद स्त्राव	7	1–2 माह	13	06	9–45 दिन

औषधि का नामः एन्थराकोकाली पोटैन्सी : 6,30,200

1	2	3	4	5	6	7
नाक	नथुनों में व्रण के साथ दरारें	11	7 दिन–11 माह	16	16	15–30 दिन
अग्रांग	जोडों में वात वेदना	1	1 माह–डेढ वर्ष	15	06	7 दिन–1 माह
त्वचा	खुजली, जलीय स्त्राव के साथ जलस्फोटन उद्भेद	1	15 दिन	80	61	15 दिन
	जलन जैसी दर्द के साथ उद्भेदों से रक्तस्त्राव	1	10 दिन–6 माह	15	12	7–15 दिन

औषध का नाम : अरेनिया डायडिमा पौटेन्सी : 6, 30

1	2	3	4	5	6	7
सिर	आखों के आगे अंधेरा, चक्कर के साथ, गर्दन के पिछले भाग में दर्द	4	2 माह	41	21	1 माह
जननांग	श्वेतप्रदर गाढा व सफेद	4	6 माह–1 वर्ष	02	02	15 दिन
	कटित्रिकी दर्द के साथ	4	6 माह–1 वर्ष	03	02	15–30 दिन
पीठ	ग्रीवा कशेरूका सन्धिशोथ	8	2 माह–3 वर्ष	22	17	15–30 दिन
अग्रांग	एडी में दर्द, रात में चलने व खडे होने से उग्रता	8	2 दिन–1वर्ष	06	05	1 माह
सार्वदेहिक	ठंड के लिए संवेदनशील ठंडक की अनूभूति	4	1–3 वर्ष	09	07	8 दिन–3 माह

औषध का नाम : आर्सेनिक सल्फ फ्लेवम पौटेन्सी : 6 एक्स, 30, 200

1	2	3	4	5	6	7
सिर	सिरदद तीव्र, स्पन्दी, दबाने से उग्रता	1	3 माह	08	55	5–15 दिन
अंग्राग	जोडों में अकडन के साथ दर्द	9	2 माह'1 वर्ष	60	08	1–6माह
त्वचा	पूरे शरीर पर धवलरोग	8	3 माह–19 वर्ष	23	18	1–3 माह
	दाद के समान धब्बे	4	2 दिन–7 वर्ष	32		3–40 दिन

औषध का नाम : अजैदिरैक्ता इंडिकापौटेन्सी : मदर टिचंर,6, 30,200

1	2	3	4	5	6	7
सिर	फटने जैसा सिरदर्द, प्रस्पन्दन,टीस	8	10 दिन	47	43	7 दिन
	सिरदर्द के साथ स्पन्दन	8	10 दिन	02	02	7 दिन
ज्वर	चक्कर आना उग्रता उठने पर	8	6 माह–1 वर्ष	03	03	1–2 माह
	शीतावस्था के साथ ज्वर	8	2–3 दिन	152	106	3 दिन

औषध का नाम : अरेनिया साईनेन्सिया पौटेन्सी : 30

1	2	3	4	5	6	7
सिर	सिरदर्द	2	15 दिन–1 माह	23	17	3–15 दिन
मुख	स्नायविक उच्चरक्तचाप	2	1–2 वर्ष	05	03	8 दिन–1 माह
	लालास्रवण	1	5–10 दिन	03	02	7–30 दिन

श्वसन तंत्र	शुष्क खांसी	8	3–20 दिन	11	10	3–20 दिन
	खांसी के साथ सिरदर्द, छाती में दर्द	8	4–10 दिन	03	03	6 दिन
नींद	उन्नींद	4	7–25 दिन	19	19	7–15 दिन

औषध का नाम : एमिगडेलस परसिका — **पौटेन्सी : मदर टिंक्चर, 3**

1	2	3	4	5	6	7
सिर	सिरदर्द ललाटीय भाग में फटन	10	6 माह–3 वर्ष	10	06	8–20 दिन
अमाशय	उग्रता–गर्म द्रव्यों से					
	अम्लता, डकारें	10	2 वर्ष	21	21	7–15 दिन
	उग्रता–तली वस्तुओं से					
	मतली, जलीय श्लेष्मा	10	2 वर्ष	10	10	7 दिन
	बदन दर्द एवं पीडाहीन	10	3–7 दिन	08	08	2–10 दिन
	ढीला मल					
	निरन्तर मतली	4	2–7 दिन	42	39	7–15 दिन

औषध का नाम : बेसिलाइनम — **पौटेन्सी : 30, 200, 1 एम**

1	2	3	4	5	6	7
सिर	सीमित खालित्य	2	3 माह–1 वर्ष	46	40	2–4 माह
नाक	जुकाम पानी के तरह	8	1–10 वर्ष	08	08	15–60दिन
उदर	बैचेनी के साथ पेटदर्द	4	3–4 माह	02	02	15 दिन
श्वसन तंत्र	खांसी के साथ बलगम	4	2 माह–5 वर्ष	07	06	15 दिन
	गाढा पीला	4	2 माह–5 वर्ष	04	04	15 दिन
	ग्रन्थि का बढना	5	1 वर्ष	159	150	60 दिन
त्वचा	खुजली के साथ चकते	8	1 वर्ष	03	03	1 माह

औषधि का नाम : बैरायटा म्युरियाटिकम — **पौटेन्सी : 3 एक्स, 6, 30, 200, 1 एम**

1	2	3	4	5	6	7
सिर	उच्चरक्तदाब के साथ सिरदर्द	4	6 माह–12 वर्ष	14	11	15 दिन–2 माह
कान	कर्णस्त्राव	7	7–30 दिन	10	08	3–10 दिन
दांत	दांत में प्रसपन्दन जैसा दर्द	1	3–7 दिन	10	08	3–7 दिन
मूत्र तंत्र	अधिक मात्रा में मूत्र	1	1–3 माह	06	03	8 दिन–1 माह
	उग्रता – रात्रि में					

औषध का नाम: बेन्जिनम नाइट्रिकम — **पोटैन्सी: 6, 30**

1	2	3	4	5	6	7
सिर	कंपन के साथ सिर चकराना	1	1–3 माह	06	06	3–6 माह
स्वरयंत्र एवं श्वासप्रणाल	हकलाहट	1	6 माह–1 वर्ष	02	02	7–20 दिन
पीठ दर्द	गर्दन की अकडाहट	1	1–3 माह	04	04	3–6 माह

औषधि का नाम : बैन्जोयकम एसिडम — **पौटेन्सी : 6, 30, 200**

1	2	3	4	5	6	7
मन	अवसाद	4	10 दिन–1 माह	06	06	10–15 दिन
मूत्र तंत्र	मूत्र मे जलन	4	2–8 वर्ष	10	08	30–45 दिन
	जलन के साथ बदबूदार मूत्र	4	15 दिन–6 माह	25	25	10 दिन–1 माह
पीठ	गर्दन के पिछले भाग में दर्द	4	2–10 माह	02	01	15 दिन
त्वचा	चेहरे पर काले धब्बे	6	2–3 वर्ष	45	39	2–3 माह
सार्वदेहिक	सामान्य कमजोरी	1	15–30 दिन	30	22	3–15 दिन

औषधि का नाम : ब्लाटा ओरिएंटेलिस — **पौटेन्सी : मदर टिंचर, 6, 30**

1	2	3	4	5	6	7
नाक	जुकाम पतला पानी की तरह	4	15 दिन–1 माह	46	45	7–25 दिन
मलाशय	कब्ज	4	10 दिन	08	08	3–10 दिन
श्वसन तंत्र	खांसी के साथ, सांस लेने में कठिनाई, खडखडाहट, श्वासकष्ट के साथ वमन	4	1 माह–10 वर्ष	127	103	7–15 दिन
	खांसी से छाती में दर्द	4	10 दिन	08	08	3–10 दिन

औषधि का नाम : बोर्हेविया डिफ्यूजा — **पौटेन्सी : मदर टिंचर, 30**

1	2	3	4	5	6	7
सिर	सिर दर्द	9	4 दिन–2 माह	32	26	3 दिन–2 माह
छाती	उच्चरक्तदाब, साथ में चक्कर	–	7–30 दिन	30	18	3–10 दिन
	उच्च रक्तचाप के साथ चेहरे पर सूजन, स्पन्दन एवं व्याकुलता	4,7	5 वर्ष	41	31	15–30 दिन
	छाती में दर्द	4	10 माह–1 वर्ष	10	10	5–15 दिन

औषध का नाम : सिसेलपीनिया बोन्डुसेला — **पौटेन्सी : मदर टिंचर, 30**

1	2	3	4	5	6	7
मन	अवसाद	4	3–30 दिन	13	08	3–20 दिन
ज्वर	अविराम	7	20–30 दिन	35	27	7–15 दिन
	दर्दनाक यकृत विर्वधन	8	1–2 माह	15	15	25–30दिन
	ज्वर के बाद कमजोरी	5	20 दिन–2 माह	68	61	30 दिन
	ज्वर के साथ प्यास	5	15 दिन	52	44	10 दिन–1 माह

औषध का नाम : कैलोट्रोपिस जाइजेन्टिया — **पौटेन्सी : मदर टिंचर, 6, 30, 200**

1	2	3	4	5	6	7
गला	शुष्क होंठ एवं गला	1	3–7 दिन	05	05	3–10 दिन
मलाश्य	कृमि	7	3 दिन–6 माह	08	06	8–28 दिन
छाती	हांफना	7	1–2 वर्ष	03	02	15 दिन
	उग्रता–सीढिया चढने से, सुधार–आराम से					

औषध का नाम : कैनाविस इंडिका — **पौटेन्सी : 30**

1	2	3	4	5	6	7
सिर	चक्कर आना	1	7–15 दिन	01	01	5 दिन
श्वसन तंत्र	सांस लेने में कठिनाई	4	15 दिन–3 वर्ष	02	01	10–20दिन

औषध का नाम : कैनाविस सैटाइवा — **पौटेन्सी : 30**

1	2	3	4	5	6	7
आंखें	आंख की पुतलियों में दर्द	1	3–15 दिन	06	04	3–7 दिन
मलाशय	कब्ज	1	15–30 दिन	33	28	7–15 दिन
पुरूष जननांग	कामुक स्वपन के साथ वीर्यपात	4	2 वर्ष	20	16	14–20 दिन
कंठ व श्वास नली	उग्रता – रात्रि में हकलाना	4	2 माह–3 वर्ष	04	03	27–80 दिन
छाती	धडकन	4	10–30 दिन	05	05	4–10 दिन
	श्वासरोध	4	7–30 दिन	28	25	7–20 दिन
अग्रांग	जांघों एवं टांगों में ऐंठन	1	1–3 माह	28	23	3–30 दिन
निद्रा	खांसी के कारण निद्रा में विघ्न	4	10–20 दिन	13	12	4–10 दिन

औषध का नाम : कैरिका पपाया — **पौटेन्सी : मदर टिंचर, 6**

1	2	3	4	5	6	7
अमाश्य	पीलिया	7	1 माह–8 वर्ष	06	06	15 दिन–1 माह
	अधिजठर मे हल्की दर्द एव उदर के दाहिने भाग मे हल्का दर्द और भारीपन	2	1 माह–8 वर्ष	30	30	7–15 दिन
	क्षुधालोप	4	1–8 वर्ष	49	45	7–15 दि
उदर	उदर मे जलन	8	25 दिन–3 माह	111	97	1–3 माह
मलाशय	कब्ज	6	3 दिन	51	51	7 दिन
मूत्र प्रणाली	मूत्र पीला, हल्के रंग का,	5	1 माह–8वर्ष	38	37	7–15 दिन

औषध का नाम : कैसिया फिस्टूल, — **पौटेन्सी : 30**

1	2	3	4	5	6	7
छाती	श्वास लेने में कठिनाई	8	1–20 वर्ष	02	01	15 दिन–1 माह
अग्रांग	घुटनों के जोडो में दर्द उग्रता–चलने फिरने से सुधार – आराम से	8	7 दिन–5 वर्ष	07	07	4–20 दिन

औषध का नाम : साइनोडोन डैक्टाइलान — **पौटेन्सी : मदर टिंचर, 6, 30,200**

1	2	3	4	5	6	7
आमाशय	भूख न लगना	8	3 माह	15	12	7–15 दिन
मलाशय	मल बारम्बार, ढीला	4	3 माह–3 वर्ष	24	23	7–15 दिन
	आंव के साथ, असंतोषजनक चमकीला, अत्याधिक रक्तस्राव	4	3 माह–2 वर्ष	44	39	7–25 दिन
	उग्रता–मल त्याग के साथ दर्द के साथ खूनी बवासीर	4	5 वर्ष	62	53	15–30 दिन
ज्वर	उग्रता–मल के साथ ज्वर, शीतावस्था के साथ	8	7–15 दिन	03	02	3–10 दिन

औषध का नाम : सिफेलेण्डरा इंडिका — पौटेन्सी : मदर टिंचर, 6, 30, 200

1	2	3	4	5	6	7
नाक	छींके आना	1	1–2 वर्ष	04	04	8–19 दिन
आमाशय	मुंह के सूखने के साथ प्यास का बढना	1	6 माह	06	06	20 दिन–3 माह
उदर	उदरवायु के साथ फुलाव	7	15 दिन–2 माह	04	04	6–20 दिन
मूत्र प्रणाली	बार–बार मूत्र आना	1	6 माह	05	05	6 दिन–30 माह

औषध का नाम : क्यूपरम एसिटिकम — पौटेन्सी : 30

1	2	3	4	5	6	7
चेहरा	चेहरे का स्नायुशूल	4	10–20 दिन	02	02	7–10 दिन
छाती	हृदशूल	1	1–2 वर्ष	02	02	8–30 दिन
सार्वदेहिक	मिरगी के आक्षेप	1	2 माह–18 वर्ष	07	05	3–18 दिन

औषध का नाम : दमियाना — पौटेन्सी : 6, 30

1	2	3	4	5	6	7
मलाशय	मल सख्त, सूखा	9	7–40 दिन	10	09	7–10 दिन
स्त्री जननांग	अनियमित माहवारी	3	3 माह	01	01	1–3 माह
	श्वेत प्रदर	7	2 माह	05	05	1 माह

औषध का नाम : एम्बैलिया राईब्स — पोटैन्सी : 30

1	2	3	4	5	6	7
आमाश्य	मीठे की इच्छा	9	10–30 दिन	05	04	15 दिन
पेट	पेट में सविरामी ऐंठन वाला दर्द	7	3दिन 1 माह	21	16	3 दिन–10 वर्ष
मलाश्य	अंतोषजनक मल, सख्त	7	–	02	02	15 दिन
	ढीला मल	–	7–30 दिन	56	51	3 सप्ताह
	कब्ज एवं दस्त का बारी–बारी से आना	4	3 माह–5 वर्ष	07	04	3–30 दिन
ज्वर	शाम को ज्वर बढ जाना	10	15 दिन	29	29	7 दिन–1 माह

औषध का नाम : ईफैडरा वल्गेरिस — पौटेन्सी : 6, 30

1	2	3	4	5	6	7
नाक	जुकाम, पतला जलीय छींकों के साथ	1	7 दिन–6 माह	81	81	7 दिन–1 माह
गला	गले में खराश	8	3–10 दिन	28	28	10 दिन–1 माह
त्वचा	मरसे	1	4 माह–4 वर्ष	98	89	3–6 माह

औषध का नाम : फैगोपाईरम एस्कूलेण्टम — पौटेन्सी : 6, 30, 200

1	2	3	4	5	6	7
मन	भुलक्कडपन	4	3–10 दिन	05	05	3–10 दिन
नाक	अधिक मात्रा में गाढा जुकाम	4,13	2–30 दिन	61	50	2–20 दिन
दांत	दांत मे दुखन	9	3–30 दिन	16	10	3–7 दिन
मलाशय	मल त्याग के बाद जलने जैसा दर्द	9	3–30 दिन	16	10	3–7 दिन
स्त्री जननांग	उदर में दर्द के साथ श्वेत प्रदर योनि में जलन व खुजली	4	1–14 वर्ष	21	16	15–30 दिन
अग्रांग	कटिस्नायूशूल	1	1–6 माह	06	04	7–10 दिन
त्वचा	फोडे	4	4–10 दिन	06	05	3 दिन–1 माह

औषध का नाम : फैरम पिकरिकम — पौटेन्सी : 6, 30, 200

1	2	3	4	5	6	7
मुख	दांतों में तंत्रिकाशूल	4	3–10 दिन	10	09	9 दिन
मूत्र तंत्र	मूत्र में रूकावट	4	15–40 दिन	40	28	3–15 दिन
पीठ	पुरस्थगंन्थि का बढना	4	1–9 माह	37	27	15–30 दिन
	गले एवं भुजा के दाहिने भाग में दर्द	9	1–3 माह	04	04	7–30 दिन

औषध का नाम : गैलिकम एसिडम — **पौटेन्सी : 30**

1	2	3	4	5	6	7
उदर	क्षुधालोप	4	6 माह–10 वर्ष	14	14	1 माह
श्वसन तंत्र	सांस लेने में कठिनाई के साथ शुष्क आक्षेपिक खांसी उग्रता– दिन में, ठंडक से एवं वर्षा ऋतु में	4	6 माह–1 वर्ष	18	16	15 दिन–1 माह
	छाती में दर्द, उग्रता– खांसने से ठंड से एवं सर्द ऋतु में	1,4	3 माह–10 वर्ष	12	12	15 दिन–1 माह

औषध का नामः जिमनैमा सिल्वैस्टे — **पोटैन्सी : 6, 30**

1	2	3	4	5	6	7
आमाशय	ठण्डे पानी के लिए बहुत प्यास	4	7–30 दिन	27	20	7–15 दिन
अग्रांग	व्यापक दुर्बलता के साथ टांगों में दर्द	7	4–10 वर्ष	02	01	15 दिन

औषध का नाम : ग्लाइसिर्हिजा ग्लैबरा — **पौटेन्सी : मदर टिंक्चर, 6, 30, 200**

1	2	3	4	5	6	7
नाक	जुकाम के साथ पतला जलीय स्त्राव	4	3–7 दिन	02	01	2–5 दिन
उदर	ठंडे पानी की अधिक प्यास	4	7–30 दिन	35	26	7–15 दिन
त्वचा	बिना खुजली के उद्भेद पूरे शरीर में जलन	4,9	10–30 दिन	08	07	7–10 दिन
		4	3–10दिन	08	08	3–7 दिन

औषधि का नाम : हैकला लावा — **पौटेन्सी : 6,30**

1	2	3	4	5	6	7
चेहरा	ठोडी पर पर्विकता (गांठे)	9	8 दिन–8 माह	07	06	15–30 दिन
मुंह	मुंह से दुर्गन्ध	9	6 माह–2 वर्ष	06	05	8–45 दिन

औषध का नाम : हाइड्रोकोटाइल एशिएटिका — **पौटेन्सी : 6, 30**

1	2	3	4	5	6	7
सिर	चक्कर आना	1	15–30 दिन	02	02	7–10 दिन
त्वचा	खुजली व जलन के साथ जांघों व भुजाओं पर शीतपिताभ उद्भेद उग्रता – खट्टी वस्तुऐं खाने से, छूने से, गर्माहट, दबाव से	4,7	2–3 वर्ष	25	19	15–30 दिन

औषध का नाम : होलेहीना एण्टीडायसैन्टेरिका — **पौटेन्सी : 30, 200**

1	2	3	4	5	6	7
सिर	सिर दर्द	4	3–10 दिन	04	04	2–11 दिन
मलाशय	मल – ढीला अल्पमात्रा में आवयुक्त	4	6 दिन–1 माह	54	45	6 दिन–2 स0
श्वसन तंत्र	गाढे बलगम के साथ खांसी	4	7–20 दिन	06	06	8–10 दिन
सार्वदेहिक	कमजोरी	4	1–3 माह	85	65	3–20 दिन

औषध का नाम : हाइग्रोफिला स्पाईनोसा — **पौटेन्सी : 6, 30**

1	2	3	4	5	6	7
अमाशय	क्षुधालोप	7	7–30 दिन	12	09	15 दिन
मूत्र प्रणाली	जलन के साथ बारम्बार मूत्रण	4	6 माह	03	03	3 माह
स्त्री जननांग	श्वेत प्रदर पतला पानी की तरह	4	1–6 माह	18	15	15–20 दिन
त्वचा	खुजली एवं जलन के साथ शरीर पर छोटे लाल रंग के उद्भेद उग्रता– गर्मी, पसीने से, ग्रीष्मऋतु में	7	1 माह–2 वर्ष	72	65	7–15 दिन
	जूल पित्ती, उग्रता–गर्मी से	7	2–10 दिन	10	10	4–45 दिन

औषध का नाम : आइरिस टेनैक्स — **पौटेन्सी : 6,30**

1	2	3	4	5	6	7
आंखें	सिर दर्द के साथ दोनों आंखों में खुजली	1	3–15 दिन	14	07	3–7 दिन
मुंह	छाले	2	5–20दिन	50	43	5–15 दिन

औषध का नाम : जेबोरेन्डी — **पौटेन्सी : 30**

1	2	3	4	5	6	7
सिर	रूसी के साथ बालों का झडना	1,4	3 माह–1 वर्ष	154	145	7 दिन–2 माह
	चक्कर आना	4	7–30 दिन	06	04	3–10 दिन
	कपाल एवं चेहरे पर छोटे फोडे खुजली के साथ, खून निकलना	4	6 माह–2 वर्ष	50	41	7–15 दिन

आंखे	आंखों के आगे सफेद धब्बे	10	1–3 माह	19	19	1–3 माह
	अश्रुपात	1	15–30 दिन	04	04	3–7 दिन
पसीना	अत्याधिक पसीना	2,4	15 दिन–2 वर्ष	31	23	3–40 दिन
सार्वदेहिक	अवटु ग्रन्थि का बढना	9	3 वर्ष	09	05	3 माह
	कर्णफेडे	11	3–10 दिन	19	19	30 दिन

औषध का नाम : जलापा **पौटेन्सी : 6, 30**

1	2	3	4	5	6	7
नाक	शिशुओं में जुकाम	1	2–5 दिन	04	04	3–5 दिन
अमाशय	क्षुधालोप	4	3–15 दिन	14	14	3–10 दिन
	अमलता	1	15 दिन	67	73	5–20 दिन
मलाशय	बार–बार ढीला मल, पीले रंग का	2,4	3 दिन	103	89	2–20 दिन
सार्वदेहिक	शिशु का दिन में सामान्य रहना किन्तु रात मे चिल्लाना	3	2 माह	41	41	5–20 दिन
	तलवों में जलन	4	3–10 दिन	05	04	3–5 दिन

औषध का नाम : जकारन्दा कैरोबा **पोटैन्सी : 30**

1	2	3	4	5	6	7
नाक	जुकाम	4	2–5 दिन	04	04	3–5 दिन
गला	शुष्की के साथ कण्ठदाह	4	7–15 दिन	12	07	7–10 दिन
त्वचा	शोथयुक्त सूजन के साथ खुजली	3	17 दिन	07	07	3–6 माह

औषध का नाम : जुगलैंस रेजिया **पोटैन्सी : 6,30,200**

1	2	3	4	5	6	7
सिर	तीव्र सिरदर्द	8	3–15 दिन	25	23	15–30 दिन
आंखें	आंख की उपरी पलक पर पुनरावर्ती गुहांजनी	9	3–4 माह	54	46	15 दिन
चेहरा	मुंहासे – चेहरे पर, दर्द, खुजली एवं पूयता के साथ चेहरे पर दरारें	1,9	1 माह–6 वर्ष	165	137	15 दिन–3माह
मलाशय	खूनी बवासीर	4	5–30 दिन	08	07	15–30दिन
		4	7–30 दिन	08	05	7–15 दिन

औषध का नाम : काली म्यूरिएटिकम **पोटैन्सी : 30, 1 एम0**

1	2	3	4	5	6	7
सिर	सिर दर्द, फटन	8	1 माह–21 वर्ष	36	34	15–20 दिन
श्वास तंत्र	खांसी, खडखडाहट	8	1–3 माह	69	69	1–3 माह

औषध का नाम : लैक कैनाइनम **पौटेन्सी : 6, 30, 200, 1 एम**

1	2	3	4	5	6	7
छाती	वक्ष में दर्द, दाववेदना	4	10 दिन–2 वर्ष	04	03	3–21 दिन
पीठ	पीठ में अकडन के साथ दर्द	9	2 माह–3 वर्ष	48	38	15 दिन–6 माह
	गर्दन में दर्द	9	7 दिन–2 माह	21	19	4 दिन–3 माह
अग्रांग	सभी जोडों में दर्द के साथ सूजन एवं अकडन, स्थानान्तरित पीडा	9	2 माह–3 वर्ष	23	19	15–30 दिन
	दोनों तरफ सुन्नपन के साथ कटिस्नायुशूल	4	8 माह–25 वर्ष	37	35	15 दिन–3 माह

औषध का नाम : लेपिस एल्बा **पौटेन्सी : 6, 30**

1	2	3	4	5	6	7
सिर	प्रस्पन्द सिरदर्द	1	1–6 माह	11	11	1–3 माह
कान	कर्णस्त्राव	4	7–30 दिन	12	07	3–15 दिन
आमाशय	अम्लता के साथ दर्द उग्रता–खाने के बाद	5	2–6 माह	17	17	1–3 माह
गला	भूख बढना	6	3–6 माह	21	18	2–4 माह
छाती	गलतुण्डिकाशोथ	4	6–30 दिन	70	52	7–30 दिन
	स्तन भाग में दर्द	4	3–30 दिन	31	21	7–30 दिन

औषध का नाम : मेन्था पिपरेटा **पौटेन्सी : 6, 30**

1	2	3	4	5	6	7
मलाशय	गुदा में खुजली	4	10–30 दिन	04	04	3–7 दिन
गला	ग्रसनी शोथ	6	10 दिन–1 माह	44	42	7–20 दिन

श्वसन तंत्र	शुष्क खांसी, ललाट में सिरदर्द साथ सांस लेने में कठिनाई महसूस होना, उग्रता–रात्रि में बैठने से तथा धूल से	4	15 दिन–6 वर्ष	133	130	7–15 दिन
पीठ	गले के आस–पास मांसेपेशियों में दर्द	7	1–3 माह	05	03	7–10 दिन

औषध का नाम : माइगेल लासीयोडोरा **पौटेन्सी : 6, 30, 200, 1 एम**

1	2	3	4	5	6	7
सिर	ललाट में मन्द सिरदर्द	4	5–30 दिन	14	13	3–7 दिन
कान	मध्यकर्णशोथ	9	3–7 दिन	03	03	3–5 दिन
आमाशय	तीव्र प्यास	4	7–30 दिन	15	13	3–10 दिन
	क्षुधालोप	9	1 माह–1 वर्ष	07	06	3–20 दिन

औषध का नाम : मैन्नीफेरा इंडिका **पौटेन्सी : 6,30**

1	2	3	4	5	6	7
गला	ग्रसनी शोथ	4,8	3–20 दिन	33	25	3–20 दिन
आमाशय	अजीर्ण	4	3–20 दिन	32	20	3–20 दिन
अग्रांग	अपस्फीत शिरा	4	10 दिन–6 माह	23	14	20–40 दिन
	टांगों में सूजन	4	1–3 माह	08	08	10–30 दिन

औषध का नाम : मैगनीशियम सल्फयूरिकम **पौटेन्सी : 6, 30**

1	2	3	4	5	6	7
सिर	भारीपन के साथ सिर के दाहिने भाग में सिरदर्द	1,8	2–10 दिन	48	40	7 दिन–4 माह
	चक्कर आना	4	7–30 दिन	08	08	5–10दिन
नाक	प्रवाही जुकाम	1	3–30 दिन	60	47	2–10 दिन
	सूंघने की शक्ति में कमी	1	3–30दिन	50	30	2–10 दिन
अमाशय	पित्ताश्मशूल	8	2 माह–2 वर्ष	08	07	3 दिन–2 माह
	प्यास	2	3–6 माह	11	11	3–6माह
गला	गले में दुखन	4	5–15 दिन	22	13	3–10 दिन
स्त्री	गाढा श्वेत प्रदर	1	3 माह–2 वर्ष	46	25	7–20दिन

जननांग	अनियमित, अति रक्तस्राव	5	6 माह–1 वर्ष	33	33	2–5 माह
पीठ	पीठ में दर्द	3	6 माह–1 वर्ष	52	46	3–6 माह
	गर्दन के पिछले भाग में दर्द	4	7–30 दिन	08	06	3–10 दिन
त्वचा	मस्से	4	9 माह	04	–	20–60 दिन
	खुजली	8	15–45 दिन	15	10	20–30 दिन
ज्वर	ठंड के साथ ज्वर	4,8	2–30 दिन	70	59	3–10 दिन

औषध का नाम : निकटेन्थस आरबोट्रिस्टिस **पौटेन्सी : 6, 30, 200**

1	2	3	4	5	6	7
उदर	उदर में दर्द	1,7	7 दिन	09	07	7 दिन
	उदर में जलन	1	3 दिन–1 माह	12	08	3–10 दिन
ज्वर	प्यास के साथ ज्वर	2	5–8 दिन	07	07	7–10 दिन

औषध का नाम : साराका इंडिका **पौटेन्सी : 30,200**

1	2	3	4	5	6	7
सिर	सिरदर्द	7	7 दिन–2 माह	04	02	3–21 दिन
	क्षुधालोप एवं मतली के साथ एक तरफा सिरदर्द	1	1–3 माह	41	41	10 दिन–2 माह
कान	चक्कर आना	4	1–3 माह	12	07	3–10 दिन
आमाशय	ठंड के कारण कान में दर्द	9	7–15 दिन	19	19	7–15 दिन
मलाशय	उदर में दर्द	6	4 माह–1 वर्ष	27	27	3–6 माह
स्त्री	खूनी बवासीर	7	3 दिनय–3 माह	20	12	3–30 दिन
जननांग	माहवारी से पहले एवं बाद में कमर दर्द के साथ पतला गाढा सफेद अत्याधिक श्वेत प्रदर	5	8 माह–6 वर्ष	196	171	1–6माह
	ऋतुरोध	3	2–6 माह	44	43	3–9 माह
	अत्याधिक ऋतुस्राव	4	3 माह	10	06	15 दिन
	अपर्याप्त	4	2 माह	17	09	15 दिन
	अनियमित	4	3 माह–1 वर्ष	149	133	3–6 माह

औषध का नाम : सारसप्रिला — पौटेन्सी : 30

1	2	3	4	5	6	7
आंखे	आंखों की झिल्ली की प्रदाह	4	3–10 दिन	38	26	3–7 दिन
नाक	अत्याधिक जुकाम	4	3–7 दिन	16	11	3–7 दिन
	नाक में रूकावट	9	3–7 दिन	22	12	7–30 दिन
मुख	छालों के साथ लालास्त्रवण	9	4–15 दिन	30	30	7–15 दिन
मूत्र प्रणाली	बारम्बार, अप्रभावी मूत्र	4	6 माह	18	13	1 माह
अग्रांग	हाथों एवं पैरों का फटना	4	6 माह–1 वर्ष	139	131	10 दिन–1 माह
त्वचा	गर्मी के फोडे, दर्दयुक्त विसर्पिका	4	2–20 दिन	08	04	10–30 दिन
	मस्से	4	3–15 दिन	89	75	3–20 दिन
ज्वर	श्लैष्मिक ज्वर	1	1–3 माह	05	04	10–30 दिन
		4	2–5 दिन	34	31	2–6 दिन

औषध का नाम : टैरन्टुला क्यूवेन्सिस — पौटेन्सी : 30,200

1	2	3	4	5	6	7
मुख	मुख में छाले, लाल दर्दयुक्त जलन के साथ, उग्रता ठंडे पानी से	8	2–7 वर्ष	03	02	15 दिन
अग्रांग	पूयस्फोटिका, जलन जैसी दर्द के साथ अपस्फीत व्रण	4	2 माह	01	01	15 दिन

औषध का नाम : टैरन्टुला हिस्पैनिका — पौटेन्सी : 30, 200

1	2	3	4	5	6	7
पीठ	अंकडन के साथ गर्दन के पिछले भाग में दर्द	8	11–12 वर्ष	02	01	15 दिन

औषध का नाम : टर्मिनेलिया अर्जुना — पौटेन्सी : 6, 30

1	2	3	4	5	6	7
कान	कानों में घनघनाहट	7	3–6 माह	21	21	2–3 माह
उदर	भारीपन के साथ उदरवायु	7	7–10 दिन	04	04	3–9 दिन
छाती	कृच्छश्वसन, उग्रता–अधिक कार्य से घूमने से, सुधार–बैठने से	4	2–6 माह	03	03	15 दिन
	घबराहट के साथ स्पन्दन	8	1–2 माह	50	39	20 दिन–1 वर्ष
	हृदशूल	4,7	10–30 दिन	06	03	10–30 दि

औषध का नाम : टर्मिनेलिया चेबुला — पौटेन्सी : 6, 30, 200

1	2	3	4	5	6	7
सिर	सिर चकराना	9	3 माह–1 वर्ष	21	21	15 दिन–1 माह
	उग्रता–सूर्य की गर्मी से					
	दाहिने हिस्से में सिरदर्द	2	3 माह–1 वर्ष	29	27	15–25 दिन
	उग्रता–गर्मी से					
आमाशय	डकार के साथ हृददाह	8	10 वर्ष	18	16	15 दिन
	मुंह का कडवा स्वाद	3	1–3 माह	44	42	15 दिन–3 माह
मलाशय	बवासीर, सूखी, दर्दयुक्त	8	3 माह	09	05	15 दिन–1 माह
	जलन उग्रता–मल त्याग से					
	खूनी बवासीर	6	6 माह–1 वर्ष	75	65	2–9 माह
पीठ	कटि प्रदेश में दर्द	4	2–6 माह	25	25	1–2 माह

औषध का नाम : टेला अरेनिया — पौटेन्सी : 6, 30, 200

1	2	3	4	5	6	7
आमाशय	भूख न लगना	8	7–30 दिन	26	21	3–15 दिन
श्वसन संबंधी	दमा	4	15–60 दिन	82	65	15–30 दिन
अग्रांग	हाथों एवं पैरों में सुन्नपन उग्रता–आराम करने से सुधार–हिलने डुलने से	8	7–10 दिन	19	16	3–15 दिन

औषध का नाम : थिया चाइनेन्सिस — पौटेन्सी : मदर टिंचर, 6, 30, 200

1	2	3	4	5	6	7
स्त्री जननांग	श्वेत प्रदर, सफेद, प्रवाही उदर में बार–बार दर्द के साथ	8	2–3 माह	01	01	15 दिन

औषध का नाम : टाइलोफोरा इंडिका — पौटेन्सी : 6, 30

1	2	3	4	5	6	7
उदर	उदर में शूल प्रकृति का दर्द	9	3–30दिन	81	62	3–15 दिन
	उदरवायु के साथ ऐंठन जैसा दर्द	8	4–10 दिन	10	08	3–7 दिन

मलाशय	सख्त मल, अल्प मात्रा में बवासीर जलन के साथ	8	7 दिन–2 वर्ष	23	18	3–24 दिन
पीठ	कटि प्रदेश में मंद अविराम दर्द	8	7–60 दिन	20	12	3–22 दिन
छाती	श्वासकष्ट के साथ छाती में दर्द	8	3–20 दिन	38	32	3–20 दिन

औषध का नाम : थेरिडियोन **पौटेन्सी : 30**

1	2	3	4	5	6	7
सिर	सिरदर्द	4	7–20 दिन	25	20	3–7 दिन
आँखें	नेत्रश्लेष्मकलाशोथ आंखों में खुजली के साथ	4	2–10 दिन	21	16	2–12 दिन
	आंखों में दर्द	4	7–30 दिन	16	14	3–7 दिन
नाक	जुकाम के साथ पतला जलीय स्त्राव एवं नाक बंद	5	6 माह–1 वर्ष	13	13	1–2 माह
	नहाने के बाद छींके आना	5	6 वर्ष	08	08	1–2 माह
अमाशय	वमन एवं उल्टी	4	3–30 दिन	18	13	3–7 दिन
सार्वदेहिक	बेचैनी	4	7–30 दिन	08	08	3–7 दिन

औषध का नाम : विस्कम एल्बम **पौटेन्सी : 30, 200, 1एम**

1	2	3	4	5	6	7
सिर	सिर में सुन्नपन्न महसूस करना चक्कर आना	1	7–15 दिन	10	05	3–10 दिन
पीठ	पीठ दर्द– कटि प्रदेश	4	1 वर्ष	90	78	7–15 दिन
	कंधे एवं ग्रीवा पृष्ठ में दर्द	1	4 माह–1 वर्ष	239	229	15 दिन–6 माह
अग्रांग	घुटनों के जोडों में दर्द	1	1–3 वर्ष	401	295	15 दिन–4 माह
	कटिस्नायुशूल	1	6 माह–1वर्ष	220	145	15 दिन–6 माह
सार्वदेहिक	अपस्मारक दौरे, आक्षेप	4	20 दिन–6 माह	242	226	3 दिन–6 माह
	सार्वदेहिक कमजोरी	4	10 वर्ष	01	01	30 दिन
	निम्न रक्तचाप	4	2 माह–10 वर्ष	10	08	15 दिन
		4	1–6 माह	51	38	7–30 दिन

औषध परीक्षण अनुसंधान कार्यकम

(होम्योपैथिक रोगजनक परीक्षण)

परिषद् प्रारंभ से ही प्राथमिकता के तौर पर औषधियों के परीक्षण तथा पुनः परीक्षण के कार्यकम को कार्यान्वित कर रही है। इसमें स्वदेशी मूल की औषधियों तथा आंशिक रूप से प्रमाणित औषधियों के परीक्षण पर जोर दिया जा रहा है। यह कार्य निम्नलिखित संस्थानों/इकाईयों में चल रहा है :–

(1) औषध परीक्षण अनुसंधान इकाई, कोलकाता — 1979 से

(2) औषध परीक्षण अनुसंधान इकाई, मिदनापुर (पश्चिमी बंगाल) — 1979 से

(3) औषध परीक्षण अनुसंधान इकाई, गाजियाबाद (उत्तरप्रदेश) — 1979 से

(4) क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान (ह), नई दिल्ली — 1987 से

(5) होम्योपैथिक औषध अनुसंधान संस्थान, लखनऊ

अभी तक किया गया कार्य

पूर्वलेख

के.हो.अ.प. ने अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मान्य एक परीक्षण पूर्वलेख (आधुनिक वर्गीकरण) तैयार किया है। जिसे ब्रिटिश होम्योपैथिक जर्नल (विश्व में होम्योपैथी के क्षेत्र में सबसे विख्यात पत्रिका) के खण्ड 76 (1997) में प्रकाशित किया गया।

अब तक प्रमाणित औषधियाँ

1. एब्रोमा अगस्टा फोलिया
2. ईगल फोलिया
3. ईगल मार्मिलोस
4. अरेनिया स्किनेंसिया (लघु परीक्षण)
5. अरेनिया डायडिमा
6. एटिस्टा इंडिका
7. अजेदिरेक्ता इंडिका
8. बैरायटा आयोडेटा
9. बोरहेविया डिफ्यूजा
10. कैसिया फिस्चुला
11. कैरिका पपाया
12. कैसिया सोफेरा

13. करक्यूमा लोंगा (लघु परीक्षण)
14. क्यूप्रम ऑक्सीडेटम नाइग्रम
15. साइनोडोन डैक्टाईलोन
16. चिलोन (1983 एवं 1992 में दो अलग–अलग कार्यक्रमों में पूर्ण किया गया)
17. एम्बैलिया राईब्स (1990 में कार्यकारी दल के निर्देशानुसार पुनः परीक्षण किया गया)
18. फॉर्मिक एसिड (यद्यपि 1992 में मदर टिंचर का परीक्षण अलग से किया गया)
19. हाईड्रोकोटाइल एसियाटिका
20. होलेर्हिना एन्टीडायसैन्ट्रिका
21. काली म्युरियाटिकम
22. माईगेल
23. मलेरिया आफिसिनालिस (लघु परीक्षण)
24. टैरैंटूला क्यूबेंसिस
25. टैरैंटूला हिस्पेनिका
26. थिया चाइनेंसिस
27. टिला अरेनिया
28. टायलोफोरा इंडिका
29. थाईमोल
30. लैपिस एल्बा (लघु परीक्षण)
31. थेरीडियोन
32. टर्मिनेलिया अर्जुन मदर टिंचर
33. एकालिफा इंडिका
34. ग्लाइसिर्रिज़ा ग्लेब्रा
35. मैग्नेसिया सल्फ्युरिकम
36. फिलैन्थस निरूरी
37. टर्मिनेलिया चैबुला (वर्ष 1992 एवं 1995 दो अलग कार्यक्रमों में परीक्षण किया गया)
38. निक्टैंथस आर्बोरट्रिस्टिस
39. मैंगीफेरा इंडिका (लघु परीक्षण)
40. कॉर्नस सिर्सिनेटा
41. ऑसिमम सैंक्टम
42. रिसिनस कम्यूनिस
43. ट्राइब्यूलस टेरेस्ट्रिस
44. रॉवोल्फिया सर्पेंटिना
45. सेनेगा
46. कैलोट्रोपिस जाईगेन्टिया
47. ऑसिमम केनम
48. एसिड ब्यूटाइरिकम
49. क्रोमो काली सल्फ.
50. आक्सीट्रोपिस लैम्बर्टी
51. अल्फाल्फा
52. आर्सेनिकम वोमिकम
53. बेलिस पेरिनिस
54. यूर्फोबिया लैथाईरिस
55. स्टैफिलोकोसिनम
56. पैराफिन
57. थायरोडिनम
58. इकथायोलम

इन औषधियों के परीक्षण आंकडों का के.हो.अ.प. की वैज्ञानिक सलाहकार समिति के समक्ष अनुमोदन के लिए पेश करने हेतु संलग्न किया जा चुका है।

इन औषधियों के परीक्षण आंकड़ों का संकलन किया जा रहा है।

वर्ष 2000–2001 की उपलब्धियां

इस वर्ष में 4 औषधियों का परीक्षण (दो दीर्घ परीक्षण, 65, 67 तथा दो लघु परीक्षण 66, 71) पूर्ण किए गए हैं। तीन औषधियों, कोरनुअस सर्सिनेटा, ट्रिब्यूलस टेरैस्ट्रिस तथा ओसिनम सैक्टम का संकलन पूर्ण हो चुका है तथा इसे परिषद् की वैज्ञानिक सलाहकार समिति के समक्ष अनुमोदन के लिए पेश किया जाएगा। अन्य औषधियों का संकलन किया जा रहा है।

कार्य प्रगति पर :–

मकडी से बनने वाली औषधियों पर एक पुस्तिका, जिसमें परीक्षित लक्षणों एवं नैदानिक तौर से सत्यापित आंकडों को सम्मिलित किया गया है, का प्रकाशन के लिए संकलन किया जा रहा है।

औषध अनुसंधान कार्यक्रम

प्रस्तावना

परिषद् द्वारा जारी इस कार्यक्रम के अंतर्गत विशुद्ध अपरिष्कृत औषध सामग्री के सर्वेक्षण, सग्रह तथा पहचान से संबंधित अध्ययन शामिल किया गया है। इसमें विशुद्ध अपरिष्कृत औषध सामग्री से उत्तम विशेषताओं वाले उत्पाद बनाने से सम्बन्धित मानकीकरण अध्ययन भी शामिल है।

औषधीय पौधों का सर्वेक्षण एवं संग्रहण

औषधीय पौधों का सर्वेक्षण तथा संग्रहण इकाई की स्थापना ऊटी, तमिलनाडू में 1979 में की गई। जिसका कार्य दक्षिण भारत में पाए जाने वाले स्वदेशी औषधीय पौधों के अपरिष्कृत नमूनों का सर्वेक्षण तथा संग्रहण करके उन्हें ऐसे संस्थानों और इकाईयों में भेजना है जहां औषध मानकीकरण अध्ययन के साथ साथ साहित्यिक सर्वेक्षण, सूचीपत्रों को तैयार करना एवं संग्रहण उदभिज संग्रह का बनाए रखना, इत्यादि किया जाता है।

औषधीय पौधों विशेषकर विदेशी पौधों की खेती के लिए एमराल्ड पोस्ट, जिला ऊटी, तमिलनाडू में एक अनुसंधान उद्यान विकसित किया जा रहा है। यह उद्यान तमिलनाडू सरकार से पट्टे पर ली गई 12.70 एकड भूमि पर विकसित किया जा रहा है। इस उद्यान में सिनेरेरिया मारिटिमा, यद्यपि एक विदेशी पौधा है, की सफलतापूर्वक कृषि की जा रही है और अधिक पौधों को उगाने के प्रयत्न किए जा रहे हैं।

वर्ष 1979 से मार्च 2000 तक किए गए कार्यों का संक्षिप्त विवरण

इस इकाई ने 1979 के प्रारम्भ से निम्नलिखित कार्य पूर्ण किए हैं : 7087 पादप नमूनों का संग्रहण किया गया, 5943 उदभिज संग्रह पत्रों को प्राप्त करके समाविष्ट किया गया, 3969 होम्योपैथिक औषधीय पौधों की कार्ड सूचिका तैयार की गई, समय–समय पर उन्हे अद्यावधिक किया गया तथा 337 अपरिष्कृत औषध नमूनें दो औषध मानकीकरण इकाईयों तथा एक होम्योपैथिक औषध अनुसंधान संस्थान को भेषज अभिज्ञान तथा भौतिक रासायनिक अध्ययन के लिए भेजे गए। यहां 5061 उदभिज–संग्रह नमूनों को चिपकाया गया, 5175 नमूनों की सिलाई की गई तथा 5119 नमूनों को चिन्हित किया गया। 0.5 एकड़ भूमि में कुल 2,000 सिनेरेरिया मारिटिमा के पौधों का रोपण किया गया। 07 पौधों के जनन–द्रव्य संग्रहण का रख रखाव किया जा रहा है। समय–समय पर लोकसाहित्य के अनुसार प्रयोग में लाई जाने वाली चिकित्सा सहित मानवजाति – वानस्पतिक चिकित्सा संबंधी दौरों नैदानिक अनुसंधान दौरों तथा वानस्पतिक अन्वेषण दौरों का भी आयोजन किया गया।

2000–2001 में किए गए कार्य

अपरिष्कृत औषधीय पादप सामग्री संग्रहण सहित वानस्पतिक चिकित्सा अन्वेषण संबंधी चार मुख्य दौरों तथा उदभिज– संग्रह मंत्रणा सहित साहित्यिक सर्वेक्षण संबंधी 4 दौरों का आयोजन किया गया।

1. पहचान

दक्षिणी भारत के विभिन्न भागों से इकट्ठे किए गए उदभिज संग्रह नमूनों के 428 क्षेत्र अंकों की वानस्पतिक पहचान की गई।

2. उदभिज संग्रह संबंधी कार्य संपन्न

(क) 180 कार्ड सूचिकाओं को अद्यावधिक किया गया।

(ख) 296 उदभिज–सग्रह नमूने चिपकाऐ गए।

(ग) 298 उदभिज–सग्रह नमूने सिले गए।

(घ) 300 उदभिज संग्रह नमूनों को चिन्हित किया गया।

(ड.) 257 क्षेत्र अंकों को एकत्र किया जिससे अब तक की चल रही क्षेत्र संख्या बढ़ कर 7344 हो गई है।

(च) 330 उदभिज संग्रह पत्रों की पहचान करके प्रमाणित ठहराया गया।

3. अपरिष्कृत औषध–पादप सामग्री का संग्रहण एवं आपूर्ति :–

18 अपरिष्कृत औषधीय पादप सामग्री को ढेर सारी मात्रा में एकत्रित किया गया, संसाधित किया गया तथा इसे 2 औषध मानकीकरण इकाईयों (गाजियाबाद और हैदराबाद), 1 होम्योपैथिक औषध अनुसंधान इकाई (लखनऊ), भारतीय चिकित्सा के लिए औषध कोश प्रयोगशाला (गाजियाबाद), मै0 भन्डारी होम्योपैथिक प्रयोगशाला, फरीदाबाद, डा0 प्रकाशन होम्योपैथिक औषधि कं0, कैलिकट तथा फादर मूलर के धर्मार्थ संस्थान (मैंगलोर) में भेजा गया।

4 होम्योपैथिक औषधीय–पौध कृषि अनुसंधान उद्यान

निम्नलिखित पौधों का रोपण, छंटनी, नर्सरी में उगाने, अनुरक्षण तथा रखरखाव का कार्य नियमित रूप से किया जा रहा है।

प्रदर्शनी भूखण्डों में आये गए पौधों का विवरण इस प्रकार है:–

1.	सिनेरेरिया मारिटिमा	
	कृषि अधीन क्षेत्र	1.0एकड़
	नर्सरी में उगाये गए पौधे	750
	उपस्थित पौधे 0.75 एकड भूमि में	4,250
	अपरिष्कृत सामग्री (सूखे पौधे)	7.5 किलोग्राम
2.	डिजिटेलिस परप्यूरिया	
	क्षेत्र	0.5 एकड़
	कुल पौधे	750
	अपरिष्कृत सामग्री (सूखे पौधे)	30 किलोग्राम
3.	एकिलिया मिलीफोलियम	
	क्षेत्र	0.25 एकड
	कुल पौधे	1,200
	अपरिष्कृत सामग्री (सूखे पौधे)	5 किलोग्राम
4.	सैंटौलिना कैमेसाइपैरिसस	500 पौधे 0.25 एकड भूमि में
5.	वायला ओडोरेटा	500 पौधे 0.15 एकड भूमि में
6.	रोसमैरिनस आफिसिलेनिस	100 पौधे

7. साल्विया आफिसिनेलिस

8. एक्थोसैन्थम ओडोरेटम — 50 पौध

9. अनुसंधान उद्यान में प्रदर्शन भूखण्डों में उगाए तथा सम्पोषित किए गए होम्योपैथिक औषधीय पौधों के जनन द्रव्य संग्रह, जिनके प्रदर्शन का अध्ययन किया जा रहा है, वे इस प्रकार है — 50 पौध

(क) एपियम ग्रैवियोनेन्स लिन — 10 पौधे

(ख) फोईनीकुलम वुल्गर — 05 पौधे

(ग) केलेन्डुला आफिसिनेलिस — 10 पौधे

(घ) सिकोरम इन्टाईबस — 02 पौधे

(ङ) मजोरना होरटेन्सिस — 10 पौधे

प्रकाशित लेख

- एस. राजन, और ए. राजेन्द्रन–2000, होरटो टोक्सोमोनी आफ दी जैनस ऐरोकेरिया जस इन निलगिरी तामिल नाडु जे0 इकोन टैक्स बोट 24(1): 151–156, 2000
- गुप्ता एच0सी0ए एस0 राजन, सुनील कुमार और डी0पी0 रस्तोगी 2000 – फारमोगोनोस्टीकल स्टडीज ऑन साईजेसबीकिया ओरिएन्टेलिस लिन 2000 जे0 ईकोन टैक्स बोट 24(1): 161–170, 2000
- सुरेश बाबूराज, डी. एस. राजन और एस0 जोन बिट्टो,2000 "जिला नीलगिरी, तमिलनाडू में पाए जाने वाले होम्योपैथी में उपयोगी औषधीय पौधे" जरन इकोन. टैक्स. बाट. 24 (2): 270–275, 2000
- एस0 राजन, एच0सी0गुप्ता और सुनील कुमार 2000 लखनऊ के विदेशी औषधीय पौधे जे0के0 माहेश्वरी (भारतीय उपमहाद्वीप के मानव जाति वनस्पति विज्ञान और औषधीय पौधे वैज्ञानिक प्रकाशन (भारत) जोधपुर 381–389
- सुरेश बाबुराज डी0, एस0 जान ब्रिटो, जी0के0 मैथ्यू और एस0 राजन 2000 होम्योपैथिक में उपयोगी कृष्ट औषधीय पौधे जिला नीलगिरी तमिलनाडू में पाये गये। जे0के0 माहेश्वसरी भारतीय उपमहाद्वीप के मानवजाति वनस्पति विज्ञान और औषधीय पौधे, वैज्ञानिक प्रकाशन (भारत) जोधपुर 381–389, 2000
- रामप्रसाद सी0वी0 रामसुन्दर और एस0 राजन–2001 आर्किड सरकारी वनस्पति बाग उदगामंडलम नीलगिरी तमिलनाडु जू0 प्रिन्ट जे0 16(3) 447–448, 2001 में पाये गये।
- राजन एस0, डी0 सुरेश बाबुराज, एम0 सेतुरमन और एस0 पेरिमल 2001, नीलगिरी जिले के जनजाति और पैनियास के दवारा तनों का प्रयोग औषधीय रूप में किया गया। प्राकृतिक रैमडिस 1(1): 49–54, 2001

5. वैज्ञानिक सेमिनार में प्रकाशित लेख

- राजन एस0, डी0 सुरेश बाबुराज और एम0 सेतुरमन 2000, भारत में जिले नीलगिरी तमिलनाडू के पेनियास के बीच में देशज फाक प्रेक्टिस। औषधीय और एरोमेटिक पौधों पर अनुसंधान विकास पर 16 से 18 सितम्बर, 2000 तक केन्द्रीय संस्थान, लखनऊ में राष्ट्रीय सेमिनार।

- सुरेश बाबुराज डी0, एस0 जान, ब्रिटो और एस0 राजन–2001 जिला नीलगिरी तमिलनाडू में हौम्योपैथिक औषधीय पौधे सामान्यता पाये गय। सेंट जासफ कालिज, त्रिचुरपल्ली में 5 से 6 फरवरी, 2001 सारांश नं0 19 और पृष्ठ संख्या 14 पर औषधीय पौधो पर राष्ट्रीय सिमपोजियम पेश किया गया

- सुरेश बाबुराज डी0, एस0 जान ब्रिटो और एस0 राजन पौधों का परिचय – भारतीय चिकित्सा पद्धति के नवीनतम पांडुलिपि में एक लाभदायक यन्त्र। सेंट जासफ काजिल, त्रिचुरपल्ली में 5 से 6 फरवरी, 2001 सारांश नं0. 19 और पृष्ठ संख्या 14 पर औषधीय पौधें पर राष्ट्रीय सिमपोजियम पेश किया गया।

औषध मानकीकरण

औषधि की उत्तमता को सुनिश्चित करने के लिए मानकीकरण अनिवार्य है। इसमें होम्योपैथिक औषधियों की विशेषता को प्रभावित करने वाले एवं भेषजीय एकरूपता को निर्धारित करने वाले घटकों एवं मापदण्डों की श्रृखंला सम्मिलित है तथा मूल सामग्री की सही पहचान की आवश्यकता है। औषध मानकीकरण से औषध की विशेषता, सुरक्षा तथा प्रभावोत्पादकता सुनिश्चित की जाती है। होम्योपैथिक औषधियों के मानदण्ड तैयार करने के लिए भेषज अभिज्ञान, भौतिक–रासायनिक एवं भेषज गुण विज्ञान अध्ययन किए जा रहे हैं जिनका उद्देश्य औषधियों की विभिन्न गुणात्मक एवं मात्रात्मक विशेषताओं एवं प्रत्येक अध्ययन के लिए अपनाए गये विभिन्न मानदण्डो का अध्ययन करना है।

भेषज–अभिज्ञानी अध्ययन में वानस्पतिक मूल की अपरिष्कृत औषधियों के सूक्ष्म एवं स्थूल विशेषताऐं शामिल हैं।

भौतिक–रासायनिक विश्लेषण से औषधि के भौतिक एवं रासायनिक स्थिरांको को निर्धारित करने में मदद मिलती है। प्रयोगशाला के जीवजन्तुओं पर प्रयोगशाला की मानक अवस्थाओं में किए गए प्रायोगिक परीक्षण से किसी औषध के भेषज गुण विज्ञान सम्बन्धी स्पैक्ट्रम का पता लगाया जाता है जिसमें प्रारम्भिक खुराक का अनुमान इसकी प्रभावोत्पादकता, बचाव तथा होम्योपैथिक औषधियों की किया विधि भी शामिल है। मानदण्डों की अनुपस्थिति में विशेषता सुनिश्चित नहीं की जा सकती। इन घटकों में मूल सामग्री की सही पहचान एवं सुस्पष्ट परिभाषा अधिकृत होम्योपैथिक भेषज संग्रह में अनुबद्ध किए औषध को तैयार करने के प्रत्येक चरण को कार्यान्वित करना, प्रक्रिया संचालन, अंतिम उत्पादों का परीक्षण एवं सत्यापन, उत्तम प्रयोगशाला प्रक्रियाओं के दवारा स्थिरता सम्मिलित है। किसी भी औषध की सुरक्षा एवं प्रभावोत्पादकता को चिकित्सीय सूची संचालन एवं निर्धारण तथा सुनियोजित अन्तर्जीवी एवं अन्तःकाचपत्री प्रयोग नमूनों से निर्धारित अधिकतम निष्कर्षण मूल्य दवारा सुनिश्चित किया जाता है।

इस समय परिषद् द्वारा औषध मानकीकरण अध्ययन का कार्य तीन केन्द्रो पर किया जा रहा है अर्थात होम्योपैथिक औषध अनुसंधान संस्थान, लखनऊ, औषध मानकीकरण इकाई, गाजियाबाद तथा औषध मानकीकरण इकाई, हैदराबाद। होम्योपैथिक औषध औषध अनुसंधान संस्थान, लखनऊ में औषध मानकीकरण कार्य, भेषज अभिज्ञान, भौतिक रासायनिक तथा भेषजगुणविज्ञान सम्बन्धी पहलुओं के विषय में किया जा रहा है जबकि औषध मानकीकरण इकाईयों, गाजियाबाद तथा हैदराबाद में औषध मानकीकरण कार्य केवल भेषज अभिज्ञान तथा भौतिक रासायनिक अध्ययन से सम्बन्धित है।

वर्ष 2000–2001 के दौरान प्राप्त लक्ष्य

हैदराबाद एवं गाजियाबाद स्थित औ.मा. इकाइयों तथा हो.औ.अ.स., लखनऊ में भेषज–अभिज्ञान एवं भौतिक रासायनिक अध्ययन के लिए कुल आठ औषधियाँ निर्धारित की गई।

1. औषध मानकीकरण इकाई, हैदराबाद

इस इकाई ने निम्नलिखित औषधियों पर भेषज अभिज्ञान एवं भौतिक रासायनिक अध्ययन किया है :

साईटरस मीडिया, एकलिप्टा एल्बा, आईरिस जरमीनाका, मेन्था स्पाईकाटा, प्रूनस डोमेस्टिका, टैरोकारपस मरसूपीयम, पाईरस बम्यूनिस, रूमेक्स एसीटोला।

2. औषध मानकीकरण इकाई, गाजियाबाद

इस इकाई ने साईटरस मीडिया, एकलिप्टा एल्बा, आईरिस जरमीनाका, मेन्था स्पाईकाटा, प्रूनस डोमेस्टिका टैरोकारपस मरसूपीयम, पाईरस कम्यूनिस, रूमेक्स एसीटोला पर भैषज अभिज्ञान अध्ययन किया है।

3. होम्योपैथिक औषध अनुसंधान संस्थान, लखनऊ

इस संस्थान ने साईटरस मीडिया, एकलिप्टा एल्बा, आईरिस जरमीनाका, टैरोकारपस मारसूपीयम, पाईरस कम्यूनीस, यूलैक्स यूरोपीयस पर भेषज अभिज्ञान अध्ययन किया है।

इस संस्थान ने साईटरस मीडिया, एकलिप्टा एल्बा, मायकेलिया चमपाका, पाईरस कम्यूनिस एवं वाईटीस वीनिफेरा पर भौतिक रासायनिक अध्ययन किया है।

साहित्यिक अनुसंधान

प्रस्तावना

वैज्ञानिक साहित्य के बारम्बार नैदानिक प्रयोग में संदर्भ सामग्री के रूप में इस्तेमाल होने को ध्यान में रखते हुए इसे आधुनिक बनाना बहुत महत्वपूर्ण है। विशेष तौर पर इसलिए क्योंकि वातावरण के प्रदूषण, उद्योगीकरण, बदलते हुए जीवन शैली एवं मूल्यों के साथ बदले हुए दृश्यलेख ने लगभग उन्मूलित की जा चुकी क्षयरोग, मलेरिया जैसी बीमारियों के पुनः निर्गमन तथा कुछ नये रोगों के निर्गमन का मार्ग प्रशस्त किया है। अतः किसी विशेष विषय पर लिखा गया साहित्य, ज्ञान को पूर्ण करने के लिए एक अनिवार्य साधन बन जाता है। और होम्योपैथी में तो इसकी और अधिक आवश्यकता है जहां साहित्य इतना विस्तुत तथा बिखरा हुआ है कि बहुत बार आवश्यकता पड़ने पर यह एक चिकित्सक के लिए उपलब्ध नहीं हो पाता। ऐसे में परिषद ने पुराने साहित्य का संशोधन करने तथा चिकित्सा शास्त्र का संकलन करने के लिए साहित्यिक अनुसंधान को एक दीर्घकालीन कार्यक्रम के रूप में प्रारम्भ किया है।

प्रारम्भ की गई परियोजनाएँ

अन्य कार्यों के संबंध में कैंट की (कुंजली) रेपर्टरी का पुनरवलोकन तथा संशोधन :

बोरिक रेपर्टरी से संकलन

जे.टी. कैण्ट द्वारा लिखी गई रेपर्टरी एक ऐसी संदर्भ पुस्तक है जिसका संकलन 20वीं सदी के प्रारंभ में किया गया था। यह समस्त विश्व में चिकित्सालयों में सबसे अधिक प्रयोग की जाने वाली तथा सबसे प्रसिद्ध रेपर्टरी है। इसके प्रकाशन के बाद से बहुत सी औषधियों का परीक्षण हो चुका है तथा उन्हें हमारे चिकित्सीय साधनों से मिलाया जा चुका है। अतः कैण्ट की रेपर्टरी के कार्यक्षेत्र को बढ़ानें तथा सुधारने के लिए परिषद ने यह परियोजना प्रारम्भ की है।

अभी तक किया गया कार्य

कैण्ट रेपर्टरी के 37 अध्यायों में से 15 अध्यायों को संशोधित करके प्रकाशित किया गया है।

वर्ष 2000–2001 की उपलब्धियाँ

इस वर्ष में सी.बी. नर की रैपरट्री के टिशूज अध्याय से एवं बोगर बोनिंगहासन की रैपरट्री के मून फेसिस अध्याय से कैंट रेपरट्री के जनरैलिटिस अध्याय में संकलन पूर्ण किया गया है। इस योजना पर अन्य कार्य परिषद की वैज्ञानिक सलाहकार समिति के विचाराधीन होने की वजह से नहीं किया जा रहा।

प्रलेखन एवं पुस्तकालय

अनुसंधान में प्रलेखन के महत्व को पहचानते हुए केन्द्रीय होम्योपैथिक अनुसंधान परिषद् के मुख्यालय में प्रलेखन अनुभाग की स्थापना 1 अप्रैल 1980 को हुई। तत्पश्चात यह निरन्तर विकास एवं प्रगति की ओर अग्रसर रहा। इस विभाग का मुख्य उद्देश्य "होम्योपैथी से संबंधित जानकारी का प्रसार" करना है। इसके अन्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं।

1. परिषद् के लिए महत्व रखने वाले विषयों पर संपूर्ण प्रलेखन तैयार करना तथा परिषद के वैज्ञानिकों के ज्ञान को समसामयिक बनाने हेतु इसे उन्हें सौंपना।
2. होम्योपैथी तथा अन्य विषयों पर वैज्ञानिक लेखों के सारांश, ग्रंथ सूचियां और संदर्भ सूचियाँ तैयार करना।
3. परिषद द्वारा आयोजित किए गए वैज्ञानिक सेमिनारों, विचार गोष्ठियों तथा कार्यशालाओं आदि का विवरण रखना।
4. परिषद् के लिए महत्व रखने वाले वैज्ञानिक प्रपत्र उपलब्धता के आधार पर वैज्ञानिकों को प्रदान करना।
5. परिषद् के विभिन्न प्रकाशन कार्यों का दायित्व संभालना।

एक संदर्भ पुस्तकालय भी विकसित किया गया है जिसमें होम्योपैथी और संबंधित विज्ञानों पर आज तक 6,474 पुस्तकों का संग्रह है। यहां भारतीय तथा विदेशी दोनों मिला कर 31 पत्रिकाऐं मंगाई जाती है।

वर्ष 2000–2001 के दौरान किए गए कार्य

पुस्तकालय

पुस्तकें :		
पंजीकृत शीर्षकों की संख्या	:	51
– विश्व स्वास्थ्य संगठन के प्रकाशन	:	30
– सम्मानार्थ प्राप्त पुस्तकों की संख्या	:	41
– खरीदी गई पुस्तकों की संख्या	:	6,474
दिनांक 31.03.2001 को कुल पुस्तकें	:	31
पत्रिकांए		
पूर्वक्रय की गई पुस्तकों की संख्या	:	05
– विदेशी	:	20
– भारतीय	:	06
– वि.स्वा. संगठन की पत्रिकाएँ	:	1470
– 31.3.2001 को पत्रिकाओं की संख्या		

प्रलेखन

सूचना सेवायें :

– अनुसंधान विद्यार्थियों की मांग पर इंटरनेट पर उपलब्ध कराई गई संदर्भिका सूची

– सामयिक स्वास्थ्य साहित्य जागरूकता सेवायें : 04

– चिकित्सा संबंधी सारांश (समय–समय पर विवर्धित किए जा रहे हैं) : 02

प्रकाशन

त्रैमासिक पत्रिका (खण्ड 22)

के.हो.अ.प. समाचार, संख्या 27 : 2 अंक

आडियो विजूअल : 1 अंक

2000–01 में विडियो कैसेट जोडे गये : 03 अंक

कुल एकत्रित किये गये विडियो कैसेट की संख्या : 76

प्रकाशन

परिषद् त्रैमासिक बुलेटिन, के.हो.अ.प. समाचार तथा विभिन्न पुस्तकों/एक विषय आलेखों का प्रकाशन करती है। त्रैमासिक बुलेटिन में परिषद् की तकनीकी गतिविधियों एवं उपलब्धियों को विशिष्टता प्रदान की जाती है और के.हो.अ.प. समाचार में परिषद् की गतिविधियों को प्रकाशित किया जाता है।

वर्ष 2000–2001 के दौरान प्रकाशन

त्रैमासिक बुलेटिन : अंक 22(1 एवं 2) तथा (3 एवं 4) के अंक प्रकाशित किए गए है। अंक 22(1 एवं 2) 2000 औषध मानकीकरण पर एक विशेष अंक है जिसमें 6 औषधीय पौधों अर्थात एकैलिफा इंडिका, एन्ड्रोग्राफिस पॅनिक्यूनलाटा, अकेशिया नाइलोटिका, सिसेलपीनिया बोन्डयूसेला, सिटरूलस कोलोसिन्थिस एवं मोमोर्डिका चैरेन्शिया के वानस्पतिक एवं देशी नामों, भारत में विस्तार, वानस्पतिक विशेषताएं, महत्वपूर्ण प्रभाव एवं भारतीय चिकित्सा परिषद् एवं होम्यो0 में उपयोगों, भेषज अभिज्ञानी विशेषताओं, रासायनिक अवयवों, रासायनिक प्रकिया, विष विज्ञान, चिकित्सीय मूल्यांकन, व्यापार एवं वाणिज्य, अनुकल्पों मिलावटों तथा कृषितकनीकों से संबंधित सभी पहलुओं के विवरण को प्रस्तुत किया गया है।

के.हो.अ.प. समाचार : कमांक 27

पुस्तकांए/पैम्फलेट

पुनः मुद्रित :

1. ए हेंड बुक आफ होम रेमेडिज इन होम्योपैथी
2. सामान्य होम्योपैथिक उपचार पुस्तिका
3. मलेरिया का रोकथाम तथा उपचार
4. मिथक तथा तथ्य – होम्योपैथी
5. होम्योपैथी का समष्टि उपगमन
6. मोतियाबन्द
7. मातृ तथा शिशु देखभाल

होम्योपैथिक में उपयोग में लाए जाने वाले 14 भारतीय औषधीय पौधे अपने नैदानिक संकेतों के साथ हिन्दी के 16 पृष्ठों के फोल्डर में प्रकाशित हो चुके हैं

वर्ष 2000–2001 के दौरान सम्पूर्ण/समाप्त परियोजनाएँ/योजनाएँ

निम्नलिखित संस्थानों एवं इकाईयों को निम्नलिखित नैदानिक अनुसंधान कार्यकम दिये गये हैं:–

(क) कोहायम स्थित केन्द्रीय अनुसंधान संस्थान में अस्थिसन्धिशोथ

(ग) गोरखपुर में स्थित नैदानिक अनुसंधान ईकाई में त्वचा रोग

(घ) भोपाल स्थित महामारी सहित नैदानिक अनुसंधान इकाई में ऊपरी श्वासनली संक्रमण

2. सांकेतिक संख्या 65, 67 (दीर्घ परीक्षण) तथा 66, 71 (लघु परीक्षण) की चार (4) औषधियों के परीक्षण का कार्य समाप्त किया जा चुका है। चूंकि यह कार्य डबल ब्लाईड तकनीक के अंतर्गत किया गया है, इसलिए औषधियों के नाम का कूटानुवाद रोगजनन परीक्षण के संकलन के बाद किया जाएगा।

3. तीन औषधियों यानि कोरेनुअस सर्सिनेटा, ट्रिब्यूलस टेरैस्ट्रिस तथा ओसिमम सैक्टम के परीक्षण आंकड़ों के संकलन पूर्ण हो चुका है और इस के.हो.अ.प. की वैज्ञानिक सलाहकार समिति के समक्ष अनुमोदन के लिए रखा जाएगा। अन्य औषधियों का संकलन प्रगति पर है।

4. इस अवधि में साहित्यिक अनुसंधान कार्यक्रम के अंतर्गत सी.बी. नर रैपरट्री के टिशू अध्याय से एवं बोगर बोनिंगहासन रैपरट्री के मून फेसिस अध्यार्य से कैंट रैपरट्री के जनरैलिटिस अध्याय में संकलन पूर्ण किया गया है। इस योजना पर और आगे कार्य परिषद् की वैज्ञानिक सलाहकार समिति के विचाराधीन होने की वजह से नहीं किया जा रहा।

5. इस वर्ष निर्दिष्ट आठ औषधियों का भेषज अभिज्ञान तथा भौतिक रासायनिक अध्ययन पूरा किया जा चुका है।

6. इस वर्ष में मंदबुद्धि बच्चों में आचरणदोष एवं लोह अल्ताजन्य अरक्तता की परियोजना पर किए जा रहे अध्ययन को पूर्ण किया गया है।

भावी योजनाएँ/कार्यक्रम

1. पिछली वैज्ञानिक सलाहकार समिति द्वारा अनुमोदित/रूपान्तरित सभी अनुसंधान परियोजनाएँ जारी रहेंगी तथा जारी परियोजनाओं को राष्ट्रीय दृष्टिकोण से महत्व दिया जाएगा और नई परियोजनाओं का अन्वेषण किया जाएगा अथवा इन्हें प्रारम्भ किया जाएगा।

2. के.हो.अ.प. की वै.स.स. के सुझावानुसार 5 औषधियों का परीक्षण (2 दीर्घ परीक्षण एवं 3 लघु परीक्षण) किया जाएगा।

3. 8 औषधियों के भेषज–अभिज्ञान, भौतिक रासायनिक तथा भेषज–गुणविज्ञान संबंधी मानक निर्धारित किए जाएंगे।

4. मकडी से बनने वाली औषधियों पर एक पुस्तिका को प्रकाशन हेतु संकलन किया जा रहा है जिसमें प्रमाणित लक्षण एवं नैदानिक तौर से सत्यापित आंकडे शामिल हैं।

5. एब्रोमा आगस्ता फोलिया पर विनिबंध (पहले से प्रकाशित) को संशोधित किया जाएगा जिसमें भेषज अभिज्ञान अध्ययन एवं नैदानिक तौर से सत्यापित लक्षणों के रंगीन छायाचित्र सम्मिलित होंगें।

6. होम्योपैथी में उपयोग में लाए जाने वाले औषधीय पौधों की चैकलिस्ट का भी संशोधन करके प्रकाशन किया जाएगा जिसमे और पौधों का संकलन किया जाएगा।

केन्द्रीय होम्योपैथिक अनुसंधान परिषद् के अधीन संस्थानों एवं यूनिटों की सूची

1. प्रभारी सहायक निदेशक,
केन्द्रीय अनुसंधान संस्थान (होम्यो.),
सचिवोथामापुरम,
कोट्टायम (केरल)–686 532.

2. प्रभारी अनुसंधान अधिकारी,,
क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान (होम्यो.),
नेहरू होम्यो0 मेडिकल कालेज एवं अस्पताल,
बी–ब्लाक, डिफैंस कालोनी,
नई दिल्ली–110 024.

3. प्रभारी अनुसंधान अधिकारी,,
क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान (होम्यो.),
बम्बई होम्यो0 मेडिकल कालेज एवं अस्पताल,
इरला नाका, विले पार्ले,
मुंबई (महाराष्ट्र)–400 056.

4. प्रभारी अनुसंधान अधिकारी,,
क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान (होम्यो.),
13/210 ए, क्लब रोड,
गुडिवाढ़ा (आ0प्र0)–521 310.

5. प्रभारी अनुसंधान अधिकारी,,
क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान (होम्यो.),
सी.सी.आर.एच. बिल्डिंग, मारचीकोट लेन,
पुरी (उड़ीसा)–752 001.

6. प्रभारी सहायक निदेशक,
होम्योपैथिक औषध अनुसंधान संस्थान,
बी–1433, इन्दिरा नगर,
लखनऊ (उ0प्र0)–226 016.

7. प्रभारी परियोजना अधिकारी,,
औषध मानकीकरण इकाई (होम्यो.),
क्यू.यू.बी.–32, रोड नं. 4,
विक्रम पुरी, हबसीगुडा,
हैदराबाद (आ0प्र0)–500 007.

8. प्रभारी परियोजना अधिकारी,,
औषध मानकीकरण इकाई (होम्यो.),
द्वारा होम्यो. भेषजीय प्रयोगशाला,
केन्द्रीय सरकार कार्यालय परिसर,
हापुड़ चुंगी के पास,
गाजियाबाद (उ0प्र0)–201 002.

9. प्रभारी अनुसंधान अधिकारी,,
औषध मानकीकरण अनुसंधान इकाई,
136, अफगानन मोहल्ला, दिल्ली गेट,
गाजियाबाद (उ0प्र0)–201 001.

10. प्रभारी परियाजना अधिकारी,
औषध मानकीकरण अनुसंधान इकाई (होम्यो.),
डी.एन.डी. होम्यो. मेडिकल कालेज एवं अस्पताल,
12 गोविन्दा खटीक रोड़,
कोलकाता (प0बं0)–700 046.

11. प्रभारी अनुसंधान अधिकारी,,
औषध मानकीकरण अनुसंधान इकाई (होम्यो.),
मिदनापुर होम्योपैथिक मेडिकल कालेज एवं
अस्पताल,
मिदनापुर (प0बं0)–721 101.

12. प्रभारी अनुसंधान अधिकारी,,
चिकित्सा सत्यापन इकाई (होम्यो.),
136, अफगानन मोहल्ला, दिल्ली गेट,
गाजियाबाद (उ0प्र0)–201 001.

13. प्रभारी सहायक अनुसंधान अधिकारी,,
चिकित्सा सत्यापन इकाई (होम्यो.),
टाट बाबा आश्रम, गोपेश्वर,
वृंदावन (मथुरा)–281 121 (उ0प्र0)

14. प्रभारी अनुसंधान अधिकारी,,
चिकित्सा सत्यापन इकाई (होम्यो.),
एन.सी. 152, गायत्री मंदिर मार्ग, पो.आ. लोहिया नगर,
कंकर बाग, पटना (बिहार)–800 020.

15. प्रभारी सर्वेक्षण अधिकारी,
सर्वे ऑफ मेडिसिनल प्लाटस एवं
कलैक्शन यूनिट (होम्यो.),
112, सरकारी कालेज परिसर,
उदगामण्डलम (तमिलनाडु)–643 002.

16. प्रभारी परियोजना अधिकारी,
नैदानिक अनुसंधान व महामारी सैल (होम्यो.),
1 नीम रोज, जिन्सी चौराहा,
जहांगीराबाद,
भोपाल (मध्य प्रदेश)–462008.

17. प्रभारी परियोजना अधिकारी,
शल्य अनुसंधान प्रयोगशाला,
बनारस हिन्दु विश्व विद्यालय,
वाराणसी (उ0प्र0)–221 005

18. प्रभारी अनुसंधान अधिकारी,
चिकित्सा अनुसंधान इकाई (होम्यो.),
6/430, माडल टाऊन,
बहादुरगढ़ (हरियाणा)–124 507.

19. प्रभारी अनुसंधान अधिकारी,
चिकित्सा अनुसंधान इकाई (होम्यो.),
किशोरी कालोनी, प्लाट नं. 1,
भूपेन्द्र रोड, फाटक नं. 22 के पास,
पटियाला (पंजाब)–147 001.

20. प्रभारी अनुसंधान अधिकारी,
चिकित्सा अनुसंधान इकाई (होम्यो.),
फ्लैट नं0 5, नित्या निकेतन,
शिमला (हि0प्र0)–171 002.

21. प्रभारी अनुसंधान अधिकारी,
चिकित्सा अनुसंधान इकाई (होम्यो.),
हिन्दुस्तान सा मिल बिल्डिंग,
वैलूर रोड, मिशन कम्पाउन्ड,
उडूपि (कर्नाटक)–576 101.

22. प्रभारी परियाजना अधिकारी,
होम्योपैथिक अनुसंधान संस्थान,
डा0 मदन प्रताप खुन्टेटा राजस्थान,
होम्यो. मेडिकल कालेज एवं अस्पताल,
स्टेशन रोड़, जयपुर (राजस्थान)–302 006.

23. प्रभारी सहायक अनुसंधान अधिकारी,
चिकित्सा अनुसंधान इकाई (होम्यो.),
एम.बी. 31, मिडल पॉइन्ट,
महात्मा गांधी रोड,
पोर्ट ब्लेयर (अ0 एवं निकोबार समूह)–744 101.

24. प्रभारी अनुसंधान अधिकारी,
चिकित्सा अनुसंधान इकाई (होम्यो.),
डोर नं. 6–1–61 ए, एस.वी.ओ. कालेज परिसर,
के.टी. रोड, तिरूपति–517 501.

25. प्रभारी अनुसंधान अधिकारी (होम्यो.),
सी.जी.एच.एस. विंग, सफदरजंग अस्पताल,
नई दिल्ली।

26. प्रभारी सहायक अनुसंधान अधिकारी,
चिकित्सा अनुसंधान इकाई (होम्यो.),
खालीपाड़ा, पुराना बाकाड़ा,
गुवाहटी (असम)–781 019.

27. प्रभारी अनुसंधान अधिकारी,
चिकित्सा अनुसंधान इकाई (होम्यो.),
नं. 4, भारथीयार स्ट्रीट, पहली मंजिल, कांगम,
चैन्नई–600 113.

28. प्रभारी परियोजना अधिकारी,
चिकित्सा अनुसंधान इकाई (होम्यो.),
पैलेस कंपाउन्ड के सामने, इंदौर स्टेडियम,
नजदीक श्री गोबिंदाजी मंदिर,
इम्फाल–715 001.

29. प्रभारी सहायक अनुसंधान अधिकारी,
चिकित्सा अनुसंधान इकाई (होम्यो.),
71–72, रेशम गढ़ कालोनी,
जम्मू–180 001.

30. प्रभारी सहायक अनुसंधान अधिकारी,
चिकित्सा अनुसंधान इकाई (होम्यो.),
सर्किट घर के नजदीक,
जगदलपुर,
जिला बस्तर (म0प्र0)–494 001.

31. प्रभारी सहायक अनुसंधान अधिकारी,
होम्योपैथी के लिए चिकित्सा अनुसंधान इकाई,
विधुली रिपब्लिक रोड,
ऐजवाल (मिजोरम)–796 001.

32. प्रभारी सहायक अनुसंधान अधिकारी,
होम्योपैथी के लिए चिकित्सा अनुसंधान इकाई,
म0नं0 39, टाईप–3 विवेक बिहार,
पोस्ट आर.के. मिशन, जिला पैपमपुर,
ईटानगर (अरूणाचल प्रदेश)–791 113.

33. प्रभारी सहायक अनुसंधान अधिकारी,
होम्योपैथी के लिए चिकित्सा अनुसंधान इकाई,
बी–1073, हनुमान स्ट्रीट,
भरोच (गुजरात)–392 001.

34. प्रभारी परियोजना अधिकारी,
चिकित्सा अनुसंधान इकाई (होम्यो.),
गादमतल्ला, सिलीगुढ़ी, दार्जिलिंग (प0बं0)।

35. प्रभारी अनुसंधान अधिकारी,
होम्योपैथी के लिए चिकित्सा अनुसंधान इकाई,
टाउनशिप, गुरूद्वारा कंपाउन्ड,
डांडेली (कर्नाटक)–581 235.

36. प्रभारी सहायक अनुसंधान अधिकारी,
होम्योपैथी के लिए चिकित्सा अनुसंधान इकाई,
हुकुम सिंह बिल्डिंग, पहली मंजिल,
जिला कार्बिएंगलौंग,
पो.आ. डिफू (असम)–782 460.

37. प्रभारी सहायक अनुसंधान अधिकारी,
चिकित्सा अनुसंधान इकाई,
गोरखपुर मंडल विकास निगम लिमिटेड भवन,
पहली मंजिल, कचेहरी रोड (शास्त्री चौक),
गोरखपुर–273 001.

38. प्रभारी सहायक अनुसंधान अधिकारी,
होम्योपैथी के लिए चिकित्सा अनुसंधान इकाई,
सोनारी स्ट्रीट,
जैपुर (उड़ीसा)–764 001

39. प्रभारी सहायक अनुसंधान अधिकारी,
होम्योपैथी के लिए चिकित्सा अनुसंधान इकाई,
पी0ओ0 मूलामटम,
इडुक्की (केरल)–685 589.

40. प्रभारी सहायक अनुसंधान अधिकारी,
होम्योपैथी के लिए चिकित्सा अनुसंधान इकाई,
सरकूलर रोड,
नेपाली गांव के नजदीक,
दीमापुर–797 112.

41. प्रभारी अधिकारी,
होम्योपैथी के लिए चिकित्सा अनुसंधान इकाई,
सैम्फल होटल के सामने,
संग्राम भवन के नजदीक, डेवलपमैंट क्षेत्र,
गंगटोक (सिक्किम)–737 101.

42. प्रभारी परियाजना अधिकारी,
होम्योपैथी के लिए चिकित्सा अनुसंधान इकाई,
खोंगजोम, खेबचिंग, जिला थोबल,
मणिपुर–795 148.

43. प्रभारी अधिकारी,
होम्योपैथी के लिए चिकित्सा अनुसंधान इकाई (आ.),
जिला चम्बा,
भरमौर (हिमाचल प्रदेश)–176 315.

44. प्रभारी सहायक अंनुसंधान अधिकारी,
होम्योपैथी के लिए नैदानिक अनुसंधान इकाई,
जंगस्टी रोड,
लेह (जम्मू एवं कश्मीर)–194 101.

45. प्रभारी अधिकारी,
होम्योपैथी के लिए चिकित्सा अनुसंधान इकाई,
पहला क्रास, मंगलाक्ष्मी नगर
(नये बस स्टाप के पिछे),
पांडिचेरी–605 013.

46. प्रभारी अनुसंधान अधिकारी,
होम्योपैथी के लिए चिकित्सा अनुसंधान इकाई,
मिलट कॉलोनी,
कनके,
रांची (झारखंड)–834 006.

47. प्रभारी अनुसंधान अधिकारी,
होम्योपैथी के लिए चिकित्सा अनुसंधान इकाई,
विल्डिंग नं. 37–38,
गांधीपुरम,पो0आ0 सेंदामगलम,
जिला सेलम (तमिलनाडू)–637 409.

48. प्रभारी सहायक अनुसंधान अधिकारी,
होम्योपैथी के लिए चिकित्सा अनुसंधान इकाई,
दवारा श्री पी0 बोस ऐम्पल रोड,
शिलांग (मेघालय)–793 001.

49. प्रभारी सहायक अनुसंधान अधिकारी,
होम्योपैथी के लिए चिकित्सा अनुसंधान इकाई,
पुरानी कालीबाढ़ी रोड, पी.ओ. एडवाईजर चौमुवनी,
कृष्ण नगर, अगरतला, जिला त्रिपुरा (पश्चिम),
त्रिपुरा–799 001.

50. प्रभारी सहायक अनुसंधान अधिकारी,
होम्योपैथी के लिए चिकित्सा अनुसंधान इकाई,
दरवाजा नं0 74–19–3, उनामालाकुडूरू रोड
(लॉक रोड), पाटामाटा, कृष्णा नगर,
जिला विजयवाड़ा (आं0प्र0)–520 007.

51. प्रभारी सहायक अनुसंधान अधिकारी,
होम्योपैथी के लिए चिकित्सा अनुसंधान इकाई,
प्रोफेसर कालोनी के नजदीक, पी0ओ0 बुद्धाराजा,
जिला संबलपुर, उड़ीसा–768 004.

केन्द्रीय होम्योपैथिक अनुसंधान परिशद, नई दिल्ली का वर्ष 2000–2001 लेखा प्रतिवेदन

प्रस्तावना

केन्द्रीय होम्यापैथिक अनुसंधान परिषद की संस्थापना समिति पंजीकरण अधिनियम 1860 के अंतर्गत 30 मार्च 1978 को की गई।

1. परिषद के लेखाओं की लेखा परीक्षा, लेखा नियंता एवं महालेखा परीक्षक के "कर्तव्य, शक्तियों तथा सेवा शर्तों" अधिनियम 1971 की धारा 20(1) के अंतर्गत पांच वर्ष की अवधि (वर्ष 1998–99 से 2002–03 तक) के लिए सौंपी गई है।

परिषद का वित्तपोषण मुख्यतः केन्द्रीय सरकार द्वारा दिये गये अनुदान से होता है। वर्ष 2000–2001 के दौरान, परिषद को स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय से 7.05 करोड़ रूपये का अनुदान (3.31 करोड़ योजना तथा 3.74 करोड़ रूपये योजनातेर के अंतर्गत) प्राप्त हुआ।

2. लेखा पत्र पर टिप्पणियां :–

तुलन पत्र

2.1 परिसम्पति रजिस्टर का व्यवस्थित ढंग से न होना :–

सामान्य वित्तीय नियमों के अंतर्गत परिसम्पत्ति रजिस्टरी को फार्म 19 के तहत व्यवस्थित करना चाहिए जो कि परिषद द्वारा नहीं किया गया है। जिसके अभाव में परिसम्पत्तियों के सही मूल्यांकन, तुलन पत्र के विभिन्न मदों में जिनकी कीमत रूपये 3.02 करोड दर्शायी गई है को लेखा परीक्षा में सत्यापित नहीं किया जा सका।

3. सामान्य

3.1 लेखा नीतियां

परिषद को चाहिए कि वह वार्षिक लेखा के साथ महत्वपूर्ण लेखा नीतियों को जोडे जो कि नकद आधार पर ली गई वस्तुओं (अगर कोई हो), अचल सम्पत्ति तथा मूल्यांकन सूची को दर्शाती हो। परिषद को 'लेखा पर टिप्पणियां' भी साथ में लगानी चाहिए जो परिषद की रोकड बाकी पर आयकर के लागू न होने को, वैधानिक अधिनियम से छूट एवं आकस्मिक देयता के प्रतिपादन इत्यादि के बारे में सूचित करती हो। परिषद दवारा किया गया ऐसा प्रकटीकरण लेखा में पारदर्शिता लायेगा। हांलांकि पिछली रिपोर्ट में भी इस बात की ओर संकेत किया गया फिर भी परिषद ने महत्वपूर्ण लेखा नीतियों एवं टिप्पणियों को अपने लेखा के साथ नहीं लगाया। परिषद को पुनः यह सलाह दी जाती है कि टिप्पणियों और नीतियों को अपने लेखा के साथ जोडने की पहल करनी चाहिए जिससे लेखा में पारदर्शिता लाई जा सके।

स्थान : नई दिल्ली
दिनांक : 05.03.2002

ह0
महानिदेशक लेखा परीक्षा
केन्द्रीय राजस्व

लेखा परीक्षा प्रमाण पत्र

मैंने केन्द्रीय होम्योपैथिक अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के 31 मार्च 2001 को समाप्त वर्ष के प्राप्ति एवं भुगतान लेखा/आय एवं व्यय लेखा तथा 31 मार्च 2001 के तुलन पत्र की जांच कर ली है। अपनी जरूरत के अनुसार मैंने सभी सूचना एवं स्पष्टीकरण प्राप्त किये। अपने लेखा परीक्षा के परिणाम स्वरूप मैं यह प्रमाणित करता हूँ कि मेरी राय में मुझे दी गई जानकारी एवं स्पष्टीकरण के अनुसार इन लेखों एवं तुलन पत्र में केन्द्रीय होम्योपैथिक अनुसंधान परिषद् के कार्यकलापों को उचित एवं सत्य रूप में दर्शाया गया है।

ह0
महानिदेशक लेखा परीक्षा
केन्द्रीय राजस्व

स्थान : नई दिल्ली
दिनांक : 05.03.2002

केन्द्रीय होम्योपैथिक अनुसंधान परिषद्

31 मार्च, 2001 को समाप्त वर्ष के प्राप्ति एवं भुगतान लेखे

क्र0सं0	प्राप्तियाँ			राशि / रकम
1.	आरम्भिक अवशेष			
	के0हो0अ0प0 (बैंक अवशेष)			
	– योजना (प्लान) एवं		35,13,211.02	
	योजनेत्तर अंतर्गत (नान प्लान)		---	
	– अग्रदाय अग्रिम		1,45,400.00	
			36,58,611.02	
2.	स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, नई दिल्ली से प्राप्त अनुदान : – योजना (प्लान)			
	(अ)– सामान्य क्षेत्र	2,32,66,000.00		
	– आदिवासी क्षेत्र	32,31,000.00		
	– विशेष कोम्पोनेंट योजना अनुसूचित जाति के लिये	65,83,000.00		
	– सैमिनारों के लिए अनुदान	---------		
		3,30,80,000.00		
	योजनेत्तर	3,74,20,000.00		
	उत्तर पूर्वीय क्षेत्र को पुनः संगठित करने के लिये प्रशिक्षण	---------	7,05,00,000.00	
3.	अन्य आय एवं प्राप्तियां			
	अग्रिमों पर ब्याज	61,841.00		
	विविध प्राप्तियाँ	43,062.10		
	मूल्यांकित प्रकाशनों की बिक्री	16,358.00		
	बचत खाते से प्राप्त ब्याज (इकाईयों से प्राप्त ब्याज)	3,055.54		
	पौधों की बिक्री	6,037.00		
	वीडियो कैसेटस की बिक्री	---	1,30,353.64	
4.	अग्रिम की वसूलियां			
	आकस्मिक अग्रिम(योजना एवं योजनेत्तर)	10,593.00		
	यात्रा अग्रिम	34,953.00		
	अवकाश यात्रा अग्रिम	11,691.00		
		---------	57,237.00	
5.	अग्रिमों की वसूलियां			
	त्यौहार / उत्सव अग्रिम	3,03,260.00		
	स्कूटर अग्रिम	2,11,972.00		
	कार अग्रिम	1,06,920.00		
	साईकिल अग्रिम	8,850.00		
	पंखा अग्रिम	500.00		
	बाढ़ अग्रिम	20,400.00		
	वेतन अग्रिम	49,411.00		
	गर्म कपडा अग्रिम	450.00		
	कम्प्यूटर अग्रिम	21,300.00		
		---------	7,23,063.00	
6.	अन्य वसूलियां			
	आयकर	30,49,302.00		
	स्टाफ से सामान्य भविष्य निधि अभिदान	1,32,84,262.00		
	स्टाफ की सामूहिक बीमा योजना की किश्त	5,59,900.00		
	के0स्वा0सेवा योजना वसूली	54,450.00		
		-----------	1,69,47,914.00	
	दूसरे विभागों से प्रतिनियुक्ति पर आए कर्मचारियों से सामान्य भविष्य निधि, सामान्य समूह बीमा योजना तथा गृह निर्माण अग्रिम के कारण की गई वसूलियाँ		1,44,740.00	

क्र0सं0	भुगतान		राशि / रकम
	योजना :		
(अ)	सामान्य क्षेत्र :–		
(क)	वेतन एवं भत्ते	1,82,82,169.00	
(ख)	यात्रा भत्ता	3,20,279.00	
(ग)	मजदूरी	2,90,305.00	
(घ)	किराया	1,06,449.00	
(ड.)	कार्यालय व्यय	18,06,852.00	
(च)	सामग्री एवं आपूर्ति	4,05,146.00	
(छ)	औषधि अनुसंधान प्रमाणण के लिए किया गया भुगतान	66,350.00	
(ज)	फर्नीचर एवं फिक्सचर	1,75,995.00	
(झ)	किताबें	58,620.00	
(ण)	अस्पताल उपकरण	3,25,522.00	
(ट)	पत्रिका शुल्क	38,557.00	
(ठ)	संगोष्ठी / प्रदर्शनी सम्मेलन	7,72,193.00	
(ढ)	वाहन ईंधन	75,474.00	
(I)	वाहन मरम्मत	14,851.00	
(त)	के0स्वा0सेवा योजना	1,70,066.00	
(थ)	वाहन खरीद	21,923.05	
(द)	मूल्यांकित प्रकाशन	35,378.00	
(ध)	पूर्व वेतन भुगतान (मार्च, 2001)	8,86,448.00	
(घ)	आकस्मिक अग्रिम	18,91,804.00	
(न)	यात्रा अग्रिम	80,730.00	
(प)	अवकाश यात्रा रियायत अग्रिम	7,069.00	
(फ)	अस्पताल उपकरण (विश्व स्वा0संगठन)	–	
(व)	प्रर्दशनी	–	
		2,58,32,180.05	
(ब)	आदिवासी उपयोजना :		
	वेतन एवं भत्ते	16,55,284.00	
	यात्रा भत्ता	450.00	
	मजदूरी	16,624.00	
	किराया	90,209.00	
	कार्यालय व्यय	66,944.00	
	सामग्री पूर्ति	31,326.00	
	वाहन ईंधन	10,796.00	
	वाहन मरम्मत	26,331.00	
	वेतन भुगतान (मार्च,2001)	1,02,902.00	
		20,00,866.00	
(स)	विशेष कोम्पोनैंट योजना अनुसूचित जाति के लिये :		
	वेतन एवं भत्ते	56,21,379.00	
	यात्रा भत्ता	18,086.00	
	मजदूरी	12,090.00	
	किराया	1,09,635.00	
	कार्यालय व्यय	1,60,091.00	
	सामग्री पूर्ति	96,058.00	
	पूर्व वेतन भुगतान (मार्च, 2001)	3,69,932.00	
		63,87,271.00	
	कुल योग (अबस)		3,42,20,317.05

अन्य विभागों द्वारा लिए गए परिषद के कर्मचारियों का पैंशन अंशदान वसूली	49,730.00		
2.	अन–योजनांतर्गत :		
	(क) वेतन एवं भत्ते	2,98,67,506.00	
	(ख) यात्रा भत्ता	3,06,225.00	
	(ग) मजदूरी	2,18,581.00	
	(ध) किराया	4,61,784.10	
	(ड.) कार्यालय व्यय	8,35,586.55	
	(च) सामग्री एवं आपूर्ति	3,42,517.00	
	(छ) वाहन ईंधन	55,999.00	
	(ज) वाहन मरम्मत	16,861.00	
	(झ) पूर्व वेतन भुगतान (मार्च, 2001)	15,49,313.00	
	(ण) पुर्वस	1,21,665.00	
	(ट) फर्नीचर एवं फिक्चर	300.00	
	(ठ) हस्पताल उपकरण	92,200.00	
	(ड) अग्रिम स्वीकृत :		
	– आकस्मिक अग्रिम	3,95,748.00	
	– अवकाश यात्रा किराया अग्रिम	57,576.00	
	– यात्रा अग्रिम	11,026.00	
	– त्यौहार अग्रिम	2,73,000.00	
	– स्कूटर अग्रिम	3,26,000.00	
	– साईकिल अग्रिम	18,000.00	
	– वेतन अग्रिम	42,116.00	
	– चिकित्सा अग्रिम	95,000.00	
	– कार अग्रिम	2,,39,000.00	
	– कम्प्यूटर अग्रिम	2,15,500.00	
	– बाढ अग्रिम	7,500.00	
	– गर्म कपडा अग्रिम	1,500.00	
	– यात्रा अग्रिम	11,026.00	
		----------	3,77,50,503.65
3.	प्रतिनियुक्ति पर आए कर्मचारियों से सामान्य भविष्य निधि, सामूहिक बीमा योजना के लिए वसूलियां एवं प्रेषण		1,44,740.00
4.	वर्ष के दौरान आयकर का प्रेषण		30,46,575.0
5.	वर्ष के लिए सामान्य भविष्य निधि प्रेषण राशि		1,32,70,762.00
6.	बीमा योजना की किश्त का भुगतान		5,63,150.00
7.	होम्योपैथिक अनुसंधान संस्थान, जयपुर द्वारा जयपुर विद्युत बोर्ड को प्रतिभूति		1,324.00
8.	पैंशन अंशदान के लिए प्राप्त राशि को पेंशन निधि में स्थानांतरित		49,730.00
9.	मैसर्स ए.बी.सी., देहली को प्रतिभूति वापसी		65,045.00
10.	अन्तिम अवशेष :		
	भारतीय स्टेट बैंक खाता	29,29,801.96	
	अग्रदाय राशि योजनेत्तर	–-	
	आरम्भिक अवशेष	1,45,400.00	
	स्वीकृत	24,300.00	
			30,99,501.96
	कुल योग	9,22,11,648.66	9,22,11,648.66

केन्द्रीय होम्योपैथिक अनुसंधान परिषद्

31 मार्च, 2001 को समाप्त वर्ष के आय एवं व्यय का लेखा

क्र0सं0	व्यय	रकम/राशि	क्र0सं0	आय	रकम/राशि
1.	योजना :		1.	स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय से प्राप्त अनुदान	
	(अ) सामान्य क्षेत्र			योजना (प्लान) –	
	(क) वेतन एवं भत्ता	1,91,52,589.00		– सामान्य क्षेत्र	2,32,66,000.00
	(ख) यात्रा भत्ता	3,20,279.00		– आदिवासी क्षेत्र	32,31,000.00
	(ग) मजदूरी	2,90,305.00		– अनुसूचित जाति के लिए विशेष कम्पोनेन्ट योजना	65,83,000.00
	(घ) किराया	1,06,449.00			3,30,80,000.00
	(ड) कार्यालय व्यय	22,90,183.00		अनयोजनांतर्गत	3,74,20,000.00
	(च) सामग्री एवं आपूर्ति	4,48,843.00			7,05,00,000.00
	(छ) औषध अनु0 पूर्वस को किया गया भुगतान	66,350.00		वर्ष के दौरान कम अनुदान पूंजीकृत	16,21,706.05
	(ज) के0स्वा0 सेवा योजना	1,15,616.00			6,88,78,293.95
	(झ) पत्रिका शुल्क	38,557.00			
	(ण) प्रदर्शनी/सम्मेलन/सेमिनार	7,72,193.00			
	(ट) वाहन इंधन	75,474.00			
	(ठ) वाहन मरम्मत	16,812.00			
		2,36,93,650.00			
	(ब) आदिवासी उप–योजना :		2.	विविध प्राप्तयॉ (प्राप्ति एवं भुगतान खाते में दिए गए ब्यौरेनुसार)	1,30,353.64
	(क) वेतन एवं भत्ते	17,59,473.00			
	(ख) यात्रा भत्ता	450.00			
	(ग) मजदूरी	16,624.00			
	(घ) किराया	90,209.00			
	(ड) कार्यालय व्यय	75,843.00			
	(च) सामग्री आपूर्ति	32,326.00			
	(छ) वाहन ईंधन	10,796.00			
	(ज) वाहन मरम्मत	26,331.00			
		20,12,052.00			
	(स) अनुसूचित जाति के लिए विशेष/कम्पोनेंट योजना				
	(अ) वेतन एवं भत्ते	60,21,256.00			
	(ब) यात्रा भत्ता	18,086.00			
	(स) मजदूरी	12,090.00			
	(द) किराया	1,09,635.00			
	(य) कार्यालय व्यय	1,98,318.00			
	(र) सामग्री एवं आपूर्ति	96,058.00			
	(ल) पूर्वस	–			
		64,55,443.00			
	कुल योग (अ, ब एवं स)	3 21,61,145.00			
	अन–योजनांतर्गत (नान–प्लान)				
	(क) वेतन एवं भत्ते	3,13,96,312.00			
	(ख) यात्रा भत्ता	3,76,237.00			
	(ग) मजदूरी	2,18,581.00			
	(घ) किराया	4,61,784.10			
	(ड.) प्रूवर्स	1,21,665.00			
	(च) कार्यालय व्यय	8,98,003.55			
	(छ) वाहन : – ईंधन	55,999.00			
	– मरम्मत	16,861.00			
	(ज) सामग्री आपूर्ति	3,65,979.00			
	(झ) पेंशन निधि में स्थानांतरित राशि	22,00,000.00			
		3,61,11,421.65			
2.	व्यय से अधिक आय	7,36,080.94			
	कुल योग	6,90,08,647.59			6,90,08,647.59

केन्द्रीय होम्योपैथिक अनुसंधान परिषद्

31 मार्च, 2001 को समाप्त हुए वर्ष के सामान्य भविष्य निधि के प्राप्ति एवं भुगतान लेखा

क्र0सं0	प्राप्ति	राशि/रकम	क्र0सं0	भुगतान	राशि/रकम
1.	प्रारम्भिक अवशेष : भारतीय स्टेट बैंक के बचत खाते में	23,061.77	1.	वर्ष के दौरान सामान्य भविष्य निधि खाते में से लिया गया अग्रिम और वसूल की गई राशि का भुगतान	98,86,204.00
			2.	वर्ष के दौरान खरीदे गई सावधि जमा योजना	1,40,00,000.00
2.	परिषद् के कर्मचारियों के सा0भ0नि0 की किस्तों की सामान्य खाते से प्राप्त राशि	1,32,70,762.00			
3.	वर्ष के दौरान सावधि जमा योजना के परिपक्व होने से प्राप्त राशि व नगदीकरण	70,00,000.00	3.	अंतिम अवशेष भारतीय स्टेट बैंक के खाते में	87,845.73
4.	बचत खाता तथा सावधि जमा योजना से प्राप्त ब्याज				
	सावधि जमा योजना 36,64,700.00				
	बचत खाता 15,405.96				
		36,80,105.96			
5.	परिषद् के खाते से गलती से निकाली गई राशि बैंक द्वारा वापिस जमा	120.00			
	कुल योग	2,39,74,049.73			2,39,74,049.73

केन्द्रीय होम्योपैथिक अनुसंधान परिषद्

31 मार्च, 2001 को समाप्त हुए वर्ष में सामान्य भविष्य निधि लेखा का तुलन पत्र

क्र0सं0	देनदारियां	रकम/राशि		क्र0सं0	परिसम्पतियां	रकम/राशि	
1.	सामान्य भविष्य निधि पूंजी लेखा				निवेश खाता (सावधि जमा योजना)		
	(क) आरम्भिक अवशेष	4,42,01,218.40			आरंभिक अवशेष	4,25,91,619.00	
	(ख) सामान्य खाते से स्थानांतरित कर्मचारियों का सा0भ0नि0 अभिदत्त जमा	1,32,84,262..00			घटा : वर्ष के दौरान परिपक्व सा0 जमा0 परिपक्वता एवं नकदीकरण	70,.00,000.00	
	(ग) सामान्य भविष्य निधि अभिदान पर अनुमत ब्याज जमा	50,11,974.00				3,55,91,619.00	
		6,24,97,454400			वर्ष के दौरान खरीदे गये सा0जमा योजना की राशि	1,40,00,000.00	4,95,91,619.00
	घटा : वर्ष के दौरान निकासी एवं अग्रिम	98,86,204.00		2.	सावधि जमा योजना पर प्रोदभूत ब्याज राशि किन्तु प्राप्त नहीं		
			5,26,11,250.00		आरंभिक अवशेष	55,80,095.03	
2.	आरक्षित एवं अतिरिक्त				वर्ष के दौरान जमा	66,36,372.53	
	(क) आरम्भिक अवशेष	39,93,557.40				1,22,16,467.56	
	(ख) वर्ष के दौरान बचत खाते से प्राप्त ब्याज	15,405.96			घटा : वर्ष के दौरान प्राप्त	36,64,700.00	
	(ग) वर्ष के दौरान सा0जमा योजना पर प्रोदभूत ब्याज, किंतु अभी प्राप्त नहीं	66,36,372.53					85,51,767.56
	(घ) बैंक के द्वारा दिया गया जमा	120.00		3.	सा.भ.नि. खाते में कम स्थानांतरित होने के कारण सामान्य खाते की तरफ देय राशि		13,500.00
		1,06,45,455.89		4.	भारतीय स्टेट बैंक के बचत खाते में		87,845.73
	(घ) घटा सा0भ0नि0खाते पर अनुमत ब्याज	50,11,974.00	56,33,481.89				
	कुल योग		5,82,44,732.29				5,82,44,732.29

केन्द्रीय होम्योपैथिक अनुसंधान परिषद्

31 मार्च, 2001 को समाप्त वर्ष के पैंशन निधि खाते के प्राप्ति एवं भुगतान का लेखा

क्र0सं0	प्राप्ति	राशि/रकम	क्र0सं0	भुगतान	राशि/रकम
1.	आरम्भिक अवशेष : भारतीय स्टेट बैंक बचत खाता नं0 19806	9,89,641.84	1.	वर्ष के दौरान किया गया पैंशन भुगतान	10,66,730.00
2.	वर्ष के दौरान अन्य विभागों से प्राप्त प्रांसगिक पैंशन योगदान श्री शकील अहमद के विषय में	49,730.00	2.	वर्ष के दौरान मृत्यु एवं सेवा निवृति के कारण सारांशीकरण भुगतान मूल्य	12,46,911.00
3.	पैंशन कोष के बचत खाते पर प्राप्त ब्याज़	36,306.88	3.	भारतीय स्टेट बैंक के बचत खाते में अन्तिम अवशेष	9,62,037.72
4.	पेंशन निधि खाते को चलाने के लिये सामान्य खाते से स्थानांतरित राशि	22,00,000.00			
	कुल योग	32,75,678.72			32,75,678.72

केन्द्रीय होम्योपैथिक अनुसंधान परिषद्

31 मार्च, 2001 कोसमाप्त हूए वर्ष के पैंशन निधि खाते का तुलन–पत्र

क्र0सं0	देनदारियॉ	राशि/रकम		क्र0सं0	परिसम्पतियां	राशि/रकम
1.	निधि खाता :			1.	निवेश खाता :	
(अ)	आरम्भिक अवशेष	9,89,641.84			– आरम्भिक अवशेष	---
(ब)	सा0जमा योजना व बचत बैंक सें प्राप्त ब्याज जमा	36,306.88			– वर्ष के दौरान खरीदे गए सावधि जमा योजना	---
(स)	अन्य विभागों से प्रतिनियुक्ति पर गये कर्मचारियों की पैंशन योगदान से प्राप्ति	49,730.00				
(द)	सामान्य खाते से स्थानान्तरित राशि	22,00,000.00			घटा : वर्ष के दौरांन परिपक्व सा0जमा योजना व उनका नकदीकरण	---
		32,75,678.84		2.	अंतिम अवशेष : भारतीय स्टेट बैंक बचत खाता नं0 19806	9,62,037.72
	कम भुगतान :					
	– मृत्यु एवं सेवा निवृति सारांशीकरण	12,46,911.00				
	– पैंशन भुगतान	10,66,730.00				
			23,13,641.00			
2.			9,62,037.72			
	कुल योग		9,62,037.72			9,62,037.72

केन्द्रीय होम्योपैथिक अनुसंधान परिषद्

31 मार्च, 2001 का तुलन पत्र

क्र0सं0	देयताएँ	रकम/राशि		क्र0सं0	परिसम्पतियां	रकम/राशि	
1.	पूंजी कोष (निधि) :			1.	परिसंपतियॉ – फर्नीचर एवं फिक्चर :		
	– आरम्भिक अवशेष	2,86,32,239.93			(अ) आरम्भिक अवशेष	47,73,347.42	
	– वर्ष के दौरान जमा की गई परिसंपतियॉ	16,21,706.05			वर्ष के दौरान जमा (योजना)	1,75,995.00	
		3,02,53,945.98			अनयोजनांतर्गत	23,248.00	
	घटा : वर्ष के दौरान मूल्यांकित प्रकाशनों की बिक्री की राशि	16,358.00					49,72,590.42
			3,02,37,587.98		(ब) कार्यालय उपकरण :		
					– आरम्भिक अवशेष	42,73,164.38	
					– वर्ष के दौरान जमा (योजना)	1,31,888.00	
							44,05,052.38
2.	आय की व्यय पर अधिकत्ता :				(स) वाहन : आरम्भिक अवशेष	14,91,568.50	
	– आरम्भिक अवशेष	97,11,756.36			वर्ष के दौरान जमा खरीद	7,70,795.05	
	– वर्ष के दौरान संग्रहित	7,36,080.94					22,62,363.55
			1,04,47,837.30		(द) किताबें :		
3.	सामूहिक बीमा योजना निधि (कोश) लेखा आरम्भिक अवशेष		1,04,459.15		– आरम्भिक अवशेष	12,14,770.16	
					– जमा (योजना)	59,280.00	
							12,74,050.16
4.	प्रतिभूति जमा :				(य) मूल्यांकित प्रकाशन :		
	– आरम्भिक अवशेष	65,045.00			– आरम्भिक अवशेष	4,07,432.98	
	घटा : वर्ष के दौरान प्रेषण	65,045.00	--		– वर्ष के दौरान जमा	35,378.00	
						4,42,810.98	
					घटा: वर्ष के दौरान बेचे गए प्रकाशन	16,358.00	
							4,26,452.98
					(र) अस्पताल उपकरण :		
					– आरम्भिक अवशेष	1,10,74,629.89	
					– वर्ष के दौरान जमा (योजना)	3,29,922.00	
					– अनयोजनांतर्गत	95,200.00	1,14,99,751.89
5.	सामान्य खाते से सामान्य भविष्य निधि को देय राशि		13,500.00		(ल) भूमि व भवन खाता		
					– आरम्भिक अवशेष (नोयडा)	30,04,430.00	
					– दान दिया गया भवन (पुरी)	6,33,816.00	36,38,246.00
					(श) विश्व स्वा0 संगठन द्वारा दान की गई परिसंपतियां		17,59,080.60
							3,02,37,587.98
				2.	वसूली योग्य अग्रिम		
					(क) यात्रा भत्ता :		
					– आरम्भिक अवशेष	1,12,965.00	
					– घटा समायोजित	1,04,965.00	
						8,000.00	
					स्वीकृत जमा		
					योजना 80,730.00		
					योजनात्तेर 11,026.00		
						91,756.00	99,756.00
					(ख) छुट्टी यात्रा रियायत अग्रिम :		
					– आरम्भिक अवशेष	1,06,982.00	
					– घटा समायोजित	1,06,982.00	
						—	
					वर्ष के दौरान स्वीकृत जमा (योजना)	7,069.00	
					योजनेत्तर	57,576.00	64,645.00
					(ग) आकस्मिक अग्रिम :		
					– आरम्भिक अवशेष	17,54,165.49	
					– घटा समायोजित	15,85,355.00	
						1,68,810.49	
					वर्ष के दौरान स्वीकृत जमा(योजना)	18,91,804.00	
					अन–योजनांतर्गत	3,95,748.00	24,56,362.49

(घ)	स्कूटर अग्रिम :			
	– आरम्भिक अवशेष	6,02,424.00		
	– वर्ष के दौरान स्वीकृत जमा	3,26,,000.00		
		9,28,424.00		
	वर्ष के दौरान घटी वसूलियां	2,11,972.00		7,16,452.52
(ङ)	साईकिल अग्रिम :			
	– आरम्भिक अवशेष	15,040.00		
	– वर्ष के दौरान स्वीकृत जमा	18,000.00		
		33,040.00		
	वर्ष के दौरान घटी वसूलियां	8,850.00		24,190.00
(च)	त्यौहार अग्रिम :			
	– आरम्भिक अवशेष	93,500.00		
	– वर्ष के दौरान स्वीकृत जमा	2,73,000.00		
		3,66,500.00		
	वर्ष के दौरान घटी वसूलियां	3,03,260.00		63,240.00
(छ)	बाढ़ अग्रिम :			
	– आरम्भिक अवशेष	39,275.00		
	– वर्ष के दौरान स्वीकृत जमा	7,500.00		
		46,775.00		
	वर्ष के दौरान कम वसूलियां	20,400.00		26,375.00
(ज)	वेतन अग्रिम :			
	– आरम्भिक अवशेष	9,625.00		
	– वर्ष के दौरान स्वीकृत जमा	42,116.00		
		51,741.00		
	वर्ष के दौरान कम वसूलियां	49,411.00		2,330.00
(झ)	पंखा अग्रिम :			
	– आरम्भिक अवशेष	500.00		
	वर्ष के दौरान घटी वसूलियां	500.00		
(ण)	कम्प्यूटर अग्रिम :			
	– आरम्भिक अवशेष	28,300.00		
	– वर्ष के दौरान स्वीकृत जमा	2,15,500.00		
		2,43,800.00		
	वर्ष के दौरान घटी वसूलियां	21,300.00		2,22,500.00
(ट)	कार अग्रिम :			
	– आरम्भिक अवशेष	5,56,740.00		
	– वर्ष के दौरान स्वीकृत जमा	2,39,000.00		
		7,95,740.00		
	वर्ष के दौरान घटी वसूलियां	1,06,920.00		6,88,820.00
(ठ)	चिकित्सा अग्रिम :			
	– आरम्भिक अवशेष	—		
	– वर्ष के दौरान स्वीकृत जमा	95,000.00		95,000.00
(ड)	गर्म कपडा अग्रिमः			
	– आरम्भिक अवशेष	—		
	– वर्ष के दौरान स्वीकृत जमा	1,500.00		
		1,500.00		
	– वर्ष के दौरान घटी वसूलियां	450.00		1,050.00
3.	पूर्व भुगतान व्यय :			
	– आरम्भिक अवशेष	28,08,001.00		
	घटा : वर्ष के दौरान समायोजित	28,08,001.00		
योजना, योजनातेर के दौरान स्वीकृत जमा	योजना	13,59,282.00		
	योजनेत्तर	15,49,313.00		29,08,595.00

4. अन्य विभागों के पास अग्रिम :

-- डी०ए०वी०पी के पास अग्रिम 20,000.00

5. प्रतिभूतियां (भुगतान) :

आरम्भिक अवशेष	27,220.00	
जयपुर बिजली बोर्ड के पास जमा प्रतिभूति भुगतान	1,324.00	
		28,544.00

6. फुटकर (विविध) देनदार :

-- आरम्भिक अवशेष	2,727.00	
घटाः वर्ष के दौरान समायोजित	2,727.00	

7. समूह बीमा योजना की कर्मचारियों से वसूलने योग्य राशि :

-- आरम्भिक अवशेष	45,047.00	
-- वर्ष के दौरान जमा	5,63,150.00	
	6,08,197.00	
वर्ष के दौरान घटी वसूलियाँ	5,59,900.00	48,297.00

8.. कर्मचारियों से राष्ट्रीय सुरक्षा निधि के तहत देय राशि : 138.00

9. अंतिम अवशेष :

के०हे०अ०प०, नई दिल्ली (बैंक अवशेष) : 29,29,801.96

अग्रदाय अग्रिम :

-- आरम्भिक अवशेष (अनयोजनांतर्गत)	1,69,700.00		
		30,99,501.96	1,05,65,796.45

कुल योग	4,08,03,384.43	4,08,03,384.43

CENTRAL COUNCIL FOR RESEARCH IN HOMOEOPATHY

ANNUAL REPORT 2000-2001
Audited Certified Annual Accounts

Department of Indian Systems of Medicine & Homoeopathy
Ministry of Health & Family Welfare
Govt. of India

Printed at: Yugantar Prakashan Pvt. Ltd. WH-23, Mayapuri Industrial Area, Phase-I, New Delhi - 110 064
Phone: 28115949, 28116018.

CONTENTS

Subject	*Page No.*
Highlights	1
Meetings	6
Workshops/Seminar Organised	6
Health Mela/Exhibitions	8
Administrative	10
Organisation	10
Governing Body	10
Standing Finance Committee	12
Scientific Advisory Committee	12
Sub-Committee for Reorganising CCRH	13
Sub-Committee for Literary Research	13
Organisation setup of CCRH	14
Representation of SC/ST in Councils Services	15
Medical Aid through OPD/IPD's of CCRH	15
Technical Report	17
Clinical Research Programme	18
Amoebiasis	19
in general areas	19
in tribal areas	20
Arthritis	20
in tribal areas	21
Behavioural Disorders	21
in general areas	22
Behavioural disorders in mentally retarded children	22
in general areas	24
Bronchial ashtma	24
in general areas	24
in tribal areas	24
Bronchitis	24
in tribal areas	24
Cervical Spondylosis	24
in general areas	24

Cervicitis & Cervical Erosion 24
in general areas
Diabetes Mellitus 26
in general areas
in tribal areas
Diarrhoea in children 27
in general areas
Dysentery 28
in general areas
in tribal areas
Epilepsy 29
in general areas
Filaria 30
in general areas
in tribal areas
Gall Stones 33
in general areas
Gastritis 33
in general areas
Gastroenteritis 33
in tribal areas
Giardiasis 34
in general areas
Helminthiasis 35
in general areas
in tribal areas
Hepatitis B 35
in general areas
HIV Infection 39
in general areas
Hyper low-density-lipoproteinaemia 39
in general areas
Hypertension 40
in general areas
Intermittent fever 41
in general areas
Iron deficiency anaemia 41
in general areas
Irritable Bowel Syndrome
in general areas

Japanese Encephalitis 42
in general areas
Malaria 42
in general areas
in tribal areas
Malposition of Human Foetus 43
in general areas
Menorrhagia 44
in general areas
Osteoarthritis 45
in general areas
in tribal areas
Peptic ulcer 47
in tribal areas
Prostate enlargement 47
in general areas
Renal calculi 48
in general areas
Rheumatoid arthritis 48
in general areas
Rhinitis 49
in tribal areas
Sickle cell anaemia 49
in general areas
Sinusitis 50
in general areas
Skin disorders 51
in general areas
in tribal areas
Tonsillitis 52
in general areas
in tribal areas
Upper resp. tract infection 53
in general areas
Vitiligo 54
in general areas
in tribal areas
Clinical Research in Epidemics 56
Clinical Verification Research Programme 57
Drug Proving Research Programme 78
Drug Research Programme 81

Survey of Medicinal Plants & Collection 81
Drug Standardisation 84
Literary Research Programme 86
Documentation and Library 87
Publications 89
Projects\Schemes completed/concluded 90
Future Programme 91
Institutes/Units under CCRH 92
Audit Reports & Certificate 96-97
Audited Annual Accounts 98-114

HIGHLIGHTS

The Central Council for Research in Homoeopathy was established on 30th March, 1978 as an autonomous organisation under the Department of ISM&H, Ministry of Health & Family Welfare, Govt. of India for formulation, coordination, development and promotion of research in Homoeopathy. It is fully financed by the Govt. of India and as of today remains a premier organisation engaged in organised research in Homoeopathy in the country.

The Council carries out its objectives and functions through a network of 51 institutes and units located in different parts of the country. These are carrying out researches in various aspects of Homoeopathy broadly classified into: (i) Clinical Research, (ii) Drug Proving Research, (iii) Clinical Verification Research, (iv) Drug Standardisation & Drug Research, (v) Survey, Collection and Cultivation of Medicinal Plants, and (vi) Literary Research. A brief review of the work carried out under different research programmes during the year is reported below.

The Council continued to provide medicare through its Out Patients Department (OPD) and In Patients Department (IPD) at its Institutes and Units. Seven lakh four thousand six hundred and twenty nine (7,04,629) cases were treated during this financial year. These include new and old (general as well as research) cases.

While the meeting of the Standing Finance Committee was held . There was no meeting of the Scientific Advisory Committee, as the tenure of this Committee expired in May, 2000 .

Clinical Research

The disease-related clinical research studies on twenty eight (28) projects and drug-related clinical studies on thirteen (13) projects are in progress at six (6) research institutes and thirteen (13) units spread all over the country. The diseases under study are those that are common in the Indian populace and those important from national health point of view like Filaria, Malaria and HIV/AIDS.

The project on Behavioural Disorders in Mentally Retarded Children was studied from July, 1991 to March, 2000 at Central Research Institute, Kottayam with an aim to study the efficacy of homoeopathic therapy in Behavioural problems in Mentally Retarded Children. A total of 865 children have been studied during this period. These mentally retarded children were selected from special schools which offer specialized educational facilities to these children. They prepare the mentally retarded children for domestic skills and vocational training through individualized educational programme. Out of these 865 children , 18 were of severe mental retardation, 323 of moderate and 494 mild mental retardation. Maximum no. of cases belonged to low income group with hereditary factor as predisposing followed by complicated delivery. Psora was found to be the most dominating miasm in 482 cases.During regular follow it has been found that with the support of homoeopathic medicines like *Belladonna, Sulphur, Nux vomica, Chamomilla, Stramonium, Baryta carbonicum, Calcarea carbonicum, Hyoscyamus, Pulsatilla, Tuberculinum, Calcarea phosphoricum* and *Tarentula hispanica* we can modify the behaviour pattern of these mentally retarded children and make them trainable and self dependable to a certain extent.

98 cases of Epilepsy were followed from 1997 to 2001 at Central Research Institute, Kottayam and 72 cases were improved in varying degrees.Of these 54 cases improved markedly and of these 31 cases were of grand mal, 15 cases of petit mal, 05 cases of symptomatic and 02 of hysterical convulsions;16 cases improved moderately and of these 08 cases were of grand mal, 08 cases of petit mal; 02 cases improved mildly and of these 01 case of petit mal and 01 case of G.T.C.E. The drugs which were found effective in these cases were: *Hyoscyamus* 200, *Calcarea carbonicum* 200, 1M, *Belladonna* 200, *Nux vomica* 30,200,1M, *Nux moschata* 1M, *Gelsemium* 30,200, *Ignatia*

200, 1M, *Argentum nitricum* 1M, *Causticum* 30, *Lachesis* 30, *Arsenicum album* 200 and *Stramonium* 30.

The preliminary controlled study on Japanese Encephalitis was initiated on 15th Dec.,1997 in the districts of Gorakhpur in Eastern U.P. (where Japanese Encephalitis is endemic) with the aim and objective to see the effect of *Belladonna* 200 as prohphylactic in Japanese Encephalitis keeping in view the study conducted by CCRH in 1991. A research protocol for the study was formulated.The study initially included two villages (with high density of Japanese Encephalitis in the previous epidemics). The prophylactic *Belladonna* in 200 potency single dose/weekly/ monthly, a month prior to peak season was given to all the school children (who covered the inclusion and exclusion criteria). Simultaneously two neighbouring villages (as controls) were surveyed. A weekly follow up was done in both the groups (prophylactic and control) for about 3 months regularly. During the reporting period 1439 children were kept under control and 2043 were given prophylactic and in none of the cases, which were followed up, infection was observed. A small leaflet in Hindi which includes the cause of disease, carrier of disease, how the disease spreads, where the mosquito develops, how many days it takes to develop signs & symptoms of the disease after the bite of mosquito , preventive measures and also how to take the Homoeopathic prophylactic medicine. has been printed for awareness of the general public about the disease

Under the project on Sickle Cell Anaemia, in progress at Clinical Research Unit, Sambalpur (Orissa), a tribal pocket, it is seen that homoeopathic medicines like *Bryonia* 30,200,1M, *Rhus tox* 200,1M, *Magnesia phos.* 6X,30,200, *Lycopodium* 30,200, *Calcarea carbonicum* 30,200,1M, *Natrum muriaticum* 30,200, *Vanadium* 30,200, *Chelidonium* 30, *Tuberculinum* 200 etc. are capable of controlling the symptoms of the diseases so much so that the patients remain asymptomatic for years together.

Out of 205 old cases of Sickle Cell Anaemia, 37 cases who took blood transfusion before homoeopathic treatment only 05 cases needed further blood transfusion and 30 cases did not require any further blood transfusion. It is seen that cases which improved after taking homoeopathic medicines required less acute medicines like *Kalmegh* Q for their complaints. No recurrence of complaints was observed in 81cases for the last 1 year to 3 years, in 09 cases for the last 03 to 05 years and in 05 cases for the last 05 to 09 years.

Clinical Research in Tribal Areas

The drug related clinical research studies on eighteen most common diseases prevalent in different tribal pockets in the country identified during the survey was continued during this year. From the group of assigned medicines, most effective medicines in certain disease conditions like amoebiasis, dysentery, helminthiasis, osteoarthritis, rhinitis etc.have been identified. The reliable indications of these medicines have also been identified but are being subjected to further clinical confirmation.

Medical Relief to the Victims of Earthquake in Gujarat

The Council provided medical treatment to the victims of earthquake affected areas at Ahemdabad, Bharuch and Surat in Gujarat. A team of doctors from Regional Research Institute, Mumbai were deputed at Ahmedabad. Nearly 100 cases of non-operated fracture cases and operated fracture cases were attended to on 29.1.2001 and 30.1.2001 and provided homoeopathic treatment for early union of bones and healing of wounds. Some of these cases had complications like intervertebral compression, pneumothorax, paraparesis and paraplegia also. Homoeopathic medicines viz. *Arnica, Symphytum, Hypericum, Bryonia, Lachesis* and *Staphisagria* were helpful in relieving the complaints of the patients. These patients were allotted by the Superintendent of the Civil Hospital at Ahemdabad. The team took the help and support of the local homoeopathic medical college management for medicines and other supporting staff.

A team from Clinical Research Unit, Bharuch (under CCRH) provided medical treatment to the victims in the affected areas of Bharuch and Surat. The team contacted the medical authorities at Zila Panchayat and the worst affected village Jambusar Taluka was identified where 9 persons had died and nearly 100 persons injured due to collapse of houses and buildings. One hundred and ten cases with various complaints like abrasions, shock, minor injuries, fear psychosis etc. were provided homoeopathic treatment at this village from 31st January to 1st February, 2001 and one hundred eighteen cases were attended to at Bharuch on 29th & 30th January, 2001.

Drug Proving

Drug Proving or Homoeopathic Pathogenetic Trials (HPT) is the most important activity of the Council. The Council has developed a plan and protocol of double blind technique for HPTs which has also been accepted internationally and process of symptom extraction from HPTs has also been standardised. Success of this methodology can be assessed from the clinical verification studies of proving pathogenesis where many symptoms are repeatedly being verified when prescriptions are based upon them. The Council has laid emphasis on conducting proving of drugs of indigenous origin and those which have had fragmentary proving under its programme, and so far 58 such drugs have been proved. Proving of four drugs (two long provings code nos. 65, 67 and two short provings code nos. 66, 71) were completed during the reporting year.. Compilation of three drugs namely *Cornuus circinata, Tribulus terrestris* and *Ocimum sanctum* have been completed and compiled data will be placed before the forthcoming meeting of the Scientific Advisory Committee of the Council for approval. Compilation of other drugs is under process.

Clinical Verification

The symptomatology of sixty five (65) drugs is being verified clinically with an aim to bring out most reliable prescribing indications and effective potencies of these drugs The drugs being studied are those which have either been proved by CCRH at its Drug Proving Centres or certain partially proved drugs, and are mostly of indigenous origin. A total number of 12,685 research cases have been registered during this year in the institutes and units undertaking this programme. The clinically verified data of these drugs is disseminated from time to time for the use of profession through publication in CCRH Quarterly Bulletin/CCRH NEWS or through homoeopathic conferences, seminars and workshops. Such data on specific clinical conditions has been published in Vol.22(1&2)2000 issue of the Quarterly Bulletin.

Drug Research

a) Drug Standardisation

Drug Standardisation involves a multidisciplinary approach encompassing pharmacognostic, physico-chemical and pharmacological parameters in order to study the various qualitative characteristics of drugs. During the year under report, the pharmacognostic standards and physico-chemical standards of 8 drugs have been determined at the institute/ units undertaking this programme..

b) Collection, Survey and Cultivation of Medicinal Plants

The unit at Udhagamandalam (Ooty), Tamilnadu conducts surveys, identifies, collects and supplies the raw drug specimens to institutes/units undertaking standardisation studies. The unit has during this year, collected 257 field numbers for the herbarium increasing the running field numbers to 7,344 and, identified and authenticated 330 field numbers collected, 428 plant speciments native to areas adjoining Ooty, Nilgiri Hills collected and supplied 18 raw drug plant materials for standardisation studies. Besides this medicinal plants garden for experimental as well as small scale cultivation especially of exotic medicinal plants, used in Homoeopathy is being developed on 12.7 acres of land on lease from Tamilnadu Govt. Regular planting, deweeding, nursery, raising, upkeep and maintenance of *Cineraria maritima, Digitalis purpurea, Achillea millefolium, Santolina chamaecyparissus, Viola odorata, Rosamarinus officinalis* and *Salvia officinalis* are being done. The germplasm collection of 5 plants cultivated on demonstration plots are also being maintained and their performance being studied for cultivation on large scale.

Literary Research

The Literary Research Programme being undertaken by the Council is updating of Kent's Repertory under the project "Review and Revision of Kent's (Kunzli's) Repertory - additions from Boericke's Repertory in relation to other works". Fifteen chapters have so far been revised and published. During the period chapter Tissues from C.B.Knerr's Repertory and chapter Moon Phases from Boger Boenninghausen's Repertory have been completed for addition in Chapter Generalities of Kent's Repertory. Further work on this project is not being undertaken pending consideration of the Scientific Advisory Committee of CCRH.

Release of Special issue of CCRH Quarterly Bulletin

A special issue of CCRH Quarterly Bulletin on Drug Standardisation was released by Dr. Jugal Kishore, Member Governing Body of CCRH on the occasion of the inauguration of Workshop on Statistics and Research Methodology on 26th March, 2001. This bulletin is first in the series of preparation of database banks of indigenous medicinal plants used in Indian Systems of Medicine & Homoeopathy (ISM&H). This issue presents an account of six medicinal plants viz. *Acalypha indica*, *Andrographis paniculata*, *Acacia nilotica*, *Caesalpinia bonducella*, *Citrullus colocynthis* and *Momordica charantia* covering almost all the aspects related to their botanical and vernacular names, distribution in India, botanical characters, important actions and uses in ISM&H, pharmacognostic characters, chemical constituents, chemical constituents, chemical activity, toxicology, therapeutic evaluation, trade and commerce, substitutes and adulterants, and agrotechniques. This bulletin is also available on the Council's website www.ccrhindia.org.

The details of various research papers published in CCRH Quarterly Bulletin from Vol. 1 to Vol. 21 are also available on the website.

Publications

The most popular publications of the Council - A Handbook of Home Remedies in Homoeopathy and Samanya Homoeopathy Upchar Pustika in Hindi were reprinted, and pamphlets viz.Prevention & Treatment of Malaria, Homoeopathy - Myths & Facts, Holistic Approach to Homoeopathy, Prevention of Cataract through Homoeopathy and Mother & Child Care were also reprinted.

A 16 page folder in Hindi including 14 Indian medicinal plants used in Homoeopathy with their clinical indications was published during this year.

In-Service Training Programme

A two day Workshop on Research Methodology & Statistics was organised by CCRH on 26th - 27th March, 2001 at its Headquarters office, Janakpuri, New Delhi. The workshop was second in the series and was attended by forty Assistant Research Officers working under this Council at its various institutes and units. This workshop was kind of a contact programme for clarification of the doubts and for evolving a research module for their assigned research project. The lectures were informative and educative. There were meaningful discussions at the end of each session. The feed back received from the participants reveals that the workshop was a success and the lectures were informative and educative and there was a request to conduct such workshops frequently.

Seminars/Workshops/Exhibitions organised or attended

The research personnel of the Council participated in various national and international conferences/seminars/ workshops organised by different homoeopathic organisations and scientific papers on activities and achievements of the Council were presented.

Health Melas

Ministry of Health and Family Welfare planned to organise Health Melas in different states of India with the joint participation of Departments of Health, Family Welfare and Indian Systems of Medicine & Homoeopathy in order to improve the advocacy as well as dissemination of the National Population Policy 2000 together with promoting increased awareness to the diverse interventions comprising the National Health and Family Welfare Programme i.e. Reproductive and Child Health, HIV/AIDS, vertical programmes like Malaria eradication, blindness control, leprosy and tuberculosis as well as the backward and forward linkages between all of these . CCRH participated in Health Melas organised at Mathura (Uttar Pradesh) from 17th to 20th September 2000 ; Perfect Health Mela - 2000 organised by Heart Care Foundation of India and Govt. of Delhi at Red Fort Grounds, Delhi from 16-25 October 2000 ; Swadeshi Mela in New Delhi from 17th to 23rd October 2000 ; Rashtriya Swasthya Mela - 2000 on 19th November, 2000 at Patna (Bihar); Swasthya and Parivar Kalyan Mela from 31st January to 4th February, 2001 at Lucknow ; Swadeshi Industrial Fair 2001 from 16th February 2001 at Coimbatore and Perambalur (Tamilnadu) on 4th March, 2001. A large number of people visited the Melas and availed of free medical and treatment facilities offered by CCRH. Literature on various aspects of Homoeopathy published by the Council were also distributed free for awareness of the general public.

Exhibitions

The Council organised an exhibition displaying its activities and achievements at India International Trade Fair - 2000 at New Delhi from November 14-27, 2000 and also offered free consultation services to general public. It also organised an exhibition on medicinal plants used in Homoeopathy displaying them through photographs, herbarium sheets and raw drug samples at Herbo 2000 from November 14-27, 2000 at New Delhi . The exhibition was visited by a large number of people and queries regarding details of cultivation of medicinal plants, their usage, part used as well as their medicinal value were explained.

An exhibition was also organised on the occasion of Seminar and Exhibition on Indian Systems of Medicine and Homoeopathy organised by Bharatiya Chikitsa Padhati Samrakshan Parishad on 19th May, 2001 at Kanpur .

On the occasion of Maha Kumbh Mela held at Allahabad from 7th January 2001 to 23rd February 2001, CCRH participated in an Exhibition organised with co-operation from DAVP. Officers of the Council were deputed on rotational basis for guiding the visitors on various health issues. The main area of exhibition was mother & child care, in which panels on pre post and neonatal problems and their Homoeopathic management were depicted. Free consultation was also provided to visitors by the deputed doctors.

Literature on various aspects of Homoeopathy published by the Council were distributed free to the public for general awareness at these exhibitions.

Budget

The actual expenditure of the Council in the year 2000-2001 under Plan was 342.20 lakhs and under Non-Plan was 377.50 lakhs.

DIRECTOR
CCRH

Standing Finance Committee

The 36th meeting of the Standing Finance Committee(SFC) was held on 11th July, 2000 at New Delhi under the Chairmanship of Sh. L. Prasad, Joint Secretary Dept. of ISM&H. The proposals of Budget estimates 2000-01 of both Plan and Non-plan, Annual Accounts of CCRH for the year 1998-99, enhancement of prover's allowance from Rs.10/- per visit to Rs. 20/- per visit subject to maximum of Rs. 300/- p.m., replacement of old vehicle of Survey of Medicinal Plants and Collection Unit, Ooty, additional amount required for the repair of the building of Central Research Institute, Kottayam, creation of the post of Library Attendant in CCRH Library, were considered and approved by the committee.

SEMINARS / CONFERENCES / CONGRESSES ATTENDED

2nd Asia Pacific Conference on Acupuncture, Oriental and Alternative Medicine, Malaysia

Dr. R. Shaw, Director, Central Council for Research in Homoeopathy participated in 2nd Asia Pacific Conference on Acupuncture, Oriental & Alternative Medicine held from 3rd-5th Sept.,2000 at Kota Bharu, Malaysia. The conference was attended by experts in the field of alternative systems of medicine from all over the world. He presented a paper on "The Role of Homoeopathy in Psychiatric Disorders: Schizophrenia" based on a report on treatment of well diagnosed 50 cases of Schizophrenia at CCRH's Central Research Institute, Kottayam, Kerala. The paper aimed at presenting a brief analysis of these cases treated homoeopathically in the IPD of the institute from 1988 to 1990. This paper will be published in the forthcoming issue of the CCRH Quarterly Bulletin.

Indian Institution of Homoeopathic Physicians National Congress, New Delhi

Shri A. Raja Minister of State for Health & Family Welfare inaugurated the three day 8th National Congress of Indian Institute of Homoeopathic Physicians on 17th October at Chinmaya Mission Auditorium, Lodhi Road, New Delhi. The Congress had its sessions from 17th to 19th November, 2000 and the theme was "Homoeopathy in the New Millennium".Dr. V.P. Singh presented a paper on Clinical Trials of Homoeopathic Remedies in HIV/AIDS being carried out by the Council at Mumbai, Chennai and New Delhi.

Indian Homoeopathic Organisation (IHO) Seminar, Allahabad

Indian Homoeopathic Organisation headed by Dr. R.K. Kapoor, ex-Chairman, Scientific Advisory Committee of CCRH organised a three day 6th All Indian Homoeopathic Medical Congress under the aegis of Allahabad Main Unit of IHO, UP State Branch from 24th to 26th December, 2000 at Allahabad (Uttar Pradesh). The Congress was attended by about 500 homoeopathic doctors from all over India. The officers of CCRH Hqs. also participated in the Congress.The scientific sessions covered presentations on role of Homoeopathy in essential Hypertension, Arthritis, Jugglery of Mental Prescription on Narration of Patients only and, Miasmatic Approach and its Homoeopathic Index. Dr. Pramod Ji Singh, Assistant Research Officer presented a paper on "Clinical Experiences on the Treatment of Arthritis" covering the work being done at the Clinical Verification Unit, Vrindavan under the Clinical Verification Programme of CCRH

National Workshop on Communicable Diseases, Hyderabad

Department of Indian Systems of Medicine and Homoeo-pathy, Govt. of Andhra Pradesh organised a National Workshop on Communicable Diseases – Prevention through Homoeopathy at Osmania University Campus, Hyderabad (Andhra Pradesh) on 23rd & 24th January 2001. The workshop was organised with financial assistance from the Department of Indian Systems of Medicine and Homoeopathy, Government of India and attended by 300 participants

from State Government Homoeopathic Dispensaries, Homoeopathic Medical Colleges, academicians etc. A delegation of the officials of CCRH Hqs. participated in the workshop and took part in the discussions. The main aim of the workshop was to provide a strategy to utilize the vast homoeopathic infrastructure in the prevention and effective control of epidemics keeping in view the tremendous response to the "Japanese Encephalitis Prevention Program through Homoeopathy" in the state of Andhra Pradesh. The workshop deliberated on five communicable diseases viz. Japanese Encephalitis, Gastroenteritis, Malaria, Measles and Infective Hepatitis and working groups for discussion on these diseases were formed. A number of recommendations regarding distribution of prophylaxis for the above diseases in endemic areas were also made to the Department of Indian Systems of Medicine and Homoeopathy, Govt. of Andhra Pradesh.

National Seminar on Homoeopathy in Geriatric Disorders, Bhubaneshwar

Dr. V.P. Singh, Assistant Director, CCRH Hqs. and Dr. (Mrs.) N. Mishra, Research Officer Incharge, Homoeopathic Research Institute for Filaria, Puri (Orissa) participated in the National Seminar on Homoeopathy in Geriatric Disorders held at Bhubaneshwar from 15th to 17th February, 2001. The seminar was organised by Dr. A.C. Homoeopathic Medical College and Hospital, Bhubaneshwar, Orissa with financial assistance from the Department of ISM & H, Ministry of Health & Family Welfare, Govt. of India and the Department of Health & Family Welfare, Govt. of Orissa.Dr. V.P. Singh made a presentation on "Clinical Trials of Homoeopathic remedies in HIV/AIDS" being carried out by the Council in the last scientific session and also a brief on the activities and achievements of the Council in the Valedictory Session.He also shared his experience in the clinical management of HIV/AIDS covering various aspects like role of homoeopathic remedies and other immune promoting measures in the management of HIV/AIDS with the faculty members and final year students of Dr.A.C.Government Homoeopathic Medical College .

Workshop on Leprosy, Durgapur

Dr. P.C. Mal, Research Officer Incharge, Drug Proving Research Unit, Midnapore participated in the "Workshop on Leprosy" sponsored by Department of Science and Technology and organised by the Society for Welfare of Handicapped Persons, Durgapur Steel City, West Bengal on 17th February, 2001 at Durgapur. This society is undertaking treatment cum preventive programme with homoeopathic medicines for the tribal population within and around Durgapur city and its surrounding villages who are disabled because of Leprosy Therefore an attempt was made by the Society to see whether Homoeo-pathy could offer any effective result or not. To present the results of the five year study to the scientific fraternity in particular and general public this workshop was organised.

The workshop was attended by leprologists, histopa-thologists, physiotherapists, orthopaedicians, social workers, panchayat pradhans, patients (both affected and treated) etc. The first session of the workshop comprised of the audiovisual presentation of cases of leprotic ulcer showing improvement with the treatment. The homoeo-pathic medicines prescribed were not named but it was pointed out that the prescription was according to the principles of Homoeopathy and medicines were anti-miasmatic, anti syphilitic as well as anti-sycotic. The second session of the workshop was the presentation of successful cases in person and third session comprised of the visit of the participants to the affected areas. At the end of each session there were discussions. The workshop centred on the society's working only and there were no other scientific presentations. The data presented was genuine and significant, and the work can be probed and developed further.

Delhi University

Mrs. J. Raj, Research Officer (Pharmacognosy) Drug Stan-dardisation Unit(H), Ghaziabad, attended a "Symposium on biotechnological innovations in Conservation and Analysis of Plant Diversity" organised by Delhi University Botanical Society, Department of Botany, University of Delhi, from 7th to 9th February, 2001 at NISA, New Delhi and learned about the need for protection of pristine habitats for conservation of self sustaining co-

evolving populations of various species and need for biotechnological approaches necessary for preserving crop germplasm and rehabilatation of endangered species. There is a need for devising environment friendly services and products that can help to meet the human requirement without undue pressure on natural plant population.

Lucknow

A National Seminar on the Frontiers of Research and Development in Medicinal Plants was held from 16th to 18th Sept., 2000 at Central Institute of Medicinal and Aromatic Plants, C.S.I.R., Lucknow. Various eminent research scientists, engineers and personnel of industries, discussed the various aspects for improving the Indian Medicinal Plant products. Dr. P. Subramanian, Research Officer (Chemistry), H.D.R.I., Lucknow presented a paper on "Standardisation and Quality Control in Homoeopathic Medicinal Plants" and Mr. H.C. Gupta, Assistant Research Officer (Pharmacognosy), H.D.R.I., Lucknow displayed poster paper on "Pros-pectives of Medicinal Plants employed in Homoeopathy". Mrs. J.Raj, Research Officer (Pharmacognosy), Drug Standardisation Unit(H), Ghaziabad also attended the seminar.

HEALTH MELAS

The Union Minister for Health and Family Welfare Dr. C.P. Thakur announced that in order to improve the advocacy as well as dissemination of the National Population Policy 2000 together with promoting increased awareness to the diverse interventions comprising the National Health and Family Welfare Programme i.e. Reproductive and Child Health, HIV/AIDS, vertical programmes like Malaria eradication, blindness control, leprosy and tuberculosis as well as the backward and forward linkages between all of these, and Indian Systems of Medicine & Homoeopathy, Ministry of Health and Family Welfare planned to organise Health Melas in different states of India with the joint participation of Departments of Health, Family Welfare and Indian Systems of Medicine & Homoeo-pathy.

CCRH participated in these Health Melas organised at Mathura (Uttar Pradesh) from 17th to 20th September 2000 ; Perfect Health Mela - 2000 organised by Heart Care Foundation of India and Govt. of Delhi at Red Fort Grounds, Delhi from 16-25 October 2000 ; Swadeshi Mela in New Delhi from 17th to 23rd October 2000 ; Rashtriya Swasthya Mela - 2000 on 19th November, 2000 at Patna (Bihar); Swasthya and Parivar Kalyan Mela at Lucknow from 31st January to 4th February, 2001; Swadeshi Industrial Fair 2001 from 16th February 2001 at Coimbatore and Perambalur (Tamilnadu) on 4th March, 2001. A large number of people visited the Melas and availed of free medical and treatment facilities offered by CCRH. Literature on various aspects of Homoeopathy published by the Council were also distributed free for awareness of the general public.

EXHIBITIONS

IITF 2000

Department of Indian Systems of Medicine and Homoeo-pathy, Ministry of Health and Family Welfare, Govt. of India participated in the India International Trade Fair (IITF), 2000 held from November 14-27, 2000 at Pragati Maidan, New Delhi. CCRH displayed posters and panels depicting achievements of the Council in various diseases such as Filaria, Malaria, HIV/AIDS and principles of Homoeo-pathy, usefulness of Homoeopathy in common diseases etc. Free homoeopathic consultation was also arranged during the exhibition and patients were provided homoeopathic medicines who presented with different complaints such as skin disorders, allergies, respiratory diseases, gastric complaints etc. Over 1,000 people availed this opportunity.

Herbo' 2000

To interact and explore business opportunities and prospects for better health care, Herbo'2000 International Congress and Workshop was organised from November 14-27, 2000 at India International Trade Fair, Pragati Maidan, New Delhi. the event was jointly organised by Herbal Bio-Med Foundation, Ministry of Science & Technology (DSIR) and Indian Trade Promotion Organisation.

An exhibition of Homoeopathic Medicinal Plants was organised by Survey of Medicinal Plants and Collection Unit, Ooty (Tamilnadu) on behalf of CCRH at Herbo 2000. 60 sheets of herbaria on medicinal plants, 21 photographs of select plants and 16 raw drug plant material were displayed in the stall. The exhibition was visited by a large number of people and queries regarding details of cultivation of medicinal plants, their usage, part used as well as their medicinal value were explained. The Council's publications – A Check List of Homoeopathic Medicinal Plants of India and A Hand Book of Home Remedies in Homoeopathy were in great demand. Literature on various aspects of Homoeopathy were distributed free to the public for general awareness.

Kanpur

Dr. C.P. Thakur, Hon'ble Union Minister for Health & Family Welfare, Govt. of India inaugurated a Seminar and Exhibition on Indian Systems of Medicine and Homoeopathy on 19th May, 2001 at Kanpur organised by Bharatiya Chikitsa Padhati Samrakshan Parishad. CCRH Hq. organised an exhibition and displayed the publications. Pamphlets/folders published by the Council on various aspects of Homoeopathy were distributed free to the public.

Maha Kumbh Mela at Allahabad

On the occasion of Maha Kumbh Mela held at Allahabad from 7th January 2001 to 23rd February 2001, CCRH participated in the Exhibition organised with co-operation from DAVP. Officers of the Council were deputed on rotational basis for guiding the visitors on various health issues. The main area of exhibition was mother & child care, in which panels on pre post and neonatal problems and their Homoeopathic management were depicted. Free consultation was also provided to visitors by the deputed doctors.

ADMINISTRATIVE REPORT

ORGANISATION

The Central Council for Research in Homoeopathy was established on 30th March, 1978 under the Societies Registration Act XXI of 1860 with following main objectives:-

1. The formulations of aims and patterns of research on scientific lines in Homoeopathy.
2. To undertake any research or other programmes in Homoeopathy.
3. The prosecution of/and assistance in research, the propagation of knowledge and experimental measures generally in connection with the causation, mode of spread and prevention of diseases.
4. To initiate, aid, develop and coordinate scientific research in different aspects, fundamental and applied of Homoeopathy and to promote and assist institution of research for the study of the diseases, their prevention, causation and remedy etc.

During the period under report ending 31st March, 2001 the membership of the Society and Governing Body of the Council was as under:

GOVERNING BODY

The Governing Body of CCRH was reconstituted on 27th March, 2000 for a period of three years. The nominations to the Governing Body were made by the then Union Minister of State for Health & Family Welfare in his capacity as the President of the Central Council for Research in Homoeopathy, New Delhi in exercise of the powers conferred on him under Rule 19 of the Memorandum of Association and Rules, Regulations and Byelaws of CCRH. The members of the reconstituted Governing Body are as under :

1. Union Minister for Health & Family Welfare
Govt. of India — President
2. Dr. Dewan Harish Chand
1, Hanuman Lane,
New Delhi — Vice President
3. Secretary(ISM&H)
or his/her nominee not
below the rank of Joint
Secretary, Deptt. of ISM&H — Member
4. Joint Secretary(FA)
Ministry of Health &
Family Welfare, Nirman Bhawan,
New Delhi — "

5. Dr. B.N. Chakraborty
5, Subol Koley Lane,
Howrah (W.B.) — Member
6. Dr. Jugal Kishore
86, Golf Links,
New Delhi — "
7. Dr. V.T. Augustine
401, Mandakini Enclave,
Alakananda
New Delhi. — "
8. Dr. M.P. Arya
Oberoi House 1st Floor
67/2, Nal Stop,
Karve Road
Pune-411 004 (Maharashtra) — "
9. Dr. Ravi M. Nair
Aaramam, Kalady,
Karamana,
P.O. Thiruvananthapuram
Kerala. — "
10. Dr. Urmila Thatte
167/1, Dr. Ambedkar Road
Dadar,
Mumbai-400014 (Maharashtra) — "
11. Prof. A.K. Bhatnagar
Deptt. of Botany,
University of Delhi,
Delhi. — "
12. Dr. C. Arumugam
No. 70, Portuguese Church Street,
Chennai - 600001(Tamilnadu) — "
13. Director
National Institute of Homoeopathy,
Block- GE, Section II,
Salt Lake,
Kolkata-700016(West Bengal) — Member-Secretary
14. Dr. R. Shaw
Director Incharge,
C.C.R.H., New Delhi.

The Governing Body manages the affairs of the Council, reviews the progress made and approves the new schemes/ proposals recommended by the Scientific Advisory Committee / Standing Finance Committee and the budget of the Council.

STANDING FINANCE COMMITTEE

1. Joint Secretary — Chairman
   Deptt. of ISM,
   Ministry of Health & Family Welfare,
   Red Cross Road
   NEW DELHI.

2. Joint Secretary(FA) — Member
   Deptt. of ISM&H
   Ministry of Health & Family Welfare,
   Nirman Bhawan,
   NEW DELHI.

3. Dr. V.T. Augustine
   401, Mandakini Enclave,
   Alakananda
   NEW DELHI

4. Dr. R. Shaw — Member Secretary
   Director Incharge,
   CCRH, NEW DELHI.

The 36th meeting of the Standing Finance Committee(SFC) was held on 11th July, 2000 at New Delhi under the Chairmanship of Sh. L. Prasad, Joint Secretary Dept. of ISM&H to consider the various proposals submitted by the Council.

SCIENTIFIC ADVISORY COMMITTEE

1. Dr. R.K. Kapoor — Chairman
   Allahabad (U.P.)

2. Dr. Girendra Pal — Member
   Jaipur (Rajasthan)

3. Dr. V.T. Augustine — "
   New Delhi

4. Dr. S.K. Dubey — "
   Calcutta (W.B.)

5. Dr. R.P. Patel — "
   Hahnemann House,
   College Road
   KOTTAYAM (KERALA).

6. Dr. M.P. Arya
   Pune (Maharashtra)

7. Dr. Manoj Yadav — "
   Lucknow (U.P.

8. Dr. K.P. Muzumdar — "
   Mumbai (Maharashtra)

9. Dr. S.P. Koppikar
   Chennai (Tamilnadu)

10. Dr. G.L.N. Sastry — "
    Hyderabad (A.P.)

11. Dr S.P. Singh
    Deputy Advisor (Homoeo)
    Deptt. of ISM & H.,
    Ministry of Health & Family Welfare,
    New Delhi

13. Dr. R. Shaw — Member Secretary
    Director Incharge,
    CCRH, NEW DELHI.

There was no meeting of the Scientific Advisory Committee during the year 2000-2001 as the tenure of this Committee expired in May, 2000 and new SAC has not been reconstituted .

SUB-COMMITTEE FOR RE-ORGANISING CCRH

A sub-Committee for Reorganising CCRH was constituted in July '97 to consider and review the ongoing research and organisational structure of CCRH. It has following members.

1. Secretary, — Chairperson
   Deptt. of ISM & H,
   Ministry of Health & Family Welfare,
   New Delhi

2. Joint Secretary (FA) — Member
   Ministry of Health & Family Welfare,
   New Delhi

3. Dr. K.P. Muzumdar — "
   Mumbai

4. Dr. V.K. Gupta — "
   New Delhi

5. Dr. R. Shaw — Member Secretary
   Director Incharge,
   CCRH, NEW DELHI.

SUB-COMMITTEE ON LITERARY RESEARCH

1 — Chairman

Dr. S.K. Dubey
FD-393, Sector III,
Salt Lake City,
CALCUTTA (W.B.).

2. Dr. K.N. Kasad
A.H. Wadia Baugh,
3/10 Parel Tank,
MUMBAI. — Member

3. Dr. R.K. Kapoor
Flat No.33, Block No.5,
Nawab Yusuf Road,
(Civil Lines), ALLAHABAD (U.P.). — Member

4. Dr. R. Shaw
Director Incharge,
CCRH, NEW DELHI. — Member Secretary

There was no meeting of the Sub- Committee on Literary Research during the year 2000-2001 as the tenure of this Committee expired in May, 2000 and further work on this project is not being undertaken pending consideration of Scientific Advisory Committee of CCRH.

ORGANISATIONAL SETUP OF CCRH

The Council has a network of 51 institutes/Units located all over the country including 21 units in the tribal pockets.

Central Research Institute	1	Kottayam (Kerala
Homoeopathic Drug Research Institute	1	Lucknow (U.P.)
Regional Research Institutes	3	New Delhi, Mumbai (Maharashtra) Gudivada (A.P.)
Homoeopathic Research Institutes	2	Puri (Orissa) Jaipur (Rajasthan)
Clinical Research Units (H)	13	Bhopal (M.P.), Varanasi (U.P.), Gurgaon (Haryana) , Patiala (Punjab), Shimla (H.P.), Udupi (Karnataka), Port Blair (Andaman & Nicobar Islands), Tirupathi (A.P.), Gorakhpur (U.P.), Guwahati(Assam), Chennai (Tamilnadu), Imphal(Manipur), Jammu (J&K).
Clinical Research Units (Tribal areas)	21	Agartala (Tripura), Aizawl (Mizoram), Bharmour (H.P.), Bharuch (Gujarat), Khongjom (Manipur), Dandeli (Karnataka), Dimapur (Nagaland), Diphu (Assam), Gangtok (Sikkim), Idduki (Kerala), Itanagar (Arunachal Pradesh), Jagdalpur (Chattissgarh), Jeypore (Orissa), Leh (J&K), Pondicherry, Ranchi (Jharkhand).

		Salem(Tamilnadu), Sambalpur (Orissa), Shillong (Meghalaya), Siliguri (W.B.) and Vijayawada (A.P.).
Homoeopathic Treatment Centre (HTC)	1	Safdarjung Hospital (New Delhi).
Drug Proving Research Units	3	Kolkata (W.B.) Midnapore (W.B.) Ghaziabad (U.P.)
Drug Standardisation Units	2	Ghaziabad (U.P.) Hyderabad (A.P.)
Clinical Verification Units	3	Ghaziabad (U.P.) Patna (Bihar) Vrindavan (U.P.)
Survey of Medicinal Plants & Collection Unit-	1	Ooty (Tamilnadu)

BUDGET PROVISION

The following table shows the budgetary provision made for the Council at a glance

	Actual Expenditure (1999-2000) (in lakhs)	*B.E. 2000- 2001 (in lakhs)*	*R.E. 2000-2001 (in lakhs)*	*Actual Expenditure * (2000-2001) (in lakhs)*
PLAN	367.84	399.00	363.10	342.20
NON-PLAN	375.33	355.00	381.90	377.50
TOTAL	743.17	754.00	745.00	719.70

* Inclusive of utilisation of receipts and adjustment of advances.

Representation of ScheduleD Castes / Scheduled Tribes IN THE COUNCIL SERVICES AND WELFARE MEASURES FOR SC/ST

The Council is following the orders and guidelines, issued from time to time by the Government of India in respect of reservation and representation of SC/ST in the services of the Council. The recruitment/promotion is done according to the roster points. The present number of SC/ST and OBC's working in the Council upto 31.3.2001 is as under.

Scheduled Castes	-	91
Scheduled Tribes	-	22
O.B.C's.	-	49

MEDICAL AID PROVIDED AS BYE-WAY OF CLINICAL RESEARCH IN 2000-2001

The Council has continued to provide medicare through research in Out Patient Department (OPD) and In Patient Department (IPD) of various Institutes and Units of the Council. The Statement of O.P.D. and I.P.D.attendance during the year is as under:

A. General areas	
i) O.P.D. attendance	
New cases registered	91.270
Old cases reported	1.95.128
TOTAL	2.86.398
ii) Research cases*	
O.P.D.	
New cases registered	2.626
Old cases reported	6.934
I.P.D.	
New cases registered	890
Old cases registered	207
B. Tribal areas	10.657*
i) O.P.D. attendance	2.73.581
ii) Research cases	3.265**
C. Cases treated in Clinical Verification Units	
i) O.P.D. attendance	1.44.650
ii) Research cases	12.685**
TOTAL NUMBER OrF CASES TREATED	7.04.629

* Cases included under A (i)
** Cases included under B (i) & C (i)

CLINICAL RESEARCH PROGRAMME

The Council is conducting its programme on clinical research through its institutes/units located in general areas as well as tribal areas and has taken up clinical evaluation of certain diseases that are common as well as chronic ailments and also certain diseases included in National health programme viz. Filaria, Malaria, HIV/AIDS, Diabetes etc.

A) Clinical Research Programme in General Areas

Two types of clinical research programmes are in progress, disease related clinical research and drug related clinical research. Total forty one(41) projects, out of which (27) under disease-related and (14) under drug-related clinical research are in progress at six (6) research Institutes, twelve (12) clinical research units and one clinical research unit in tribal area. The extension unit of Drug Standardisation Unit at Hyderabad is also undertaking clinical research studies.

Disease-related Clinical Research

The objective of this programme is to evolve a group of most efficacious homoeopathic medicines in a given pathological condition with regard to identify their reliable indications, useful potencies, frequency of administration and their relationship with other drugs. These studies are in progress on the following diseases.

Amoebiasis, Behavioural disorders (Mental Diseases), Behavioural disorders in Mentally Retarded children, Bronchial asthma, Cervicitis and Cervical Erosion, Diarrhoea in children, Dysentery, Epilepsy, Filaria, Gastritis,Giardiasis, Hepatitis B, Human Immunodeficiency Virus (HIV) Infection, Hyper Low-Density-Lipoproteinaemia,Hypertension,Intermittent Fever, Iron deficiency Anaemia, Irritable Bowel Syndrome, Malaria, Osteoarthritis, Prostate enlargement, Renal calculi,Rheumatoid arthritis, Sickle cell anaemia, Sinusitis, Skin disorders (including Allergic dermatitis, Urticaria), Tonsillitis and Upper respiratory tract infections .

Drug-related Clinical Research

The disease related clinical research studies have facilitated identification of a group of most efficacious homoeopathic medicines in some of the clinical conditions and also established their prescribing totality. In order to verify the data of these medicines clinically (with regard to its most useful potencies, frequency of administration and its relationship with other drugs) these have been taken up under drug related clinical research programme. There are certain other homoeopathic drugs which ahve a special affinity for the organ(s) involved in particular disease condition or which are traditionally/empirically used but need clinical confirmation. Such drugs are also being tried in certain diseases. The drug related studies are being undertaken on the diseases mentioned hereunder.

Amoebiasis, Behavioural disorders, Cervical Spondylosis, Cervicitis & Cervical Erosion, Diabetes mellitus, Filaria, Japanese encephalitis, Gall stones, Helminthiasis, Malposition of human foetus, Menorrhagia, Osteoarthritis and *Vitiligo.*

B) Clinical Research Programme in Tribal Areas

The twenty tribal units are conducting Drug Related Clinical Research studies on 18 common clinical problems identified during the survey in that particular area.

Homoeopathic Materia Medica consists of many drugs which have richness of toxicological or pathogenetic symptoms but are little known and scarcely used in practice. There are certain other drugs which are traditionally insisted upon but need clinical confirmation. Accordingly a group of such medicines are under clinical trial in 18 common clinical problems. The main objective is to collect the symptomatological data of the assigned drugs.

Clinical research programmes on the following diseases are in progress at the Tribal Units located in various parts of the country.

Amoebiasis, Arthritis, Bronchial Asthma, Bronchitis, Cervical Erosion & Cervicitis, Diabetes Mellitus, Dysentery, Filaria, Gastroenteritis, Helminthiasis, Malaria, Osteoarthritis, Peptic Ulcer, Rhinitis, Skin Disorders, Sinusitis, Tonsillitis and *Vitiligo*

1. AMOEBIASIS

A. In General Areas

i) Disease related Clinical Research

The studies are continued at Clinical Research Unit, Tirupati since 1982-83.

Achievements during the year 2000-2001

	New
Number of cases studied	47
Improvement indices	
- cured	07
- improved	09
- markedly	12
- moderately	08
- mildly	05
- not improved	06
- under observation	

Observations

Almost all cases were of amoebic dysentery (intestinal amoebiasis). The medicines *Nux vomica* 30,200,1M; *China officinalis* 30,200,1M; *Aloe socotrina* 30,200 and *Lycopodium* 30 ,200,1M have been found to be the most effective and have helped in relieving the signs and symptoms of amoebiasis. Intercurrently *Lycopodium, Sulphur* and *Pulsatilla* were found effective in these cases. The project is to continue.

ii) Drug related Clinical Research

To clinically evaluate the efficacy of following medicines in Amoebiasis.

Achyranthes aspera, Aegle folia, Aegle marmelos, Arsenicum album, Atista indica, Cinchona officinalis, Colchicum, Colocynthis, Cynodon dactylon, Holarrhena antidysenterica, Ipecacuanha, Mercurius corrosivus, Mercurius solubilis, Nux vomica and Sulphur.

Units undertaking this project are Clinical Research Unit, Port Blair since 1989 and Clinical Research Unit, Guwahati since 1985.

Achievements during the year 2000-2001

	New	*Old*
Number of cases studied	78	09
Improvement indices		
- improved		09
- markedly	69	--
-moderately	07	--
- not reported	02	

Observations

The cases registered for studyare mostly of amoebic dysentery. The assigned medicines were found effective in alleviating subjective and objective symptoms of amoebiasis. It is observed that indigenous medicines *Atista indica* and *Holarrhena antidysenterica* were found the most effective from amongst the assigned drugs. No recurrence of complaints was seen in 33 cases from 2-3 months and from 3-6 months in 17 cases, and with less intensity in 33 cases. EH cyst which was positive in 61 cases became negative after treatment in 50 cases.The project is to continue.

B. In Tribal Areas

To clinically evaluate the efficacy of following medicines in Amoebiasis.

Alstonia constricta, Ambrosia, Asclepias tuberosa, Atista indica, Cynodon dactylon, Emetine, Ficus indica, Helleborus, Holarrhena antidysenterica (Kurchi), Leptandra, Raphanus, Silphium, Trombidium, Xanthoxylum, Zincum sulphuricum.

This project is being undertaken at Clinical Research Units (Tribal) at Dandeli, Dimapur, Itanagar, Jeypore, Khongjom, Gangtok and Agartala.

Achievements during the year 2000-2001

552 new cases were registered during this period and varying degree of improvement after treatment with assigned medicines was seen in 378 cases.

Observations

From the group of medicines assigned *Cynodon dactylon, Alstonia constricta, Atista indica, Ficus indica, Trombidium, Emetine* and *Leptandra* were found most effective. These medicines covered 51% of the total improved cases.The reliable indications of these medicines are being further verified.

B. In Tribal Areas

2. ARTHRITIS

To clinically evaluate the action of the following drugs on Arthritis :

Actea spicata, Angustura vera, Calcarea fluoricum, Caulophyllum, Formica rufa, Formic acid, Gaultheria, Guaiacum, Lithium carbonicum, Magnolia grandiflora, Malaria officinalis, Medorrhinum, Osteoarthritis nosode, Radium bromatum, Rhamnus californica and *Stellaria media, X-ray*

This project is being undertaken at Clinical Reseach Units (Tribal) at Bharmour, Bharuch, Dandeli, Siliguri and Jagdalpur.

Achievements during the year 2000-2001

Number of cases studied	329
Number of cases found effective in	215

Observations

The group of medicines found effective during the reporting period were *Actea spicata, Angustera vera, Radium bromatum, Caulophyllum, Formica rufa, Formic acid, Magnolia grandiflora* and *Lithium carbonicum*. Intercurrently *Medorrhinum* in 7 cases and *Calcarea fluoricum* in 7 cases were found effective in improved cases.

3. BEHAVIOURAL DISORDERS

A. In General Areas

i) Disease related Clinical Research

The study of evaluating the efficacy of homocopathic medeicines in behavioural disorders is being undertaken at Central Research Institute, Kottayam (Kerala).

Achievements during the year 2000-2001

During the reporting period 319 cases of various mental disorders were registered at the Institute. Of these 21 cases are cured and 198 cases are in various stages of improvement.

629 old cases reported for follow up. Of these 47cases are cured and 311 cases are in various stages of improvement.

Observations

The project on Behavioural disorders is being udertaken on the lines of Hahnemannian Classification of Mental Disorders and as such the registered cases are classified accordingly.It is observed that improvement rate of the cases of affective Psychosis is high as compared to other mental illnesses. In Schizophrenia cases, the rate of improvement is comparatively less. *Belladonna, Pulsatilla, Ignatia, Phosphorus, Sepia, Natrum mur., Sulphur, Stramonium, Arnica* and *Tuberculinum* were found the most effective. The project is to continue.

ii) Drug related clinical research

To clinically evaluate the efficacy of following medicines in Behavioural Disorders.

Belladonna, Hyoscyamus niger, Ignatia amara, Lachesis, Natrum muriaticum, Nux vomica, Phosphorus, Pulsatilla, Stramonium and *Sulphur.*

The project on Behavioural disorders (drug related) was started on April,1990 at Central Research Institute, Kottayam and continued till March, 2000.

During this period 1115 cases have been studied . The selection of research cases, their intensity of complaints and assessment of improvement was made on the various criteria adopted by the Institute. The diagnosis of these research cases under study was made entirely on the clinical signs and symptoms. The duration of illness was from one month to 42 years. The various clinical types of Behavioural disorders which have been studied are : Organic Mental Disorder, Functional Mental Disorder, Schizophrenia, Paranoid Disorder, Affective Disorder, Anxiety Disorder, Psychosomatic Disorder and the medeines which were found most effective are : *Belladonna* 30,200,1M, *Hyoscyamus* 30,200,1M, *Ignatia* 30,200,1M, *Lachesis* 30,200,1M, *Natrum muriaticum* 30,200,1M,10M, *Nux vomica* 30,200,1M,10M, 50M, *Phosphorus* 30, 200,1M, *Stramonium* 30,200,1M and *Sulphur* 30,200,1M,50M.

4. BEHAVIOURAL DISORDERS IN MENTALLY RETARDED CHILDREN

A. In General Areas

i) Disease related Clinical Research

The project was studied from July, 1991 to March, 2001 at Central Research Institute, Kottayam with an aim to study the efficacy of homocopathic therapy in Behavioural problems in Mentally Retarded Children. Total 865 children have been studied during this period. These mentally retarded children were selected from special schools which offer specialized educational facilities to these children. They prepare the mentally retarded children for domestic skills and vocational training through individualized educational programme. Out of these 865 children , 18 were of severe mental retardation, 323 of moderate and 494 mild mental retardation. Maximum no. of cases belonged to low income group with hereditary factor as predisposing followed by complicated delivery. Psora was found to be the most dominating miasm in 482 cases. The commonest behavioural problems seen were :

Behavioural problem	*No. of cases*	*Improved*	*Not improved*
Attacks others	123	94	29
Destructive behaviour	132	107	25
Disruptive behaviour	137	89	48
Self injuries 157	117	40	50
Repetitions – stereotyped	71	21	43
– odd	62	19	09
Antisocial	33	24	15
Withdrawal	32	17	18
Rebellious	47	29	48
Hyperactive	79	31	

Clinical conditions	*No. of cases*	*Improved*	*Not improved*
Autism	79	46	33
Developmental delay	172	115	57
Depression	29	12	17
Stammering	15	07	08
Sexual excitement	142	86	56
Salivation	112	92	20
Kleptomania	15	05	10

With regular follow it has been found that with the support of homoeopathic medicines like *Belladonna, Sulphur, Nux vomica, Chamomilla, Stramonium, Baryta carbonicum, Calcarea carbonicum, Hyoscyamus, Pulsatilla, Tuberculinum, Calcarea phosphoricum* and *Tarentula hispanica* we can modify the behaviour pattern of these mentally retarded children and make them trainable and self dependable to a certain extent.

5. BRONCHIAL ASTHMA

A. In General Areas

i) Disease related Clinical Research

The Council started the project in 1979 in order to verify and evaluate the efficacy of homoeopathic medicines in Bronchial Asthma and a small group of medicines which were most effective were identified with their reliable indications. But from 1996-97 this project has been modified according to the recommendations made in the meeting of the Scientific Advisory Committee of CCRH and the study is being conducted on the following lines based on Hahnemannian concept.

- *To find out the miasmatic background*
  Clinical Research Unit, Shimla and Regional Research Institute, Gudivada
- *To find out the group of homoeopathic medicines useful in status asthmaticus*
  Regional Research Institute, Gudivada
- *To find out the homoeopathic medicines for cases which are worse during change of weather*
  Clinical Research Units, Udupi and Patiala
- *To find out the homoeopathic medicines in reducing the dependency on allopathic drugs*
  Clinical Research Units, Shimla, Udupi and Patiala

Achievements during the year 2000-2001

	New	*Old*
Number of cases studied	126	112
Improvement indices		
- improved		43
- markedly	21	50
- moderately	29	16
- mildly	52	--
- not reported	07	03
- dropped out	06	

Observations

It was observed that no recurrence of complaints was seen in 11 new cases and 35 old cases and with less intensity in 02 new cases and 05 old cases.

- Medicines found effective during change of weather : *Arsenic album, Kali carbonicum, Natrum sulphuricum, Hepar sulphuris, Tuberculinum, Carbo vegetabilis, Lachesis, Nux vomica, Phosphorus and Pulsatilla.*

- Medicines found effective in reducing the dependency on allopathic and other medicines.

Ammonium carbonicum, Arsenic album, Antimonium tartaricum, Kali carbonicum, Kali muriaticum, Natrum sulphuricum, Sambucus nigra, Sulphur, Phosphorus, Pulsatilla, Lachesis, Sepia and Hepar sulphuris.

Dosage of allopathic drugs has been reduced or stopped in following number of cases.

		*Number of cases**		
		Before treatment	*After treatment*	
			Reduced	*Stopped*
1.	Puffs	16	08	08
2.	Oral (bronchodilators)	27	11	14
3.	Anti-allergic	12	--	12
4.	Anti-tussive	07	--	07
5.	Antibiotics	17	--	17
6.	Steroids	02	01	02
7.	Needed hospitalisation before treatment for Oxygen therapy and medication	20		14

* Includes the data related to old (under follow up) and new cases.

B. In Tribal Areas

To clinically evaluate the action of the following drugs in Bronchial Asthma.

Ambra grisea, Caladium, Cassia sophera, Coca, Grindelia robusta, Hydrocyanic acid, Kali chloricum, Moschus, Naja tripudians, Pothos foetidus.

This project is being undertaken at Clinical Research Units (Tribal) at Dandeli and Leh.

Achievements during the year 2000-2001

Number of cases studied	46
Number of cases found effective in	20

Observations

The medicines found most effective were *Pothos foetidus* and *Grindelia* as 13 cases of the improved cases have improved with these two medicines.

6. BRONCHITIS

B. In Tribal Areas

To clinically evaluate the action of the following drugs in Bronchitis.

Ammoniacum deronia, Antimonium iodatum, Eucalyptus, Justicia adhatoda, Kali iodatum, Lobelia inflata, Luffa operculata, Senega, Solanum aceticum.

This project is being undertaken at Clinical Research Units (Tribal) at Gangtok and Jeypore.

Achievements during the year 2000- 2001

Number of cases studied	113
Number of cases found effective in	66

Observations

Senega, Lobelia inflata, Kali iodatum, Justicia adhatoda and *Antimonium iodatum* were the most effective from the group of assigned drugs for bronchitis. Most of the indications /symptoms for these drugs have been identified and are being verified, but need further clinical confirmation

7. CERVICAL SPONDYLOSIS

A. In General Areas

i) Drug related Clinical Research

To clinically evaluate the action of the following drugs in Cervical spondylosis.

Calcarea fluoricum, Cimicifuga, Guaiacum, Kali carbonicum, Phytolacca, Rhustoxicodendron, Sticta pulmonaria

This project is being undertaken at Clinical Research Units, Patiala and Udupi since August, 1997.

Achievements during the year 2000-2001

During the year 18 new cases were registered. Of these 12 cases showed varying degrees of improvement (1 case marked, 2 cases moderate and 9 cases mild) and five cases did not report for follow up. Fifteen old cases reported for follow up and of these 11 are in various stages of improvement.

Observations

It is observed that pain, swelling & stiffness in cervical joints , and vertigo was reduced and controlled effectively (in some cases disappeared too) but its correlation with pathology is required as the number of cases studied and duration of study is very less. The medicines found useful in these cases were *Cimicifuga, Guaiacum* and *Rhus tox.* The project is continued.

8. CERVICITIS & CERVICAL EROSION

A. In General Areas

i) Disease related Clinical Research

This Council has undertaken this project at Clinical Research Unit, Shimla since April, 1989, Clinical Research Unit, Imphal since April, 1989 and Clinical Research Unit, Tirupathi since November, 1988.

Achievements during the year 2000-2001

	New	*Old*
Number of cases studied	106	280
Improvement indices		30
- cured	12	
- improved		111
- markedly	42	70
- moderately	36	53
- mildly	11	16
- not improved	05	
- not reported		

Observations

During the course of studies it is observed that the indicated homoeopathic medicines like *Arsenic album, Borax, Kreosote, Lachesis, Sepia* and *Pulsatilla* helped not only in relieving the related subjective and objective symptoms of Cervicitis and Cervical Erosion like mucopurulent discharge, post-coital spotting, backache, dyspareunia, frequency of urination and congestion of cervix but also in their disappearance.There was improvement in general health of the patient by improvement in Hb% in 32 cases, ESR level in 35 cases, Differential count in 60 cases.Simple flat erosion disappeared in 37 cases, papillary in 23 cases, cystic in 16 cases and associated complaints like fibroid in 62 cases , menorrhagia and dysmenorrhoea in 15 cases, and irregular menses in 10 cases were cured in considerable number of cases. Recurrence of no complaints was seen in 68 cases both new and old follow up cases. The project is continued.

ii) Drug related Clinical Research

To clinically evaluate the efficacy of following medicines in Cervicitis & Cervical Erosion.

Alumina, Arsenicum album, Borax, Calcarea carbonicum, Kali carbonicum, Kreosote, Lachesis, Mercurius solubilis, Natrum muriaticum, Pulsatilla and *Sepia.*

Units undertaking this project are Clinical Research Unit(H), Tirupathi since 1995 and Clinical Research Unit(H), Varanasi since 1990.

Achievements during the year 2000-2001

	New	*Old*
Number of cases studied	82	176
Improvement indices*		60
- improved	03	41
- markedly	19	25
- moderately	11	05
- mildly	06	
- not improved		

** The improvement index mentioned is related only to cases studied at Clinical Research Unit, Tirupathi.*

Observations

During the reporting year *Borax*, *Alumina* and *Sepia* were found to be most effective medicines in relieving both subjective and objective symptoms and the therapeutic effectiveness of these medicines was observed in 89% of the cases . Some of the reliable indications of the assigned medicines have been confirmed but need to be verified for reconfirmation. No recurrence of complaints was observed in 47cases (includes both new as well as old follow up cases) and with less intensity in 86 cases.The project is to continue.

9. DIABETES MELLITUS

A. In General Areas

i) Drug related Clinical Research

To clinically evaluate the efficacy of the following medicines in Diabetes Mellitus.

Cephalandra indica, *Rhus aromatica* and *Chionanthus*.

The Council has undertaken this project at Regional Research Institute, New Delhi since April, 1987, Clinical Research Unit, Chennai since April, 1989, and Drug Standardisation Unit, Hyderabad Extension Unit from July,1992

Achievements during the year 2000-2001

	New	*Old*
Number of cases studied	112	56
a) with Cephalandra indica	56*	18
b) with Rhus aromatica	27	33
c) with Chionanthus	06	05
* For reporting cases only.		
Improvement indices		
(A) i) Treated only with homoeopathic medicine (Cephalendra)	35	11
Improved	27	11
Under observation	08	--
ii) Advised allopathy medicine alongwith Homoeopathy		
Improved	20	07
Under observation	16	07
(The dosage of Insulin reduced in one case from 35 units/day to 30 units/day with *Cephalendra*).	04	--
(B) i) Treated only with homoeopathic medicine (Rhus aromaticus Q)	03	04
Improved	02	04
Under observation	01	--

ii) Advised allopathy medicine alongwith Homoeopathy	24	29
Improved	02	21
Under observation	22	08
(C) i) Treated only with homoeopathic medicine (Chionanthus Q)	04	03
Improved	02	03
Under observation	02	--
ii) Advised allopathy medicine alongwith Homoeopathy	02	02
Improved	01	01
Under observation	01	--

Observations

The cases registered are mostly of non-insulin dependent diabetes mellitus. Out of 18 old cases who reported with peripheral neuropathy at D.S.U. Hyderabad, there was improvement in 10 cases , vascular affection (intermittent claudication) was present in 12 old cases and on follow-up, 04 cases reported improvement , albumin in traces was present in 21 old cases, 10 cases were found to be negative after treatment, pus cells were present in 08 old cases. 05 cases were found to be relieved with *Rhus aromaticus* Q. In 06 old cases allopathy drug was withdrawn by tapering method on treatment with *Cephalandra indica* Q at Regional Research Institute, New Delhi.The project is continued.

B. In Tribal Areas

To clinically evaluate the action of the following drugs on Diabetes Mellitus

Abroma augusta, *Cephalandra indica*, *Chimaphila umbellata*, *Chionanthus*, *Glycerinum*, *Insulin*, *Inula*, *Lac defloratum*, *Lactic acid*, *Syzygium jambolanum*, *Thyroidinum* and *Uranium nitricum*.

This project is being undertaken at Clinical Research Units (Tribal) Pondicherry, Salem and Vijaywada.

Achievements during the year 2000-2001

Number of cases studied	216
Number of cases found effective in	46

Observations

From the group of medicines assigned under this project, *Cephalandra indica*, *Insulinum*, and *Lactic acid* were found to be effective.

10. DIARRHOEA IN CHILDREN

A. In General Areas

i) Disease related Clinical Research

The Council has undertaken a research scheme to study the efficacy of homoeopathic medicine in cases of diarrhoea in children at Homoeopathic Research Institute, Jaipur from August,1997.

Achievements during the year 2000-2001

	New	*Old*
Number of cases studied	51	50
Improvement indices		
- cured	23	27
- improved		
- markedly	07	05
- moderately	03	08
- mildly	18	

Observations

No recurrence of complaints was seen in 47cases during treatment. *Chamomilla* 30, *China* 30, *Mercurius solubilis* 30 and *Podophyllum* 30 were found to be the most effective in relieving the subjective and objective symptoms. 50 cases (both new as well as old follow up) were cured during the treatment.The project is continued.

11. DYSENTERY

A. In General Areas

i) Disease related Clinical Research

A study has been undertaken by the Council at Regional Research Institute(H), Gudivada since April,1988 to clinically evaluate the efficacy of homoeopathic medicines in Dysentery.

Achievements during the year 2000-2001

	New	*Old*
Number of cases studied	52	83
Improvement indices		
- improved	10	29
- markedly	10	27
- moderately	18	22
- mildly	13	05
- under observation	01	--
- not reported		

Observations

All the cases studied were of amoebic dysentery. The indicated homoeopathic medicines helped in relieving the subjective/objective symptoms,and also in controlling the acute paroxysm. On repeat pathological investigation, the Hb% increased in 15 new and 48 old cases, E.S.R. came down to normal limits in 5 new and 10 old cases and Entamoeba histolyica cyst was found negative in 23 new and 48 old cases. *Nux vomica*, *Carbo vegetabilis*,

lycopodium, and *Sulphur* acted well in chronic cases and in acute cases *Mercurius solubilis* showed the best results.The project is to continue

B. In Tribal Areas

To clinically evaluate the action of the following drugs on Dysentery.

Alstonia constricta, *Ambrosia*, *Asclepias tuberosa*, *Atista indica*, *Cynodon dactylon*, *Emetine*, *Ficus indica*, *Hellebarus*, *Holarrhena antidysenterica*, *Leptandra*, *Silphium*, *Raphanus*, *Trombidium*

This project is being undertaken at Clinical Research Units (Tribal) Aizawl, Bharuch, Leh, Shillong, Vijayawada and Siliguri.

Achievements during the year 2000-2001

Number of cases studied	295
Number of cases found effective in	131

Observations

Indian drugs viz. *Cynodon dactylon* (Dub grass), *Atista indica* (Bannimbu) and *Ficus indica* were the most effective covering 45% of the improved cases and besides these *Trombidium*, *Alstonia constricta*, and *Emetine* were also found effective covering 49% of improved cases.The project is to continue..

12. EPILEPSY

A. In General Areas

i) Disease related Clinical Research

The Council has undertaken this project at Central Research Institute for Homoeopathy, Kottayam from1980 and Regional Research Institute for Homoeopathy, Gudivada (A.P.) from April,1988.

Achievements during the year 2000-2001

	New	*Old*
Number of cases studied	47	36
Improvement indices		
- improved	08	04
- markedly	07	05
- moderately	17	24
- mildly	04	01
- not reported	09	--
- under observation	02	02
- not improved		

Observations

The homoeopathic medicines have helped not only in relieving both the subjective and objective symptoms related to Epilepsy but also in their disappearance and reducing the duration, intensity and frequency of attacks. Therapeutic efficacy of *Cuprum metallicum, Natrum muriaticum, Natrum sulphuricum and Pulsatilla* has been observed in Epilepsy. 41 cases showed no recurrence of epileptic seizures during the treatment but needs further follow up.

98 cases were followed from 1997 to 2001 at Central Research Institute, Kottayam and 72 cases were improved in varying degrees.Of these 54 cases improved markedly and of these 31 cases were of grand mal, 15 cases of petit mal, 05 cases of symptomatic and 02 of hysterical convulsions;16 cases improved moderatelyand of these 08 cases were of grand mal, 08 cases of petit mal; 02 cases improved mildly and of these 01 case of petit mal and 01 case of G.T.C.E. The drugs which were found effective in these cases were: *Hyos.* 200, *Calcarea carbonicum* 200, 1M, *Belladonna* 200, *Nux vomica* 30,200,1M, *Nux moschata* 1M, *Gelsemium* 30,200, *Ignatia* 200, 1M, *Argentum nitricum* 1M, *Causticum* 30, *Lachesis* 30, *Arsenicum album* 200 and *Stramonium* 30.The project is continued.

13. FILARIA

A. In General Areas

i) Disease related Clinical Research

Disease related research study on Filaria is being undertaken at Clinical Research Unit, Tirupati since 1980.

Achievements during the year 2000-2001

	New	*Old*
Number of cases studied	54	54
Improvement indices		
- cured	--	09
- improved	11	11
- markedly	14	10
- moderately	15	18
- mildly	05	06
- not improved	09	--
- under observation		

Observations

The reliable indications of the most indicated medicines have been identified. *Rhus toxicodendron* and *Bryonia alba* in many cases not only helped in relieving the related complaints of Filaria but also in their disappearance and reducing the intensity of paroxysmal attacks. Early stages of lymphoedema especially pitting type are amenable to the treatment and in non-pitting type and elephantiasis, lymphoedema was reduced to some extent only which can be seen from the table below. The project is continued.

Assessment of Objective Symptoms	*Before treatment*	*After treatment*	
		disappeared	*mitigated*
Lymphoedema Grade I	21	15	06
Lymphoedema Grade II	55	16	39
Lymphoedema Grade III	12	--	12
Lymphadenopathy	79	31	48
Lymphangitis	77	31	46
Lymphoedematics	48	20	28

ii) Drug related Clinical Research

To clinically evaluate the efficacy of following medicines in Filaria.

Apis mellifica, Belladonna, Bryonia alba, Lycopodium, Mercurius solubilis, Natrum muriaticum, Pulsatilla, Rhododendron, Rhus toxicodendron and *Sulphur.*

The project is being undertaken at Homoeopathic Research Institute, Puri since 1981 and Regional Research Institute, Gudivada since 1985-86.

Achievements during the year 2000-2001

	New	*Old*
Number of cases studied	564	381
Improvement indices		
- cured	--	10
- improved	04	58
- markedly	--	107
- moderately	30	138
- mildly	--	54
- not improved	520	03
- under observation	10	11
- not reported		

Observations

Filariasis, being a chronic disease with acute exacerbations requires long treatment and follow up. The evaluation of the 283 cases followed up during 2000-2001 revealed that there was a great improvement in subjective and objective symptoms of the disease, more so in acute cases. Overall improvement in varying degrees was observed with treatment varying from 1 month to 5 years. Acute cases without gross obstructive changes responded well to homoeopathic therapy. Most remarkable response was noticed in lymphoedema of grade I which totally disappeared in 47cases and lymphoedema grade II in18 cases and improved in varying degrees in 72 cases. In chronic cases with Elephantiasis,

response to treatment was limited since irreversible changes had taken place, but marked reduction was noticed in number of acute attacks. Filarial pains were relieved alongwith secondary skin affections over elephantoid leg, with reduction in feeling of heaviness and the patient was able to perform his/her daily activities better than before. In 02 cases out of 12 Mf positive, Mf was found to be negative after treatment.*Rhus tox, Bryonia alba, Apis mellifica* and *Sulphur* improved cases of filaria both acute as well as chronic and it has been observed that there is need to interpolate the treatment with an intercurrent antimiasmatic drugs like *Sulphur, Psorinum, Thuja, Medorrhinum, Syphilinum* etc. from time to time to check repeated attacks. At Regional Research Institute, Gudivada besides relief in subjective and objective symptoms following pathological reports also became normal:

		Total no. of cases abnormal range before treatment	*Within normal range after treatment*
1.	Eosonophilia	43	16
2.	Neutrophilia	08	08
3.	Neutropenia	69	14
4.	Lymphocytosis	75	14
5.	Lympocytopenia	03	02
6.	Leucocytosis	52	25
7.	Leucopenia	02	02
8.	Hyperglyaemia	02	—
9.	Hyper – Hb	15	05
10.	E.S.R.	41	18

B. In Tribal Areas

To clinically evaluate the action of the following drugs on Filaria.

Apis mellifica, Belladonna, Bryonia alba, Lycopodium, Mercurius solubilis, Microfilaria, Natrum muriaticum, Pulsatilla, Rhododendron, Rhus toxicodendron, Sulphur, Coded drug.

This project is being undertaken at Clinical Research Unit (Tribal), Ranchi.

Achievements during the year 2000-2001

109 new cases of Filaria were registered during the reporting year and improvement in varying degrees was observed in 26 cases.

Observations

Bryonia alba in 30 and 200 potency has been found to be the most useful of the assigned medicines. 24 cases out of 26 improved cases were improved with *Bryonia* only.

14. GALL STONES

A) In General Areas

B) Drug related Clinical Research

Fel tauri, a rare medicine, was known to have beneficial results in the treatment of gall stones especially in disappearance or reduction in the size of stones. In order to clinically evaluate its efficacy, the Council has undertaken this project at Regional Research Institute, New Delhi from January,1990 to June, 2000. 382 cases were registered under the project which were diagnosed on the basis of pathological findings. The follow up was done for more than two years in 29 cases and maximum follow up was done for more than 07 years. Repeat ultrasound was performed in 33 cases out of which 04 cases revealed no stone and 29 cases showed improvement either in reduction of size of stone or from multiple to single or few stones. In 229 cases, besides the improvement in subjective and objective symptoms, frequency, intensity and duration of acute paroxysm was also found to be reduced.

15. GASTRITIS

A. In General Areas

B) Disease related Clinical Research

This study is being undertaken at Clinical Research Unit, Imphal from October, 1987.

Achievements during the year 2000-2001

During the reporting year 21cases of Gastritis were registered for study.Varying degrees of improvement was seen in 21 cases.

Observations

The cases registered under this project are of chronic gastritis. The medicines found effective are *Anacardium, Nux vomica* and *Arsenic album* They helped in relieving the subjective and objective symptoms and recurrence of complaints was with less intensity in 5 cases. The project is to continue.

16. GASTROENTERITIS

B. In Tribal Areas

To clinically evaluate the action of the following drugs on Gastroenteritis:

Cynodon dactylon, Gambogia, Jalapa, Jatropha curcas , Podophyllum.

This project is being undertaken at Clinical Research Unit (Tribal), Idukki.

Achievements during the year 2000-2001

During the reporting year 09 cases of Gastroenteritis were registered and of these 05 cases have shown improvement with *Cynodon dactylon, Jalapa* and *Podophyllum.*

17. GIARDIASIS

A. In General Areas

i) Disease related Clinical Research

The Council has initiated the study to find out the role of homoeopathic medicines in Giardiasis at Clinical Research Unit, Tirupati, Clinical Research Unit, Guwahati and Clinical Research Unit, Port Blair from August, 1997.

Achievements during the year 2000-2001

	New	*Old*
Number of cases studied	24	04
Improvement indices		
- Improved		
- markedly		
Observations	24	04

Homoeopathic medicines viz. *Atista indica, China, Podophyllum* and *Sulphur* were helpful in mitigating the subjective and objective symptoms. Giardiasis lamblia disappeared in 24 cases after treatment but the cases are still under followup. 04 old cases also reported for follow up during this period and are markedly improved. Giardiasis, being a chronic disease needs a long follow up, as such cases are under observation. The project is to continue.

18. HELMINTHIASIS

A. In General Areas

ii) Drug related Clinical Research

To clinically evaluate the efficacy of following drugs in Helminthiasis.

Chelone glabra, Cina, Cuprum oxydatum nigrum, Embelia ribes, Teucrium marum verum and *Thymol.*

The unit undertaking this project is Clinical Research Unit, Gurgaon since 1980.

Achievements during the year 2000-2001

	New	*Old*
Number of cases studied		02
Improvement indices		
- improved	55	
- markedly		
- moderately		02
- under observation	47	--
	07	--
	01	

Observations

The most effective homoeopathic medicines from amongst the group of assigned medicines were *Cina, Cuprum oxydatum nigrum, Embelia ribes* and *Teucrium*. The assigned medicines helped in expulsion of worms too in some cases. The project is to continue.

B. In Tribal Areas

To clinically evaluate the action of the following drugs on Helminthiasis:

Chelone, Embelia ribes, Filix mas, Granatum, Kousso, Santoninum, Scirrhinum, Sinapis alba, Thymol, Vernonia anthelmintica.

This project is being undertaken at Clinical Research Units (Tribal) at Salem, Bhamour, Diphu, Dimapur, Itanagar, Jeypore, Khongjom and Gangtok.

Achievements during the year 2000-2001

Number of cases studied	669
Number of cases found effective in	427

Observations

The group of assigned medicines found most effective during the reporting year are *Santoninum, Filix mas, Sinapis alba, Granatum, Chelone, Embelia ribes* and *Vernonia anthelmintica*. This group covered 91% of the improved cases.

19. HEPATITIS B

A. In General Areas

i) Disease related Clinical Research

This project was initiated in August, 1997 at Regional Research Institute, Mumbai. The protocol has been prepared on the guidelines of ICMR. During this year no case has been registered.

20. EVALUATION OF HOMOEOPATHIC THERAPY IN HIV INFECTION

Human Immunodeficiency virus (HIV), a retrovirus, causes immunodeficiency in human beings leading to acquired immunodeficiency syndrome (AIDS) characterized by the occurrence of a number of opportunistic infection(s) and/or malignancies viz. Kaposi's sarcoma and/or Non-Hodgkin's lymphoma. The infection is devastating in nature and, according to the available information, fatal in over 90 per cent of the infected individuals.

Around 40 million HIV infections are believed to have already occurred world-wide since 1981 when first cases were reported from the United States of America. HIV/AIDS epidemics in many countries, particularly those in Africa, and Sub-Saharan Africa have nearly wiped out sexually and economically productive male population leaving behind a huge number of widows and orphans. AIDS is now the leading cause of death among adults in Sub-Saharan Africa. The continued increase in HIV infections particularly in South and Central Africa and in South and South-east Asia has had an intense impact on the developing world. Around 90 per cent of the reported HIV infections are estimated to be in the developing countries. Many a countries are forced to revise their economic and health priorities.

Although HIV appeared in India in 1986, a delayed entry when compared to other parts of the world, it's spread has been very fast in different parts of the country. The National AIDS Control Organisation (NACO) estimates that 3.7 million HIV infections had already occurred in the country by the end of 1999.

A majority of the individuals infected by HIV are currently passing through asymptomatic phase and would develop clinically active HIV disease in the coming years. In view of the importance being accorded to the containment of HIV/AIDS pandemic the world over, all resources in the field of medicine are pooled and utilized. The Central Council for Research in Homoeopathy, in pursuance of the decision of the Ministry of Health and Family Welfare, undertook a pilot research study in 1989, to ascertain whether homoeopathic medicines which are found to be effective in microbial infections, do have a role in the treatment and management of HIV infection.

The study was undertaken at the Regional Research Institute of Homoeopathy, Mumbai (May,1989) and Clinical Research Unit of Homoeopathy, Chennai (October,1991) with the following objectives: "to evaluate homoeopathic therapy in HIV infection". Treatment of HIV infected people referred by other Organisations engaged in the research in HIV/AIDS, to the Council's Headquarters Office in New Delhi, was also started in 1993-94. The results obtained during the pilot study prompted a randomized placebo controlled study at Mumbai (1995-97). In all 100 cases were studied in the two concurrently run studies. The results have already been communicated and published in British Homeopathic Journal (1999).

In view of non-contagious nature of the infection and absence of clinical manifestations in majority of the people reporting for the study, patients are being treated in the out-door patients department (OPD). Necessary safety precautions (practiced universally) were practiced while these patients are attended to. The individuals registered for studies are provided counseling with regard to their immune status, various aspects of the infection they are carrying and precautions they ought to take while engaged in social, personal and physical activities.

Brief Resume of The Work done prior to 2000-2001

Nine hundred seventy nine (979) HIV infected individuals were registered under the study till 31st March, 2000. Of these 405 were registered at the Regional Research Institute of Homoeopathy, Mumbai, 491 at the Clinical Research Unit, Chennai and 83 at New Delhi since March 1993). All the registered cases were reactive to repeat ELISA. Three hundred forty two (342) were confirmed by Western Blot/ Inolia test as well.

Achievements in the Year 2000-2001

During the year 1999-2000, 153 cases were registered for study. Of these, 66 were registered at the Regional Research Institute of Homoeopathy, Mumbai, 43 at the Clinical Research Unit of Homoeopathy, Chennai and 44 at New Delhi. The suspect mode of contraction of infection, as ascertained through interrogation of the patients and their family members, was as under (Table-1).

Table-1 Routes and Modes of Contraction of HIV Infection- 2000-2001

Mode of Transmission	*Number of Patients*
Sexual Contact	
Heterosexual	138
Homosexual	2
Blood/Blood product Transfusion	2
Infected needle / Syringes	
Materno-foetal	5
Others (not ascertainable)	4
Paediatrics	2
Total	153

Table-2 Showing the Clinical Status – 2000-2001

CDC Classification Clinical Status*	*At entry*
Stage-I Sero-conversion	—
Stage-II Asymptomatic	105
Stage-III Persistent generalized lymphadenopathy (PGL)	9
Stage IV-(a) AIDS Related Complex (ARC)	39
Stage-IV(b) ARC or AIDS with neurological manifestations	—
Stage-IV(c) opportunistic infections	—
Stage-IV(d)Malignancy	—
Stage-IV(e) Other conditions	—
Total	153

*Centers for Disease Control, Atlanta, USA

One hundred five (105) of these individuals, being symptom free, were treated with homoeopathic medicines whose pathogenesis corresponded with their inherent constitutional (mental/emotional and physical) attributes. Forty eight (48) cases presented with clinical manifestations characteristic of symptomatic phase viz. PGL-9 and ARC-39. These were treated on the basis of presenting signs and symptoms.

Results

Of the 1132 cases registered under the study on HIV/AIDS during the period from May,1989 to March, 2001, 695 have dropped out of the study. Four hundred thirty seven (437) cases continuing under the study are discussed here.

Of 437 cases, 232 reporting for regular follow up at Mumbai and New Delhi are discussed here. Of these 232 cases, 135 were asymptomatic at the time of entry. Forty four (44) of these have manifested progression of infection. Forty (40) have not reported for follow-up for long time. As such it was difficult to ascertain their status at the time of reporting. One case with ARC developed AIDS. 10 of 67 cases with ARC enrolled during the previous years improved during the course of study.

Table-3 Clinical Status of 232 Cases at Entry and at the Time of Reporting

CDC Classification / Clinical Status*	*At Entry*	*During Study*
Stage-I Sero-conversion	—	91
Stage-II Asymptomatic	136	44
Stage-III Persistent Generalized Lymphadenopathy (PGL)	29	56
Stage-IV(a) AIDS Related Complex (ARC)	67	

Stage-IV(b)	ARC or AIDS with Neurological Manifestations	—	—
Stage-IV(c)	Opportunistic infections (including AIDS))	—	01
Stage-IV(d)	Malignancy		
Stage-IV(e)	Other conditions(not specified) Not reported here (irregular follow up)		40
	Total	232	232

* The data pertains to the study at Mumbai and New Delhi. Corresponding data from Chennai is not available.

Homoeopathic Medicines Used

The following homoeopathic medicines were used during the course of study. Aloes, Antim crude, Antim ars., Ars. Alb., Arg. nit., Aurum met. , Belladonna, Bryonia, Calcarea Carb., Calcarea Phos., Calcarea sulph. Carbo veg., Carcinocin, Causticum, China, Cocculus, Cuprum met., Ferrum met., Gelsemium, Graphites, Guiacum, Hepar sulph., Ipecac., Kali bich., Kali carb., Lachesis, Ledum pal., Lycopodium, Medorrhinum, Merc. Sol., Mercurius, Nat. sulph., Natrum mur., Natrum phos., Nitric acid, Nux vomica, Phosphorus, Pulsatilla, Rhus tox, Rumex, Sepia, Sanguinaria can., Silicea, Sulphur, Syphilinum, Thuja, Tuberculinum and Veratrum album.

The medicines were prescribed in potencies varying from 30 to 10M and varying dosage depending on the potency used and on the basis of age and clinical status of the individual.

Discussion and Observations

In this series it was seen that patients who presented with minor infections such as oral candidiasis, cough, weakness, diarrhoea, weight loss etc. responded favourably to the homoeopathic therapy. Those registered with asymptomatic HIV infection, continuing to be asymptomatic for a period varying from 3 to 8 years.

Another factor which was seen to influence the well being of the subjects, both emotionally and physically, especially those registered at New Delhi, is sustained psychological support provided by the attending physician. Those subjects who entered into lengthy discussion about their disease status and learnt more as to what is beneficial for them and what is not, continue to be stable, physiologically and emotionally, and free of any infection(s) usually seen in patients with HIV. No adverse reactions to or side effects of homoeopathic medicine(s) have so far been observed.

The results obtained so far, therefore, suggest a definitive role of the homoeopathic medicines in asymptomatic HIV infection as also in the management of HIV related clinical conditions. The findings underscore the role of Homoeopathic medicines in inhibiting or delaying progression of infection and improving the quality of life of HIV infected individuals. These considerations are currently being accorded importance in the development of effective therapeutic agents for HIV disease.

Future Programme

A multicentric study with a common protocol and laboratory investigations is being planned.

21. HYPERLOW-DENSITY-LIPOPROTEINAEMIA

A. In General Areas

i) Disease related Clinical Research

In order to evaluate the efficacy of homoeopathic medicines in Hyper Low Density Lipoproteinaemia (LDL) study is being undertaken at Regional Research Institute, New Delhi from April,1992.

Achievements during the year 2000-2001

	New	*Old*
Number of cases studied	30	32
Improvement indices		
- improved		08
- markedly	02	15
- moderately	08	09
- mildly	15	--
- not reported	03	--
- under observation	02	

Observations

As can be seen from the table below the results obtained from the study are encouraging & confirm the efficacy of homoeopathic medicine in treatment of Hyper-low density Liproproteinaemia. Besides, the improvement of clinico-pathological findings, the associated complaints were also relieved thereby restoring the general health. The medicines found effective were *Abroma augusta, Bryonia, Calcarea carbonicum, Lycopodium, Nux vomica, Pulsatilla* and *Sulphur*. The project is continued.

	No. of cases *Before treatment*	*After treatment*
Total triglycerides more than 170mg/100 ml	48	32
Total cholesterol more than 200 mg/dl	53	29
LDL- more than 150 mg/100ml	12	07
VLDL- more than 50 mg/100ml	08	06
HDL- less than 35 mg/100ml	02	02

22. HYPERTENSION

A. In General Areas

i) Disease related Clinical Research

This project is being undertaken at Extension Unit of Drug Standardisation Unit, Hyderabad from April, 1990.

Achievements during the year 2000-2001

	New	*Old*
Number of cases studied	21	68
Improvement indices		
- improved		
- markedly	--	13
- moderately	--	21
- mildly	04	18
- status quo	--	08
- under observation	17	08

Improvement indices of follow up cases	
i) Only on homoeopathic medicines	12
- marked	06
- moderate	04
- mild	01
- not improved	01
ii) Advised to continue allopathic/ other system of medicine alongwith homoeopathic medicine:	56
- marked	07
- moderate	17
- mild	17
- not improved	07
- static after considerable change	08

Observations

Out of 68 follow up cases which are under study from 1 year to 8 years 7 months with their earlier blood pressure ranging from systolic 130 to 170 mm of Hg. and diastolic 90-110 mm of Hg. 13 cases are now under normal range i.e. systolic 130 to 160 mm of Hg and diastolic 80 to 100 mm of Hg. In 10 cases who were taking allopathic alongwith homoeopathic treatment, the allopathic drugs have been withdrawn and in 16 cases dosage of allopathic drugs have been reduced.. The homoeopathic medicines found useful were *Allium sativum*. *Baryta muriaticum*, *Bryonia*, *Lycopodium*, *Rauwolfia serp*. & *Spartium*. The project is continued.

23. INTERMITTENT FEVER

A. In General Areas

i) Disease related Clinical Research

The Council started this project at Clinical Research Unit, Port Blair in 1989 and Homoeopathic Research Institute, Jaipur in 1993 under the disease related clinical research programme. A small group of medicines which

were most effective in Intermittent Fever were identified with their reliable indications. Later on it was being studied as a drug related project but from 1998-99 the project has been modified according to the recommendations made in the 29th meeting of Scientific Advisory Committee of CCRH and being studied on Hahnemannian concept on the following lines:

1. Sporadic or epidemic
2. Epidemic in non-marshy places.
3. Pernicious intermittent fever (non marshy)
4. Endemic in marshy places

Achievements during the year 2000-2001

	New	*Old*
Number of cases studied	103	52
Improvement indices		
- cured	11	15
- improved		
- markedly	43	19
- moderately	30	15
- mildly	19	03

Observations

During the study it was observed that 90% of the cases registered were of sporadic nature. Besides the polychrest remedies *Arsenic album*, *China officinalis*, *Natrum muriaticum* etc. the indigenous medicines like *Amoora rohituka*, *Gentiana*, *Nyctanthes arbortristis* and *Caesalpenia bonducella* have also shown positive results but need further verification. The project is to continue.

24. IRON DEFICIENCY ANAEMIA

A. In General Areas

i) Disease related Clinical Research

In order to evolve a group of most efficacious medicines in Iron Deficiency Anaemia, a study was initiated by the Council at Regional Research Institute, New Delhi from April,1992 to June,2000. A total no. of 223 cases were registered out of which 185 were females and 160 out of these were in reproductive period of life. 121 cases were due to inadequate dietary intake, 82 cases due to menstrual blood loss and 20 due to parasitic manifestation. Diagnosis was done both on the basis of clinical sign/symptoms and pathological findings. Out of 172 reporting cases 60 have shown marked improvement, 42 moderate and 31 were mildly improved and 39 cases showed no improvement. Increase in Hb% upto 04 grm% was observed in 18 cases, upto 03 grm% in 06 cases, upto 2 grm% in 48 cases and upto 1 grm in 27 cases. The drugs found efficacious were Natrum muriaticum, Pulsatilla, Phosphorus, China, Ferrum metallicum, Calcarea carbonicum, Ferrum phosphoricum and Embelia ribes.The duration of treatment in responded cases varied from 1 to 5months.

25. IRRITABLE BOWEL SYNDROME

A. In General Areas

i) Disease related Clinical Research

This project is being studied at Clinical Research Unit, Port Blair from 1998-99.

Achievements during the year 2000-2001

Number of cases studied	25
Improvement indices	
- improved	
- markedly	10
- moderately	08
- mildly	07

Observations

During the year 2000-2001, 25 new cases were registered for study. Homoeopathy has proved to be effective in controlling the subjective and objective symptoms of the disease although it is yet to be verified pathologically. Homoeopathic medicines like *Argentum nitricum, Ipecac, Nux vomica* and *Phosphorus* have proved to be effective. The project is to continue.

26. JAPANESE ENCEPHALITIS

A. In General Areas

ii) Drug related Clinical Research

The preliminary controlled study was initiated on 15th Dec.,1997 in the districts of Gorakhpur in Eastern U.P. (where Japanese Encephalitis is endemic) with the aim and objective to see the effect of *Belladonna* 200 as prolphylactic in Japanese Encephalitis keeping in view the study conducted by CCRH in 1991. A research protocol for the study was formulated.

The study initially included two villages (with high density of Japanese Encephalitis in the previous epidemics). The prophylactic *Belladonna* in 200 potency single dose/weekly/monthly, a month prior to peak season was given to all the school children (who covered the inclusion and exclusion criteria). Simultaneously two neighbouring villages (as controls) were surveyed. A weekly follow up was done in both the groups (prophylactic and control) for about 3 months regularly. During the reporting period 1439 children were under control and 2043 were given prophylactic and in none of the cases studied under follow up infection was observed. During the period under report a team also visited Distt. Gonda for the treatment of Measles & Chicken Pox during the break out of epidemic. A total no. of 1484 cases were recorded in OPD of various diseases and treatment was provided according to the symptoms.

A small leaflet in Hindi which includes the cause of disease, carrier of disease, how the disease spreads, where the mosquito develops, after the bite of mosquito how many days it takes to develop the signs & symptoms of the disease, preventive measures, how to take the Homoeopathic prophylactic medicine and etc.has been printed by the unit for awareness of the general public.

This data is not sufficient enough, to come to any conclusion. Further epidemic reports may verify the prophylactic utility of *Belladonna*.The project is to continue.

27. MALARIA

A. In General Areas

i) Disease related Clinical Research

Keeping in view its importance from national health point, the Council has undertaken this research programme at Homoeopathic Research Institute, Jaipur since 1979.

Achievements during the year 2000-2001

	New	*Old*
Number of cases studied	101	87
Improvement indices		
- cured	17	14
- improved		
- markedly	41	33
- moderately	24	25
- mildly	19	15

Observations

Most of the cases of Malaria registered at the Institute were of Plasmodium vivax. The most effective medicines were *Alstonia constricta, Arsenic album, Caesalpenia bonducella, China officinalis , Natrum muriaticum* and *Nyctanthes arbortristis*. It is also observed that the response to treatment is much earlier in recent attacks of malaria than in those cases who have history of chloroquine treatment.The project is to continue.

B. In Tribal Areas

To clinically evaluate the action of the following drugs on Malaria :

Alstonia constricta, Amoora rohituka, Aranea diadema, Chininum sulphuricum, Chirata, Luffa bindal, Malaria officinalis, Ostrya virginica, Trichosanthes dioca, Vitex negundo.

The project is being undertaken at Clinical Research Unit (Tribal) at Aizawl and Diphu.

Achievements during the year 2000-2001

Number of cases studied	76
Number of cases found effective in	44

Observations

Homoeopathic medicines *Alstonia constricta, Chininum sulphuricum, Gentiana chirata, Aranea diadema* and *Malaria officinalis* were found to be the most effective from the group of assigned medicines and covered 60% of the improved cases.

28. MALPOSITION OF HUMAN FOETUS

A. In General Areas

i) Drug related Clinical Research

To clinically evaluate the efficacy of *Pulsatilla nigra* 200 in correcting the Malposition of Human Foetus.

The homoeopathic medicines have a great value in the field of obstetrics, especially *Pulsatilla nigra* which is prominently a female remedy and reported to have a power to correct the abnormal position of human foetus. In

order to conduct a scientific study the Council has undertaken this project at Clinical Research Unit, Varanasi where all the research cases are being received as referred cases by consultants of modern medicine

Achievements during the year 2000-2001

Number of cases studied	30
Medicine	Pulsatilla nigra 200
Dosage	Two doses once in a week after 28th week of gestation.
Improvement indices	
- responded	06
- not responded	12
- not reported	05
-under observation	07

Observations

During the course of studies it has been observed that the drug *Pulsatilla* 200 was effective in correcting the abnormal foetal position in 06 out of 30 cases studied. The results obtained are useful and confirm the available indication for its use and also directs that trials may be made for correcting the foetal malposition before attempting the surgical manipulation. But this needs repeated verification before making such trials. The project is to continue.

29. MENORRHAGIA

A. In General Areas

ii) Drug related Clinical Research

To study the efficacy of following medicines in Menorrhagia.

Ficus religiosa, Erigeron, Geranium maculatum, Ledum pal, Thlaspi bursa pastoris and *Trillium pendulum.*

This study is being undertaken at Clinical Research Unit, Varanasi since 1987.

Achievements during the year 2000-2001

Number of cases studied	38
Dosage	5 to 8 drops thrice daily for 15 days and repeat the same for 15 days for 3 subsequent months
Improvement indices	
Ficus religiosa	
- improved	
- markedly	07
- moderately	09
- mildly	03
- not improved	03
- not reported	05
- under observation	02
Geranium maculatum	
- improved	
- markedly	06
- moderately	04
- mildly	05
- not improved	04
- not reported	04
- under observation	01
Thlaspi bursa pastoris	
- improved	
- markedly	08
- moderately	05
- mildly	04
- not improved	04
- not reported	
- under observation	01
Trillium pendulum	
- improved	
- markedly	02
- moderately	01
- mildly	02

Observations

It was observed that the assigned medicines, *Ficus religiosa, Geranium maculatum ,Thlaspi bursa pastoris* and *Trillium pendulum* were found effective in improving the subjective and objective symptoms. Increase in haemoglobin level ranging from 1 to 3 grm% was seen in 09 cases.The project is to continue.

A. In General Areas

ii) Drug related Clinical Research

A study to ascertain the efficacy of Homoeopathic medicines in the treatment and management of Osteoarthritis is in progress at Regional Research Institute, Gudivada (A.P.) since 1984 , Clinical Research Unit, Patiala (Punjab) since 1979 and Central Research Institute, Kottayam from July, 2000.

30. OSTEO ARTHRITIS

Achievements during the year 2000-2001

	New	*Old*
Number of cases studied	128	105
Improvement indices		
- improved		
- markedly	06	05
- moderately	38	61
- mildly	46	27
- not reported	14	--
- not improved	01	12
- under observation	23	--

Observations

The cases which reported with tenderness of joints, pain and stiffness of the joints was markedly improved and controlled with *Causticum, Rhus toxicodendron* and *Bryonia* ,and some cases were completely free of complaints leading to comfortable life. 25 cases showed steady and significant rise in haemoglonbin levels ranging from (.5 gm% to 7 gm%) indicating improvement in general health. The project is to continue.

ii) Drug related Clinical Research

To clinically evaluate the efficacy of following medicines in Osteoarthritis

Bryonia.Thuja.Calcarea carbonicum.Formica rufa.Rhus toxicodendron.Viscum album. Lycopodium. Guaiacum.Causticum. Viola odorata. Calcarea fluoricum and *Cassia sophera.*

The study is undertaken at Regional Research Institute, Gudivada and Clinical Research Unit, Patiala from 1996-97.

Achievements during the year 2000-2001

	New	*Old*
Number of cases studied	94	95
Improvement indices		
- improved		
-markedly		08
-moderately	--	51
-mildly	12	36
- under observation	49	--
- not reported	18	--
	15	

Observations

Improvement in pain and stiffness associated with gastric derangements have been markedly controlled in 50 to 90% patients of Osteoarthritis but this needs long follow up. *Rhus toxicodendron* and *Bryonia alba* are the most

effective of the assigned medicines and also follow each other well. Besides these *Formica rufa, Causticum* and *Calcarea carbonicum* were also found effective. The reliable indications of these medicines have been verified, but need reconfirmation. The project is to continue.

B. In Tribal Areas

To clinically evaluate the action of the following drugs on Osteoarthritis :

Actea spicata, Angustura vera.Calcarea fluorica, Caulophyllum, Formic rufa, Formic acid, Gaultheria, Guaicum, Lithium carbonicum, Magnolia grandiflora, Malaria officinalis,Medorrhinum, Osteoarthritis nosode, Radium bromatum, Rhamnus, Stellaria media, X-ray.

This project is being undertaken at Clinical Research Units (Tribal) at Pondicherry and Vijaywada.

Achievements during the year 2000-2001

Number of cases studied	182
Number of cases found effective in	117

Observations

It was observed that *Radium bromatum, Lithium carbonicum, Angustura vera, Formica rufa and Actea spictata* were found to be the most effective from the group of assigned medicines in Osteoarthritis .

32. PEPTIC ULCER

B. In Tribal Areas

To clinically evaluate the action of the following drugs on Peptic Ulcer.

Acetic acid, Atropine, Condurango, Corticotropine, Euphorbium, Hydrocyanic acid, Symphytum, Uranium nitricum.

This project is being undertaken at Clinical Research Unit (Tribal), Pondicherry.

Observations

During the year 2000-2001, 75 cases were registered for study and 27 cases were improved in varying degrees with prescription of the assigned group of medicines. *Acetic acid, Condurango, Atropine* and *Hydrocyanic acid* were found to be most effective.

33. PROSTATE ENLARGEMENT

A. In General Areas

i) Disease related Clinical Research

In order to evolve a group of most efficacious medicines in prostate enlargement, a study has been taken up by the Council on scientific lines at Homoeopathic Research Institute, Jaipur from 1996-97.

Achievements during the year 2000-2001

	New	*Old*
Number of cases studied	17	22
Improvement indices		
- improved		
- markedly	04	03
- moderately	06	09
- mildly	04	07
- not improved	03	03

Observations

The homoeopathic medicines showed improvement in both subjective and objective symptoms. The indicated homoeopathic medicines like *Thuja* and *Conium* in varying potencies provided immense symptomatic relief. Besides these organ remedy, *Sabal serrulata* in mother tincture was also prescribed to be taken twice or thrice a day and found effective. The patients experienced improvement in frequency of urination and discomfort in retaining the urine. The results are encouraging and the study is continued.

34. RENAL CALCULI

A. In General Areas

a) Disease related Clinical Research

The project has been undertaken at Clinical Reseach Unit, Imphal since 1987.

Observations

15 new cases were registered during the year 2000-2001. Of these 02 cases improved markedly, 05 cases improved moderately and 06 cases improved mildly. The cases showed improvement in haematuria, burning micturition and episodes of pain. The enumerated medicines have been found effective in controlling these symptoms and the same group was also found effective during the preceding years but is being further verified.The project is to continue.

35. RHEUMATOID ARTHRITIS

A. In General Areas

a) Disease related Clinical Research

This project is being studied at Clincal Research Unit, Udupi since 1988-89.

Achievements during the year 2000-2001

	New	*Old*
Number of cases studied	06	41
Improvement indices		
- improved		
- markedly		25
- moderately	04	12
- mildly	02	04

Observations

Clinical studies have shown that besides the improvement of subjective symptoms like pain, swelling of joint, anorexia, pain agg. movement and weakness disappeared in 41, 41, 04, 41 and 09 cases respectively and the objective symptoms like tenderness, morning stiffness, weight loss and fever disappeared in 41, 19, 05 and 02 cases respectively etc. The pathological investigations were also found to be improved for increased E.S.R in 43 cases and anaemia in 31 cases.The number cases include both new as well as old cases. The project is continued.

36. RHINITIS

B. In Tribal Areas

To clinically evaluate the action of the following drugs on Rhinitis.

Anemopsis californica, Anthemis nobilis, Aurum muriaticum, Justicia adhatoda, Lemna minor, Menthol, Quillaya, Sanguinaria nitrica, Saponaria, Sinapis nigra, Theridion.

This project is being undertaken at Clinical Research Units (Tribal) at Shillong, Jagdalpur and Bharuch.

Achievements during the year 2000-2001

Number of cases studied	147
Number of cases found effective in	84

Observations

The most effective of the assigned medicines were *Lemna minor, Justicia adhatoda* and *Sanguinaria nitrica* covering almost 86% of the improved cases.

37. SICKLE CELL ANAEMIA

A. In General Areas

i) Disease related Clinical Research

A systematic study to explore the scope of homoeopathic medicines in Sickle Cell Anaemia on scientific lines was started by the Council in 1987-88 at Clinical Research Unit located in a tribal pocket of Sambalpur in Orissa, where sickle cell trait is found amongst the tribals.

The study is being conducted on following lines:

1. Survey: Survey of all the villages in and around Sambalpur town in order to collect the blood samples of the families identified for their sickness and detailed data to be maintained.
2. Curative: The patients having sickle cell trait or disease to be given constitutional and symptomatic treatment under an approved research protocol.

Achievements during the year 2000-2001

	New	*Old*
Number of cases studied	54	205
Improvement indices		
- improved		
- markedly	--	31
- moderately	--	64
- mildly	38	73
- not improved	03	33
- not reported	13	04

Observations

It is seen that homoeopathic medicines like *Bryonia* 30,200,1M, *Rhus tox* 200,1M, *Magnesia phos.* 6X,30,200, *Lycopodium* 30,200, *Calcarea carbonicum* 30,200,1M, *Natrum muriaticum* 30,200, *Vanadium* 30,200, *Chelidonium* 30, *Tuberculinum* 200 etc. are capable of controlling the symptoms of the diseases so much so that the patients remain asymptomatic for years together.

Out of 205 old cases, 37 cases who took blood transfusion before homoeopathic treatment only 05 cases needed further blood transfusion and 30 cases did not require any further blood transfusion. It is seen that cases who improved required less acute medicines like *Kalmegh* Q for their complaints. No recurrence of complaints was observed in 81cases for the last 1 year to 3 years, in 09 cases for the last 03 to 05 years and in 05 cases for the last 05 to 09 years. The project is to continue.

38. SINUSITIS

A. In General Areas

i) Disease related Clinical Research

In order to evaluate the action of homoeopathic medicines in Sinusitis, the Council has undertaken this project at Clinical Research Unit, Chennai since 1987.

Achievements during the year 2000-2001

	New	*Old*
Numbr of cases studied	34	16
Improvement indices		
- improved		
- moderately		09
- mildly	--	07
- under observation	--	--
	34	

Observations

The homoeopathic medicines *Belladonna, Natrum muriaticum,Hepar sulphuris, Lycopodium* and *Kali bichromicum* in varying potencies helped in improving and in some cases disappearance of subjective and objective symptoms. The acute exacerbation of attack was controlled by *Ammonium carbonicum* 30, *Bryonia* 30, *Sambucus* 30 and *Spigelia* 30. The frequency, intensity and duration of subsequent attacks was reduced with the help of indicated homoeopathic medicines. The project is continued.

B. In Tribal Areas

To clinically evaluate the action of the following drugs on Sinusitis :

Anemopsis californica, Anthemis nobilis, Aurum muriaticum, Justicia adhatoda, Lemna minor, Menthol, Quillaya, Sanguinaria nitrica, Saponaria, Sinapis nigra, Theridion.

This project is being undertaken at Clinical Research Units (Tribal) at Gangtok and Vijayawada.

Achievements during the year 2000-2001

Number of cases studied	104
Number of cases found effective in	83

Observations

During the reporting year the most effective of the assigned medicines were *Justicia adhatoda, Lemna minor* and *Sinapis nigra*. This group covered almost 92% of the improved cases.

39. SKIN DISORDERS

A. In General Areas

i) Disease related Clinical Research

In order to evolve a group of most effective medicines in various skin disorders such as allergic dermatosis, psoriasis, urtircaria etc. the Council has undertaken research studies at Clinical Research Unit, Gurgaon since 1982, Clinical Research Unit, Patiala since 1985 and Clinical Research Unit, Gorakhpur from April, 2000.

Achievements during the year 2000-2001

	New	*Old*
Number of cases studied	154	33
Improvement indices		
- improved	47	15
- markedly	32	05
- moderately	38	02
- mildly	04	--
- not improved	04	--
- not reported	29	11
- dropped out	51	

Observations

The homoeopathic medicines found effective in various types of dermatitis e.g. *Sepia* and *Sulphur* in Urticaria; *Petroleum* in Contact dermatitis; *Hydrocotyle* in Allergic dermatitis; *Sulphur, Sepia, Mercurius solubilis* and *Hydrocotyle* in Photodermatitis; *Hydrocotyle, Sepia* and *Petroleum* in Pompholyx. No recurrence was observed in 46 cases. The project is continued.

B. In Tribal Areas

To clinically evaluate the action of the following drugs on Skin Disorders :

Alnus, Anthrakokali, Arbutus andrachne, Arsenicum iodatum, Berberis aquifolium, Euonymus atropurpurea, Euphorbium, Hygrophilla spinosa, Iodothyrine, Kali arsenicum, Kali bichromicum, Mercurius dulcis, Oleander, Skookum chuck and *Strychninum arsenicum.*

This project is being undertaken at Clinical Research Units (Tribal) at Aizawl, Jagdalpur, Bharmour, Itanagar, Ranchi, Salem, Siliguri and Diphu.

Achievements during the year 2000-2001

Number of cases studied	459
Number of cases found effective in	386

Observations

During the reporting year, 59% of thc cases improved on treatment with assigned medicines. The most effective of them were *Arsenicum iodatum, Anthrakokali, Berberis aquifolium, Kali arsenicum, Hygrophilla spinosa, Oleander* and *Skookum chuck.*

40. TONSILLITIS

A. In General Areas

i) Disease related Clinical Research

The Council has undertaken a research scheme to study the efficacy of homoeopathic medicines in cases of Tonsillitis at Clinical Research Unit,Gurgaon since1982,Clinical Research Unit, Chennai since 1987 and Clinical Research cum Epidemic Cell, Bhopal.

Achievements during the year 2000-2001

	New	*Old*
Number of cases studied	68	17
Improvement indices		
- cured	--	02
- improved		
- markedly	15	--
- moderately	12	05
- mildly	06	10
- under observation	35	--

Observations

Seveteen (17) old cases of tonsillitis have been given the status of cure. After treatment it was observed that acute attack resolved within 7 to 15 days and in chronic tonsillitis there was relief within 1 to 6 months.Marked reduction in the frequency, duration and intensity of attacks was also observed. *Belladonna , Bryonia, Lycopodium* and *Mercurius solubilis* were observed to control the acute attack effectively. The project is continued.

B. In Tribal Areas

To clinically evaluate the action of the following drugs on Tonsillitis

Ailanthus, Amygdalus amara, Apis mellifica, Cantharis, Echinacea, Guaiacum, Gymnocladus, Streptococcin, Tuberculinum.

The project is being undertaken at Clinical Research Units (Tribal) at Aizawl, Idukki and Shillong.

Achievements during the year 2000-2001

Number of cases studied	154
Number of cases found effective in	84

Observations

During the reporting year, *Tuberculinum, Ailanthus, Echinacea, Guaiacum, Cantharis* and *Apis mellifica* were found to be the most effective of the assigned medicines.

41. UPPER RESPIRATORY TRACT INFECTION

A. In General Areas

i) Disease related Clinical Research

The Council has undertaken a research scheme to study the efficacy of homoeopathic medicines in cases of Upper Respiratory Tract Infection which is one of the main problems in tropical and developing countries. This includes diseases of ear, nose and throat and is being undertaken at Clinical Research cum Epidemic Cell, Bhopal from April, 2000.

Another project on "Clinical trial of the effectiveness of Homoeopathic medicines in the management of Upper Respiratory Tract Infections -a comparative study with modern medicine" is being undertaken at an extension unit of Drug Standardisation Unit , Hyderabad.

Achievements during the year 2000-2001

Acute Rhinitis*

	New
Number of cases studied	52
Improvement indices	
- cured	03
- improved	
- markedly	39
	53

- moderately	01
- mildly	03
- not improved	01
- not reported	05

Achievements during the year 2000-2001
Laryngitis/Common cold & Cough *

	New
Number of cases studied	44
Improvement indices	
- improved	
- markedly	
- moderately	01
- mildly	27
- not improved	10
- not reported	02
- under observation	01
	03

** The report refers to study conducted at CREC Bhopal.*

Observations

In cases of Acute Rhinitis, 43 cases have shown marked to mild improvement and 03 cases are cured.The duration of treatment varied from 15 to 20 days and homoeopathic medicines found effective were *Justicia adhatoda, Lemna minor* and *Kali iodatum*. In cases of Laryngitis/common cold & Cough, 38 cases have shown marked to mild improvement and 03 cases are cured.The homoeopathic medicines found effective were *Justicia adhatoda, Bryonia, Belladonna*, and *Arsenic iodatum*.The project is to continue.

During this reporting year April 2000 to March 2001 under the project on comparative study with modern medicine, 44 cases of URTI were taken up for clinical trial of Homoeopathic medicine and 45 cases for allopathic study referred from ENT OPD of the hospital. Out of these 44 cases of URTI , 09 cases were of Laryngitis, 10 cases of Pharyngitis, 11 cases of Rhinitis, 03 cases of Tonsillitis & 11 cases of Sinusitis. Many cases were found effective with *Kali bichromicum, Hepar sulphuris, Allium cepa, Natrum muriaticum, Arsenic iodatum, Causticum, Teucrium* and *Belladonna*. The project is continued.

42. VITILIGO

A. In General Areas

i) Drug related Clinical Research

To clinically evaluate the efficacy of *Ars .Sulph. Flavum* in Vitiligo.

This project is being undertaken at Clinical Research Unit, Tirupati from April,1987.

Achievements during the year 2000-2001

	New	*Old*
Number of cases studied	79	62
Potencies 30,200,1M,10M,50M,CM		
Improvement indices	06	12
- cured		15
- improved	11	11
- markedly	17	15
- moderately	19	--
- mildly	07	
- not improved	19	
- under observation		

Observations

Vitiligo, being a chronic disease requires long treatment and follow up. Out of sixty six (62) old cases which have been followed up from one to eight years 12 cases have been cured and 41 cases have shown varying degrees of improvemet with *Arsenic sulph. flavum*. Six cases which were registered in the reporting year have been given the status of cure as the vitiligous patches have disappeared after treatment but are still under follow up. The project is continued.

B. In Tribal Areas

To clinically evaluate the action of the following drugs on Vitiligo.

Arsenic sulphuratum flavum and *Syphilinum*

This project is being undertaken at Clinical Research Unit, Salem.

Achievements during the year 2000-2001

Number of cases studied	31
Number of cases found effective in	17

Observations

Of the assigned medicines, *Arsenic sulph. flavum* in 30 potency was found effective in 17 cases out of 29 cases who were prescribed this medicine during the reporting period.

CLINICAL RESEARCH IN EPIDEMICS

Medical Relief to the People Affected by Earthquake in Gujarat

The Council provided medical treatment to the victims of earthquake affected areas at Ahemdabad, Bharuch and Surat in Gujarat. Dr. Vikram Singh, Asstt. Director and Dr. Murlidharan, Asstt. Research Officer from Regional Research Institute, Mumbai were deputed at Ahmedabad. Nearly 100 cases of non-operated fracture cases and operated fracture cases were attended to on 29.1.2001 and 30.1.2001 and provided homoeo-pathic treatment for early union of bones and healing of wounds. Some of these cases had complications like intervertebral compression, pneumo-thorax, paraparesis and paraplegia also. Homoeopathic medicines like Arnica, Symphytum, Hypericum, Bryonia, Lachesis and Staphisagria were helpful in relieving the complaints of the patients. These patients were allotted by the Superintendent of the Civil Hospital at Ahemdabad. The team took the help and support of the local homoeopathic medical college management for medicines and other supporting staff.

A team comprising of Dr. V.A. Siddiqui, Dr. A.K. Tyagi and Smt. K.B. Desai from Clinical Research Unit, Bharuch (under CCRH) provided medical treatment to the victims in the affected areas of Bharuch and Surat. The team contacted the medical authorities at Zila Panchayat and the worst affected village Jambusar Taluka was identified where 9 persons had died and nearly 100 persons injured due to collapse of houses and buildings. One hundred and ten cases with various complaints like abrasions, shock, minor injuries, fear psychosis etc. were provided homoeopathic treatment at this village from 31st January to 1st February, 2001 and one hundred eighteen cases were attended to at Bharuch on 29th & 30th January, 2001.

CLINICAL VERIFICATION RESEARCH PROGRAMME

Clinical Verification Programme is being continued since last few years and 65 drugs are allotted to Instts./ Units engaged in Clinical Verification Research for clinical trials. These sixty five drugs include drugs mainly of indigenous origin or drugs proved by CCRH. A few of lesser known drugs are also included. Source literature for verification has also been fixed and are mentioined against each symptom.

Institutes/Units engaged in Clinical Verification Research

Clinical Verification Unit, Ghaziabad, Clinical Verification Unit, Patna, Clinical Verification Unit, Vrindavan, Clinical Research Unit (H), Jammu, Homoeopathic Drug Research Institute, Lucknow, Regional Research Institute of Homoeopathy, New Delhi and Homoeopathic Research Institute for Malaria, Jaipur.

Source of Literature of these drugs

1. Clarke's Materia Medica
2. Hering's Guiding Symptom
3. Allen's Encyclopedia
4. Boericke's Materia Medica
5. Provings by Dr. Jugal Kishore
6. Provings by Dr. D.N. Ray
7. Drugs of Hindoosthan by Dr. S.C. Ghose
8. Provings conducted by CCRH
9. CCRH Quarterly Bulletin Vol. 9 (1&2) 1987

HOMOEOPATHIC DRUGS UNDER TRIAL IN CLINICAL VERIFICATION PROGRAMME

1. Acalypha indica*
2. Achyranthes aspera
3. Aegle folia*
4. Aegle marmelos*
5. Alstonia constricta
6. Amoora rohituka or Andersonia
7. Amygdalus persica
8. Anthrakokali
9. Aranea diadema*
10. Aranea scinencia*
11. Arsenicum sulph flavum
12. Azadirachta indica*
13. Bacillinum
14. Baryta muriaticum
15. Benzinum nitricum
16. Benzoicum acidum
17. Blatta orientalis
18. Boerhaavia diffusa*

19. Cassia fistula*
20. Cynodon dactylon*
21. Caesalpaenia bonducella
22. Calotropis gigantea
23. Cannabis indica
24. Cannabis sativa
25. Carica papaya
26. Cephalandra indica
27. Cuprum aceticum
28. Damiana
29. Embelia ribes
30. Ephedra vulgaris
31. Fagopyrum esculentum
32. Ferrum picricum
33. Gallicum acidum
34. Gymnema sylvestre
35. Glycyrrhiza glabra*
36. Hecla lava
37. Holarrhena antidysenterica*
38. Hydrocotyle asiatica*
39. Hygrophilla spinosa
40. Iris tenax
41. Jaborandi
42. Jacaranda caroba
43. Jalapa
44. Juglans regia
45. Kali muriaticum*
46. Lac caninum
47. Lapis alba*
48. Magnesia sulphuricum*
49. Mangifera indica*
50. Mentha piperata
51. Mygale*
52. Nyctanthes arbortristis
53. Phyllanthus niruri*
54. Saraca indica
55. Sarsaparilla
56. Syzygium jambolanum
57. Tarentula cubensis*
58. Tarentula hispanica*
59. Tela aranea*
60. Terminalia arjuna*
61. Terminalia chebula*
62. Thea chinensis*
63. Theridion*
64. Tylophora indica*
65. Viscum album

Achievements during the year 2000-2001

A total number of 18,892 research cases have been registered during this year in the institutes and units undertaking this programme. The symptoms which have been verified under each drug during the reporting period are mentioned in the tabulated form. Only those symptoms have been mentioned which were verified during this year, no old symptoms verified during the previous years are mentioned.

* Drugs proved by Council

Potency: Q, 6,30, 200, 1M

Name of drug: Acalypha Indica

Location	*Symptom*	*Source*	*Duration of signs/ symptoms*	*No. of pts. Prescribed*	*No. of pts. relieved*	*Duration of treatment*
1	2	3	4	5	6	7
Stomach	Thirst increased	8	7d-1m	05	05	7d-1m
Abdomen	Griping pain in abdomen	4	10-20d	13	12	6-12d
Rectum	Bleeding piles	4	15d	09	08	7-15d
Respiratory System	Cough with expectoration with bloody mucus,breathlessness	4,1	2m-1y	56	53	7-15d
Neck	Cervical glands enlarged	8	1m	01	01	15d

Potency: Q, 3x, 6, 30

Name of drug: Achyranthes aspera

1	2	3	4	5	6	7
Nose	Coryza, thin watery	2	7-15d	14	13	15-21d
Rectum	Loose stools, frequent	4,7	1m	13	10	7-15d
Fever	Fever with chill, vomiting, burning	8	10-15d	61	55	5-7d
Skin	Boils, recurrent, red painful, suppuration	7	1m-1y	18	17	15d
General	Heat,burning feeling all over body	9	3-6m	38	35	1-2m

Potency: Q, 6, 30

Name of drug: Aegle folia

1	2	3	4	5	6	7
Nose	Watery nasal discharge	8	10d	31	25	7-10d
Throat	Pain in throat with cough, yellow sputum	8	2-3m	30	22	15d
Stomach	Eructations,sour	9	2-5y	132	118	15d-3w
	Heartburn	8	3m-2y	05	05	15d
	Anorexia	3	1m	71	53	7-15d

d=days, w=week, m=month, y=year

Abdomen	Pain in abdomen-epigastric,umbilical	8	2m-6y	51	38	7d-2m
Rectum	Bleeding piles	-	2m-6y	24	11	1m
	blind piles	9	45-60d	18	13	45-50d
	Stools, scanty, loose mixed with blood	7	1y-2y	51	47	1m
	- alternate constipation and diarrhoea	5	21d	179	160	8d-30d
Back	Pain lumbo-sacral agg.exertion,evening	8	15d	02	02	15d
	Bodyache agg.walking, exertion	9	7m	02	02	15d
Fever	Fever without chill with cough and cold	8	1-6d	20	16	3-12d

Name of drug: Aegle marmelos **Potency: Q, 3x, 6, 30,200**

1	2	3	4	5	6	7
Head	Headache with heaviness	8	2-1	1/2y	07	06 1m
Stomach	Anorexia	1	6m-2y	107	100	3-20d
	Indigestion, sour eructations	1	2d-1m	32	30	2-20d
Rectum	Unsatisfactory stool	8	1y	09	08	15d
	- constipation	8	1y	79	68	3-35d

Name of drug: Alstonia constricta **Potency: 6, 30, 200**

1	2	3	4	5	6	7
Mouth	Bitter taste	6	4d-30d	08	08	7-15d
Rectum	Stool – loose with pain in abdomen	8	2-6d	29	25	3-7d
	- fever with diarrhoea	4	4-8d	14	14	7-15d
	- bloody stools	2	8d	14	14	7-15d
Genitalia	Leucorrhoea	4	4m-1y	05	04	10-45d
	Female thin, white, profuse					

Name of drug: Amoora rohituka **Potency: 3x, 6, 30,200**

1	2	3	4	5	6	7
Mind	Memory, weakness of	7	1-4m	27	22	1-3m
Head	Headache with weak feeling in palms and soles	7	3y	08	04	1m
	- giddiness	8	1-3m	18	17	15 d
Rectum	Constipation	7	1y-3y	35	18	8d-1m
Genitalia	Leucorrhoea	7	1m-2m	13	06	8-45d

Name of drug: Amygdalus persica **Potency: Q , 30**

1	2	3	4	5	6	7
Head	Headache, bursting, frontal region,agg. hot liquids	10	6m-3y	10	06	8-20d
Stomach	Acidity, eructations agg. fried things	10	2y	21	21	7d-15d
	Vomiting, watery mucus	10	2y	10	10	7d
	with painless loose stool and bodyache	10	3-7d	10	08	2-10d
	Constant nausea	4	2-7d	42	39	7-15d

Name of drug: Anthrakokali **Potency: 6, 30, 200**

1	2	3	4	5	6	7
Nose	Cracks on nostrils with ulceration	11	7d-11m	16	16	15-30d
Extremities	Rheumatic pains in joints	1	1m-1 1/2y	15	06	7d-1m
Skin	Vesicular eruptions with itching , watery discharge	1	15d	80	61	15d
	Bleeding from eruptions with burning pain	1	10d-6m	15	12	7-15d

Name of drug: Aranea diadema — **Potency: 6, 30**

1	2	3	4	5	6	7
Head	Vertigo with darkness before eyes and pain in nape of neck	4	2m	41	21	1m
Genitalia	Leucorrhoea,thick, white	4	6m-1y	02	02	15d
	with lumbosacral pain	4	6m-1y	03	02	15-30d
Back	Cervical Spondylosis	8	2m-3y	22	17	15-30d
Extremities	Pain heels agg. walking, standing, night	8	2d-1y	06	05	1m
General	Susceptibility to take cold, chill feeling	4	1y-3y	09	07	8d-3m

Name of drug: Aranea scinencia — **Potency: 30**

1	2	3	4	5	6	7
Head	Headache,	2	15d-1m	23	17	3-15d
	nervous hypertension	2	1y-2y	05	03	8d-1m
Mouth	Salivation	1	5-10d	03	02	7-30d
Respiratory System	Dry cough	8	3-20d	11	10	3-20d
	Cough with headache, pain in chest	8	4-10d	03	03	5-6d
Sleep	Sleepiness	4	7-25d	19	15	7-15d

Name of drug: Arsenic sulph flavum — **Potency: 6, 30,200**

1	2	3	4	5	6	7
Head	Headache, violent,pulsating agg.pressure	1	3m	08	05	15d
Extremities	Pain in joints with stiff feeling	9	2m-1y	60	55	1-6m
Skin	Leucoderma on whole body	8	3m-19y	23	08	1-3m
	Ringworm like patches	4	2d-7y	32	18	3-40d

Name of drug: Azadirachta indica — **Potency: 6, 30,200**

1	2	3	4	5	6	7
Head	Headache- bursting, throbbing, stabbing	8	10d	47	43	7d
	Headache with palpitation	8	10d	02	02	7d
	Vertigo agg. rising	8	6m-1y	03	03	1-2m
Fever	Fever with chill	8	2-3d	152	106	3d

Name of drug: Bacillinum — **Potency: 30, 200, 1M**

1	2	3	4	5	6	7
Head	Alopecia areata	2	3m-1y	46	40	2-4m
Nose	Coryza - watery with	8	1-10y	08	08	15-60d
Abdomen	Pain abdomen with anxiety	4	3-4m	02	02	15d
Respiratory System	Cough with expectoration	4	2m-5y	07	06	15d
	thick pale yellow	4	2m-5y	04	04	15d
	- glands enlarged	5	1y	159	150	60d
Skin	Ringworm with itching	8	1y	03	03	1m

Name of drug: Baryta muriaticum — **Potency: 6, 30**

1	2	3	4	5	6	7
Head	Headache with hypertension	4	6m-12y	14	11	15d-2m
Ear	Otorrhoea	7	7-30d	10	08	3-10d
Teeth	Throbbing pain in teeth	1	3-7d	10	08	3-7d
Urinary System	Frequent urination agg. night	1	1m-3m	06	03	8d-1m

Name of drug: Benzoicum acidum — **Potency: 6, 30, 200**

1	2	3	4	5	6	7
Mind	Depression	4	10d-1m	06	06	10-15d
Urinary System	Burning urination	4	2-8y	10	08	30-45d
	Offensive urine with burning urine	4	15d-6m	25	25	10d-1m

Back	Pain, nape of neck	4	2-10m	02	01	15d
Skin	Blackish pigmentation on face	6	2-3y	45	39	2-3m
General	General weakness	1	15-30d	30	22	3-15d

Name of drug: Benzinum nitricum **Potency: 6, 30**

1	2	3	4	5	6	7
Head	Giddiness with trembling	1	1-3m	06	06	3-6m
Larynx & Trachea	Stammering	1	6m-1y	02	02	7-20d
Back	Stiffness of neck	1	1-3m	04	04	3-6m

Name of drug: Blatta orientalis **Potency: 6, 30**

1	2	3	4	5	6	7
Nose	Coryza,thin,watery	4	15d-1m	46	45	7-25d
Rectum	Constipation	4	10d	08	08	3-10d
Respiratory System	Cough with difficult respiration,wheezing, rattling, vomiting with dyspnoea	4	1m-10y	127 103	7-15d	
	Pain in chest on coughing	4	10d	08	08	3-10d

Name of drug: Boerhaavia diffusa **Potency: 30**

1	2	3	4	5	6	7
Head	Headache	9	4d-2m	32	26	3d-2m
	Vertigo with hypertension		7-30d	30	18	3-10d
Chest	Hypertension with puffiness of face, palpitation & anxiety	4,7	5y	41	31	15-30d
	Pain in chest	4	10m-1y	10	10	5-15d

Name of drug: Caesalpenia bonducella **Potency: 30**

1	2	3	4	5	6	7
Mind	Depression	4	3-30d	13	08	3-20d
Fever	Intermittent	7	20-30d	35	27	7-15d
	- with enlarged liver, painful	8	1-2m	15	15	25-30d
	Weakness after fever	5	20d-2m	68	61	30d
	Fever with thirst	5	15d	52	44	10d-1m

Name of drug: Calotropis gigantea **Potency: 6, 30**

1	2	3	4	5	6	7
Throat	Throat, lips dry	1	3-7d	05	05	3-10d
Rectum	Worms	7	3d-6m	08	06	8-28d
Chest	Breathlessness agg. ascending, amel. rest	7	1-2y	03	02	15d

Name of drug: Cannabis indica **Potency: 30, 200**

1	2	3	4	5	6	7
Head	Vertigo	1	7-15d	01	01	5d
Respiratory System	Difficulty in breathing	4	15d-3y	02	01	10-20d

Name of drug: Cannabis sativa **Potency: 30**

1	2	3	4	5	6	7
Eyes	Pain in eyeballs	1	3-15d	06	04	3-7d
Rectum	Constipation	1	15-30d	33	28	7-15d
Genitalia Male	Spermatorrhoea with amorous dreams agg. night	4	2y	20	16	14-20d
Larynx & Trachea	Stuttering	4	2m-3y	04	03	27-80d
Chest	Palpitation	4	10-30d	05	05	4-10d
	Oppression of breathing	4	7-30d	28	25	7-20d
Extremities	Cramps in thighs and legs	1	1-3m	28	23	3-30d
Sleep	Sleep disturbed due to cough	4	10-20d	13	12	4-10d

Name of drug: Carica papaya **Potency: 6**

1	2	3	4	5	6	7
Stomach	Jaundice	7	1m-8y	06	06	15d-1m
	Dull pain in epigastrium, right side of abdomen with heaviness	2	1m-8y	30	30	7-15d
	Loss of appetite	4	1-8y	49	45	7-15d
Abdomen	Burning in abdomen	8	25d-3m	111	97	1-3m
Rectum	Constipation	6	3d	51	51	7d
Urinary System	Urine, yellow, pale	5	1m-8y	38	37	7-15d

Name of drug: Cassia fistula **Potency: 30**

1	2	3	4	5	6	7
Chest	Dyspnoea	8	1-20y	02	01	15d-1m
Extremities	Pain in knee joints agg. movement, amel. rest	8	7d-5y	07	07	4-20d

Name of drug: Cephalandra indica **Potency: Q, 6, 30, 200**

1	2	3	4	5	6	7
Nose	Sneezing	1	1-2y	04	04	8-19d
Stomach	Thirst increased with dryness of mouth	1	6m	06	06	20d-3m
Abdomen	Flatulence with distension	7	15d-2m	04	04	6-20d
Urinary System	Freqent urination	1	6m	05	05	6d-30m

Name of drug: Cuprum aceticum **Potency: 30**

1	2	3	4	5	6	7
Face	Facial neuralgia	4	10-20d	02	02	7-10d
Chest	Angina	1	1-2y	02	02	8-30d
General	Epileptic convulsions	1	2m-18y	07	05	3-18d

Name of drug: Cynodon dactylon **Potency: Q, 6, 30, 200**

2	3	4	5	6	7
Anorexia	8	3m	15	12	7-15d
Stool frequent, loose unsatisfactory with mucus	4	3m-3y	24	23	7-15d
Bright red, profuse blood agg.during stool	4	3m-2y	44	39	7-25d
Haemorrhoids, bleeding with pain agg.during stool	4	5y	62	53	15-30d
Fever with chill	8	03	02	3-10d	

Name of drug: Damiana **Potency: 6, 30**

2	3	4	5	6	7
Stool - hard, dry	9	7-40d	10	09	7-10d
Irregular menses	3	3m	01	01	1-3m
Leucorrhoea with	7	2m	05	05	1m

Name of drug: Embelia ribes **Potency: 30**

2	3	4	5	6	7
Desires sweets	9	10-30d	05	04	15d
Intermittent cramping pain in abdomen	7	3d-1m	3d-10y	21	3w
Unsatisfactory stool, hard - loose stool	7	7-30d	02	02	3-30d
Diarrhoea alternates with constipation	4	3m-5y	56	51	7d-1m
Evening rise of fever	10	15d	07	04	
			29	29	

Name of drug: Ephedra vulgaris **Potency: 6, 30**

2	3	4	5	6	7
Coryza, thin watery with sneezing	1	7d-6m	81	81	7d-1m
Irritation in the throat	8	3-10d	28	28	10d-1m
Warts	1	4m-4y	89	3-6m	
		98			

Name of drug: Fagopyrum esculentum — **Potency: 6, 30, 200**

1	2	3	4	5	6	7
Mind	Forgetfulness	4	3-10d	05	05	3-10d
Nose	Coryza, profuse, thick	4,13	2-30d	61	50	2-20d
Teeth	Soreness of teeth	9	3-30d	16	10	3-7d
Rectum	Burning pain after stool	9	3-30d	16	10	3-7d
Genitalia Female	Leucorrhoea, white with	4	1-14y	21	16	15-30d
	with pain in abdomen, burning in vulva, itching					
Extremities	Sciatica	1	1-6m	06	04	7-10d
Skin	Blind boils	4	4-10d	06	05	3d-1m

Name of drug: Ferrum picricum — **Potency: 6, 30, 200**

1	2	3	4	5	6	7
Mouth	Dental neuralgia	4	3-10d	10	09	9d
Urinary System	Retention of urine	4	15-40d	40	28	3-15d
	Enlarged prostate	4	1-9m	37	27	15-30d
Back	Pain right side of neck, and arm	9	1-3m	04	04	7-30d

Name of drug: Gallicum acidum — **Potency: 30**

1	2	3	4	5	6	7
Stomach	Anorexia	4	6m-10y	14	14	1m
Respiratory System	Cough, dry, spasmodic with dyspnoea agg. daytime, cold, rainy season	4	6m-1y	18	16 15d-1m	
	Chest pain agg. coughing, cold, winter	1,4	3m-10y	12	12 15d-1m	

Name of drug: Glycyrrhyza glabra — **Potency: Q, 6, 30, 200**

1	2	3	4	5	6	7
Nose	Corvza, thin, watery	4	3-7d	02	01	2-5d
Stomach	Great thirst for cold water	4	7-30d	35	26	7-15d
Skin	Eruptions without itching	4,9	10-30d	08	07	7-10d
	Burning sensation all over body	4	3-10d	08	08	3-7d

Name of drug: Gymnema sylvestris — **Potency: 6, 30**

2	3	4	5	6	7
Great thirst for cold water	4	7-30d	27	20	7-15d
Pain in the legs with general	-	4-10y	02	01	15d

Name of drug: Hekla lava — **Potency: 6, 30**

2	3	4	5	6	7
Nodosities (on chin)	9	8d-8m	07	06	15-30d
Bad smell from mouth	9	6m-2y	06	05	8-45d

Name of drug: Holarrhena antidysenterica — **Potency: 30, 200**

2	3	4	5	6	7
Headache	4	3-10d	04	04	2-11d
Stool-loose, scanty, mucoid	4	6d-1m	54	45	6d-2w
Cough with thick expectoration	4	7-20d	06	06	8-10d
Weakness	4	1-3m	85	65	3-20d

Name of drug: Hydrocotyle asiatica — **Potency: 6, 30**

2	3	4	5	6	7
Vertigo	1	15-30d	02	02	7-10d
Urticarial eruptions on arms, thighs with itching and burning agg. sour things, touch, heat, pressure	4,7	2-3y	25	19	15-30d

Name of drug: Hygrophila spinosa — **Potency: 6, 30**

2	3	4	5	6	7
Anorexia	7	7-30d	12	09	15d
Frequent urination with burning	4	6m	03	03	3m
Leucorrhoea, thin watery	4	1-6m	18	15	15-20d

1	2	3	4	5	6	7
Skin	Eruptions, small, red on body with itching, burning agg. heat, summer, sweating	7	1m-2y	72	65	7-15d
	Urticaria agg. heat	7	2-10d	10	10	4-45d

Name of drug: Iris tenax **Potency: 6, 30**

1	2	3	4	5	6	7
Eyes	Itching in both eyes with headache	1	3-15d	14	07	3-7d
Mouth	Aphthae	2	5-20d	50	43	5-15d

Name of drug: Jaborandi **Potency: 30**

1	2	3	4	5	6	7
Head	Falling of hair with dandruff	1,4	3m-1y	154	145	7d-2m
	Vertigo	4	7-30d	06	04	3-10d
	Small boils on scalp, face with itching, bloody discharge	4	6m-2y	50	41	7-15d
Eyes	White spots before eyes	10	1-3m	19	19	1-3m
	Lachrymation	1	15-30d	04	04	3-7d
Perspiration	Excessive sweating	2,4	15d-2y	31	23	3-40d
General	Enlargement of thyroid	9	3y	09	05	3m
	Mumps	11	3-10d	19	19	20d

Name of drug: Jacaranda caroba **Potency: 30**

1	2	3	4	5	6	7
Nose	Coryza	4	2-5d	19	17	3-7d
Throat	Sore throat with dryness	4	7-15d	12	07	7-10d
Skin	Itching with inflammatory swelling	3	17d	07	07	3-6m

Name of drug: Jalapa **Potency: 6,30**

1	2	3	4	5	6	7
Nose	Coryza in infants	1	2-5d	04	04	3-5d
Stomach	Anorexia	4	3-15d	14	14	3-10d
	Acidity	1	15d	67	63	5-20d
Rectum	Loose stools , frequent, yellowish	2,4	3d	103	89	2-20d
General	Child is normal during day but cries at night	3	2m	41	41	5-20d
	Burning in soles	4	3-10d	05	04	3-5d

Name of drug: Juglans regia **Potency: 6, 30, 200**

1	2	3	4	5	6	7
Head	Headache, acute	8	3-15d	25	23	15-30d
Eyes	Recurrent styes,upper eyelid	9	3-4m	54	46	15d
Face	Acne - pimples on face. with suppuration, itching, pain	1,9	1m-6y	165	137	15d-3m
	Cracks on face	4	5-30d	08	07	15-30d
Rectum	Bleeding piles	4	7-30d	08	05	7-15d

Name of drug: Kali muriaticum **Potency: 30, 1M**

1	2	3	4	5	6	7
Head	Headache, bursting	8	1m-2y	36	34	15-20d
Respiratory System	Cough, loose	8	1-3y	69	69	1-3m

Name of drug: Lac caninum **Potency: 6, 30, 200, 1M**

1	2	3	4	5	6	7
Chest	Pain in breast, tender	4	10d-2y	04	03	3-21d
Back	Backache – lumbar region with stiffness	9	2m-3y	48	38	15d-6m
	Pain in neck	9	7d-2m	21	19	4d-3m

Extremities	Pain in all joints with stiffness and swelling, shifting pains	9	2m-3y	23	19	15-30d
	Sciatica both sides with numbness	4	8m-25y	37	35	15d-3m

Name of drug: Lapis alba **Potency: 6, 30**

1	2	3	4	5	6	7
Head	Throbbing headache	1	1-6m	11	11	1-3m
Ear	Otorrhoea	4	7-30d	12	07	3-15d
Stomach	Acidity with pain agg. after meals Appetite +++	5	2-6m	17	17	1-3m
Throat	Tonsillitis	6	3-6m	21	18	2-4m
Chest	Pain mammary region	4	6-30d	70	52	7-30d

Name of drug: Magnesia sulphuricum **Potency: 6, 30**

1	2	3	4	5	6	7
Head	Headache right sided with heaviness	1,8	2-10d	48	40	7d-4m
	Vertigo	4	7-30d	08	08	5-10d
Nose	Fluent coryza	1	3-30d	60	47	2-10d
	Loss of smell	1	3-30d	50	30	2-10d
Stomach	Biliary colic	8	2-2y	08	07	3d-2m
	Thirst +++	2	3-6m	11	11	3-6m
Throat	Sore throat	4	5-15d	22	13	3-10d
Genitalia Female	Leucorrhoea, thick	1	3m-2y	46	25	7-20d
	Irregular, heavy bleeding	5	6m-1y	33	33	2-5m
Back	Backache	3	6m-1y	52	46	3-6m
	Pain- nape of neck	4	7-30d	08	06	3-10d
Skin	Warts	4	9m	04		20-60d
	Itching	8	15-45d	15	10	20-30d
Fever	Fever with chill	4,8	2-30d	70	59	3-10d

Name of drug: Magnesia indica **Potency: 6, 30**

1	2	3	4	5	6	7
Throat	Pharyngitis with	4,8	3-20d	33	25	3-20d
Stomach	Eructations	4	3-20d	32	20	3-20d
Extremities	Varicose veins	4	10d-6m	23	14	20-40d
	Oedema legs	4	1-3m	08	08	10-30d

Name of drug: Mentha piperata **Potency: 6, 30**

1	2	3	4	5	6	7
Rectum	Itching of anus	4	10-30d	04	04	3-7d
Throat	Pharyngitis	6	10d-1m	44	42	7-20d
Respiratory System	Cough dry, suffocative feeling with frontal headache agg. night, sitting, dust	4	15d-6y	133	130	7-15d
Back	Muscular pain around neck	7	1-3m	05	03	7-10d

Name of drug: Mygale lasiodora **Potency: 6, 30, 200,1M**

1	2	3	4	5	6	7
Head	Dull frontal headache	4	5-30d	14	13	3-7d
Ear	Otitis media	9	3-7d	03	03	3-5d
Stomach	Excessive thirst	4	7-30d	15	13	3-10d
	Anorexia	9	1m-1y	07	06	3-20d

Name of drug: Nyctanthes arbortristis **Potency: 6, 30, 200**

1	2	3	4	5	6	7
Abdomen	Pain in abdomen	1,7	7d	09	07	7d
	Burning in abdomen	1	3d-1m	12	08	3-10d
Fever	Fever with thirst	2	5-8d	07	07	7-10d

Name of drug: Phyllanthus niruri **Potency: 6**

1	2	3	4	5	6	7
Nose	Coryza with running nose	4,9	3d	01	01	5d

Name of drug: Saraca indica **Potency: 30, 200**

1	2	3	4	5	6	7
Head	Headache	7	7d-2m	04	02	3-21d
	- onesided with nausea with loss of appetite	1	1-3m	41	41	10d-2m
	Vertigo	4	1-3m	12	07	3-10d
Ear	Pain in ear due to cold	9	7-15d	19	19	7-15d
Stomach	Pain in abdomen	6	4m-1y	27	27	3-6m
Rectum	Bleeding piles	7	3d-3m	20	12	3-30d
Genitalia Female	Leucorrhoea, thin/ thick, white and profuse with back- ache agg. before and after menses	5	8m-6y	196	171	1-6m
	Amenorrhoea	3	2-6m	44	43	3-9m
	Menses, profuse	4	3m	10	06	15d
	scanty	4	2m	17	09	15d
	irregular	4	3m-1y	149	133	3-6m

Name of drug: Sarsaparilla **Potency : 30**

1	2	3	4	5	6	7
Eyes	Conjunctivitis	4	3-10d	38	26	3-7d
Nose	Coryza, profuse	4	3-7d	16	11	3-7d
	Nasal blockage	9	3-7d	22	12	7-30d
Mouth	Aphthae with salivation	9	4-15d	30	30	7-15d
Urinary System	Frequent, ineffectual urine	4	6m	18	13	1m
Extremities	Cracks on hands and feet	4	6m-1y	139	131	10d-1m
Skin	Summer boils, painful	4	2-20d	08	04	10-30d
	Herpes	4	3-15d	89	75	3-20d
	Warts	1	1-3m	05	04	10-30d
Fever	Influenza	4	2-5d	34	31	2-6d

Name of drug: Syzygium jambolanum **Potency: Q, 30**

1	2	3	4	5	6	7
Extremities	Arthritis, chronic	-	5-9y	05	03	15-30d
	Burning of palms and soles	-	2-3y	04	02	3-15d

Name of drug: Tarentula cubensis **Potency: 30, 200**

1	2	3	4	5	6	7
Mouth	Aphthae in mouth,red, painful with burning agg. cold water	8	2-7y	03	02	15d
Extremities	Varicose ulcer with pustules, burning pain	4 2 1/2 m	01	01	15d	

Name of drug: Tarentula hispanica **Potency: 30, 200**

1	2	3	4	5	6	7
Back	Pain in nape of neck with stiffness	8 11-12y	02	01	15d	

Name of drug: Tela aranea **Potency: 6, 30, 200**

1	2	3	4	5	6	7
Stomach	Loss of appetite	8	7-30d	26	21	3-15d
Respiratory System	Asthma	4	15-60d	82	65	15-30d
Extremities	Numbness of hands and legs agg. rest, amel. movement	8	7-10d	19	16	3-15d

Name of drug: Terminalia arjuna **Potency: 6, 30**

1	2	3	4	5	6	7
Ears	Ringing in ears	7	3-6m	21	21	2-3m
Abdomen	Flatulence with heaviness	7	7-10d	04	04	3-9d
Chest	Dyspnoea agg. exertion, walking,amel. sitting	4	2-6m	03	03	15d
	Palpitations with nervousness	8	1-2m	50	39	20d-1y
	Angina	4,7	10-30d	06	03	10-30d

Name of drug: Terminalia chebula — **Potency: 6, 30, 200**

1	2	3	4	5	6	7
Head	Giddiness agg. heat of sun	9	3m-1y	21	21	15d-1m
	Right sided headache agg. heat	2	3m-1y	29	27	15-25d
Stomach	Heartburn with eructations	8	10y	18	16	15d
	Bitter taste in mouth	3	1-3m	44	42	15d-3m
Rectum	Piles, blind, painful, burning agg. after stool	8	3m	09	05	15d-1m
	bleeding piles	6	6m-1y	75	65	2-9m
Back	Backache- lumbar region	4	2-6m	25	25	1-2m

Name of drug: Thea chinensis — **Potency: Q, 6,30, 200**

1	2	3	4	5	6	7
Genitalia Female	Leucorrhoea, white, fluent, offensive with pain in abdomen	8	2-3m	01	01	15d

Name of drug: Theridion — **Potency: 30**

1	2	3	4	5	6	7
Head	Headache	4	7-20d	25	20	3-7d
Eyes	Conjunctivitis with itching in eyes	4	2-10d	21	16	2-12d
	Pain in eyes	4	7-30d	16	14	3-7d
Nose	Coryza with thin watery discharge, nasal blockage	5	6m-1y	13	13	1-2m
	Sneezing after bathing	5	6y	08	08	1-2m
Stomach	Nausea and vomiting	4	3-30d	18	13	3-7d
General	Restlessness	4	7-30d	08	08	3-7d

Name of drug: Tylophora indica — **Potency: 6, 30**

1	2	3	4	5	6	7
Abdomen	Griping pain in abdomen	9	3-30d	81	62	3-15d
	Flatulence with cramping pain	8	4-10d	10	08	3-7d
Rectum	Stool hard, scanty, haemorrhoids with burning pain	8	7d-2y	23	18	3-24d
Back	Dull aching pain in lumbar region	8	7-60d	20	12	3-22d
Chest	Pain in chest with dyspnoea	8	3-20d	38	32	3-20d

Name of drug: Viscum album — **Potency: 30, 200, 1M**

1	2	3	4	5	6	7
Head	Numb feeling in head	1	7-15d	10	05	3-10d
	Vertigo	4	1y	90	78	7-15d
Back	Backache-lumbar region	1	4m-1y	239	229	15d-6m
	Pain in nape of neck, shoulder	1	1-3y	401	295	15d-4m
Extremities	Pain in knee joints	1	6m-1y	220	145	15d-6m
General	Sciatica	4	20d-6m	242	226	3d-6m
	Epileptic fits, convulsions	4	10y	01	01	30d
	General weakness	4	2m-10y	10	08	15d
	Low blood pressure	4	1-6m	51	38	7-30d

DRUG PROVING RESEARCH PROGRAMME
(Homoeopathic Pathogenetic Trials)

The Council is carrying out the programme of proving and reproving of drugs since its inception as a priority. The emphasis is on proving of drugs of indigenous origin and on fragmentarily proved drugs. This work is being carried out at following Institutes/Units :-

1)	Drug Proving Research Unit, Kolkata in West Bengal	since 1979
2)	Drug Proving Research Unit, Midnapore in West Bengal	since 1979
3)	Drug Proving Research Unit, Ghaziabad in Uttar Pradesh	since 1979
4)	Regional Research Institute (H), New Delhi	since 1979
5)	Homoeopathic Drug Research Institute, Lucknow in Uttar Pradesh	since 1987

Work done so far

Protocol :- A proving protocol (modern methodology) has been formulated by CCRH which is accepted internationaly. The protocol was published in Vol.76 (1997) of British Homoeopathic Journal (most renowned journal in the field of Homoeopathy in the world).

Drugs Proved so far :

1. Abroma augusta folia
2. Aegle folia
3. Aegle marmelos
4. Aranea scinencia (short proving)
5. Aranea diadema
6. Atista indica
7. Azadirachta indica
8. Baryta iodata
9. Boerrhavia diffusa
10. Cassia fistula
11. Carica papaya
12. Cassia sophera
13. Curcuma longa (short proving)
14. Cuprum oxydatum nigrum
15. Cynodon dactylon

16. Chelone (completed in two separate programmes in 1983 & 1992)
17. Embelia ribes (Reproving conducted as per instruction of the Working Group in 1990)
18. Formic acid (while proving of Q was carried out separately in 1992)
19. Hydrocotyle asiatica
20. Holarrhena antidysenterica
21. Kali muriaticum
22. Mygale
23. Malaria officinalis (short proving)
24. Tarentula cubensis
25. Tarentula hispanica
26. Thea chinensis
27. Tela aranea
28. Tylophora indica
29. Thymol
30. Lapis alba (short proving)
31. Theridion
32. Terminalia arjuna Q
33. Acalypha indica
34. Glycyrrhiza glabra
35. Magnesia sulphuricum
36. Phyllanthus niruri
37. Terminalia chebula (proving conducted in two separate programmes in the years 1992 and 1995)
38. Nyctanthes arbortristis
39. Mangifera indica (short proving)
40. Cornuus circinata#
41. Ocimum sanctum#
42. Ocimum canum*
43. Ricinus communis*
44. Tribulus terrestris#
45. Rauwolfia serpentina*
46. Senega*
47. Calotropis gigantea*
48. Acid butyricum*
49. Chromo kali sulph*

50. Oxytropis lamberti*
51. Alfalfa*
52. Arsenicum bromicum*
53. Bellis perinnis*
54. Euphorbia lathyris*
55. Staphylococcinum*
56. Paraffin*
57. Thyroidinum*
58. Icthyolum*

Achievements during the year 2000-2001

Proving of four drugs (two long provings code nos. 65, 67 and two short provings code nos. 66, 71) were completed during the reporting year. Compilation of three drugs namely *Cornuus circinata, Tribulus terrestris* and *Ocimum sanctum* have been completed and compiled data will be placed before the forthcoming meeting of the Scientific Advisory Committee of the Council for approval. Compilation of other drugs is under process.

Work under progress

A booklet on Spider Remedies incorporating proving symptoms and clinically verified data is under compilation for publication.

The proving data of these drugs has been compiled for placing it before the Scientific Advisory Committee of CCRH for approval.

The proving data of these drugs under compilation.

DRUG RESEARCH PROGRAMME

Introduction

This programme under the Council includes studies relating to the survey, collection and identification of genuine raw drug material. It also includes standardisation studies with regard to the preparation of quality finished products from the genuine raw drugs material.

SURVEY OF MEDICINAL PLANTS & COLLECTION

A Survey of Medicinal Plants and Collection Unit was established at Ooty in Tamilnadu in 1979 to conduct survey of indigenous medicinal plants from South India, collect raw drug samples and supply them to the Institutes and Units where drug standardisation studies are being conducted, literature survey, collection and preparation of index cards, maintaining herbarium and etc.

A research garden for cultivation of medicinal plants especially exotic plants used in homoeopathy, is being developed at Emerald Post, Distt. Ooty, Tamilnadu on 12.70 acres of land acquired on lease from Govt. of Tamilnadu. In this garden *Cineraria maritima* though, an exotic plant has been successfully cultivated . Efforts are being made to grow more plants.

Brief resume of the work done during the years 1979 to March, 2000

The unit since inception(1979) has accomplished the following works.

7,087 field numbers have been collected, 5,943 herbarium sheets have been accessioned and incorporated, index cards of 3,969 homoeopathic medicinal plants prepared and are updated from time to time and supplied 337 raw drug specimens to two Drug Standardisation Units and one Homoeopathic Drug Research Institute for pharmacognostic and physico-chemical studies. It has also mounted 5,061, stitched 5,175 and labelled 5,119 herbarium specimens. Cineraria maritima has been planted on 0.5 acres of land and a total of 2,000 plants are being maintained, and germplasm collection of 07 plants in demonstration plots are being maintained and their performance being studied. The medico-ethno botanical cum folklore uses tours, clinical research tours and botanical exploration tours have also been conducted from time to time.

Work done during the year 2000-2001

Four major medicobotanical exploration cum raw drug plant material collection tours and four literature survey cum herbarium consultation tour were conducted.

1. Identification

Botanical identities of 428 field numbers of herbarium specimens collected from various parts of South India have been made.

2. Herbarium work done

a) 180 index cards updated.

b) 298 herbarium specimens mounted.

c) 298 herbarium specimens stitched.

d) 300 herbarium labels have been written.

e) 257 field numbers had been collected increasing the running field numbers to 7,344 till date.

f) 330 herbarium sheets identified and authenticated according to the field numbers collected.

3. Collection and Supply of Raw Drug Plant Material.

18 raw drug plant material had been collected in bulk quantity, processed and despatched to 2 Drug Standardisation Units at Ghaziabad and Hyderabad, and one Homoeopathic Drug Research Institute at Lucknow; and also to Pharmacopoeia Laboratory for Indian Medicine, Ghaziabad, M/s.Bhandari Homoeopathic Laboratories, Faridabad , Dr. Prakasan Homoeopathic Drug Manufacturing Co., Calicut and Fr. Muller's Charitable Trust, Mangalore.

4. Homoeopathic Medicinal Plants Cultivation Research Garden

Regular planting, deweeding, nursery raising, upkeep and maintenance of the following plants is being done. The status of various plants raised in demonstration plots is as follows :

i) Cineraria maritima

Area	-	1 acre
Plants raised at nursery	-	750
Plants present in 0.75 acres	-	4,250 plants
Raw material (dry leaves stock)	-	7.5 kgs.

ii) Digitalis purpurea

Area	-	0.5 acres
Total plants present	-	750
Raw material (drug leaves stock)	-	30 Kgs.

iii) Achillea millefolium

Area	-	0.25 acres
plants present	-	1,200 plants
Raw material (drug leaves stock)	-	5 Kgs.

iv) Santolina chamaecyparissus - 500 plants in 0.25 acres

v) Viola odorata - 500 plants in 0.15 acres

vi) Rosmarinus officinalis - 100 plants

vii) Salvia officinalis - 50 plants

viii) Anthoxanthum odoratum - 50 plants

ix) Germ plasm collection of Homoeopathic Medicinal Plants raised and maintained in demonstration plots in research garden and their performance being studied are : - 50 plants

Total

a) Apium graveolens	-	10 plants
c) Foeniculum vulgare	-	5 plants
d) Calendula officinalis	-	10 plants
e) Cichorum intybus	-	20 plants
f) Majorna hortensis	-	10 plants

Papers Published

i) Rajan S.and A.Rajendran.2000. Horto-taxonomy of the genus Araucaria Juss. in Nilgiris, Tamilnadu. *J. Econ. Tax. Bot.* 24(1):151-156, 2000.

ii) Gupta H.C., S.Rajan, Sunil Kumar and D.P.Rastogi. 2000. Pharmacognostical studies on Siegesbeckia orientalis Linn. 2000. *J. Econ. Tax. Bot.* 24(1):161-170, 2000.

iii) Suresh Baburaj D., S. Rajan and S.John Britto.2000. Three hitherto undescribed aliens of Nilgiri District, Tamilnadu.*J. Econ. Tax. Bot.* 24(2):270-275, 2000.

iv) Rajan S., H.C. Gupta and Sunil Kumar. 2000. Exotic Medicinal Plants of Lucknow. In J. K.Maheshwari (Ed.).Ethnobotany and Medicinal Plants of Indian Subcontinent.Scientific Publishers (India), Jodhpur, 205-222, 2000.

v) Suresh Baburaj D., S.John Britto, G.K. Mathew and S. Rajan. 2000.Cultivated Medicinal Plants useful in Homoeopathy found in Nilgiri District, Tamilnadu.In J. K. Maheshwari (Ed.).Ethnobotany and Medicinal Plants of Indian Subcontinent. Scientific Publishers (India), Jodhpur, 381-389, 2000.

vi) Ramprasad C., V. Ramsundar and S. Rajan.2001. Orchids in Government Botanical Garden, Udhagamandalam, The Nilgiris. Tamilnadu. Zoo's Print J., 16(3): 447-448, 2001.

vii) Rajan S.,D. Suresh Baburaj, M. Sethuraman and S. Parimala.2001.Stem and Stem bark used medicinally by the tribals Irulas and Paniyas of Nilgiris District, Tamilnadu.J.Natural Remedies 1(1): 49-54.2001.

5. Papers Presented in Scientific Seminars

i) Rajan S., D. Suresh Baburaj and M. Sethuraman. 2000. Indigenous folk practice among Paniyas of Nilgiri District of Tamilnadu in India.Abstracted in the National Seminar on Frontiers of Researchand Development in Medicinal Plants at Central Institute of Medicinal and Aromatic Plants, Lucknow from 16th to 18th September, 2000.

ii) Suresh Baburaj D., S. John Britto and S. Rajan. 2001.Homoeopathic Medicinal Plants commonly found in Nilgiri District, Tamilnadu.Presented in National Symposium on Medicinal Plants- 2001 at St. Joseph's College, Tiruchirapalli on 5th and 6th February, 2001. Abstract No. 19 and page no. 14.

iii) Suresh Baburaj D., S. John Britto and S. Rajan. 2001.Plant Introduction - A useful tool in dating manuscripts of Indian Systems of Medicine. Presented in National Symposium on Medicinal Plants-2001 at St. Joseph's College,Tiruchirapalli on 5th and 6th February, 2001. Abstract No. 20 and page no. 14.

DRUG STANDARDISATION

Standardisation is essential to ensure quality drugs. It encompasses a series of factors/ measures which influence the quality of Homoeopathic medicines, and which define pharmaceutical uniformity and the source material need to be exactly identified.Standardisation of a drugensures quality, safety and efficacy of a drug.For drawing standards of Homoeopathic drugs, studies conducted are Pharmacognostical, Physico-chemical and Pharmacological aspects in order to study the various qualitative and quantitative characteristics of drugs and various parameters are adopted for each study.

The Pharmacognostic studies include the macro and microscopical characteristics of raw drugs of vegetable origin. The Physico-chemical analysis helps to detemine the physical and chemical constants of the drug. The Pharmacological spectrum of a drug is ascertained through experimental trials on laboratory animals under standard laboratory conditions which include preliminary estimation of dosage, its efficacy and safety and also the mode of action of homoeopathic drugs. Quality assurance cannot be exercised in the absence of standards. These factors include exact identification and precise definition of source material, execution of each and every preparation step as stipulated in the official Homoeopathic Pharmacopoeia, in process controls, testing and verification of final products, stability through Good Laboratory Practices. Safety and efficacy of a drug can be ensured by conducting/ determining Therapeutic Index and Maximum Extractive Value through well designed in - vivo and in - vitro experimental models.

At present the Council has undertaken drug standardisation studies at three centres viz. Homoeopathic Drug Research Institute, Lucknow; Drug Standardisation Unit, Ghaziabad and Drug Standardisation Unit, Hyderabad. At HDRI, Lucknow drug standardisation work is being undertaken in respect of pharmacognosy, physico-chemical and pharmacological aspects while at DSU, Ghaziabad and DSU, Hyderabad drug standardisation work pertaining only to pharmacognosy and physico-chemical studies are conducted.

PHYSICAL TARGETS ACHIEVED DURING 2000-2001

Total 8 drugs were assigned for pharmacognostic and physico-chemical studies at DSU, Ghaziabad; DSU, Hyderabad and HDRI, Lucknow.

1. Drug Standardisation Unit, Hyderabad

The unit has conducted pharmacognostic and physico-chemical studies on :

Citrus medica, Eclipta alba, Iris germinaca, Mentha spicata, Prunus domestica, Pterocarpus marsu pium, Pyrus communis, Rumex acetolla.

2. Drug Standardisation Unit, Ghaziabad.

The unit has conducted pharmacognostic studies on :

Citrus medica, Eclipta alba, Iris germinaca, Mentha spicata, Prunus domestica, Pterocarpus mar supium, Pyrus communis, Rumex acetolla.

3. Homoeopathic Drug Research Institute, Lucknow.

The institute has conducted pharmacognostic studies on :

Citrus medica, Eclipta alba, Iris germinaca, Pterocarpus marsupium, Pyrus communis, Ulex europaeus.

The institute has conducted physico-chemical studies on :

Citrus medica, Eclipta alba, Michelia champaca, Pyrus communis, Vitis vinifera

LITERARY RESEARCH PROGRAMME

Introduction

Updating of scientific literature is important keeping in view its frequent usage as a reference material clinically and especially so in the changed scenario with environmental pollution, industrialisation, changing life and styles and values which has paved way for re-emergence of almost eradicated diseases like Tuberculosis and Malaria and emergence of quite a few new diseases. Thus, literature on a particular subject becomes an indispensable tool to compliment knowledge. And more so in Homoeopathy, where the literature is voluminous and scattered, which many a times when needed is not available to the clinician. As such the Council has undertaken Literary Research as a long term programme to revise the old literature and compilation of therapeutics.

PROJECT UNDERTAKEN

Review and Revision of Kent's (Kunzli's) Repertory in relation to other works - Additions from Boericke's Repertory

Homoeopathic Repertory by J.T. Kent is one such reference book which was compiled in the early 20th century. This is the most popular and frequently used repertory in the clinics all over the world. Since its publication a large number of drugs have been proved and added in our therapeutics armamentarium. Thus to improve and enlarge the scope of Kent's Repertory this project was undertaken by the Council.

Work done so far

Of the 37 chapters in Kent's Repertory, 15 chapters have been revised and published.

Achievements during the year 2000-2001

During the period chapter Tissues from C.B.Knerr's Repertory and chapter Moon Phases from Boger Boenninghausen's Repertory have been completed for addition in Chapter Generalities of Kent's Repertory Further work on this project is not being undertaken pending consideration of Scientific Advisory Committee of CCRH.

DOCUMENTATION AND LIBRARY

The Documentation Section came into existence as a part of Headquarters office of the Central Council for Research in Homoeopathy with effect from 1st April, 1980 as the Council also recognised the importance of Documentation Services in the ongoing research programmes. Since then it has expanded and made substantial progress. The main objective of this section is "dissemination of knowledge concerning Homoeopathy". The other objectives are the following:

1. To prepare complete documentation on subjects of interest to the Council and provide them to the Scientists of the Council to update their knowledge.
2. To prepare bibliographies, reference lists and abstracts of scientific articles on Homoeopathy and allied subjects.
3. To keep the records of scientific seminars, symposia, workshops etc. organised by the Council.
4. To provide copies of scientific papers of interest to the Council,according to their availability, to the scientists.

A reference library has also been developed which has a collection of 6,474 books till date both of allied sciences and homoeopathy. It subscribes to 31 journals both Indian and Foreign journals.

WORK DONE DURING THE YEAR 2000-2001

Library	
Books	132
Number of titles accessioned	51
- WHO Publications	30
- Number of books received as complementary	41
- Number of books procured	6,474
Total Books as on 31.3.2001	31
Journals	05
Number of Journals subscribed	20
- Foreign	06
- Indian	1,470
- WHO periodicals	
Number of bound volumes as on 31.3.2001	

Documentation

Information Services

Provided on internet as on demand received from the research scholars

Bibliographic lists

- Current Health Literature Awareness Services	04
- Medico abstracts (Being updated from time to time)	02

Publications

- Quarterly Bulletin Vol.22	2 issues
- CCRH NEWS No. 27	1 issue

Audio Visual

- Video cassettes added in 2000-2001	03
- Total collection of video cassettes	76

PUBLICATIONS

The Council publishes Quarterly Bulletin wherein technical activities and achievements of the Council are highlighted, CCRH News wherein Council's activities are published, and various Books/Monographs.

Publications during the year 2000-2001

A) Quarterly Bulletin

Vol. 22 (1&2) and (3&4) issues were published.The Vol.22(1&2)2000 is a Special Issue on Drug standardisation presenting an account of six medicinal plants viz. *Acalypha indica*, *Andrographis paniculata*, *Acacia nilotica*, *Caesalpinia bonducella*, *Citrullis colocynthis*and *Momordica charantia* covering almost all the aspects related to their botanical and vernacular names, distribution in India, botanical characters, important actions and uses in ISM&H, pharmacognostic characters, chemical constituents, chemical activity, toxicology, therapeutic evaluation, trade and commerce, substitutes and adulterants, and agrotechniques.

B) CCRH NEWS : No. 27.

C) Books Reprinted :
1. A Handbook of Home Remedies in Homoeopathy
2. Samanya Homoeopathy Upchar Pustika
3. Prevention & Treatment of Malaria.
4. Homoeopathy - Myths & Facts
5. Holistic Approach to Homoeopathy.
6. Cataract.
7. Mother & Child Care.

D) Pamphlets Reprinted : A 16 page folder in Hindi covering 14 Indian medicinal plants used in Homoeopathy with their clinical indications has been published.

E)

PROJECTS / SCHEMES ASSIGNED/COMPLETED/CONCLUDED DURING THE YEAR 2000-2001

1. The following clinical research projects have been assigned to :

   i) Osteoarthritis to Central Research Institute, Kottayam.

   ii) Skin Disorders to Clinical Research Unit, Gorakhpur.

   iii) Upper Respiratory Tract Infections to Clinical Research Unit, Bhopal.

2. Proving of four drugs (two long provings code nos. 65, 67 and two short provings code nos. 66, 71) were completed during the reporting year. Since these programmes are carried out under Double Blind Technique, the name of the drugs are uncoded after compilation of proving pathogenesis.

3. Compilation of proving data of three drugs namely *Cornuus circinata, Tribulus terrestris* and *Ocimum sanctum* has been completed and will be placed before the Scientific Advisory Committee of CCRH for approval. Compilation of other drugs is under process.

4. During the period chapter Tissues from C.B.Knerr's Repertory and chapter Moon Phases from Boger Boenninghausen's Repertory have been completed for addition in Chapter Generalities of Kent's Repertoryunder the Literary Research Programme. Further work on this project is not being under taken pending consideration of Scientific Advisory Committee of CCRH.

5. Pharmcognostic and physico-chemical studies on eight drugs assigned during this year have been completed.

6. The study on the project on Behavioural Disorders in Mentally Retarded Children and Iron Deficiency Anaemia under Clinical Research Programme concluded during this year.

FUTURE PROGRAMMES

1. All ongoing research projects as approved/modified by previous Scientific Advisory Committee will continue and to lay stress on ongoing projects from national point of view and to explore or undertake any other new projects.

2. To take up proving of five drugs (two long provings and three short provings).

3. Pharmacognostic, physico-chemical and pharmacological standards of 8 drugs to be determined.

4. A booklet on Spider Remedies incorporating proving symptoms and clinically verified data is under compilation for publication.

5. Monograph on Abroma augusta folia (published earlier) will be revised incorporating coloured photographs of pharmacognostic studies and clinically verified symptoms.

6. A Checklist of Medicinal Plants used in Homoeopathy will also be revised with addition of more plants and published.

LIST OF INSTITUTES, UNITS UNDER C.C.R.H.

1. Assistant Director,
Central Research Institute (H),
Sachivothamapuram,
Kottayam (Kerala)-686532.

2. Research Office Incharge
Regional Research Institute (H),
Nehru Homoeopathic Medical
College & Hospital,
B-Block, Defence Colony,
New Delhi-110024

3. Research Officer Incharge,
Regional Research Institute (H),
Bombay Homoeopathic Medical
College & Hospital, Irla Naka, Ville Pale,
Mumbai (Maharashtra)-400056.

4. Research Officer Incharge
Regional Research Institute (H),
13/210A, Club Road,
Gudivada (A.P.)-521301.

5. Research Officer Incharge
Homoeo Research Institute (H),
CCRH Building Marchi Kote Lane,
Labanikhia Chhak,
Puri (Orissa)-752001.

6. Assistant Director Incharge,
Homoeopathic Drug Research
Institute (H),
B-1433, Indira Nagar,
Lucknow (U.P.)-226016.

7. Project Officer Incharge
Drug Standardisation Unit (H),
O.U.B. 32, Room No. 4,
Vikram Puri, Habsigunda,
Hyderabad (A.P.)-500007.

8. Project Officer Incharge
Drug Standardisation Unit (H)
C/o Homoeo Pharmacopoeia Laboratory,
C.G.O. Complex, Near Hapur Chungi,
Kamla Nehru Nagar,
Ghaziabad (U.P.)-201002

9. Research Officer Incharge,
Drug Proving Research Unit (H),
136, Afganan, Delhi Gate,
Ghaziabad (U.P.)-201001.

10. Project Officer
Drug Proving Research Unit (H),
D.N. De Homoeopathic Medical
College and Hospital,
12, Gobinda Khatick Road,
Calcutta (W.B.)-721101.

11. Research Officer Incharge
Drug Proving Research Unit (H),
Midnapore Homoeopathic Medical
College and Hospital,
Midnapore (W.B.)-721101.

12. Research Officer Incharge
Clinical Verification Unit (H),
136, Afganan Mohalla, Delhi Gate,
Ghaziabad (U.P.)-201001.

13. Asstt. Research Officer Incharge,
Clinical Verification Unit (H),
Tat Baba Ashram,
Gopeshwar, Vrindavan
Mathura (U.P.)-281121.

14. Asstt. Research Officer Incharge,
Clinical Verification Unit (H),
NC. 152 Gayatri Mandir Marg,
P.O. Lohia Nagar, Kankar Bagh,
Patna-800020.

15. Survey Officer Incharge
Survey of Medicinal Plants and
Collection Unit (H),
112 Govt. Arts College, Campus,
Udhagamandalam (T.N.)-643002.

16. Project Officer Incharge
Clinical Research-cum-Epidemic Cell,
1, Neem Rose,
Zinsi Chauraha, Jahangirabad
Bhopal (M.P.)-462008.

17. Project Officer Incharge
Clinical Research Unit (H),
Centre of Exp. Med. & Surgery
Instt. of Medical Science,
Banaras Hindu University,
Varanasi (U.P.)-221005.

18. Research Officer Incharge
Clinical Research Unit (H),
Building No. 663/10,
Gurgaon.

19. Research Officer Incharge
Clinical Research Unit (H),
Kishore Colony, Plot No. 1,
Bhupindra Road, Near Phathak No. 22,
Patiala (Punjab)-147001.

20. Research Officer Incharge
Clinical Research Unit (H),
Hindustan Saw Mills Building,
Bailoor Road, Mission Comp,
Udupi (Karnataka)-576101.

21. Research Officer Incharge
Clinical Research Unit (H),
Hindustan Saw Mills Building,
Bailoor Road, Mission Comp,
Udupi (Karnataka)-576101.

22. Project Officer
Homoeopathic Research Institute,
Dr. Madan Pratap Khuteta Rajasthan
Homoeopathic Medical College & Hospital,
Station Road, Jaipur-302006.

23. Asstt. Research Officer Incharge
Clinical Research Unit (H),
.M.B. 31 Middle Point,
Mahatama Gandhi Road,
Port-Blair (A&N)-744101.

24. Research Officer Incharge
Clinical Research Unit (H),
Door No. 6-1-61A, K.T. Road,
Tirupathi (A.P.)-517507.

25. Research Officer Incharge
Homoeopathic Treatment Centre,
C.G.H.S. Wing, Safdarjung Hospital,
New Delhi.

26. Asstt. Research Officer Incharge
Clinical Research Unit (H)
Khalipara, Odel Bakra,
Guwahati (Assam)-781019.

27. Research Officer Incharge,
Clinical Research Unit (H),
No. 4, Bharathyar Street, 1st Floor
Kanagam, Chennai-600113.

28. Project Officer Incharge,
Clinical Research Unit (H),
Opp. Palace Compound, Indoor
Stadium Near Shree Govindajee
Temple, Imphal (Manipur)-795001.

29. Asstt. Research Officer Incharge,
Clinical Research Unit (H),
71-72, Resham Garh Colony,
Jammu-180001.

30. Asstt. Research Officer Incharge,
Clinical Research Unit (T) for H,
Near Circuit House Road,
Bhiram Ganj Para, Subhash Ward,
Jagdalpur-494-001.

31. Asst. Research Officer Incharge
Clinical Research Unit(T)
for Homoeopathy,
Venghuli Republic Road,
Aizawl (Mizoram)-796001.

32. Asstt. Research Officer Incharge,
Clinical Research Unit (T) for Homoeo.,
Qr. No. 39, Type-III, Vivek Vihar,
P.O. R.K. Mission, Distt. Papumpur,
Itanagar, Arunachal Pradesh.

33. Asstt. Research Officer Incharge,
Clinical Research Unit (T)
for Homoeo, B-1073, Hanuman Street,
Bharuch (Gujarat)-392001.

34. Asstt. Research Officer Incharge,
Clinical Research Unit (T) for Homoeo.,
Netaji Subhash Road,
Near Netaji Girls School,
Subhashpally, Siliguri,
Distt. Darjeling (W.B.)-734401.

35. Research Officer Incharge,
Clinical Research Unit (T) for Homoeopathy,
Township, Gurudwara Compound,
Dandeli (NK) Karnataka-581235

36. Asstt. Research Officer Incharge,
Clinical Research Unit (T) for Homoeopathy,
C/o M.D.S.A. Choudhary G.F. Bld.,
Near Diphu Club. Diphu Bus Stand,
Karbianglong, Distt. P.O. Diphu (Assam)-782460.

37. Asst. Research Officer Incharge,
Clinical Research Unit (T) for Homoeo.,
(Encephalitis)
Gorakhpur Mandal Vikas Nigar,
Ltd., Bhawan 1st Floor,
Kachenhari Raod (Shastri Chowk),
Gorakhpur-273001.

38. Research Officer Incharge,
Clinical Research Unit (t)
for Homoeopathy,
Sonari Street,
Jeypore (Orissa).

39. Research Officer Incharge,
Clinical Research Unit (T) for Homoeopathy,
Moolamattom P.O.
Idukki (Kerala)-685589

40. Asstt. Research Officer Incharge
Clinical Research Unit (T) for Homoeopathy,
Circular Road,
Near Nepali Gaon, Sub. P.O.
Dimapur-797112.

41. Incharge
Clinical Research Unit (T) for Homoeopathy
In front of Samphel Hotel,
Near Sangram Bhavan,
Development Area,
Gantok, Sikkim-737101.

42. Project Officer Incharge,
Clinical Research Unit (T) for Homoeopathy,
Khongjom, Khebaching,
P.O. Wangjing, Distt. Thoubal
Manipur-795148.

43. Incharge,
Clinical Research Unit (T) for Homoeo
Distt. Chamba, Bharmour (H.P.)-176315.

44. Incharge,
Clinical Research Unit (T)
for Homoeopathy, Zangasti Road,
Leh (J&K)

45. Asstt. Research Officer Incharge,
Clinical Research Unit (T) for Homoeo.,
First Cross, Mangalakshmi Nagar,
(Behind New Bus Stand).
Pondicherry-605003.

46. Research Officer Incharge,
Clinical Research Unit (T) for Homoeo,
Arsunday, Boreya Road,
P.O. Boreya,
Ranchi (Jharkhand)-834006.

47. Research Officer Incharge,
Clinical Research Unit (T) for Homoeo.,
Building No. 37, 38, Gandhipuram,
P.O. Namakkal,
Distt. Salem (Tamilnadu)-637409.

48. Asstt. Research Officer Incharge,
Clinical Research Unit (T) for Homoeo.,
C/o Shri P. Bose, Temple Road,
Shillong (Meghalaya)-793001.

49. Asstt. Research Officer Incharge,
Clinical Research Unit (T) for Homoeo.,
Old Kalbari Road,
Krishna Nagar, P.O.
Adviser Chowmubani, Agartala,
Distt. Tripura West, Tripura-799001.

50. Asstt. Research Officer Incharge,
Clinical Research Unit (T) for Homoeo.,
Door No. 74-19-3, Enamalakuduru Road,
(Lock Road), Patamta-Krishna Nagar,
Krishna Distt., Vijayawada (A.P.)-520007.

51. Research Officer Incharge,
Clinical Research Unit (T) for Homoeo.,
Near Professor's Colony,
P.O. Budharaja Distt. Sambalpur,
(Orissa)-768004.

AUDIT REPORT ON THE ACCOUNTS OF CENTRAL COUNCIL FOR RESEARCH IN HOMOEOPATHY, NEW DELHI FOR THE YEAR 2000-2001

Introduction

The Central Council for Research in Homoeopathy was established on 30th March 1978 under Societies Registration Act, 1860.

The audit of the accounts of the Council has been entrusted under Section 20(1) of the Comptroller and Auditor General's (Duties Powers and Conditions of Service Act, 1971) for a period 5 years from 1998-99 to 2002-2003.

The Council is mainly financed by grants from the Government of India. During the years 2000-01 the Council received grant of Rs.7.05 crore (Rs.3.31 crore under Plan Rs.3.74 crore under Non-Plan) from the Ministry of Health and Family Welfare.

2. Comments on Accounts

Balance Sheet

2.1 Non-maintenance of Assets Register in proper form

Assets Register in the Form GFR-19, required to be maintained under General Financial Rules had not been maintained by the Council. In the absence of which correctness of value of assets, worth Rs.3.02 crore shown in the balance sheet under various heads could not be verified in audit.

3. General

3.1 Accounting policies

The Council is required to append to annual 'Significant Accounting Policies' to indicate that items, if any, accounted for on cash basis, fixed assets and inventory valuation etc. The Council is also required to append to 'Notes on Accounts' to indicate non-applicability of Income Tax on the surplus of the Council, exemption from statutory enactment, treatment of contingent liabilities etc. Such disclosure by Council will introduce transparency in accounts. However as already pointed out in the previous report the Council has not appended the significant accounting policies and notes to their accounts. The Council is again advised to take initiative to append these notes/ policies to its accounts to bring transparency in accounts.

Sd/-
Director General of Audit
Central Revenues

Place: New Delhi
Dated: 5.3.2002

AUDIT CERTIFICATE

I have examined the Receipts & Payments Accounts, Income & Expenditure Account for the year ended 31st March 2001 and the Balance Sheet as on 31st March 2001 of the Central Council for Research in Homoeopathy, New Delhi. I have obtained all the information and explanation that I have required and subject to the observations in the appended Audit Report, I certify, as a result of my audit, that in my opinion these accounts and Balance Sheet are properly drawn up so as to exhibit a true and fair view of the state of affairs of the Central Council for Research in Homoeopathy to the best of information and explanations given to me and as shown by the books of the organisation.

Sd/-
Director General of Audit
Central Revenues

Place: New Delhi
Dated: 5.3.2002

CENTRAL COUNCIL FOR RESEARCH IN HOMOEOPATHY

JAWAHAR LAL NEHRU BHARITYA CHIKITSA AVUM HOMOEOPATHIC ANUSANDHAN BHAWAN
61-65, INSTITUTIONAL AREA, D-BLOCK, JANAKPURI, NEW DELHI-110058

RECEIPT & PAYMENT ACCOUNT FOR THE YEAR ENDING 31.3.2001

Sl. No.	Receipts		Amount 2000-2001
1.	Op.Bal. CCRH (Bank Bal.) Plan		35.13,211.02
	Non-Plan.		—
	Imprest Advance		1.45.400.00
			36,58.611.02
2.	Grant received from Ministry of Health & Family Welfare, New Delhi		
	Plan		
	I-General Area	2.32.66,000.00	
	-Tribal Area	32,31,000.00	
	-Special Component Plan for Schedule Caste	65,83,000.00	
	-Grant for Seminar	—	
		3,30,80,000.00	
	II-Non-Plan	3,74,20,000.00	
	-Re. Or. Trg. Prog. for N.E. region.	—	
			7.05,00.000.00
3.	*Other Incomes/Receipts*		
	- Interest on advances	*61.841.00*	
	- Misc. Receipts	43.062.10	
	- Sale of Priced Pub.	16.358.00	
	- Sale of Plants	6.037.00	
	- Int. recd.on S.B.A/c (Recd. from the Units)	3.055.54	
	- Sale of Video Cassettes	—	
			1.30.353.64
4.	Recoveries against advances		
	-Cont.Advance(P&N-Plan)	10.593.00	
	-T.A advance	34,953.00	
	-L.T.C. advance	11,691.00	
			57,237.00
5.	Recoveries against Advances		
	Festival advance	3,03,260.00	
	Scooter advance	2,11,972.00	
	Car advance	1,06,920.00	
	Cycle advance	8,850.00	
	Flood advance	20,400.00	
	Pay advance	49,411.00	
	Warm clothing advance	450.00	
	Computer advance	21,300.00	
	Fan advance	500.00	
		7,23,063.00	

Sl. No.	Payments		Amount 2000-2001
1.	Plan (A) GENERAL AREA:		
i)	Pay & Allowances	1,82,82,169.00	
ii)	Travelling Allowance	3,20,279.00	
iii)	Wages	2,90,305.00	
iv)	Rent	1,06,449.00	
v)	Office expenses	18,06,852.00	
vi)	Material & supply	4,05,146.00	
vii)	Payment made to Drug Research provers	66,350.00	
viii)	Furniture & Fixture	1,75,995.00	
ix)	Books	58,620.00	
x)	Hospital equipments	3,25,522.00	
xi)	Hospital equip.(WHO)	—	
xii)	Subs. of journals	38,557.00	
xiii)	Seminars/Conference	7,72,193.00	
xiv)	Exhibitions	—	
xv)	Vehicle		
	Fuel	75,474.00	
	Repair	14,851.00	
xvi)	Paid to C.G.H.S.	1.70,066.00	
xvii)	Vehicle (purchase)	21,923.05	
xviii)	Priced publications	35,378.00	
xix)	Prepaid salary for March, 2001	8,86,448.00	
xx)	Cont. advance	18,91,804.00	
xxi)	L.T.C. advance	7,069.00	
xxii)	T.A. advance	80,730.00	
		2,58,32,180.05	
	(B) TRIBAL SUB-PLAN		
i)	*Pay & Allowances*	16.55.284.00	
ii)	Travelling allowance	450.00	
iii)	Wages	16.624.00	
iv)	Rent	90.209.00	
v)	Office expenses	66.944.00	
vi)	Material supply	31.326.00	
vii)	Vehicle - Fuel	10.796.00	
	- Repair	26.331.00	
viii)	Prepaid salary for March.2001	1.02.902.00	
		20.00.866.00	
	(C) SPECIAL COMPONENT PLAN FOR SCHEDULE CASTE		
i)	Pay & Allowances	56,21.379.00	
ii)	Travelling allowane	18,086.00	
iii)	Wages	12,090.00	
iv)	Rent	1,09,635.00	
v)	Office expenses	1.60,091.00	
vi)	Material & supply	96.058.00	
vii)	Pre-paid salary for March,2001	3,69,932.00	
		63.87,271.00	
	TOTAL A+B+C		3,42,20,317.05

6. Other recoveries			
- Income Tax	30,49,302.00		
- GPF Subs. of staff	1,32,84,262.00		
- GIS premium of staff	5,59,900.00		
- Rec on a/c of CGHS	54,450.00		
		1,69,47,914.00	
- Rec made from deputationist on a/c of GPF, CGEIS And HB advance etc		1,44,740.00	
7. Pension contribution in r/o the Council's employees recd. from the borrowing deptts.		49,730.00	
2. Non-Plan			
i) Pay & Allowances			2,98,67,506.00
ii) Travellig allowance			3,06,225.00
iii) Wages			2,18,581.00
iv) Rent			4,61,784.10
v) Office expenses			8,35,586.55
vi) Material & supply			3,42,517.00
vii) Provers			1,21,665.00
viii) Vehicle			
- Fuel			55,999.00
- Repair			16,861.00
ix) Prepaid salary for March,2001			15,49,313.00
x) Furniture & Fixture			300.00
xi) Hospital equipment			92,200.00
xii) Cont. to pension fund			22,00,000.00
xiii) Adances granted			
- Cont. advance			3,95,748.00
- LTC advance			57,576.00
- Festival advance			2,73,000.00
- Scooter advance			3,26,000.00
- Cycle advance			18,000.00
- Pay advance			42,116.00
- T.A. advance			11,026.00
- Car advance			2,39,000.00
- Medical advance			95,000.00
- Flood advance			7,500.00
- Computer advance			2,15,500.00
- Warm clothing adv.			1,500.00
			3,77,50,303.65

3. Recovery made from Deputationist on a/c of GPF, GIS. remitted	30,46,575.00
4. Income tax remitted during the year	1,32,70,762.00
5. GPF remitted for the year	5,63,150.00
6. GIS premium paid to LIC	1,324.00
7. Security paid to electricty board, Jaipur by HRI, Jaipur	49,730.00
8. Amount recd.on a/c of Pension contribution tfd. to pension fund	65,045.00
9. Security refunded to M/s ABC, Delhi	
10. Closing Balance	
- S.B.I. A/c 29,29,801.96	
- Imp adv(NP) 1,45,400.00	
- O.B. granted 24,300.00	
1,69,700.00	30,99,501.96
TOTAL.....	19,22,11,648.66

TOTAL Rs. 9,22,11,648.66

CENTRAL COUNCIL FOR RESEARCH IN HOMOEOPATHY

RECEIPT & PAYMENT ACCOUNT FOR THE YEAR ENDING 31.3.2001 IN RESPECT OF GENERAL PROVIDENT FUND

S.No.	Receipts	Amount	S.No.	Payments	Amount
1.	Opening Balance Saving Bank Account at S.B.I.	23,061.77	1.	Payment on a/c of GPF advances and withdrawal made during the year	98,86,204.00
2.	Amount received from General a/c on account of G.P.F. Subs. of the Staff of the Council	1,32,70,762.00	2.	S.T.D.Rs.purchased during the yr.	1,40,00,000.00
3.	Amount of S.T.D.Rs. matured during the year and encashed	70,00,000.00			
4.	Interest recd. on S.T.D.Rs. and S.B. A/c		3.	Closing Balnace SB A/c at SBI	87,845.73
	S.T.D.R. 36,64,700.00				
	S.B. a/c 15,405.96				
		36,80,105.96			
5.	Amt. credit by bank which was wrongly debited to this Council's a/c	120.00			
	TOTAL.....	Rs.2,39,74,049.73		TOTAL.....	Rs.2,39,74,049.73

CENTRAL COUNCIL FOR RESEARCH IN HOMOEOPATHY

BALANCE SHEET AS ON 31.3.2001 IN RESPECT OF GENERAL PROVIDENT FUND ACCOUNT

Liabilities		Amount	Assets			Amount
1. General Provident Fund Capital A/c			1. Investment account (STDRS)			
		4,42,01,218.40	Op.Balance		4,25,91,619.00	
i) Op. Balance			Less amount of S.T.D.Rs. matured & encashed		70,00,000.00	
ii) Add GPF subscription of the staff tfd. from general a/c during the year		1,32,84,262.00			3,55,91,619.00	
iii) Add: Int. allowed on GPF of the subsc.		50,11,974.00	Add: Amount of STDRS pur. during the year		1,40,00,000.00	4,95,91,619.00
		6,24,97,454.40				
iv) Less withdrawal/adv during the year		98,86,204.00	2. Amt. of intt. accrued on S.T.D.Rs. but not recd.			
		5,26,11,250.40	Opening Balance		55,80,095.03	
			Added for the yr.		66,36,372.53	
					1,22,16,467.56	
			Less : recd. during the year		36,64,700.00	85,51,767.56
2. Reserve and surplus						
i) Opening Balance		39,93,557.40	3. Amt. due from gen a/c on a/c of short tfr. to GPF A/C			13,500.00
ii) Intt. recd. during the yr. on SB a/c		15,405.96	4. S/B A/c at SBI			87,845.73

iii)	Intt. accrued on STDRs during the year but not recd.	66,36,372.53		
iv)	Credit given by bank	120.00		
		1,06,45,455.89		
	Less Intt. allowed on GPF Accounts of the subscriber	50,11,974.00		
			56,33,481.89	
	TOTAL.....		Rs.5,82,44,732.29	TOTAL..... Rs.5,82,44,732.29

CENTRAL COUNCIL FOR RESEARCH IN HOMOEOPATHY

RECEIPT & PAYMENT ACCOUNT FOR THE YEAR ENDING 31.3.2001 IN RESPECT OF PENSION FUND ACCOUNT

S.No.	*Receipts*	*Amount*	S.No.	*Payments*	*Amount*
1.	Opening Balance Saving Bank Account at S.B.I. No.19806	9,89,641.84	1.	Pension payment made during the year	10,66,730.00
2.	Amount received during the year from other depts. on a/c of Pension Cont. in r/o Sh. Shakil Ahmed	49,730.00	2.	Payments made during the year on a/c of DCRG 3,62,439 Com.value of pen 8,84,472	12,46,911.00
3.	Interest received on SB A/c of Pension Fund.	36,306.88	3.	Closing balance SB a/c at SBI	9,62,037.72
4.	Amount transferred from Gen. A/c to generate the Pension Fund A/c	22,00,000.00			
	TOTAL.....	Rs.32,75,678.72		TOTAL.....	Rs.32,75,678.72

CENTRAL COUNCIL FOR RESEARCH IN HOMOEOPATHY

BALANCE SHEET AS ON 31.3.2001 IN RESPECT OF PENSION FUND ACCOUNT

Liabilities		*Amount*	*Assets*		*Amount*
1. Pension Fund Account		9,89,641.84	1. Investment account		
i) Op. Balance			Op.Balance	—	
ii) Add amount of Intt. recd. on STDRs & S.B. A/cs.		36,306.88	STDRs Purchased during the yr.	—	
				—	
iii) Pension contribution in r/o Deputationists recd. from other Deptts. during the year		49,730.00	Less STDRs matured and encashed during the year	—	
			2. Closing Balance		
iv) Amt. tfd. from Gen. A/c		22,00,000.00	SB a/c at SBI		9,62,037.72
		32,75,678.84			
Less payments					
DCRG & CV	12,46,911.00				
Pen. pmt.	10,66,730.00				
		23,13,641.00			
		9,62,037.72			
TOTAL...	Rs. 9,62,037.72		TOTAL...	Rs. 9,62,037.72	

CENTRAL COUNCIL FOR RESEARCH IN HOMOEOPATHY

BALANCE SHEET AS ON 31.3.2001

Liabilities		*Amount*	*Assets*		*Amount*
1. Capital Fund			1. Assets		
Op. Balance	2,86,32,239.93		a) Furniture & Fixture		
Add Assets created during the year	16,21,706.05		Op. Balanace	47,73,347.42	
			Added during the yr.(Plan)	1,75,995.00	
	3,02,53,945.98		N-Plan	23,248.00	
					49,72,590.42
Less: amount of priced publications sold during the year	16,358.00	3,02,37,587.98	b) Office equipments		
			Op. Balance	42,73,164.38	
			Added during the yr.(Plan)	1,31,888.00	44,05,052.38
2. Excess of Income over expenditure			c) Vehicle		
Opening Balance	97,11,756.36		Op. Balance	14,91,568.50	
Added during the yr.	7,36,080.94	1,04,47,837.30	Added purchase during yr.	7,70,795.05	22,62,363.55
			d) Books		
			Op. Balance	12,14,770.16	
			Add.(Plan)	59,280.00	12,74,050.16
3. Group Insurance Fund A/c					
Opening Balance		1,04,459.15	e) Priced publication		
			Op. Balance	4,07,432.98	
			Add. during year	35,378.00	
				4,42,810.98	
4. Security Deposit					
Opening Balance	65,045.00				
Less: (remitted during the year)	65,045.00	—	Less. Pub. sold during the yr.	16,358.00	4,26,452.98

5. Amount due to GPF from general A/c	13,500.00				
		f) Hospital equipments			
		Op. Balance	1,10,74,629.89		
		Added during the yr.(Plan)	3,29,922.00		
		N-Plan	95,200.00		
				1,14,99,751.89	
		g) Land & Bldg. - Noida	30,04,430.00		
		- Donated Bldg. (Puri)	6,33,816.00	36,38,246.00	
		h) Assets donated by WHO		17,59,080.60	
					3,02,37,587.98
		2. Advances Recoverable			
		i) Travelling allowance			
		Op. Balance	1,12,965.00		
		Less adjusted	1,04,965.00		
			8,000.00		
		Add granted			
		Plan 80,730.00			
		N-Plan 11,026.00			
			91,756.00		
				99,756.00	
		ii) L.T.C. Advance			
		Op. Balance	1,06,982.00		
		Less adjusted	1,06,982.00		
		Add granted during the year (PLAN) & Non-Plan	7,069.00 57,576.00	64,645.00	
		iii) Contingent advance			
		Op. Balance	17,54,165.49		
		Less adjusted	15,85,355.00		
			1,68,810.49		
		Add granted during the year(Plan)	18,91,804.00		
		Non-Plan	3,95,748.00	24,56,362.49	
		iv) Scooter advance			
		Op. Balance	6,02,424.00		
		Add granted during the yr.	3,26,000.00		
			9,28,424.00		
		Less recovered during the yr.	2,11,972.00	7,16,452.52	
		v) Cycle Advances			
		Op.Balance	15,040.00		
		Add granted during the yr.	18,000.00		
			33,040.00		
		Less recovered during the yr.	8,850.00	24,190.00	
		vi) Festival Advances			
		Op. Balance	93,500.00		
		Add Granted during the yr	2,73,000.00		
			3,66,500.00		
		Less recovered during the yr.	3,03,260.00	63,240.00	

vii)	Flood Advance		
	Op. Balance	39,275.00	
	Add granted during the yr.	7,500.00	
		46,775.00	
	Less recovered during the yr.	20,400.00	
			26,375.00
viii)	Pay Advance		
	Op. Balance	9,625.00	
	Add Granted during the yr.	42,116.00	
		51,741.00	
	Less recovered during the yr.	49,411.00	
			2,330.00
ix)	Fan Advance		
	Op. Balance	500.00	
	Add granted during the year	—	
		500.00	
	Less recovered during the yr.	500.00	
x)	Computer Advance		
	Op. Balance	28,300.00	
	Add granted during the yr.	2,15,500.00	
		2,43,800.00	
	Less recovered during the yr.	21,300.00	
			2,22,500.00

xi)	*Car Advance*		
	Op. Balance	5,56,740.00	
	Add granted during the yr.	2,39,000.00	
		7,95,740.00	
	Less recovered during the yr.	1,06,920.00	
			6,88,820.00
xii)	Medical Advance		
	Op. Balance	—	
	Add granted during the yr.	95,000.00	
			95,000.00
xiii)	Warm Clothing Advance		
	Opening Balance	—	
	Add granted during the year	1,500.00	
		1,500.00	
	Less recovered	450.00	
			1,050.00
3.	Pre-paid expenses/Salary		
	Op. Balance	28,08,001.00	
	Less adjusted during the yr.	28,08,001.00	
		—	
	Add granted during Plan	13,59,282.00	
	N-Plan	15,49,313.00	
			29,08,595.00
4.	Advance with other Deptts.		
	a) Adv.with DAVP	20,000.00	

5. Securities (Paid)			
Opening Balance	27,220.00		
Add security paid to Electicity board, Jaipur	1,324.00		28,544.00
6. Sundry debtors			
Opening Balance	2,727.00		
Less adjusted during the year	2,727.00		---
7. Amount recoverable from staff on a/c of G.I.S. premium			
Op. Balance	45,047.00		
Add during the yr.	5,63,150.00		
	6,08,197.00		
Less: recovered	5,59,900.00		48,297.00
8. Amount due from Staff on a/c of N.D.F.			138.00
9. Closing Balance			
CCRH (Bank Bal.)	29,29,801.96		
Imprest Advance			
Op. Balance (NP)	1,69,700.00		
		30,99,501.96	
			1,05,65,796.45
TOTAL.....	Rs.4,08,03,384.43	TOTAL.....	Rs.4,08,03,384.43